विषयोंकी तुच्छता दर्शाय निवारणकरना व धर्म पुण्यकी उत्तमता
गे अथवा मोक्षादिकी प्राप्ति दर्शाई गई है—और इड़ा पिंगला सुषु-
नाड़ियों से सम्पूर्ण स्वरोदय का ज्ञान बतलाया गयाहै पुनः पंच
रों का वर्णन अच्छीरीतिपर कियागयाहै और अन्तमें भगवान् की
वल यही एक संसारी पुरुषों के प्राप्त्यर्थ उत्तम पदार्थ दिखलाया
जसके करने से प्राणी इस संसारसे उद्धारहोकर भगवच्चरणारविन्दों
र जाकर प्राप्तहोता है और यावत् संसारके बन्धन हैं सबसे निर्मुक्त
है—

और अनोखी बात इस पुस्तकमें यह हुई है कि सर्व्वैश्वर्य्यसम्पन्न
गणालंकारालंकृत विद्वज्जनजेगीयमान श्रीमान् मुन्शीनवलकि-
ने सम्पूर्ण भगवद्भक्त्यनुरागी पुरुषों के समझने के लिये सरलरीति
मप्रदेशान्तर्गत मसवांसीग्रामनिवासि पण्डित वन्दीदीन दीक्षि-
के काठिन्य पदों पर सरलदेशभाषा के शब्दों से हरएक स्थान पर
नवादिया है आशा तो यही है कि सज्जन व महात्मालोग ऐसी
य पुस्तक को अवलोकन करके आनन्द में मग्नहोकर गहगहा
धन्यवाददेंगे—

पियहुरसिकजनमहामुदितमन परमअमृतरससुन्दर ॥
न होय भरो यह जानहु निर्मल सुधासमुन्दर ॥
मैनेजर अवध समाचारसम्पादक ॥

चरणदासके ग्रंथका सूचीपत्र ॥

इति ॥

अथ श्रीस्वामीचरणदासकृतग्रन्थ

भक्तिसागर प्रारम्भ ॥

दो०/मथुरामण्डल परमशुचि सकल शिरोमणि धाम ।
व्रजचरित्र वर्णन करत शुकदेव स्वामि गुलाम ॥ . वन अखण्ड

अथ व्रजचरित्रवर्णन ॥ ... वन कहं ॥

दीनानाथ अनाथ की विनती यह सुनि ... हरन वन
मम हिरदय में आयके व्रज गाथो क
चारिवेद तुमकूं रटैं शिव शारदा ...
औरनशीश नवायहूं श्रीकृष्ण करो ... नाना ॥ फिरि
के गुरु के गोविन्द के भक्ती के ... उपवन गाय
सबहुँनको एकै गिनो यथा पुष्प ... नीजे । जिन
नारदमुनि अरु व्यासजी कीये ... वन लालन के
अक्षर भूलों जो कहीं कहौ मोहिं ... तहिं समझाऊं ॥
श्रीशुकदेव दयाल गुरु मम ... धारी ॥ तालवनहूं
व्रजचरित्र में कहत हों तुमहिं ...

पूर्णशाल २ सामवेद ऋग्वेद यजुर्वेद अथ...

चरणदासके ग्रंथका सूचीपत्र ॥

इति ॥

दो० महाबली धेनुक असुर भाव भक्ति हरि हेत ॥
मुक्तिकाज सेवनकियो तालवन को खेत १६

चौ० वृन्दावन जानत सब कोई। फूल माल जहँ लालन पोई॥ बहुला वन घन दुरमन छायो। कुमुदारण्य सो कहि समुझायो॥ कामावन लालन सुखदाई। मधुवन लालन भूमि सुहाई॥ वृन्दावन की शोभा भारी। रास रच्यो जहँ श्रीवनवारी॥ वन उपवन शोभा गति ईशा। शिव ब्रह्मादिक नायोशीशा॥ इन्द्र कुबेर आदि विज्ञानी। इनहुँन गति मति ब्रजकी जानी॥ बल रावण जहँ मेवा लाई। ऊंची नवनिधि उनहूं पाई॥ सप्तऋषिने मिलि सेवन कीन्हो। ऊंचो आसन ध्रुवको दीन्हो २०॥

दो० बहुतक सुर नर तरिगये तपकरि ब्रजके बीच॥
जाति पांतिको को गिनै ऊंचा नीचा नीच २१
वृन्दावन सबसों बड़ो यथा दूध में घीव॥
सब धर्मन हरिभक्तिज्यों यथा पिण्डमें जीव २२
सब तीरथ जगमें बड़े जिनहूं में हैं ईश॥
उन तीरथ फलकामना इहि सेवत जगदीश २३
वीसकोस के फेरमें वृन्दावन को जान॥
कुंजगली अति सोहनी द्रुमबेली पहिचान २४
कंचनकी जहँ भूमिहै धरे सतोगुण वेख॥
चरणदास वलि वलिगयो दिव्यदृष्टिकरिदेख २५
फूल जु फूले ऋतु विना नानाछवि बहुरंग॥
अलि मलकतगुञ्जत फिरैं भँवरी सुतलैसंग २६
ऋतुवसन्त जहँ नितरहत विहरत नन्दकिशोर॥
कुहँकत कोयल मगनह्वै बोलत दादुरमोर २७
तिहिमधि वृन्दावन महा निज वृन्दावन जान॥

१ नारद, वशिष्ठ, भृगु, अंगिरा, कश्यप, विश्वामित्र, पुलस्त्य. २ देह ३ लता

तिरकोणी वर्णन कियो योजन एकप्रमान २८॥

चौ० जाकी महिमा सबहुनगाई। रासकरैं जहँ कुवँरकन्हाई॥ यमुना जहँ परिक्रमा दीन्ही। गुप्तपिया की लीला चीन्ही॥ गोपसुता जहँ नित उठि न्हाई। पायो वर वर कुवँर कन्हाई॥ श्यामरङ्ग निर्मल जल गहरी। वृन्दावन के ढिगढिग लहरी॥ आशा मंशाकरि कोइ न्हावै। सहस सुरसरी को फलपावै॥ दिव्य वृन्दावन दिव्य कलिन्दी। देखै सो जीतै मनइन्दी॥ निकट किनार वृक्षकी छाहीं। आयपरी यमुना जल माहीं २९॥

दो० भक्ति विना पावै नहीं वृन्दावन की संध॥
विनपाये निन्दा करै मोंदू मूरख अंध ३०॥

चौ० झिलमिल शुभकी उठत तरंगा। बोलत दादुर अरु सुरभंगा॥ कालीदह महिमा सुनु भ्राता। सहस गंगके फलकी दाता॥ विहर घाट बसि भजन करीजै। जेहि सेवन यमज्वाब न दीजै॥ वंशीवट बसि हठ इमि कीजै। तजै देह जब दर्शन लीजै॥ अब सुन वृन्दावन की बतियाँ। शीतलकरी हमारी छतियाँ॥ वनघन कुञ्जलता छविछाई। झुकि टहनीधरणी पर आई॥ मंद समीरन करत पयाना। वसत सुगन्ध सबै अघाना॥ बरसत अमृत फुही सुहाई। निकसत कोमल गोभगुहाई ३१॥

दो० वृन्दावन में रहत हैं ज्ञानी गुणी अतीत॥
वृन्दावन को नामलै को न लहै जगजीत ३२॥

चौ० नित वसन्त जहँ गन्धसुरारी। चलत मन्द जहँ पवन सुखारी॥ पुष्प विकसि रहे रङ्ग विरङ्गा। लेतवास गुञ्जत सुरभङ्गा॥ बोलत भवँरमहा [illegible] दमकि चमकि चकरावैं। [illegible] चतुराई। पंख पसारि मुदित भगनाइ॥ कइकउचक बाल निज बालै। कइक कुञ्जन ऊपर डोलैं॥ युगल नामलै कीर पुकारैं। बारबार वनओर निहारैं॥ वृन्दावन चारौ युगे माहीं। गुप्तरहैं शुकदेव बताहीं ३४॥

१ चारिकोसकानाम २ सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग॥

दो० महाबली धेनुक असुर भाव भक्ति हरि हेत ॥
मुक्तिकाज सेवनकियो तालरवन को खेत १९

चौ० वृन्दावन जानत सब कोई। फूल माल जहँ लालन पोई॥ बहुला
न घन दुरमन छायो। कुमुदारण्य सो कहि समुझायो॥ कामावन लालन
सुखदाई। मधुवन लालन भूमि सुहाई॥ वृन्दावन की शोभा भारी। रास
च्यो जहँ श्रीबनवारी॥ वन उपवन शोभा गति ईशा। शिव ब्रह्मादिक
गायोशीशा॥ इन्द्र कुबेर आदि विज्ञानी। इनहुँन गति मति ब्रजकी जानी॥
ल रावण जहँ मेवा लाई। ऊंची नवनिधि उनहूं पाई॥ सप्तऋषिनें मिलि
सेवन कीन्हो। ऊंचो आसन ध्रुवको दीन्हो २०॥

दो० बहुतक सुर नर तरिगये तपकरि ब्रजकें बीच ॥
जाति पांतिको को गिनै ऊंचा नीचा नीच २१
वृन्दावन सबसों बड़ो यथा दूध में घीव ॥
सब धर्मन हरिभक्तिज्यों यथा पिण्डमें जीव २२
सब तीरथ जगमें बड़े जिनहूं में है ईश ॥
उन तीरथ फलकामना इहि सेवत जगदीश २३
चौंसकोस के फेरमें वृन्दावन को जान ॥
कुंजगली अति सोहनी द्रुमबेली पहिचान २४
कंचनकी जहँ भूमिहै धरे सतोगुण भेष ॥
चरणदास बलि बलिगयो दिव्यदृष्टिकरिदेख २५
फूल जु फूले ऋतु बिना नानाविधि बहुरंग ॥
अलि मतवारे गुञ्जत फिरैं भवरौं सुबलसंग २६
ऋतु बसन्त जहँ नित्यही विहरत नन्दकिशोर ॥
कहुँकहुँ कोयल मगनहै बोलत दादुरमोर २७
निशिदिनहि वृन्दावन सदा नित्य वृन्दावन जान ॥

[illegible]

तिरकोणी वर्णन कियो, योजन एकप्रमान २८॥

चौ० जाकी महिमा सबहुनगाई। रासकरैं जहँ कुवँरकन्हाई॥ यमुना जहँ परिक्रमा दीन्ही। गुप्तपिया की लीला चीन्ही॥ गोपसुता जहँ नित उठि न्हाई। पायो बर वर कुवँर कन्हाई॥ श्यामरङ्ग निर्मल जल गहरी। वृन्दावन के ढिगढिग लहरी॥ आशा मंशाकरि कोइ न्हावे। सहस सुरसरी को फलपावे॥ दिव्य वृन्दावन दिव्य कलिन्दी। देखै सो जीतै मनइन्दी॥ निकट किनार वृक्षकी छाहीं। आयपरी यमुना जल माहीं २९॥

दो० भक्ति बिना पावै नहीं वृन्दावन की संध॥
विनपाये निन्दा करै मोंढ़ मूरुख अंध ३०

चौ० झिलमिल शुभकी उठत तरंगा। बोलत दादुर अरु सुरभंगा॥ कालीदह महिमा सुनु भ्राता। सहस गंगके फलकी दाता॥ विहर घाट बसि भजन करीजे। जेहि सेवन यमज्वाब न दीजै॥ वंशीवट बसि हठ इमि कीजे। तजे देह जब दर्शन लीजै॥ अब सुन वृन्दावन की बतियाँ। शीतलकरी हमारी छतियाँ॥ वनघन कुञ्जलता छबिछाई। झुकि टहनीधरणी पर आई॥ मंद समीरन करत पयाना। बसत सुगन्ध सबै अघाना॥ बरसत अमृत फुही सुहाई। निकसत कोमल गोभगुहाई ३१॥

दो० वृन्दावन में रहत हैं ज्ञानी गुणी अतीत॥
वृन्दावन को नामले को न लहै जगजीत ३२

चौ० नित बसन्त जहँ गन्धसुरारी। चलत मन्द जहँ पवन सुखारी॥ पुष्प विकसि रहे रङ्ग विरङ्गा। लेतबास गुञ्जत सुरभङ्गा॥ बोलत भवँरमहा ध्वनि गाजैं। मानो अनहदकी गतिसाजैं॥ जुगुनू दमकि चमकि चकरावैं। समय जानिकर हर्ष बढ़ावैं ३३ नाचत मोर करत चतुराई। पंख पसारि मुदित मगनाई॥ कैइकउचक बोल निज बोलैं। कैइक कुञ्जन ऊपर डोलैं॥ युगल नामलै कीर पुकारैं। बारबार वनओर निहारैं॥ वृन्दावन चारो युग माहीं। गुप्तरहैं शुकदेव बताहीं ३४॥

१ चारिकोसकानाम २ सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग॥

दो० वृन्दावनकी साधगति काँपै वर्णी जाय ॥
जैसी जाको दृष्टिहै तैसोही दरशाय ३५
जैसे हरि मथुरा गये सबन विलोके आय ॥
काल कंसकी दृष्टि में मानुष प्रभु लखाय ३६
मथुरा में योधा बड़े जिन्हें मल्ल दरशाय ॥
नारिन दरशे कामसम प्रीतिरीति अधिकाय ३७
वृन्दावन सोइ देखिहै जिन देखो हरि रूप ॥
दुर्लभ देवन को गयो महा भूप सों भूप ३८
वृन्दावन सेवन करे अमरलोक को जाय ॥
इन्द्रीजीतो हरि भजे प्रेम प्रीति के भाय ३९

चौ० रसिककेलि वृन्दावन माहीं । अमरलोककी भांति कराहीं ॥ अमरलोक तिहुँलोक सों न्यारो । मथुरा मण्डल अंश विचारो ॥ अमरलोक बिचहै निजधामा । जासु अंश वृन्दावन नामा ॥ पुरुषोत्तम निज धाम विहाई । कारण प्रेमरहे ब्रज आई ॥ पुरुषोत्तम प्रभु लीलाधारी । वृन्दावन में सदा विहारी ॥ निजधामा की कहियत शोभा । वृदावन में रहे अलोभा ॥ दिव्य दृष्टि विन दृष्टि न आवे ॥ सकल पुराण वेद यों गावे ॥ गोलचौतरो निज वृन्दावन । तापरधारो अपनो तनमन ४० रहो चौतरो छिपि वहिठाहीं । अग्नी यथा काठके माहीं ॥ तापर चौंसठि खम्भा सोहैं । कोटिकामको निज मनमोहैं ॥ तापर रंगमहल अधिकाई । कुन्दन रूप स्वरूप सुहाई ॥ रंग महल अरु खम्भनमाहीं । पन्नालाल बेलि की नाहीं ॥ पन्ना नग लागे जहँ मोती । झलकैं जगमग जगमग ज्योती ॥ रंग महल यों छिप्यो गोसाईं । जैसें लाली मेहँदी माईं ॥ नित विहार जहँ करैं विहारी । कृष्णकुवँर अरु राधाप्यारी ॥ गौर रूप वृषभान दुलारी । श्यामरूपहैं कृष्ण मुरारी ४१ नी-

---

१ छिपाहुआ २ स्वर्ग ३ वंशीवट में जहाँ पर श्रीकृष्णचन्द्रने रास किया है वहां एक चौतरा बनाहुआहै जिसपर कि अष्टधातु व मलयागिरि आदिके चौंसठि खम्भा विद्यमान हैं ४ सुवर्णको कहते हैं ॥

सांवर ओढ़े अँग राधा । दिव्य अभूषण रूप अगाधा ॥ भूषण अँग अँग लाजत ऐसें । चन्द्र निकट लघु तारे जैसे ॥ पीत वसन पहिरे नँदलाला । मोर मुकुट माथे गुलमाला ॥ जरद बादले को अँग नीमा । अन्धी गलजिदे सुख सीमा ॥ मोतिमन की माला गल सोहै । नाक बुलाक अधर पर सोहै ॥ मकराकृत[१] कुण्डल श्रवनन में । युगल दामिनी मानहुँ घन में ॥ श्याम भुजंगम जुलफैं प्यारी । बांकी भौंहैं कुटिल अतियारी ॥ लालडोरैं अरु नैन हजारे । रस के माते अरु कजरारे ४२ मोती नासा के बिच लटके । मोतन गोल छोर पर मटके । मुरली मुख ताको रस पीवै । व्राहनवारो देखत जीवै ॥ गले धुकधुकी[२] सुन्दर झमके । तामधि कौस्तुभमणि अधि लमके ॥ अधिक सुघर पहिरे उर चौकी । वनमाला कविहत नौनिधि की ॥ गोल भुजन पर बाजू सोहैं । पहुँची कड़ा कंकन[३] करि दोहैं ॥ पहुँची हिग पहिरे जहँगीरी । रतन चौक छवि लगी जँजीरी ॥ रतन चौक है पीठ हथेली । लगी जँजीर मुँदरियन भेली ॥ सोहैं छाप छला अरु मुँदरी । नुहसत पहिरे सुन्दर अँगुरी ४३ इकिस तिहू चरणन में धारे । झनुक झुनुक पैंजनि झनकारे ॥ मन्द मन्द विहँसन मुसकाई । रणजित मित छवि कही न जाई ॥ नित किशोर अरु नित्त किशोरी । द्वादश बरष अवस्था भोरी ॥ राधे भूषण छवि कह गाऊं । नाम लेत मन में शरमाऊं ॥ हूं मैं दास नामरण जीत । भक्तिदान मोहिं दोजै रीत ॥ बहुत सखी जिनके निजसंगा । रासकेलि खेलैं बहुरंगा ॥ वनके चौंसठि खम्भे माहीं । होत अखण्ड रास वहि ठाहीं ॥ झनुक झनुक सखियन पग बाजैं । घुंघुरू अधिक महाछबि साजैं ४४ दिव्य भरण पहिरे पियप्यारी । शशिवदनी[४] तिरगुणते न्यारी ॥ नवल किशोरी गोरी सारी । सुघर सयानी चातुर नारी ॥ दिव्य वस्त्र अरु मधुर शरीरा । अधिक रूप छवि गहर गँभीरा ॥ कजरारी कर्ने लटकें बेनी[५] । अंजन नैन सैंत पियदेनी ॥ चूड़ामणि गहनो छवि नी-

---

१ मछली के आकार कुण्डल २ दुलरी नाम का गहना जोकि गले में बांधीजाती है ३ कंकण जोकि पहुँची के आगे करमें बांधाजाता है जिसमें कि हीरादि नग जड़ित होते हैं ४ चन्द्रमाकासा वदन ५ बाल ॥

को। शीशफूल अरु वेनी टीको॥ नथ बुलाक अरु बन्दी झलकैं। घुंघुर वाली लटकैं अलकैं॥ मुखऊपर अलकैं छवि ऐसी। चन्दचढ़ी दे नागिनि जैसी॥ करणफूल सँग झुमके मलकैं। सबसखियन के भूपण झलकैं ४५ चम्पाकली नौलड़ी माला। चन्दनहार सुपहिरे बाला॥ कठुला जैसे गले जनेऊ। अरु हिय चौकी महा अभेऊ॥ फूलमाल सखियां सब पहिरे। गुंजनकी माला हिय लहिरे॥ बाँहन में बाजूबँद बांधे। बंकबला बाँहन पर साधे॥ सदा सुहागिनि पहिरे चूरी। सुबक पछेली बँगली रूरी॥ कँगनी अरु पहिरे जहँगीरी। रतनन चौक आरसी धीरी॥ छापछला अरु पहिरे गूंठी। तुहसत पहिरे अजब अनूठी॥ पांवनमें शुभ नूपुर बाजैं। नखशिख लौं आभूपण साजैं ४६ झुनुक झुनुक नाचैं अरु गावैं। ठुमुक ठुमुक निरतैं अरुधावैं॥ कबहूं थेइथेइ थेइथेइ करैं। कबहूं करऊपर करधरैं॥ कबहूं घिनन घिनन अँग मोरैं। भावबताय तान बहु तोरैं॥ कबहूं कर उठाय गतिचालैं। सांगोपांगै बतावत हालैं॥ है अनुराग राग बहु गावैं। घुंघुरूकी गति अधिक बजावैं॥ कोई नाचै कोई गावै। कोइ मृदंग कोइ ताल बजावै॥ बैन सरू काहू कर राजे। कोउ तँबूरा नारी साजे॥ उपँग लिये कर कोउ सहेली। अमृत कुण्डली कोउ अलबेली॥ कोइ बीन कोइ लै मुरचङ्ग। मगन रूप सबही निज सङ्ग ४७॥

दो० कहा बुद्धि कह कहिसकूं रासकेलि को साज॥
बाजे हैं बहुभांति के बर्णत आवै लाज[१] ४८॥
कबहूं करसों करमिले नृत्यत श्री गोपाल॥
कबहूं बैठे साँवरो नृत्यत सुन्दर बाल ४९॥

चौ० कबहूं हँसिकरि निकट बुलावैं। कबहूं फूलमाल पहिरावैं॥ कबहूं मन्द मन्द मुसकावैं। नैन सैन दे नृत्य बतावैं॥ वृन्दावन में ऐसी लीला। चरणदासको जहाँ उसीला[२]॥ जो कोइ इनको ध्यान लगावै। अमरलोक निश्चय करिपावै॥ सिमिटो मन कबहू नहिं फूटै। सोवत जागत ध्यान न

१ सब विधियाँ मरिन २ दारा॥

छूटे ॥ जो कोइ इनको ध्यान न करि है। भरमि भरमि चौरासी परि है॥ सुर नर मुनि सवही मिलि ध्यावैं। शिव ब्रह्मादिक अन्त न पावैं ॥ वेद विना यह भेद न पावै। आपु भरमि अरु जग भरमावै ॥ वेदपुराण संहिता गावैं। चारोंयुग हरिभक्त वतावैं ५० ॥

दो० इत उत भटको जगफिरै कीन्हों नाहिं विचार ॥
सत्य पुरुष जानो नहीं कैसे उतरे पार ५१

चौ० द्वापर बीतो कलियुग आयो। राजाको शुकदेव सुनायो ॥ कलियुगकी दुर्बुद्धि वताऊं। सुनहु परीक्षित कहि समुझाऊं॥ ओछीबुद्धि मनुष्य की होगी। सकल विकल अरु मनके रोगी ॥ सूक्षमज्ञान महाअभिमानी। नहीं मानिहैं वेद पुरानी॥ परमेश्वर की निन्दा करि हैं। सूतमसानी चित में धरिहैं ॥ खेतरपाल[1] भूमिपा मानै। कुरमको कर्त्ता करिजानै ॥ परमेश्वर की वात न भावै। ऐसो उत्तर तुरत वतावै॥ कहि हैं राम कहां है भाई। हमहूं को तुम देहु दिखाई ५२॥

दो० चहूंओर हरिको विभव सातद्वीप नौखण्ड ॥
चरणदास सुन आंधरे रच्यो कौन ब्रह्मण्ड ५३
भक्ति विना दीखे नहीं इन नयनन हरिरूप ॥
साधुनको परगटभयो विना भक्ति हरिरूप ५४

चौ० साधुसन्तकी निन्दा करि हैं। भजनकरै ताको वहुअरि हैं ॥ करि अभिमान आपमें जरि हैं। गुरुको कहो नेक नहिं करि हैं ॥ पंथ खड़े करि हैं छत्तीसा[2]। भरमपूजि तजिहैं हरि ईसा ॥ दम्भ झूठकी सेवा करिहैं। झूठे पंथन में जा [illegible] ई ॥ निन्दा दान [illegible] रि हैं अभिमाना। हम पंडित अरु सव अज्ञाना॥ पढ़े पुराण वेद नहिं जानैं। साधुनसों झगड़े वहु ठानैं ५५ पंथ पुजाय हरिहि विसरावैं। झूठे वाद विवाद वढ़ावैं ॥ व्यभिचारिणिहोइहैं वहुनारी। वोलैं झूठ वहुत परकारी ॥ शुकदेव

1 गांवका चौकीदार 2 छत्तीसप्रकारके पंथ ॥

को। शीशफूल अरु बेनी टीको॥ नथ बुलाक अरु बन्दी झलकैं। घूंघुरवाली लटकैं अलकैं॥ मुखऊपर अलकैं छबि ऐसी। चन्दचढ़ी द्वै नागिनि जैसी॥ करणफूल सँग झुमके मलकैं। सबसखियन के भूषण झलकैं ४५ चम्पाकली नौलड़ी माला। चन्दनहार सुपहिरे बाला॥ कठुला जैसे गले जनेऊ। अरु हिय चौकी गहा अभेऊ॥ फूलमाल सखियां सब पहिरे। गुंजनकी माला हिय लहिरे॥ बाँहन में बाजूबँद बांधे। बंकचला बाँहन पर साधे॥ सदा सुहागिनि पहिरे चूरी। सुबक पछेली बँगली रूरी॥ कँगनी अरु पहिरे जहँगीरी। रतनन चौक आरसी धीरी॥ छापछला अरु पहिरे गूंठी। नुहसत पहिरे अजब अनूठी॥ पांवनमें शुभ नूपुर बाजैं। नखशिख लौं आभूषण साजैं ४६ झुनुक झुनुक नाचैं अरु गावैं। ठुमुक ठुमुक निरतें अरुधावैं॥ कबहूं थेइथेइ थेइथेइ करैं। कबहूं करऊपर करधरैं॥ कबहूं घिनन घिनन अँग मोरैं। भावबताय तान बहु तोरैं॥ कबहूं कर उठाय गतिचालैं। सांगोपांग बतावत हालैं॥ द्वै अनुराग राग बहु गावैं। घुंघुरूकी गति अधिक बजावैं॥ कोई नाचै कोई गावै। कोइ मृदंग कोइ ताल बजावै॥ बैन सरू काहू कर राजै। कोउ तँबूरा नारी साजै॥ उपँग लिये कर कोउ सहेली। अमृत कुण्डली कोउ अलबेली॥ कोइ बीन कोइ लै मुरचङ्ग। मगन रूप सबही निज सङ्ग ४७॥

दो० कहा बुद्धि कह कहिसकूं रासकेलि को साज॥
बाजे हैं बहुभांति के वर्णत आवै लाज ४८
कबहूं करसों करमिले नृत्यत श्री गोपाल॥
कबहूं बैठे साँवरो नृत्यत सुन्दर बाल ४९

चौ० कबहूं हँसि [illegible]

मन्द मन्द मुसकावैं [illegible]

चरणदासको जहाँ उसीला॥ जो कोइ इनको ध्यान लगावै। अमरलोक निश्चय करिपावै॥ सिमिटो मन कबहूं नहिं फूटै। सोवत जागत ध्यान न

१ सब विधियों सहित २ टारा॥

छूटै ॥ जो कोइ इनको ध्यान न करि है। भरमि भरमि चौरासी परि है ॥ सुर नर मुनि सबही मिलिध्यावैं। शिव ब्रह्मादिक अन्त न पावैं ॥ वेद विना यह भेद न पावै। आपु भरमि अरु जग भरमावै ॥ वेदपुराण संहिता गावैं। चारोंयुग हरिभक्त बतावैं ५० ॥

दो० इत उत भटको जगफिरै कीन्हों नाहिं विचार ॥
सत्य पुरुष जानो नहीं कैसे उतरे पार ५१

चौ० द्वापर बीतो कलियुग आयो। राजाको शुकदेव सुनायो ॥ कलियुगकी दुर्बुद्धि बताऊं। सुनहु परीक्षित कहि समुझाऊं॥ ओछीबुद्धि मनुष्य की होगी। सकल विकल अरु मनके रोगी ॥ सूक्षमज्ञान महाअभिमानी। नहीं मानिहैं वेद पुरानी ॥ परमेश्वर की निन्दा करि हैं। भूतमसानी चित में धरिहैं ॥ खेतरपाले भूमिपा मानै। कृत्यमको कर्त्ता करिजानै ॥ परमेश्वर की बात न भावै। ऐसो उत्तर तुरत बतावै ॥ कहि हैं राम कहां है भाई। हमहूं को तुम देहु दिखाई ५२ ॥

दो० चहूंओर हरिको विभव सातद्वीप नौखण्ड ॥
चरणदास सुन आंधरे रच्यो कौन ब्रह्मण्ड ५३
भक्ति विना दीसै नहीं इन नयनन हरिरूप ॥
साधुनको परगटभयो विना भक्ति हरिरूप ५४

चौ० साधुसन्तकी निन्दा करि हैं। भजनकरै ताको बहुअरि हैं ॥ करि अभिमान आपमें जरि हैं। गुरुको कहो नेक नहिं करि हैं ॥ पंथ खड़े करि हैं छत्तीसा। भरमपूजि तजिहैं हरि ईसा ॥ दम्भ झूठकी सेवा करि हैं। झूठे पंथन में जा लरि हैं ॥ गऊ ब्राह्मण भ्रष्ट सुहोई। बाप पूत में परि है दोई ॥ निन्दा दान कपट व्यवहारा। राजा दुष्ट दुखित संसारा ॥ वेद पढ़े करि हैं अभिमाना। हम पंडित अरु सब अज्ञाना ॥ पढ़े पुराण भेद नहिं जानें। साधुनसों झगड़े बहु ठानें ५५ पंथ पुजाय हरिहि बिसरावैं। झूठे वाद विवाद बढ़ावैं ॥ व्यभिचारिणिहोइहैं बहुनारी। बोलैं झूठ बहुत परकारी ॥ शुकदेव

१ गांवका चौकीदार २ छत्तीसप्रकारके पंथ ॥

कह राजासों सेना । सो अब देखे अपने नैना ॥ राजा छाँडि बाँधि फरिछूटे पूजेंभूत रामसों रूटे ॥ गो विष्ठासो खातीजानी । पंडित देखे बहु अभिमानी । दम्भ कपट बहु पूजा दौरी । कलुवा जाहर पूजें गोरी ॥ पण्डित वेद प विसरावें । स्याने गोरे को शिरनावें ॥ हरि के साधुन को विसरावें । त राम औरन को पावें ५६ हरिकी भक्ति सदा चलिआई । वेद पुराणन में ज गाई ॥ जिनको समभि भये नरज्ञानी । नाभा जिनकी भक्ति बखानी । जिनकी महिमा सबजग जानी । सब जानतहैं चतुरज्ञानी ॥ पीपा सदन सैना नाई । धना जाट अरु मीरावाई ॥ नामदेव रैदास चमारा । तुलसी माधो मीर विचारा ॥ कूबा कुम्हरा फत्तू सफा । सेऊ समर न रंका बंका ५७ करमैती मरु करमा बाई । दास कवीरा वाणी गाई ॥ जयदेवा अरु नरसी महता । दास मलूक कड़ामें रहता ॥ अन्तानन्द कील अरु जंगी । देव मुरारि निपट सरवंगी ॥ नरहरि लालदास हरिवंसा । रंगनाथ वनवारी हंसा । शोभन सूरदास भये साधू । सनक सनन्दन कहिये आदू ॥ ध्रुव प्रह्लाद विभीषण शबरी । हनुमान शङ्कर औ गवरी ॥ बाल्मीकि अम्बरीष सुदामा । मोरध्वज राजा संग्रामा ॥ बहुतक भक्त और जो भये । नाम न जानूं जात न कहे । कई कोटि वैष्णव हैं बांके । सबही गये मुक्ति के नाके ॥ चरणदास हरिभक्ति विचारी । सुमिरि सुमिरि पहुँचो नर नारी ५८ ॥

दो० निष्पदि समभि विचारकरि सदाकरो हरिध्यान ॥
कृष्णभक्ति दृढ़करि गहो मिटै सकल अज्ञान ५६

कवित्तसांगीत ॥

मुकुट जटित शिर अधिक विराजत गहे बँसुरिया अधरधरन् । शंख चक्र गदा पद्म विराजत कोटि मदन की छवि बरणन् ॥ गिरिवर नखधरि असुरन मारे सन्तन के दुखको हरनं । जन चरणदास चरणनको चेरो सदारहे गिरिधर शरनं ६० कुमकुम बिन्दी दीपित भालं उदधि जात द्युतिता हरनं । मकराकृत कुण्डल अति राजत झुमक दामिनी छवि धरनं ॥ कटि किंकिणि पैंजनि पग बाजत मुक्तमाल सुर सुर वरनं । जन चरणदास चरणनको चेरो

सदारहै गिरिधर शरनं ६१ सुन्दर वाल लाल सँगलीन्हे रासकरत मन अति मगनं। घुमिरि घुमिरि धुकि धुकि कर निर्तत खुटर खुटर नाटक वरनं॥ मधुर मधुर ध्वनि बजत गजत घन झनक झनक झंझा झरनं। जनचरणदास चरणन को चेरो सदारहै गिरिधर शरनं ६२ रास रचावैं सब सचुपावैं सांवरे बदन छवि वर्णनं। धुधक धुधक धूधूकरि नृत्यत तकृत तकृत ताधिननननं॥ झुनुक झुनुक नूपुर झनकारत झनक झनक झनझननननं। जन चरणदास चरणन को चेरो सदारहै गिरिधर शरनं ६३॥

क० नन्दके कुमार हौंतौ कहौं वारवार मोहिं लीजिये उवारि ओट आपनी में कीजिये। काम अरु क्रोध काटिडारौ यमवेड़ा प्रभु माँगौं एक नाम मोहिं भक्तिदान दीजिये॥ और की छुड़ायो आश सन्तनको दीजे साथ वृन्दावन वास मोहिं फेरिहू पतीजिये। कहै चरणदास मेरि होय नाहिं हास श्याम कहूं मैं पुकारि मेरी श्रौन सुनि लीजिये ६४ वाही हाथ कुचगहि पूतना के प्राण सोखे पाय ऊंचो पद निज धामको सिधारी है। वाही हाथ श्रीधरको मुखमाड़ो दहीसेती छातीपर पावँ दै मरोरि जीभ डारी है॥ वाही हाथ कूबरी के कूवरको सीधो कियो वाही हाथ मत्तगज खैंचि मूड़ मारी है। वाही हाथ बाँह चरणदास कहै आयगहो जाही हाथ यमुनामें नाथ्यो नागकारी है ६५॥

इति श्रीचरणदासजीकृतव्रजचरित्रसम्पूर्णम्॥

अथ अमरलोकअखण्डधामवर्णन ॥

दो० है प्रणाम शुकदेव को जो हैं गुरू दयाल ॥
काम क्रोध मद लोभ से काढ़ो मेरे साल १
वाणी विमल प्रकाश दे बुधि निर्मल करु तान ॥
म्वहिं मूरख अज्ञानको नहिं आवत है बात २
अमरलोक वर्णन करौं वेही करें सहाय ॥
दृष्टि हिये मम खोलिकरि सबही देहु दिखाय ३
भेद लियो गुरुदेव सों अद्भुत रचों सुग्रन्थ ॥
साखी वेद पुराण में ज्ञानी सुनियो सन्त ४

चौ० भेद अगोचर कोइकोइ जाने। गुरू दिखावै तो पहिचाने॥ पत कहै कछु वेद पुराना। ज्योंका त्यों उनहूं न बखाना॥ कछु कछु मत मारग भाखें। फिरि भूलें समुझै नहिं साखें॥ सो हरि कृपा प्रकट मैं गाया। किय उजागर खोलि सुनाया ५॥

दो० महाकठिन दुर्लभ हुतो अमरलोक का भेद ॥
ताको मैं बीजक कियो भाषो भेद अभेद ६
निराकार तो ब्रह्म है माया है आकार ॥
दोनों पदवी को लिये ऐसा पुरुष निहार ७

चौ० माया जीव दोउ ते न्यारा। सो निज कहिये पीव हमारा॥ क्षर अक्षर निरअक्षर तीनों। गीता पढ़ि मुनि इनको चीनो॥ गीता अक्षर जीव बतावै। क्षरमाया स्वइ दृष्टि दिखावै॥ निरअक्षर है पुरुष अपारा। ज्ञानी पण्डित लेहु विचारा॥ जीव आतम परमातम दोऊ। परमातम जानतहै कोऊ॥ आतम चीन्हि परमातम चीन्हो। गीतामध्य कृष्ण कहिदीन्हो॥ माया उपजै विनशै अतिही। चेतन ब्रह्म अमरहै नितही॥ परब्रह्म पुरुषोत्तम जानो। चरणदासके सो मन मानो ८॥

दो० अमरलोक बिच पुरुषहै ब्रह्म जु सबके माहिं ॥
माया दरशत है सबै ब्रह्म दीखते नाहिं ६

चौ० अब सुन अमरलोककी बानी। त्रैगुण रहत परम सुखदानी॥ तेज पुंजके ऊपरराजे। अहंविराट सो बाहर गाजे॥ ताको ज्योति कहत नरलोई। तेजपुंज कहियत है सोई॥ सूरज मण्डल ताहि बतावे। योगी योग युक्ति सों पावे॥ सूरज मण्डल जैहै चीरा। वा लोके कोइ जैहै वीरा॥ कोटिभानु को सो उजियारो। तेजपुंजको रूप विचारो॥ तीनि लोकसों बाहर होई। सात भवन सों बाहर सोई॥ ताके ऊपर अविचल लोका। पाप पुण्य दुख सुख नहिं शोका॥ काल न ज्वाल अवधि नहिंहोई। रंजित दास सुरति जहँ गोई॥ महाअगोचर गुप्तसों गुप्ता। जहां विराजतहैं भगवंता १० अमरलोक निज लोक कहावे। चौथा पद निर्वाण बतावै॥ अमरपुरी बेगमपुर ठाऊं। कहा बुद्धिसों सब गति गाऊं॥ कछुइक बरणि बताऊं वाको। ब्रह्मासुत सतयुगमें भाषो॥ पुष्पद्वीप है श्वेत अकारा। सब ब्रह्मण्डनसों है न्यारा॥ जो कोउ जाय बहुरि नहिं आवे। आवागमन सकल बिसरावे॥ जो कोउ गयो बहुरि नहिं आयो। देही दिव्यरूप अति पायो॥ सोलह बरष उमिरि नितरहै। अजर अमर नित आनँद लहै॥ बूढ़ा बाला होय न तरुणा। षोड़श भानु रूप जहँ धरणा ११ तत्त्वस्वरूपी काया पावे। भवसागरमें बहुरि न आवे। पांचतत्त्व बिनहै थिरथायो॥ ना वह बन्यो न कृत्य बनायो॥ ओर छोर कछु दीखत नाहीं। कबसों है औ कबसों नाहीं॥ है अडोल मर्याद न ताकी। बेपरमान वेद यों भाषी॥ कछू कछू धरिध्यान बतावे। वेद पुराण पार नहिं पावे॥ भानु अनन्त सरिस उजियारो। पिण्ड ब्रह्मण्ड दोउते न्यारो॥ लोकमध्य अविचल निजधामा। श्वेतस्वरूप अगम पुरनामा॥ अगमपुरी निरधारा ऊंची। हंस लहैं जिनकी मति ऊंची॥ बेहद लोक बन्यो अतिभारी। भानु असंख्य सरिस उजियारी १२॥

दो० हदकहूं तौ है नहीं बेहद कहूं तौ नाहिं॥

१ देखने में न आवै॥

ध्यान स्वरूपी कहतहौं बैन सैनके माहिं १३

चौ० अतिउज्ज्वल रवि दृष्टि न ठहिरे। मणिहीरा लागे जहँ गहिरे॥ कई रङ्गके हीरा भाखे। कलश कँगूरा अस्थिर राखे॥ ता भीतर द्रुम बहुत अशोका। अक्षयवृक्ष फललगे निरोका॥ कल्पवृक्ष बहुरङ्ग बिरङ्गा। फल अरु पात फूल इकसङ्गा॥ कोमलदल शोभा अतिभारी। अजर पुरुषदर्शन अधिकारी॥ चेतनरूप गहर अतिछाहीं। साधुरहत तिनकी परछाहीं॥ षोड़श रवि सम देह स्वरूपा। हरिरस मदमाते निधिरूपा॥ उन वृक्षनके निचनिच मंदिर। अनगिन महल महामठसुन्दर १४ महलमहलपर ध्वजा पताका। पुरुषोत्तम सो नाम लिखिराखा॥ ध्वजा पताका लहरत ऐसें। सिमिटि बीजुरी बहुतक जैसे॥ रतन जटित तिनकी अँगनाई। बैठत उठत चलत हर्षाई॥ काम क्रोध नहिं लोभ अधीरा। निर्मल दिशा शील गुण धीरा॥ जहां न आलस नींद जँभाई। भूखप्यास मलता नहिं भाई॥ मैल पसीना आँसू नाईं। दिव्य देहधरि रहे गुसाईं॥ एक रूप एकै गतिपाई। एकः बरण एकै सबदाई॥ संशय शोक रोग नहिं दहे॥ मगनरूप मन आनँद लहे १५ षोड़शवर्ष अवस्था जितही। गुण पौरुष हरिजिन के अतिही॥ दिव्यवस्त्र आभूषण अङ्गा। श्यामगात छबि सुभग अनङ्गा॥ जुलफैं लटकि रहीं कजरारी। कुण्डल छबि सोहत अधिकारी॥ नासामोती सुबके सुढारा। सुन्दर तिलक लगत अतिप्यारा॥ दीरघ दृग कछुक अरुणाई। माथे मुकुट जटित ललिताई॥ घरघर शुचि आसन सिंहासन। और महासुखहैं हरिदासन १६॥

दो० भयमेटन औ तमहरण तुमहिं नवाऊं सीस॥
चरणदास चरणन परो भक्तिकरो बकसीस १७
गुरु शुकदेव कृपाकरि दीन्हों भेद लखाय॥
साधुनकेपग पूजते सकल व्याधि मिटिजाय १८
आस पास हरिजिन रहैं मध्य ईश दरबार॥

१ सुन्दर॥

रसिक केलि बहु कुंजहैं ललित द्वारहैं चार १६
राजमहल जनपति रहैं कापै वरण्यो जाय॥
गिनत शारदा छविअधिक गौरीसुतछकिजाय २०

चौ० भानु अनन्त सरिस उजियारो । वा मण्डलको रूप विचारो॥ मतुल और काश को लाऊं । बैन सैन दै ताहि बताऊं॥ चन्द सूर वह रेनि चीन्हो। हित दृष्टान्त सो पटतर दीन्हो॥ आदि अनादि पुरातम ामा। जैसे आदिपुरुष घनश्यामा॥ श्वेतहिरूप स्वरूप सुगन्धा। सहज हक जहँ उठत सुबन्धा॥ चार द्वार बहु बाजन बाजैं। अनहद शब्द महा ननिगाजैं॥ दिव्यरूप जो लगे किवाँरा। तिनके आगे बाग सुढारा॥ रो बाग अद्भुत है भाई। दूजे द्वार महाअरुणाई २१ तीजे द्वार बाग पियराई। चौथे ऊदो है थिरयाई॥ उन बागन के आसा पासा। बहुत भवन जहँ साधु निवासा॥ मंदिर मण्डप बहुत सुढारी। श्वेत वरण सुन्दर अधिकारी॥ साधुसन्त जहँ हरिजन पूरे। दास सुभाव भावना शूरे॥ षोड़श भानु कि सुन्दरताई। जगत जीति पहुँचै जो जाई॥ सखाभाव पहुँचत वहि ठाई। सखीभाव भीतर को जाई॥ धरै स्वरूप अनूपम भारी। सदा सुहागिनि हरि पियप्यारी॥ परमपुरुष पुरुषोत्तम पावैं। निकटरहैं नित केलि बढ़ावैं २२ चारो मुक्ति जहाँ करजोरैं। भाव बताय तान बहु तोरैं॥ दरशन कारण की सुखदाई। धरे स्वरूप रहैं हरषाई॥ रतन जटित जहँ भूमि सुहाई। कोटि भानु छवि रहत लजाई॥ एकसमय नित ऋतु छविपावत। शीत उष्ण पावस नहिं आवत॥ ऋतु वसन्त पीरी छवि सोहै। बनघन कुंजलता मनमोहै॥ निज वृन्दावन है वह ठाहीं। सदा बसो मेरे मनमाहीं॥ दिव्य फूल फूले बहुरंगा। बिन ऋतु फूले रंगबिरंगा॥ सकल सखी विचरत हरि संगा। गोरि सखो श्याम हरिअंगा २३॥

दो० पुष्प जु फूले नितरहैं मोरैं ना कुम्हिलाय॥
कई वरण कइ रंगसों अति सुगन्ध दरसाय २४

[1] सालोक्य॥

चौ० उन पुष्पन को नाम न जानौं। कहा नामलै ताहि बखानौं॥ बहुत वृक्ष कुंजन घनछाहीं। फल अरु फूल लगे उनमाहीं॥ काहू द्रुमन फलै नहिं फूला। पुष्परूप ह्वै आपहि झूला॥ कोऊ लाल रूपह्वै छायो। कोऊ श्वेत रूप मन भायो॥ रंग रंग के वृक्ष बखाने। सो पुरुषोत्तमके मनमाने॥ वनके माहिं बहुत जहँ क्यारी। पुष्प रंग छबि न्यारी न्यारी॥ कई भाँति की बास तरंगा। मगन रूप बोलत स्वरभंगा॥ वनविच श्वेतरूप छबिनाना। गोल चौतरो रूपनिधाना॥ इकरस चेतन परम सडोला। कोटि भानु छबि अमर अडोला॥ जहँ परिकर्मा सखी सहेली। बारह भानु रूप अलबेली २५ दिव्य दमक जहँ हीरा लागे। सात रंगके झिलमिल तागे॥ ऊदा लाल श्वेत अरु पीरा। हरित श्यामलहरी अतिधीरा॥ तापर चौंसठ खम्भा दमकैं। मानौं कोटि भानु छबि झमकैं॥ खम्भन लगे लाल अरु मुक्ता। पन्ना लगे बेलि संयुक्ता॥ मूंगा लाल पिरोजा भारी। ध्यान धरो ताको नरनारी॥ इक सबलगे बखानौं ऐसे। जैसी युक्ति लगे हैं तैसे॥ जड़ लालनकी विद्रुम डारी। पन्ना पान वृक्ष गतिधारी॥ चुन्नी पँचरँग फूल सुहाये। फल मुक्ताहल झुकत झुकाये॥ और बनी बहु चित्रकारी। बेलि बक्र बूटा अधिकारी॥ हीरा मोती चेत न होई। जानै साधू बिरला कोई २६॥

दो० ताकी छबि अति लहलहै शोभा सरस सुजान॥
लगो चँदोवा दिव्य अति चेतन करो बखान २७

चौ० लगे चँदोवा झालरि मोती। मानौं उडुगण झिलमिल ज्योती॥ झालर बनी चँदोवा केरी। दिव्य दृष्टि करि साधुन हेरी॥ तापर रंगमहल की शोभा। चेतन आनँद सुखकी गोभा॥ अस्थिर इकरस भीत सुढारी। बने झरोखा अद्भुत वारी॥ अजब कँगूरा चमक सुढारे। चौंसठ कलशलगे अतिप्यारे॥ रतन जटितकी खिड़की सोहै। ताके आगे दिनकर कोहै[1]॥ भीत झरोखा कलशन माहीं। नगपन्ना लागे सबठाहीं २८॥

---

१ आदित्य दिवाकर भास्कर प्रभाकर सहस्रांशु दिनेश लोचन हरिदश्व विभावसु दिनकर द्युमणि तरणि मिहिर पूषा [illegible] नाम॥

गल जंद जड़ाऊ। नौरतननके बाजू बाऊ॥ पहुँची फुंदा कहाछवि ग
सम तुल ताकी कहा बताऊं॥ दिव्य जहांगीरी करमाहीं। ताकी सम
कलमें नाहीं ३४ रतन चौकमें लाल विराजें। शोभा गावत मो मन ल।
रतन चौकहै पीठ हथेली। लागी जँजीर मुँदरियन भेली॥ चौकी सुघर।
परराजै। कटिकिंकिणि घुंघुरुध्वनि बाजै॥ युगल चरण पैंजनि झनक
दिव्य टेर तिनमें ठनकारे॥ कोटि चन्द्र दश नखपर वारूं। तलुवन ि
इकीस निहारूं॥ बायें अंग राधिका प्यारी। कोटि चंद्रछबि मुखपर वार्
युगल सखी लै चवँर दुरावैं। हिरदय हरपि महासुख पावैं॥ खंभ खंभ ि
सखी सहेली। चौदह खड़ी ईश अलबेली ३५ और सखी बहुतक बहिठा
शोभा जिनकी कहत लजाऊं॥ नित्य किशोरी गोरी सारी। पाँच तत्त्व
गुणे ते न्यारी॥ दिव्य वस्त्र आभूषण जाना। अधिकरूप छवि बारहमान
कजरारी कच लटकें बेनी। मोतियन माँग भरी छविपैनी॥ चूड़ामणि
हनो अति नीको। शीशफूल अरु बेणी टीको॥ करणफूल सँग बन
लागी। झुमके थिरकें महा बुभागी॥ अंजन आँजे नैन दारे। ती पे
नियारे पिय प्यारे॥ घूंघरवारी अलकें लटकें। बेसरि नासा छवि लिये म
कें ३६ चम्पाकली नौलरी माला। चन्दन हार सु पहिरे बाला॥ कठुल
जैसे गले जनेऊ। अरु हिय चौकी महाअभेऊ॥ सखीसिंगार हार सबसाधे
बाजूबंद बाहुन पर बाँधे॥ सदा सुहागिनि पहिरे चूरी। सुबक पछेली
गली रूरी॥ कँगनी अरु पहिरे जहँगीरी। रतनचौक छवि लगी जँजीरी
छाप छला अरु पहिरे मुँदरी। नुहसत पहिरे सुन्दर अँगुरी॥ पांवन में मृ
नूपुर बाजैं। नखशिखलों आभूषण साजैं॥ और सखी बिसरीं बनमाहीं
सो काहू विधि गिनी न जाहीं ३७॥

दो० सुन्दर छवि पियरे वसन झुण्ड सखिन को जान॥
कोउ पुञ्ज ऊदेवसन सुघर सवाँरी आन ३८
लालवसन बहुतक सखी श्वेत वसन बहुनार॥

---

१ सब रंग तन २ तिरछे ३ चन्द्रेकी समान लहरें जिनमें होती हैं॥

नील बसन बहुभामिनी सबको रूप अपार ३९॥
हरे बसन नारी घनी घनी गुलाबी बेप ॥
बहुत झुण्ड कइ रंगसो गायसकैं नहिंशेष ४०॥

चौ० निजवन चौंसठि खंभे माहीं। होत अखण्ड रास वहिठाहीं॥ झुण्ड वि यों वनि वनि आवें। हुलसि हुलसि लालन दिगधावें॥ रासकेलि खेलें हु रंगा। सदा विहार करें पिय संगा॥ कबहूं घुमरि घुमरि घुमरावें। नैन न दै भाव बतावें॥ कबहूं थेइ थेइ थेइ थेइ करें। कबहूं अँगुली नासा धरें॥ कबहूं कर उठाय गति चालें। सांगोपांग ब्रतावत हालें॥ कबहूं ठुमुक ठुमुक ग धावें। घुंघुरूकी गति अधिक बजावें ४१॥

दो० कहा बुद्धि कह कहिसकूं रासकेलि को साज ॥
अद्भुत लीला है रही वर्णत आवे लाज ४२॥
गृह अखण्ड लीला अमर नित वृन्दावन रास ॥
नित बिहार जहँ होतहै चरणदासको वास ४३॥
गौरीसुत[1] गाय न सकें नहीं शारदा वामे[2] ॥
चरणदास कह बुद्धिहै बरणि सके निजधाम ४४॥
बड़ी दया मोपै करी कृष्ण कुँवर सुन लाल ॥
बाणी आप बनायके कीन्हों मोहिं निहाल ४५॥
मम हिरदय में आयके तुमहीं कियो प्रकास ॥
जो कछु कहो सो तुम कहो मेरे मुखसों भास ४६॥
आदि पुरुष परमातमा तुमहिं नवाऊं माथ ॥
चरणन पास निवास दै कीजे मोहिं सनाथ ४७॥
तुम्हरी भक्ति न छांड़हूं तन मन शिर क्यों न जाव ॥
तुम साहिब मैं दासहूं भलो बनो है दाव ४८॥
गुरु शुकदेव कृपाकरी मूरख भयो प्रवीन ॥
मम मस्तकपर करधरयो जांनि तिपट आधीन ४९॥

१ गणेश २ ब्रह्मा॥

कोटिनामको फल लहै तिरवेणी¹ अस्नान॥
शोभा गावै लोक की मूरख होय सुजान ५०
पढ़ै सुनै जो प्रीतिसों पावै भक्ति हुलास॥
नित उठि तू कर पाठ यह चरणदास कहि भास ५१
प्रेम बढ़ै अघ सब हरै कलह कल्पना जाय॥
पाठ करै या लोकको ध्यान करत दरशाय ५२

इति श्रीशुकदेवानुदासचरणदासकृतअमरलोकनिजधामनिजस्थानपुरुषोत्तमपुरुषविराजमानमाहिमेनिरोदुर्लभोलीलासम्पूर्णम्॥

अथ श्रीगुरुचेलासंवादधर्म्मजहाजप्रारम्भः॥

शिष्यवचन॥

दो० अर्ज करै कर जोरिकै यह चरणनको दास॥
एहो श्री शुकदेव जी कछु पूछन की आस १

गुरुवचन॥

पूछौ मनको खोल करि मेटौं सब सन्देह॥
अरु तुम्हरे हिरदय विषे सदा हमारो गेह २

शिष्यवचन॥

मैंतो चरणहिदास हौं तुम तौ परम दयालि॥
एकन पग पनहीं नहीं एक चढ़ै सुखपाल ३
यही जु मोहिं बताइये एक मुक्ति को जाहिं॥
एक नरकको जाय करि मार यमोंकी खाहिं ४
एक दुखी इक अतिसुखी एक भूप इक रंक॥
एकन को विद्या बड़ी एक पढ़े नहिं अंक ५
एकन को मेवा मिलै एकन चनेभि नाहिं॥

१ जहांपर कि गंगा यमुना और सरस्वती परस्पर मिली है॥

कारण कौन दिखाइये करि चरणनकी छांहिं ६॥
यही मोहिं समझाइये मनको धोखा जाइ॥
है करि निस्संदेह मैं चरण रहौं लपटाइ ७॥

गुरुवचन॥

जिन जैसी करणी करी तैसेही फल पाय॥
भुगतत हैं वे जगत में ताको बदला आय ८॥

शिष्यवचन॥

कही तुम्हारी हिय धरी व्यास पुत्र शुकदेव॥
सुगत कुगत करणीन को भिन्न भिन्न कहु भेव ९॥

गुरुवचन॥

अब मैं वर्णन करत हौं पै शिष धर्मजहाज॥
तामें बैठे बिधि सहित रहनी गहनी साज १०॥
जो कोइ करणी ना करै बहुत करै बकवाद॥
रीता जानौ तासु को छूटैना जग व्याध ११॥
कथनी के पूजी नहीं करणी है ततसार॥
तामें लाभहि लाभ है बदला दे कर्तार १२॥
सुरति कीन्हीं साधु की तनमन लागी आग॥
बिन करणी कैसे बुझै हरिसों नाहीं लाग १३॥
कथनी कथि दभी भये कहैं दूर की बात॥
अन्तर्गमें करणी नहीं मनहीं माहिं लजात १४॥
जानिये जगमें सिद्ध दखात॥
बचन न साधिया तिहाविध रापी वात १५॥
बचन साधि जो लेय॥
[illegible] भक्ति चितदेय १६॥
[illegible] नस्त्रय लाय॥
[illegible] को सुहाय १७॥

चौ॰ बिन करणी थोथी सब बातें। जैसे बिन चंदाकी रातें॥ताते समुझि करो तुम करणी। बिन बोये नहिं उपजै धरणी॥ जैसा बोवे तैसा लुनिये। जानत ज्ञानी पण्डित गुनिये॥ कीकर नींब बवे सोइ पावे। अरु मेवा बोवे सोइ खावे॥ पिछिली करणी अबके पावे। ताहीको नर करम बतावे॥ होनहार अरु भाग बही है। परालब्ध सोइ बड़ो कही है॥ खोटी करणी से दुख भारी। होवे रंक पुरुष अरु नारी॥ कहैं शुकदेव सांच यह जानो। चरणदासले मनमें आनो १८॥

दो॰ कोइ कोढ़ी कोइ आंधरा कोइ रोगी निर्धन॥
अंगहीन मांगत फिरै कोइ भूखा बिन अन्न १९
बिना बुद्धि कोइ बावरे कोइ छोटेतन हान॥
कोइ कर्मोंसे अतिदुखी जीवै ना सन्तान २०
कोई जगत अधीनहै कोई बिना प्रतीति॥
कोइ सब बस्तूहीन है यह पापों की रीति २१
जन्म मरण बहु भांतिके नाना भवन निवास॥
करणीहीसे होतहै ऊंच नीच घर बास २२
पशु पक्षी अरु चर अचर सोभी छूटे नाहिं॥
कर्मोंहीं की चालसों भुक्के जगके माहिं २३

चौ॰ भांतिभांतिके कष्ट घनेही। पावत हैं वे कर्म सनेही॥ इनहीं आंखिनसों तुम देखो। अपने मनमें करि करि लेखो॥ तन छूटे पुनि नरक गहे हैं। नाना विधि के त्रास सहे हैं॥ नरकनकी गति परगट जानों। शास्त्रमाहिं सबकियो बखानो॥ अरु इक नरक जगतकेमाहीं॥ कोतवाल हाकिमके ठाहीं॥ खोटे कर्मन सों का जावे। त्रास सहैं बहुते बिरलावे॥ शुभकर्मी जो निकसे आगे। उठि हाकिम चरणनसेलागे॥ कहिशुकदेव सांचहै करणी। सुनि रणजीत करैसो भरणी २४॥

दो॰ शुभकरणी पिछिली करी उज्ज्वल पाई देह॥

१ बेकार, २ मज़बूर, ३ भाग्य॥

शोभा जिनके भागकी चरणदास सुनिलेह २५

चौ० तनसों सुखी औरधनधारी। सुतनारी सुन्दर संसारी॥ नाना विधिके भोग करतहैं। अरु बहुतन के दुःख हरतहैं॥ ऊंचे महल महासुखदाई। जहां विराजतहैं मनलाई॥ तीनो ऋतुमें वे सुखपावें। बहुतक लोग टहलमें आवें॥ पिछिली करणी करम जुलाये। जैसे जैसेही सुखपाये॥ काहू मिली तुरंग सवारी॥ काहु पालकी झालरदारी॥ काहू गज पाये बहुतेरे॥ लाखों पुरुष रहतहैं चेरे॥ श्रीशुकदेव कहै ये बैना। चरणदास लखु अपनेनैना २६॥

दो० लाखों पगसों लगिरहे रहें जीविका आस॥
ईश्वर तिनके जइहैं वे हैं चरणहिं दास २७

चौ० ऐसी ईश्वर पदवी पाई। पुण्य भताप कहा नहिं जाई॥ सुनिके शुभकरमनको कीजो॥ खोटे कर्म सभी तजि दीजो॥ इनहीं आंखिनसों सबसूझै। बुद्धिमान मत्यक्ष जु बूझै॥ कोई चढ़े जाहिं रथमाहीं। सूरजमुखी तासुकी छाहीं॥ कोइकिरोड़पति लाखनवारा। कोइ हजारनको व्यवहारा॥ कोई थोड़े में सुख पावें। ह्वैकर सुखी बहुत हरपावें॥ पिछिली जैसी करी कमाई। तैसी तैसीही निधि पाई॥ शुकदेव कहि यों आलस हरियो। चरणदास शुभकरणी करियो २८॥

दो० सुर दानव अरु अप्सरा मनुष यक्ष गण मेत॥
कर्म्मोंही से होतहैं पाप पुण्य का हेत २९

चौ० नाहित हरि देहष्टानाहीं। एक दृष्टि सब ऊपर छाहीं॥ जो जैसी करणी करिलेवै। हरि तैसाही बदला देवै॥ अपना किया आपही पावै। परालब्धि वह नाम कहावै॥ घटै बढ़ै वह नेकु न क्योंही। पावै वही जु करणी ज्योंही॥ नारि पुरुष मिलिकरि व्यवहारा। करणीसों उपजै संसारा॥ वही खेतमहँ वंवै किसाना। भांतिभांतिके उपजें दाना॥ बाग लगावै सींचै माली। जब फल लागें डाली डाली॥ पक्षी अरु मानुष सुखपावैं। चरणदास शुकदेव सुनावैं ३०॥

---

१ बहदोष॥

दो॰ माली करणी जो तजै सींचै ना परमास ॥
जब वह बाग उदासहो दिन दिन वाको नास ३१
दया धर्म पुण्यदानही वड़ करणी है सांच ॥
तीनलोके चौदहै भुवन माहँ न आवे आंच ३२

चौ॰ तीरथ व्रत कछू जो कीजै । अरु काहूको दान जु दीजै ॥ याके भी फल नीको पावै । चरणदास शुकदेव दिखावै ॥ शुभकरणी करि भाँउपावै । ताते हरिके निकट रहावै ॥ करणी योग महा बलदाई । ईश्वर पावै मुक्ताई ॥ चारमुक्ति करणी सों पावै । मन करणीसों ज्ञान जगावै ३३

दो॰ उज्ज्वल कर्म सदाकिये अर्पै हित भगवान ॥
लही मुक्ति सालोक्यही जन्म मरणकरि हान ३४
सेवाकरि भगवान की निकट विराजै जाय ॥
निकट मुक्ति पाई तिन्दहुँ इन्दहुसे अधिकाय ३५
ध्यान किया श्रीकृष्णका भये जु वाके रूप ॥
तिन स्वरूप मुक्ती लही तनधरि अधिक अनूप ३६
पांचो मुद्रा योगबल दर्शावै काढे आन ॥
मिला ज्योतिमें ज्योतिही यह सायुज्य पिछान ३७
सबही करणी है बड़ी भक्ति सबन शिरमौर ॥
चाहै पकरि हरिहेत करि राखैं अपनी ठौर ३८
अजामील सोंभी अधिक जो कोउ पापी होय ॥
नाम जपै हिय शुद्धसों पातक जावैं खोय ३९
महिमा गुरु के ध्यानकी को करि सकै बखान ॥
मेरेमन निश्चय यही जाय मिले भगवान ४०
करणी सों सत्ती भये करणी सों दातार ॥

१ स्वर्ग, मृत्यु, पाताल २ भू, भुव, स्व, मह, जन, तप, सत्य, तल, अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, पाताल ३ प्राण, अपान, समान, उदान, व्यान ४ दशौंइन्द्री ओख, कान, नाक, श्रवण, जिह्वा, हाथ, पावँ, त्वचा, लिंग, गुदा ॥

करणी सों शूरा भये जावे स्वर्ग मँझार ४१
भांति २ के सुख जहां भोगे भोग अपार ॥
धर्म पन्थ कोई चले शूद्रा के नर नार ४२
चारि समय नित नेम करि सदा रहे निष्पाप ॥
गिना जाय हरि जन विषे होयनहीं जन ताप४३
जिन जैसीकरणी करी सो निष्फल नहिं जाय ॥
जाका बदला होयगा शुकदेवा कहे गाय ४४

चौ० ब्राह्मण करणी ब्राह्मणहोई । क्षत्री कर्मसों क्षत्रीसोई ॥ वैश्य कर्म सों वैश्य कहावे । शूद्र कर्मसों शूद्र लखावे ॥ नहीं तो सब की देह बराबर । पांचतत्त्व त्रैगुण सों कर कर ॥ कान आंख मुख नासा एकी । शीश हाथ पग कायादेखी ॥ एकबाट है सबही आवे । एकहि भांतिसबे बनिधावे ४५ ॥

दो० जाति वर्ण अरु आश्रमें करणी सों दर्शाय ॥
चरण दास निश्चय करो मूरुख विरले पाय ४६
धोबी छीपी आदि दे ये छत्तीसों पौन ॥
करणी के सब नाम हैं जैसी करै सो जौन ४७

चौ० कर्म्महीं से जग यह भासे । कर्म्महीं से फिर है नासे ॥ कर्म्म प्रलय उतपत्ति करावे । होनिहु कर्म्म ब्रह्म दे जावे ॥ परलय समय कर्म जी साथा । बुरे भले जो लागे गाथा ॥ संगहि जाय रहे माया में । माया जाय लगत काया में ॥ बासा करि हरि चरणन माहीं । होय लीन वह मिटे जु नाहीं ॥ पूंजी कर्म्म जु माया पासा । फिर उतपतिकी वाको आसा ॥ परलय कालबदी ते जबहीं । उतपति करै जगत हू तबहीं ॥ चरण दास तुम ऐसे जानो । कहे शुकदेव सांचकरि मानो ४८ ॥

दो० रहत प्रलय महँ वस्तुत्रः इनका नाश न होय ॥
सोमें वर्णन करतहों बुधि आंखन सों जोय ४९

चौ० काल अकाश जीव अरु माया । पाप पुण्य प्रत्यक्ष बताया ॥ फिर

१ चारि अर्थात् ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र २ चारि अर्थात् ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यास ॥

उतपति इनहीं सों होई। जाने पण्डित विरला कोई ॥ काल न एको को पुराना। मलय होय सो निरचय जाना ॥ फिर परलय को लागा रहे। को समान आपना गहे ॥ उतपतिमें और नहिंहोई। परलय हुयेजो उतपति नोई ॥ कर्म धरे रहे ज्यों के त्योंही। उलटे पलटे नाहीं क्योंहीं ॥ जैसे के तैसे तन धारे। कर्म लगे रहे उनके लारे ॥ कहि शुकदेव कर्मगति भारी। चरणदास कोइ छूटे विचारी ५० ॥

शिष्यवचन ॥

दो० चरणदास यों कहत है सुनो गुरू शुकदेव ॥
ज्यों करि होवहि कर्महू ताको कहिये भेव ५१

गुरुवचन ॥

चौ० कहि शुकदेव संदेह मिटाऊं। ज्योंकी त्यों पूरी समुझाऊं ॥ खोटी करणी नरकहि जावे। पाप क्षीण मृतलोकहि आवे ॥ भले कर्म जा स्वर्ग में जाग। पुण्यक्षीण मृतलोकहि डारा ॥ ऐसे लोक लोक फिरि आवे। कर्म न छूटे दुख सुख पावे ॥ ॥ जैसे कर्म छुटे सो कहूं। तोपै दया करनदीरहूं ॥ सोंइ कर्मनु सकल निवारे। शुभ करणी को नीके धारे ॥ जाके फलको मन नहिं लावै। है निष्कर्म परमसुखपावै ॥ फल त्यागे सोइ चरणदासा। [illegible] की [illegible] ५२ ॥

दो० जो पावै निर्वानपद आवागमन मिटाय ॥
जन्म मरण होवै नहीं फिरि फिरि काल न खाय ५३

शिष्यवचन ॥

दो० जो जो कहि शुकदेव जी सो सो [illegible] ॥
चरणदास को दीजिये [illegible] ५४

गुरुवचन ॥

[illegible] ॥
[illegible] ५५

पहिले साधे वचन को दूजे साधे देह ॥
तीजे मन को साधिये उर सों राखै नेह ५६
जिनहीं के उपदेश को राखै अपनो चित्त ॥
ताको मनन सदा करै भूलै ना नित वृत्त ५७

शिष्यवचन॥

जो जो कही सो जानिया एहो श्री शुकदेव ॥
साधन तन मन वचन को सबही कहिये भेव ५८

गुरुवचन॥

शिष्य सों तोसों कहत हौं नीके सुन दे कान ॥
ज्यों ज्यों कर्म बचैं दशो ताकी करि पहिचान ५९

चौ० प्रथम वचन के चार सुनाऊं। तेरे चितमें नीके लाऊं॥ एक यही जो झूंठ न बोलै। सांचकहै तब हिरदय तोलै॥ झूंठ कहन को पातक भारी। जोजप करै सुदेह उजारी॥ झूंठेका जप लागत नाहीं। सिद्धहोय नहि निष्फल जाहीं॥ अरु झूंठेकी नहिं परतीतें। झूंठेकी खोटी सब रीतें॥ दूजे निन्दा नाहीं करिये। परके औगुण चित्त न धरिये॥ निन्दा का भारी है पाप। यासों भी निष्फल है जाप॥ तीजे कड़ुआ वचन न भाखै। सब जीवन सों हितही राखै॥ खोटा वचन महा दुखदाई। जो साधै सो अतिसुखदाई॥ खोटा वचन तपस्या खोवै। नरक माहिं लै जाय समोवै॥ मीठे वचन बोलि सुखदीजै। उनके मनका शोक हरीजै॥ कहि शुकदेवा चौथा सुनिये। चरण दास लै मनमें गुनिये ६०॥

दो० चौथे मौन गहे रहै लक्षण अधिक अमोल॥
कर्म लगैं जग बात सों टरि चरचा मैं बोल ६१

चौ० तन सों तीनि कर्म जो लागै। जो मैं कहूं तुम्हारे आगे॥ चोरी जारी अरु हिंसाहै। इनपापन सों भारी भयहै॥ कर्म छुटै जाकी विधि गाऊं। भिन्न भिन्न तोको समुझाऊं॥ तन सों चोरी कबहुं न कीजे। काहूकी

१ जिनारा॥

नहिं वस्तु हरीजै ॥ चोरी त्यागे सो सतवादी । तापर रीझैं राम अनादी ॥ जारीके कर्म ऐसे मानों । परतिरिया को माता जानों ॥ तीजी हिंसा त्यागहि कीजै । दया राखि जीवन सुख दीजै ॥ दया बराबर तप नहिं कोई । आतम पूजा तासों होई ॥ कर्म छुटन की भारी गैला । ज्यों साबुन उज्जल पट मैला ॥ शुकदेवा कहे तन के कहे । तीनि करम अब मन के रहे ६१

दो॰ कहौं जु मनके तीनि अब भीनी जिनकी बात ॥
गुरु दिखाये दीखई बिधि औरी न दिखात ६३
खोटी चितवनि बैरही अरु तीजा अभिमान ॥
इन सों कर्म लगैं घने मेटैं संत सुजान ६४

चौ॰ खोटी चितवनि खोलि दिखाऊं । जासों कहियेसो समुझाऊं ॥ कबहूं चितवै पर नारी को । कबहूं चितवै फुलवारी को ॥ मनही मन में भोगै भोग । हाथ न आवै उपजै शोग ॥ कबहूं चितवै वाको मारों । कबहूं चितवै फांसी डारों ॥ कबहूं चितवै द्रव्य चुराऊं । वाको धन अपने घरलाऊं ॥ कबहूं चितवै ठगई करों । माल बिराना छलकरि हरों ॥ भांतिभांति चितवनि उपजावै । बुरे मनोरथ कर्म लगावै ॥ ताते याका करे उपाऊ । होय जो साधू कर्म छुटाऊ ॥ जो चितवै तौ हरि गुरु चरणा । ब्रह्मविचार सदाही करणा ॥ खोटी चितवनि चितवै नाहीं । सदारहै थिरताके माहीं ॥ कहि शुकदेव सो हिरदै रहै । इत उतको चित नाहीं बहै ६५ ॥

दो॰ दूजा कर्म जुबैरहै महा पाप की पोट ॥
सदा हिया जलता रहै करै खोटही खोट ६६

चौ॰ बैर भावमें औगुण भारी । तनछूटे जा नरक मँझारी ॥ बैरी याद रहै मन माहीं । हरि सों हेत लगन दे नाहीं ॥ ताते बैर भाव नहिं कीजै । याको कर्म लाग नहिं दीजै ॥ अरु तीजा जानौ अभिमाना । गुरू कृपा सों ताको जाना ॥ हूं हूं हूं हूं करतारहै । नीची होयतौ अन्तर दहै ॥ कबहूं फूलै मन के माहीं । मो समान कोउ ऊंचा नाहीं ॥ मैंहीं योंकर योंकर किया । मो बिन कारज कछू न सरिया ॥ अपने को चतुरा बहु जानै । और

सबन को मूरख माने॥ अभिमानी ऐसा मन लावै। हरि के गुण किरिया बिसरावै॥ गर्व भरा खोटी वृति धारै। अपने मनमें कबहुं न हारै॥ शुकदेव कहै याहि पहिचानो। नरक जायगा निश्चय आनो॥ रणजित सुनु अभिमान न कीजै। कर्म बचाय परम सुख लीजै ६७॥

दो० कृत्य धनी बेमुख भये गुरु सों विद्या पाय॥
उनको जानै तनकही आपन को अधिकाय ६८

चौ० जैसे इक दृष्टान्त सुनाऊं। कथा पुरानी कहि समुझाऊं॥ महापुरुष इक स्वामी पूरा। ज्ञान ध्यान में था भरपूरा॥ लक्षण सभी हुते वा माहीं। आठपहर हरिही की घाहीं॥ उनको शिष्य आन इक भयो। वहि उपदेश जु नीको दयो॥ करिकै प्यार निकट जोराखे। प्रीतिकरी अरु सबकछुभाखे॥ फिरि रामतकी आज्ञा लीन्ही। उनहूं करि किरपा तब दीन्ही॥ पहुंचा एक नगर अस्थाना। ह्यांके नरन सिद्ध बड़जाना॥ ठहराया अरु पूजाकीन्ही। बहुत नरनने कण्ठीलीन्ही॥ बहुतक प्राणी आवैं जावैं। संध्या भोर शीश बहुनावैं॥ महिमा देखि फूल मनमाहीं। कहा कि हमसम गुरुभीनाहीं६९॥

दो० गद्दी पर बैठारहे तकिया बड़ी लगाय॥
बहुतरहैं आज्ञा विषे शिरपर चँवर ढुराय ७०

चौ० गुरु परताप नहीं वह जानै। अपनीही बुधि बड़ी जुठानै॥ मूरख आगे क्यों नहिं भया। दीनहोय करि द्वारेगया॥ थोड़ेही से बहु इतराना। गुरुकी कृपा प्यारना जाना॥ बार बार शोचै मन सोई। हमरो गुरु क्या ऐसो होई॥ उनको तौ नर कोइ कोइ जानै। हमको सिगरो देश बखानै॥ दिन दिन बढ़ता दीखै आगे। मेरे भाग बड़ेही जागे॥ मेरे मनमें ऐसी आवै। उनका शिष्य जु कौन कहावै॥ वहीं अचानक गुरु ह्यां आया। बैठेही शिर शिष्य नवाया ७१॥

दो० जैसे आते बैसने करता वह दंडौत॥
ऐसीही गुरुसे किया आदर किया नवौत ७२

१ आनन्द॥

चौ० देखि गुरु मन हाँसी ठानी। वाको जानो वह्न अभिमानी॥ सों कहिकरि वहु झिड़कारी। कहा कि तू अभिमानी मेरा॥ नीकी तेरी गई खोई। वसी मूर्खता घटमें सोई॥ मेरा सब उपदेश बिसारा। मोहनको मनमें धारा॥ दश बीसन को शिष्यके भूला। गद्दीपर बैठो फूला॥ शिष्यनें कहा और क्या कीया। वही कियो आज्ञा तुम दीया

प्य सखा

हमरी दे

वहु अधिकाई॥ फिरि हँसि गुरु कहि तू अज्ञानी। मैं कहि संगति तैं न जानी॥ मैं कह भक्तनका सँग कीजे।

दिन ज्ञान होय सरसाई। हरि गुरु सों

भई। मैंहीं अविद्या में मतिठई ७३॥

दो० झरना मूंदे ज्ञानके छा

राम रुठावनहीं कियो भई मुक्ति की हान ७४

कहा बात पूजी कहा इतनेमें गयो भूलि।
मति ओछी घट थोथरा तापर बैठा फूलि ७५

विभवै मास ते सिद्ध जो देहे बिसर्जन होय॥
वहवीनो गुरुको तजै जाय नरकको सोय ७६

कछु तपस्या नाकरी नाहिं क्रिया कछु योग॥
नातरु लगी समाधिही ले बैठा तू भोग ७७

मुक्ति पन्थको तजि दिया लई नरककी बाट ७८

इन बातन सों क्या सरै बहुत भयो विख्यात॥
तुमसे अधिकी मूढ़ नर जगके घने दिखात ८०

१ मरताना २ मूर्खता ३ ऐश्वर्य॥

मान न काहूसों करै सबही सों आधीन ॥
समरत हरिकी भक्तिमें जगत काज सों हीन ६१
दशकर्म्मों को जानिये महापापकी खानि ॥
तनमनवचनसँभारियेयहीजुअधिकसयानि ६२
कहूं एक दृष्टान्तही सो परमारथ भेश ॥
सुनि समुझै हिरदै धरै तौलागै उपदेश ६३
रहै सुहावन नगर इक बसैं लोग सुखमान ॥
नर नारी सुन्दर सबै अरु धनवन्त वखान ६४
नयाकरैं जहँ भूपही बरष दिनाके माहिं ॥
संवत बीते तासुको फिर वै राखैं नाहिं ६५

चौ० इकड़ डारदें नदी पारा। जहां भयानक अधिक उजारा॥ आदि ताको भपिजावें। स्वपनासा देखें बिनशावें॥ नयाभूप करि अ मानें। ताको अपना ईश्वर जानें॥ रहें हुकुम माहीं करजोरें। वाको व न कबहूं मोरें॥ छत्तरधारी हाई डारें। सो मैं आगे कही उजारें॥ कई कड़ों ऐसे भये। चेते नाहीं निष्फल गये॥ राजा नया और इक किय सो यह समझा चेता हिया॥ मनही मनमें कहे विचारे। बहुत भूप जं में डारे ६६॥

दो० बरस दिना जब बीति हैं हमहूं को देहैं डारि ॥
सरितांही के पारही अधिकी जहां उजारि ६७

चौ० याकी कछू उपाय विचारों॥ तासेती यह जन्म न हारों॥ एक दिना उन यही विचारा। देखन गयो नदी के पारा॥ जहां भूप जाजाकरि मरते। तिनके हाड़ दई जा गिरते॥ खड़ा जु होय देखि मन आई। नीकी ठौर बनाऊं ह्याई॥ दृष्टिउठाय ऊंचि जो कीन्ही। कामदारको आज्ञादीन्ही॥ वन काटो आज्ञा दइ एना। फरक पांचकोश में जेता॥ सुन्दरसा इक कोट बनाओ। तामें सुन्दर बाग रचाओ॥ करो हवेली ताके माहीं। जैसी

१ नदी २ मकान॥

पनहूं के नाहीं ॥ गिलमें बिछौने परदेलावो। अरु तय्यारी सबै करावो॥
होय चुके जब मोहिं सुनावो। बहुत इनाम अधिक तुम पावो ६८॥

दो० वैसीही बनने लगी जैसी आज्ञा दीन॥
बनते बनते बनचुकी सुन्दर अधिक नवीन ६६

चौ० फिरि राजा को आनि सुनाया। राजा सुनि बहुतै सुखपाया॥
आछी बस्तु वहां पहुँचाई। ह्यां जो रही न सुरति लगाई॥ कहा कि एक
दिना ह्यां जाना। क्षण क्षण होय अवधि की हाना॥ पांचक गावँ कोट के
साथा। किये दिये लिखि अपने हाथा॥ अपना एक हितू मन भाई। भरी
कचहरी लिया बुलाई॥ करि इनाम ताको वह दिया। वाको देखा सांचो
हिया॥ और कहीं जो राजा होवै। वाहि तलाके याहिं जो खोवै॥ वोही
आठ महीने बीते। करणी करि भये मनके चीते १००॥

दो० है निश्चित आनँदभये चिन्ता भय नहिं कोय॥
अपना कारज करिचुके ह्यां ह्वां एकहि होय १०१

चौ० सुखही में वह वर्ष बिताया। अवधि बीति फिरि वह दिन आया॥
तब उमरौव जु घिरि कर आये। नयाभूप करने को लाये॥ येहि सिंहा-
सन सों दियोडारी। कहा कि तुम्हरी बीती बारी॥ ऐसे कहिकर गहि ले
चाले। पार नदी के जंगल घाले॥ शुभकरणी को करि वह राजा। अपने
महलन जाय बिराजा॥ इतसे भी उत सुख बहुभारी। ना कोइ बैरी ना
जंजारी॥ अपनी करणीसे सुखपावै। रहै अशोक न चिन्ताआवै॥ कहि
शुकदेव चरणही दासा। शुभकरणी करि पाया वासा १०२॥

दो० ऐसे मानुष देहको जानहु नगर समान॥
राजा यामें जीवहै शुभकरणी परमान १०३

करनी। जैसी करनी तैसी भरनी॥ शुभकरणीको जो नरधावै। बहुत भाँ
सुख सुरपुरजावै १०४॥

दो० भूप उमरि अपनी किया अपना पूरण काम॥
ऐसेही शुभ कर्म सों तुमहूं पावो धाम १०५

चौ० अरुइक कथा कहौं अतिनीकी। जा सुनि जाय अविद्या
इक राजा था बहु परवीना। सो वह पुत्र बिनाथा हीना॥ एकसमय
रोग जु आया। पुत्र बिना बहुतै कलपाया॥ कौनकाज अब याको
है। जो मेरी देही यह मरि है १०६ यह मन करत सिद्ध इकआया। रा
सब व.दि सुनाया॥ सिद्ध कही सुत गोदपलोसो। बेटाकरि तिहिराज
ठावो॥ राजा कही जु ध्यान लगावो। राज भाग में ताहि बतावो॥
उन कही जु खोलि दिखाऊं। साहूकारक पुत्र बनाऊं॥ वाकेभाग्य लि
यह राजा। ताको सुतकरि कीजै काजा॥ फिरि उन वाको गोद जु
न्हा। वांको राज काज सब दीन्हा॥ कोइक दिनमें उन तन त्यागा।
राज्य करने तब लागा॥ राज्य पितासों नीकी कीन्हा। प्रजाआदि
सब सुख दीन्हा १०७॥

दो० राज करत वर्ष भई सुखते अरु सुख दीन।
नगर मध्य वाके कोऊ बिना द्रव्य नहिं हीन १०८

चौ० एक दिना ऐसो भो काजा। सोवत चौंकि उठा वह राजा॥ भोर
भये सबफौज बुलाई। हरिकी आज्ञा सो समुझाई॥ कहा जहांतक परजा
मेरी। ताको लूटो जाय सवेरी॥ आज्ञा ले सब फौज पधारी। प्रजा लूटि
लीन्हो तिन सारी॥ दूजे कही कि ह्वां तुम जावो। लूटेसबके भवन जलावो॥
घर परजाके सभी जलाये। नीच ऊंचने बहु दुख पाये॥ तीजे वचन भूप
यों भाखो। कहा फौज सों खोज न राखो॥ राखें सों बड़े बड़े नर मेलो।
लड़के बाले कोल्हू पेलो॥ यहसुनि सकलप्रजा घिरि आई। राजा पास पु
कार सुनाई॥ बहुतक राजाभये अनूठो। अपनीप्रजा नहीं कोइलूटा १०९॥

१ दुर्गंत २ बैलोर ३ रोगिपार ४ रजत॥

दो० आपहिले सबको सुख दियो अबसे तुम दुखदाय ॥
कारण यह कहि दीजिये सबही को समुझाय ११०
यह कहि साहूकार ने जो था याको बाप ॥
कुपश चला संसार में बहुत लगाये पाप १११
साहुकार पण्डित घने और बड़ेही लोग ॥
कोल्हूकी सुनि कतलकी बहुतक मानाशोग ११२
आये हैं फरयाद को सुने बिगड़ते काज ॥
सकल प्रजा को मारिकै किसका करिहौ राज ११३
सकल प्रजा तुव शरण हैं बकसि देउ महराज ॥
अपनी अपनी भूमि में फेरि बसें सब साज ११४

चौ० राजा कही सु मैं नहिं जानूं। अपने मुखसे कहा बखानूं ॥ कहा पु-सो इक तुम आनो। जिनका कहा सांच तुम मानो ॥ यह सुनिज्वाब ालहि बारे। आकरि बैठे सबनमँझारे ॥ सो इकनर बहुतै इतबारी। जि-की साखि हती बहु भारी ॥ तिनको लै राजा के पासा। खड़े किये सब एन द्रासा ॥ राजा उठि उनहींके माहीं। मिलि बैठो पुनि वाही ठाहीं ॥ जा कही जुहार की ओरें। ध्यान लगायो सबको मोरें ॥ घड़ीचारि जब ानि लगाया। नभसे शब्द यही जो आया ११५ ॥

दो० ढील भूप तैं क्यों करै इनकी कीजै जेल ॥
बड़े कतलही कीजिये छोटे कोल्हू पेल ११६

चौ० तीनहिं बार लगाया ध्यानी। बारंबार यही भइ बानी ॥ भूप कही ह दोष हमारा। कोपित भयो जो सिरजनहारा ॥ अब तुम परजा सों क-हे देवो। कतल पेलना कोल्हू लेवो ॥ आय नरनकहि सबमेंखोली। सुनि रजा ऐसे उठि बोली ॥ कहन सकल आपस में लागे। हम हैं मूरख बड़े मभागे ॥ हम शुभकर्म कबहुँ नहिं कीन्हे। तिथि पर्बहि केहु दान न दीन्हे ॥

---

१ मारना २ गोहारि ३ पैदा करनेवाला ॥

कथा कीर्तन में नहिं कहे । कुटुंब जालमें पागे रहे ॥ हरिकी भक्ति बिसराई । ताते अब होती मुकताई ११७ ॥

दो० हरिही को बिसराइया पूत महल के काज ॥
नाम रहैगो जगत में सोभी रहा न आज ११८

चौ० चले नरकको निश्चय जैहैं । मार यमों की निरत्रय सैहैं ॥ कांप है सब देह हमारी । आपस में भाषें नर नारी ॥ ऐसेही सब रोरो बोलें व्याकुलभये धरणिमें डोलें ॥ एकठावैं है मता उपाया । सो राजा को जाय सुनाया ॥ करजोरे मुख तृण गहिलीन्हे । नख शिखलौं तनदीन जु कीन्हे ॥ इक पटमास जु हमें बचावो । अपने हरिको अर्ज सुनावो ॥ जामें जप तप धर्म बढावें । बोलेंसांच झूंठ बिसरावें ॥ चोरी जोरी हिंसात्यागें । रातिदिन हरिही सों लागें ११९ ॥

दो० नितप्रति उठि शुभकर्म करि लहैं धाममें वास ॥
काम क्रोध बिसराय करि होय चरणहीं दास १२० ॥

चौ० अबतुमहमेंवेगि बकसोवो । मासछहककी छूट दिलावो ॥ हमरप्यत हैं सभी तुम्हारी । एकबारगहिअरजहमारी ॥ औरकही तुम्हें बोझ हमारा राजा सुनि उनओर निहारा ॥ कही कि मैं अब कैसेंकहूं । आठपहर हरताई रहूं ॥ अरज करत कांपै तन सारा । तेजवंत है वह दरबारा ॥ पै तुम देखि दया उपजाई । मेरे भी मन ऐसी आई ॥ बैठि अकेलाध्यानधरूंही । तुम्हें कारण अरज करूंही ॥ दिन बीता संध्या जब आई । भूपध्यानकरि अरज सुनाई १२१ ॥

दो० अरज करी उन दीन है बार बार यह भाखि ॥
या परजाको मासषट क्षमा दृष्टि करि राखि १२२ ॥
जो जो इनके मन बिषे सो सो करें अघाय ॥
छटे मासके ऊपरे एक घोस नहिं जाय १२३ ॥
देखि भूपकी दीनता पिघिले दीनदयाल ॥

१ व्यभिचारी २ छोड़ दो ॥

नभ से बाणी यहा भई वही समय ततकाल १२४ ॥
यह परजा तुव कारणे बकसी है षट मास ॥
ऊपर जा दिन एक जव कीजो इनका नास १२५
चौ० आज्ञा भई भूप की जवहीं। सोयो पलँग निडर है तवहीं ॥ भोर भये बाहिर को आया। सकल प्रजा को निकट बुलाया॥ कहा कि है षट मास बचाया। अपने मनका करिल्यो भाया ॥ यह सुनि परजा सबहरषाई। अपने अपने घरको आई ॥ केहु सिरकी केहु छप्पर डारा। पक्का मंदिर नाहि विचारा॥ चोरी जारी सबै बिसारी। होतेभये सबी व्यवहारी ॥ अरु साधुनकी वृत्ती धारी। बालक युवा जरठ नर नारी॥ रहे नहीं वे खोटे मनके। भये तपस्वी कृश सबतनके १२६ ॥

दो० जो कछु गाड़ो द्रव्य गृह करी न ताकी आंट ॥
राखि लिया षटमास को अरु सब दीन्हा बांट १२७

चौ० जिते धनिक तिन सब यह कीन्हा। हते अनाथ तिन्हैं देदीन्हा ॥ कहैं परस्पर धन कह करिहैं। छठे महीना पाछे मरिहैं॥ यही समुझि उपजा वैरागा। सकल इन्द्रियन का रस त्यागा ॥ फीकेलगे भोग सब जगके। सहज काम सब छूटे अघके॥ सबकी दशा एक जो भई। मौत जानि करि चिन्ता ठई ॥ दिन दिन दुर्बल होते जावैं। हरिहीका जप ध्यान लगावैं॥ एक एक दिन लागै प्यारा। भजन करैं जग न्यारा न्यारा ॥ हठ अरु बाद न कोऊ ठानै। इकइक घरी अमोल कि जानै॥ कहैं कि खोवें तो कितपावैं। कथा कीर्तन सों चित लावैं ॥ कथा कीर्तनै जित तित होई। साधु समागम होगये सोई॥ घरघर शुभकर्मन व्यवहारा। धर्म पकड़ि अधरम सबडारा ॥ ज्यों ज्यों दिवस अवधिके आवैं। घने घने शुभकर्म कमावैं १२८॥

दो० जाको होवै मौतभय जगमें लगै न चित्त ॥
झुकै रामकी ओरही बहुत लगावै हित्त १२९

चौ० उन पुरुषनकी यह गति भई। जगकी चाल डारि सबदई ॥ लाड़

१ चाल २ हृद ३ प्रेम ४ गुणों का गान करना ॥

चार व्यवहार न कोई। ब्याह सगाई पुत्र न होई॥ काम क्रोध नहिं उपजै मोहा। लोभमान नहिं प्रीति न द्रोहा॥ ऐसे रहि शुभकर्म जु करैं। सदा मौत से सब जन डरैं॥ सहज सहज फिरि वह दिन आया॥ डरे नहीं शुभ कर्म कमाया॥ आपसमें कहैं हमको क्याहै। यमकी मार नरक भयनाहै॥ राजा जान्यो वह दिन आया। अपना सेवक त्वरित पठाया॥ कही कि फौज सबै बनि आवैं। कतल करन परजाको धावैं॥ फौजैं सजिकरि ठाढ़ी भई। आज्ञा ओर दृष्टि जो दई॥ राजाके मन ऐसी आई। उन सब पुरानि लेहुँ बुलाई॥ सांचे सबही के इतबारी। फेरि कुल बोल्यो मारी॥ यही सोचि फिरि शीश उठाया। आज्ञाकारी निकट बुलाया॥ १३०॥

दो० कामदार सों यों कही वैसो पुरुष बुलाय॥
जिनमें मिलि बैठा भया हरिसों ध्यान लगाय॥ १३१॥

चौ० फिरि उनहित को लियो बुलाई। मिलि बैठा सबको सुखदाई॥ कही कि सब मिलि सुरति उठाओ। रामओर को ध्यान लगाओ॥ आज्ञाहोय सोई तुम मानो। मेरा दोष कछू मत जानो॥ मोको अज्ञाहोय सो करिहौं। अपने हिये नेकु नहिं धरिहौं॥ राजाकहि मिलि ध्यान लगाया। ऐसा शब्द गगनसों आया॥ राजा मैं अब बकसि दियाहै। सकल प्रजाको शुद्ध हियाहै॥ जिन पर मोकहँ कोप भयाथा। तिनके कारण खड्ग लियाथा॥ सो प्रजा सो बातें हारी। करि सुकर्म हरिभक्ति सँभारी॥ १३२॥

दो० तातें आज्ञा यों दई रचौ कुटुँब घरबार॥
शुभ कर्मन को कीजिये खोटेकर्म निवार॥ १३३॥

चौ० राजाकही सोचि हमदीजै। आज्ञाभई सोई अब कीजै॥ सोचि सौंस करजोरिके भाखे। बकसे गये तुम्हारे राखे॥ जो तुम कहो सोई अब करैं। वचन तुम्हारे हिरदय धरैं॥ राजा कही यही तुम कीजो। रामनामको संगी लीजो॥ गुरुको ध्यानधरो मनमाहीं। विपति जासुसों आवतनाहीं॥ अपनी त्रिया त्रियाकै जानो। परत्रियाको मातासमानो॥ परधनको पाहन[१]

१ पत्थर॥

समदेखो। शुभकर्मनको करो विशेखो॥ बोलो सांच झूठको नाखो। निन्दा हिंसा नेक न राखो॥ हरिहिसो सबके सुखदाई। करुवा वचन न बोलो भाई॥

सो सांचा। लोक परलोक न आवै आंचा॥१३४॥

श्रीशुकदेवजी सुनो चरणही दास॥
राजा ने उपदेश दे सोई सबकी नास॥१३५॥

चौ० फिरिवै पुरुष निद्रा में आये। हरि राजा के वचन सुनाये॥ जिन मालतसों चक्रले सारो। सो रखियो तुमहिये अँभ्कारे॥ तक्करल करम भूलि मति जैयो। हरिकीभक्ति माहँही रहियो॥ सुनिकरि आपसमें फैलाई। एक एक ने सुनी सुनाई॥ सबने मानी निश्चय कीन्ही। प्रकटै सुसपनी आंखिन चीन्ही॥ हाथ कँगनको दर्पणकेहा। जैसी करणी भुगतै जेहा॥ खुशी भये लागे व्यवहारा। रामभक्तिको लिये सँभारा॥ कहि शुकदेव चरणहोदासा। सकल प्रजा रहे बहुत हुलासा॥१३६॥

दो० चरणदास। सुनिये श्रवण मैं उपदेशूं तोहिं॥
जो पहिले हरिको भजै पाछे दुःख न होहिं॥१३७॥

चौ० कथा कहौं इक औरपुरानी। करणी करै सुसमुझै प्रानी॥ इन्दुनाम इक ब्राह्मण हुता। जाके दश सुत अरु इकसुता॥ सुता ब्याहि दई घरकी हुई। जाके पीछे माता मुई॥ पिता मुवा दश पुत्र रहेथे। आपसमें सब बैठि कहेथे॥ ऐसी कछू जु करणी कीजै। जगमें ऊंची पदवी लीजै॥ इकनेकही हूजिये भूपा। सुन्दर देही धरो अनूपा॥ तेजमुल्कमें होवै भारी। हुकम जु मानैं नर अरु नारी॥ औरएक ऐसे उठिबोला। सावधान है अन्तरखोला॥१३८॥

दो० राजाहीका हुकम तो थोरेही में जोय॥
ऐसी करणी कीजिये भूपचक्र्वै होय॥१३९॥
एकद्वीप नौखण्ड में जाको पूरो राज॥
एक और उठि बोलिया यह भी ओछा साज॥१४०॥
चक्रवर्ति में इन्द्र बड़ देवनहूंको भूप॥

---

१ जाहिर २ चारों दिशाओं का राजा॥

उम्र बड़ी आनँद बढ़े दुखकी लगै न धूप १४१

चौ० करणी करत इन्द्रही लोगा। होकर राजा कीजै भोगा॥ जहँ
प्सरा नृत्यकरतहैं। सुन्दर अधिका रूप धरतहैं॥ और बड़ा भाई योंभा
सुरपतिहूको नाहीं राखा॥ कहा कि पदवी ब्रह्माकीसी। और न दीखै
हीसी॥ जाके एक दिवसही माहीं। चौदह इन्द्रसबै ह्वैजाहीं॥ सब ब्रह्मा
आसरे वाके। विनशिजायँ मिटिजावैं जाके॥ तीनि लोकका पितावही
वेद पुराणन माहँ कही है॥ करणी करिकरि ब्रह्मा हूजै। ऐसी पदवी
नहिं लीजै १४२॥

दो० सगरे यों उठि बोलिया सत्य सत्य यह बात॥
ऐसाही अब कीजिये ठहराई सब भ्रात १४३

चौ० दशहू करन तपस्या लागे। पारब्रह्मकी ओरी पागे॥ अधिक
पस्या कीन्हीभारी। मांस सूखिगा दीखैं नारी॥ हाड़ खँचा चिपटी रहग
लोहू धातु कछू नाहीं॥ सबजन चित्रहिसे रहगये। क्लिष्ट तपस्या ऐसेत्र
फूलपात जलहू नहिं लीन्हा। ऐसा तप दशहूने कीन्हा॥ तनत्यागे दूजे
जन्मा। दशहू भ्रात हुये जो ब्रह्मा॥ जिनके दश ब्रह्माण्ड बने हैं। एका
तिनमाहिं ठनेहैं॥ करणीकबहुं न निष्फलजावै। जो मनधारै सोईपावै१४

दो० करणी सों भये इन्द्रहू करणी ब्रह्मा सोय॥
करणी सों ईश्वर भये शुकदेवा कहै सोय १४५
दश हजार इक बीसही वर्ष तपस्या कीन्ह॥
हरिजाको बदलो दियो मांगो सो वर दीन्ह १४६
चारो युगके मांहि जो करणीही परधान॥
गुरु शुकदेवा कहत है चरणदास उर आन १४७
उज्ज्वल कर्मन के किये दिन दिन उज्ज्वल होय॥
मनमें उपजे भक्तिही प्रेम पदारथ मोय १४८

चौ० चरणदास नग करणीकीजे। यादी में मननीकेदीजे॥ ऐसाजन

१ भात २ ... ३ दुकर॥

दुरि नहिं पैहे। बीतिजाय पुनि बहु पछितैहै ॥ मनुष देहयादुर्लभजानौ। कौ पा शुभकरणी ठानौ ॥ यादेहीमें करीकमाई। जाय स्वर्गमेंनौनिधि ई ॥ भक्तिकरी देहीकेमाहीं। जा वैकुण्ठ सुआये नाहीं॥ या देही में ज्ञान याहै। जीव ब्रह्म जो होय गया है॥मूरुखकरणीको नहिंजानै। कथनीकथि२ हुत वखानै॥ थोथी कथनी काम न आवै। थोथा फटकै उड़ि २ जावै१४६॥

दो० कथनीहि के बीच में लीजो तत्त्वं बिचार ॥
सार सार गहिलीजियो दीजो डारि असार १५०

चौ० थोथी कथनी वही जु जानौ। बिन करणी जोकरै वखानौ॥ लोक लोक न शोभापावै। वकिवकिवकि खाली मरिजावै॥ कथनी के शूरा बहु ाने। करणी में कायर अरुभाने॥ शूरा वही जु करणी करै। दया धर्मले मुख औरै॥ पाँव धरे सो नाहिं उठावै। करणी करता चला जुजावै॥ फिरै वहिं फल लैकर आवै। सो वह शूरा मल्ल कहावै॥ कायर बीचहि सों फिरि गावै। सो वह करणी को बिसरावै॥ आपन खोंट न जानै भोंदू। वह तो कथनीही का गोंदू १५१॥

दो० ऐसे जगमें बहुत हैं वैसे जगमें नाहिं॥
कोई कोइहि देखिये सतगुरु के मधि माहिं १५२

चौ० होनहार को बहुत बतावै। पै ताको कछु मर्म न पावै॥ कहैं कि होनी होयसुहोई। ताको मेटिसकै नहिं कोई॥ याको समभ उपाय न करिया। श्रद्धा तजि कायरह्वै परिया॥ समुभि निखट्टू गृही भये हे। वेष धारि बिन करणी रहे॥ जानतनाहिं जु पिछिली करणी। अब के भई जुहोनी भरणी॥ परालब्ध अरु भाग्य कहावै। पिछिले कर्म्मन से उपजावै॥ अबके करै सु आगे पावै। कछू कछू फल अभी दिखावै॥ कैकाहू गालीदै देखो। के काहूको मारि विशेखो॥ कै काहूको अशन खवावो। कै काहूको शीश नवावो॥ कै करि चोरी चूर्तहि खेलो। कै काहूको गुस्सह झेलो॥ दोनोंका

---

१ पृथ्वी अप तेज वायु आकाश २ कोई काम न करनेवाला ३ कर्म ४ जुवां॥

फल आगे आवै । चरणदास शुकदेव बतावै ॥ प्रकट देखिये यही तम
नीच ऊंच करणी परकाशा १५३ ॥

दो० कोटि यही उपदेश है यही जु सगरी बात ॥
करणीही बलवन्त है यों शुकदेव दिखात १५४
मनकी करणी ज्ञान है परमातम लखिलेय ॥
ब्रह्म रूप है जाय जब छूटै सबही भेय १५५
भवसागर में भय घने ताको लगै न आंच ॥
झूठेको भय बहुत है भयनहिं ब्यापै सांच १५६ ॥
करणीही सों पाइये पारब्रह्म का खोज ॥
सतगुरु पै चलि जाइये मेटैं सबही सोज १५७

चौ० इच्छा ब्रह्मकरी सोइ करणी । ईश्वर रूप धराले धरणी ॥
फेरि अहँकार जु कीये । तीनरूप उनको करिदीयें ॥ राजस तामस सा
जानौ । यही त्रैगुण मनमें आनौ ॥ राजस सों जगको उपजावै । सा
सों पालै सिरजावै ॥ तामस सों बिनशावै तोड़े । बहुत सृष्टिनहिं सूपरज
जोड़ै तौ वह कहां समावै । धरती का परमाण कहावै ॥ योजन पंचस
बताई । वेद पुराणन महँ जो गाई ॥ धरती करणीही सों ठाढ़ी । कछुव
भये जो आढ़ी ॥ करणीहीसों घन बरसावै । बादलमिलतीपवनचलावै १

दो० करणी सों कर्तारही धरा ब्रह्मको नावँ ॥
माया भी तौ उनकरी खेली बहुबिधि दावँ १५६

चौ० कोई निराकार बतलावै । कोई निर्गुण कहिसमुझावै ॥ को
दोनोंसे न्यारा । है जु अकर्त्ता अलख अपारा ॥ कहैं कि माया कियोपस
जेता दीखै यह संसारा ॥ तौ कहु माया कितसों आई । अन्त यही
उपजाई ॥ वही सृष्टिका कारण काजा । जाने जगत प्यारकरि साजा ॥

---

१ संसार २ ब्रह्मा विष्णु महेश ३ रजोगुण ब्रह्मा ४ तमोगुण शिव ५ सतोगुण विष्णु
अंदाज ७ न देखपड़नेवाला ॥

में वह दरशावै। चतुरहो चतुराई पावै॥ जैसे बरतनगढ़े कुम्हारा। सब दीखे सिरजनहारा॥ चित्रे मध्य चित्रामी सूझै। सुरतिलगाय लगाय बूझै॥ जबहीं बनी बनाई नीके। कहिं शुकदेव जु अपने जीके १६०॥

दो० बिना किये कछु होयना आपहि लेहु विचार॥
करणी देखी दूरलों शोधा बारंबार १६१
चरणदास तोसों कहों उठि उद्यम को लाग॥
आलस सकल गवांय कै विपर्यनमें मतिपाग १६२
कारज लोक प्रलोक के बिन करणी हो नाहिं॥
करणीही सों होतहैं करणी सबके माहिं १६३
खोटे कर्म्मन सों दुखी या दुनियाके बीच॥
करणीही सों होतहै नर ऊंचा अरु नीच १६४
संगति मिलि करने लगे ऊंचे नीचे कर्म्म॥
बुधिमैली जो होतिहै खोवै अपना धर्म्म १६५
सतसंगति सों रहतहै धर्म्म कुसंगति जाय॥
चरणदास शुकदेव कहि दोनों दये दिखाय १६६
धर्मगया जब सतगया भ्रष्टभई अतिबुद्धि॥
तबहिं पाप अरु पुण्यकी कछू रहीना शुद्धि १६७
पाप पुण्यकी सत्यहै ठहरि रहा ब्रह्मण्ड॥
इन दोनों के मिलतही होत खण्डहू खण्ड १६८
पाप पुण्य व्यवहारहै ताहि देखि प्रत्यक्ष॥
जाही सेती प्रेत यम देवत गण अरु यक्ष १६९
चौरासी अरु पुरुष सब चंद सूर लों जान॥
पाप पुण्य के फेर में सबही पड़े पिछान १७०
पाप किये नरके पड़े पावै दुःख अपार॥
पुण्य किये सुख बहुतहैं देखो दृष्टि उघार १७१

नानेवाला, २ तसवीर ३ धन्धा ४ काम क्रोध लोभ मोह मद मात्सर्य

बिरले जनको होतहै पाप पुण्य की सूझ ॥
सुई छूटे जग जाल सों बहुते रहें अरूझ १७२
लक्ष वातकी वातहै कोटि वातकी जान ॥
पाप पुण्य सों जानिये लाभ, हाथकै हान १७३
करणी बिन थोथा रहै कछू न पावै भेव ॥
विभव प्राप्त कहुं होयना कहैं जु यों शुकदेव १७४

चौ० होनी कहैं जु वेभी सारे। करणी करते दृष्टि निहारे ॥ बिनकरणी व्यवहार न चाले। नहीं तो बैठे रहजाडाले ॥ कृत्य करै सो भी यह करणी। बनिया हाट पांड़िया वरणी ॥ करणीही सों खावे पीवै। योग करै बहुते दिन जीवै ॥ मनमांजे सबही परकाशे। करणी बिन झूठे सबआशे ॥ करणीही सों सिधि है जावे। अष्टसिद्धि करणी सों पावै ॥ जीवनमुक्ती करणी हेती। सुनिले सकल शास्त्र सों तेती ॥ गुरुसों निश्चय यहे जुकीनी। रणजीतामैं तुमको दीनी १७५ ॥

दो० यह तौ धर्म जहाजहै मैं तोहिं दई निहार ॥
भवसागर मों डारियो चढ़े सो उतरे पार १७६
बादवान पुनि खेइयो दीजो ताहि चलाय ॥
पानी पाप निकासियो नेकहु ना भरिजाय १७७
चढ़ि उतरै जो पारही पावै सुखका धाम ॥
आनँदही आनँदलहै करै तहाँ विश्राम १७८

शिष्यवचन ॥

धन्य श्रीशुकदेव हो वचन तुम्हारे धन्य ॥
सब संदेह मिटाय करि निश्चल कीन्हो मन्य १७९

चौ० व्यासपुत्र तुम मम गुरुदेवा। करूं मानसी तुम्हरी सेवा ॥ मन में तुम्हरी पूजा साजू। तुम सों पूंछि करौं सब काजू ॥ मेरे ध्यान शिताबी आये। जो थे सो सन्देह मिटाये ॥ मैं तौ ध्यान करतही रहूं। तुम्हरी मूरति

१ सांख्य योग मीमांसा न्याय वैशेषिक वेदान्त २ जो मनमें कीजाय ॥

हिरदय गहूं ॥ मेरे जीवन प्राण अधारा। मैं नहिं रहों चरणसे न्यारा ॥ तुम्हरो चरणन दास कहाऊं। बारबार तुमपै बलि जाऊं॥ तुमहीं को ईश्वर करि मानूं। पारब्रह्म तुमहीं को जानूं॥ और न कोई दूजी आसा। मो हिरदयमें राखो बासा १८०॥

दो० अपने चरणहिं दासको सब बिधि दियो अधार ॥
अस्तुतिकरूं तो क्या करूं मोपे कही न जाय १८१

इति श्रीगुरुचेलेकासंवादधर्मजहाजसम्पूर्णम् ३ ॥

अथ श्रीगुरुशिष्यसंवादअष्टांग योग प्रारम्भः॥

शिष्यवचन ॥

दो० व्यासपुत्र धनि धनि तुम्हीं धनि धनि यह अस्थान॥
ममआशा पूरी करी धनि धनि वह भगवान १
तुम दर्शन दुर्लभ महा भये जु मोको आज ॥
चरण लगो आपादियो भये जु पूरण काज २
चरणदास अपनो कियो चरणन लियो लगाय॥
शिरकर धरि सब कछु दियो भक्तिदई समुझाय ३
बालपने दरशन दियें तबहीं सब कछु दीन ॥
बीज जु बोया भक्ति का अब भा वृक्ष नवीन ४
दिन दिन बढ़ता जायगा तुम किरपा के नीर॥
जबलग माली ना मिला तबलग हुता अधीर ५
अरु समुझाये योगही बहु भांती बहु अंग ॥
ऊरधरेता हीं कही जीतन बिंद अनंग ६
अरु आसन सिखलाइया तिनकी सारी विद्धि॥

तुम्हरी कृपा सों होहिंगे सबही साधन सिद्धि ७
इक अभिलाषा औरहै कहि न सकूं सकुचाय॥
हिये उठै मुख आयकरि फिरि उलटीही जाय ८

गुरुवचन॥

सतगुरु से नहिं सकुचिये एहो चरणन दास॥
जो अभिलाषा मन विषे खोलि कहौ अवतास ९

शिष्यवचन॥

सतगुरु तुम आज्ञादई कहूं आपनी बात॥
योगाष्टांगै बुझाइये जाते दियो सैरात १०
मोहिं योग बतलाइये जोहै वह अष्टांग॥
रहनी गहनी विधि सहित जाके आगे आंग ११
मत मारग देखे घने थाकिपरे भये मान॥
जो कछु चाहो तुम करो मैंहों निपट अयान १२

गुरुवचन॥

योगाष्टांग बुझाइहैं भिन्न भिन्न सब अंग॥
पहिले संयम सीखिये जाते होय न भंग १३

शिष्यवचन॥

संयम काको कहतहैं कहो गुरू शुकदेव॥
सो सबही समुझाइये ताको पावै भेव १४

गुरुवचन॥

चौ० प्रथम सूक्षम भोजन पावै। क्षुधा मिटै नहिं आलस आवै॥ मी-
ठा जल पीवन लीजै। सुपथ बोलि वाद न कीजै॥ बहुत नींद्रभर सों
नाहीं। रूखा सूखा न राखे पाहीं॥ मना [illegible] नाग न धारे। धीरज शील
हानि नहिं धारै॥ करै न काहू सेती मीना। गहि नहिं जगरस्तु कि धीना॥

निश्चल ह्वै मनको ठहरावै। इन्द्रिनकेरस सबै बिसरावै ॥ त्रिया तेल नहिं देह छुवावै। अष्ट सुगन्ध[1] अंग नहिं लावै ॥ पुरुषन की राखे नहिं आसा। गुरु पद केर रहै ह्वै दासा १५ ॥

दो० काम क्रोध मद लोभ अरु रावैना[2] अभिमान ॥
रहै दीनताई लिये लगै न माया बान १६

चौ० छल नहिं करै न छलमें आवै। दम्भभूठके निकट न जावै ॥ टोना यंत्र भूत नहिं धावै। भूठ जानके सब बिसरावै ॥ धातु रसायन मन नहिं लीजै। भूठ जानि याहू तजिदीजै ॥ स्वांग तमाशे बाग न जैये। आसन बैठि विराम वनैये॥ दृढ़ ह्वै लगै युक्तिके माहीं। ताते विघ्नहोय कछु नाहीं॥ रूठा रहै जगत लोगन सों। न्यारोरहै सबी भोगन सों॥ इन्द्रआदिलों सुख संसारी। नेक न चाहै चित्त मँभारी॥ सिमिटि रहै हिय माहिं समावै। ऐसे योग सधे सिधि पावै १७॥

दो० ऋद्धि सिद्धि अरु कामना तिनकी रखै न आस॥
मान बड़ाई चपलता त्यागै चरणहिं दास १८

चौ० गहि संतोष क्षमा हिय धारै। संयम करिकरि रोग निवारै॥ अहङ्कारको छोटा करिये। कुटिल मनोरथ गन नहिं धरिये॥ बसिये जितहि देश सुस्थाना। निरउपाधि धरती अस्थाना॥ भली भूमि लखि गुफा बनावै। नीची ऊंची रहन न पावै॥ जिमीं बराबर चौरस होई। होय लदाव किमधरी सोई॥ सांकर द्वार[3] कपाट लगावै। कहूं छिद्र रहने नहिं पावै॥ तामहँ बैठि योग तप कीजै॥ दूजो पुरुष न भीतर लीजै॥ कहि शुकदेव चरणहीं दासा। जगसों रहिये सदा उदासा १९॥

दो० यह सब निश्चयही करै योग युक्तिके आदि॥
पहिले ऐसा होय करि साधु साधना बादि २०
आठ अंग कहुं योगके सुनो चरणहीं दास॥

---

1 तेल, फुलेल, चोवा, चन्दन, कपूर, इत्र, केसरि, कस्तूरी ये अष्ट सुगन्ध कहलाते हैं 2 मिथ्या बात बनानां 3 कँवारा॥

मेरे वचनन के विषै चितदै करो निवास २१

चौ० यमके अंग प्रथम सुनिलीजै । दूजे नियम कहूं चितदीजै ॥ ती
आसन हितकरि साधो । प्राणायामै चौथआराधो ॥ प्रत्याहार पांचवांजा
छठो धारणा को पहिचानो ॥ सतवैं ध्यान मिटै सब बाधा । कहूं आ
अंग समाधा ॥

शिष्यवचन ॥

धन्य धन्य तुम श्री गुरुदेवा । मेरे प्राणनाथ शुकदेवा ॥ व्यासपुत्र
दीनदयाला । मम अनाथ को कियो निहाला ॥ आठअंग मोहिं दि
सुनाई । अबकहुं भिन्न भिन्न समुझाई । एक एकको जुदा बखानो । इ
सों जाय दास पर जानो २२ ॥

गुरुवचन ॥

दो० एक एक का कहतहौं जुदा जुदा विस्तार ॥
श्रवणन सुनो विचारिकै लैलै हियमें धार २३

अथ यमअंग वर्णन ॥

चौ० प्रथम कहौं यम के दश अंगा । समझै योग न होवै भंगा ॥ प्र
अहिंसाही सुन लीजै । मनकरि काहू दोष न कीजै ॥ कडुवा वचन कठो
कहिये । जीवघात तनसौं नहिं दहिये ॥ तन मन वचन न कर्म लगा
यही अहिंसा धर्मकहावै ॥ दूजेसत्य सत्यही बोलै । हिरदै तौलि वचन
ख खोलै ॥ तीजें असते त्याग सुनीजै । तन मन सों कछु नाहिं हरीजै ।
तन चोरी के लक्षण नाखै । मनकी चोरी को नहिं राखै ॥ चौथा ब्रह्मचर्य
बतलाऊं । भिन्न भिन्न करि ताहि सुनाऊं २४ ॥

दो० ब्रह्मचर्य यासों कहै सुनहु चरणही दास ॥

---

१ प्राण अपान व्यान उदान समान २ अहिंसा, सत्यवद, असतत्याग, ब्रह्मचर्य करना, काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य, तृष्णा इनसे पृथक् रहना, क्षमा, धीर्य, दया, आर्यव, मिताहार यानी सूक्ष्म भोजन करना ये यमके दश अंग कहलाते हैं ३ विद्यापढना व्रतकरना नित्य कर्म संध्यावन्दनादि करना भिक्षा मांगिकर भोजनबनाय गुरुको नैवेद्य लगाय भोजन करना इसे ब्रह्मचर्य कहते हैं ॥

आठ अंग सो नारि की नेक न राखै आस २५

चौ० यती होय दृढ़ कांछ गहीजै । वीर्य क्षीण नहिं होने दीजै ॥ मैथुन हूं अष्ट परकारा । ब्रह्मचर्य रहै इनसेन्यारा ॥ सुमिरण त्रियाकेर नहिं करिये । स्रवणन सुरतिरूप नहिं धरिये ॥ रस शृङ्गार पढ़ै नहिंगावै । नारिनसों नहिं से हँसावै ॥ दृष्टि न देखै विप नहिं दौरै । मुख देखै मन होजाऔरै ॥ वात कन्तकरै नहिं कवहीं । मिलन उपाय जुत्यागैसवहीं ॥ स्पर्शादिम निकट न रावै । कामजीति योगी सुखपावै ॥ अष्टप्रकारके मैथुनजानौं । ब्रह्मचर्य इन तजि पहिचानौं ॥ कहैं शुकदेव चरणहीदासा । ब्रह्म सत्यमें करै निवासा २६॥

दो० पँचवीं सुखदायी क्षमा जलन बुझावै सोय ॥
जो दुख आवै घटविपे पातक डारै खोय २७

चौ० कोई दुष्ट कछू कहिजावो । गाली दैकर कोइ खिझावो ॥ कैकोइ शिरपर कूड़ा डारो । कैकोइ दुखदेवो अरु मारो ॥ वाकी कछू न मनमें लावै । उलटा उनको शीश नवावै ॥ ऐसी क्षमा हियेमें लावो । वोलो शीतल अग्नि बुझावो ॥ छठां अंग धीरज का जानौ । धीरजही हिरदय में आनौ ॥ योगयुक्ति धीरज सों कीजै । सब कारज धीरज सों लीजै ॥ धीरज सों बैठे अरु डोलै । धीरज राखि समुझिकर वोलै ॥ आनि परे दुख ना अकुलावै । धीरज सों दृढ़ता गहिलावै २८ ॥

दो० धीरज रहा तो सब रहा काहूसे न डराय ॥
सिंह प्रेत अरु कालका धीरज सों डरजाय २९

चौ० दया सातवीं अब सुनिलीजै । सब जीवन की रक्षा कीजै ॥ लख चौरासी का सुखदाई । सबके हित की कहै वनाई ॥ रहिये तन मन वचन दयाला । सबही सों निर्वैर कृपाला ॥ अड़वे कहूं आर्य्यवै खोलै । कोमल हृदय सों कोमल बोलै ॥ सब को कोमल दृष्टि निहारै । कोमलता तन मन में धारै ॥ कोमल धरती वीज ववावै । बढ़े वेगि फूलै फललावै ॥ ऐसे कोमल

१ स्मरण, सुरति शृङ्गारावलोकन, हास्य करना, दृष्टि सों त्रियारूप देखना, मिलनउपाय, स्पर्श, एकान्तमें वार्त्तालाप करना ये अष्टांग विषय के कहलाते हैं ॥

हिय। वनावे । योग सिद्धिकारी पद पहुँचावे ॥ यही आर्जव लक्षण क्र
शुकदेव कहैं रणजित पहिंचानो ३० ॥

दो० मिताहार जो नेमें की समक लेहु मनमांहि ॥
सतगुन भोजन खाइये ऐसा वैसा नांहि ३१
खावे अन्न विचारिके सोधिकरि सँभार ॥
जैसाही मन होतहै तैसा करे अहार ३२

चौ० सूक्षम चिकना हलका खावे । चौथाभाग छोड़ि करि पावे ॥ व
गस्थ के हो संन्यासे । भोजन सोलह ग्रास गिरासे ॥ अरु गृहस्थ ब
गिरासा । आवे नींद न बहुत न स्वासा ॥ ब्रह्मचारी भोजन करे इन
पठन माहँ वीरज रहे जितना ॥ दशवां शौच पवित्तर रहिये । कर दा
हमेश नहइये ॥ जो शरीर में होवे रोगा । रहे न तन जल छूवन योग
तो तन माटी संशुधि कीजे । अब अंतरकी शुद्धि न लीजे ॥ राग द्वेप
रदय सों टारे । मन सों खोटे कर्म निवारे ३३ ॥

दो० दशप्रकारका कहा यह पहिल योगकी नीव ॥
नेम कहूं अब दूसरा सोहै साधन सीव ३४

अथ नेमअंगवर्णन ॥

चौ० दूजा अंग नियमे[1] का गाऊं । भिन्न भिन्न सब अंग सुनाऊं ॥ पह
तप इन्दी वश कीजे । इनके स्वाद सभी तजिदीजे ॥ खाते पीते सोवत ज..
गत । योगी इंद्रिनकूं वश राखत ॥ तनकूं वश कर मनकूं मारे । ऐसी विधि
तपका अँगधारे ॥ दूजा अंग कहूं संतोषा । हानि भये नहिं माने शोका ॥
लाभ भये नाहीं हरषावे । एमी समुझ हिये में लावे ॥ परारब्ध तन होयसु
होई । सँकलप विकलप रखे न कोई ३५ ॥

दो० तीजा अस्तक अंग है जाका सुनो विचार ॥
समझ समझ मनमें धरो ताको गहो संचार ३६

---

[1] इंद्रीवश, संतोष, अस्तक, शास्त्रचिंतन, दानदेना, ईश्वराराधन, सिद्धांतश्रवण, लाजयुक्त, तत्त्वदृढ, जाप ये दशअंग नियमके कहलाते हैं ॥

चौ० शास्त्र सुन परतीत जो कीजै। सत्तब्रह्म निश्चय करिलीजै॥ बुध रचय आतम के माहीं। जगत सांच करि मानै नाहीं॥ चौथा दान अंग धे होई। पात्र कुपात्र विचारै सोई॥ एक दान उपदेश जु दीजै। भव-गर सों पार करीजै॥ दूजा दान अन्न अरु पानी। दीजै कीजै बहु स- ानी। और पराये दुख कीं बूझै। सुखदानी परमारथ सूझै॥ पंचम त्र पूजा करिये। तन मन बुद्धि जहांलै धरिये॥ है निष्काम तजै सब सा। सेवा करै होय निजदासा ३७॥

दो० पाती फूल जु भाव सों सह सुगन्ध करि धूप॥
शुकदेव कहैं यों कीजिये पूजा अधिक अनूप ३८

चौ० पट सिद्धांत श्रवण सुनि बानी। करि विचार गहिये मनमानी॥ र असार विचार जु कीजै। पानी को तजि पयको पीजै॥ अरु सतगुरु निश्चय करिये। परखि सँभारि हिये में धरिये॥ करणी करै तिन्हों से लना। बचन अयोगी के नहिं सुनना॥ सतवां वही जु कहिये लाजा। वह सकल सँवारन काजा॥ साध गुरू में लाज करीजै। तन मनडोलन हीं दीजै॥ करम विपर्यय सब परिहरिये। हिय आँखिन में लज्जाभरिये॥ ुकदेव कह सुनि चरणहिं दासा। लज्जा भवन माहिं करि वासा ३९॥

दो० कुटुँब मित्र जग लोगहीं सबसूं कीजै लाज॥
बड़ी लाज हरिसूं करो नीके सुधरै काज ४०

चौ० अष्टम सिद्ध वही जो कहिये। सो विशेष साधनकूं चहिये॥ शुभ करमन की इच्छा करनी। हो न सकै तौ भी हिय धरनी॥ बहँकै ना काहू हँकाये। कैसेहू नहिं हलै हलाये॥ जग सुख देखि न मनमें आनै। स्वर्ग आदि सुख तुच्छहि जानै॥ कोइ अस्तुति आदर करि सेवै। कोइ कुभाव करि गाली देवै॥ दोनों में निश्चय रहै जोई। शुकदेवकहैं दृढ़मतिसोई॥ नवयें जाप करै गहिमौना। मन जिह्वासूं कीनै जौना॥ होपसकै मन वन गहीजै। गुरुमन्तर जव तामें कीजै ४१॥

दो० हरिगुन की अस्तुति पढ़ै सोभी कहिये जाप॥

शुकदेव कहैं रणजीत सुनि त्रैविधि नाशै ताप ४२
दशवें समझौ होमही कीजै दोय प्रकार॥
अँगन माहिं साकिल्ल कूं वेद कहैं ज्यों डार ४३
दूजै पावक ज्ञानकी तामें इन्द्री होम॥
वाकूं परगट भूमि है याकूं हिरदा भौम ४४

चौ० यमका अंग सभी कह दीन्हा। नेम कहा सोभी तुम ची निरै योगही के मत जानौ। सबकेकारजको पहिंचानौ॥ आपै योग प चहिये। शुभकरमन के मारग गहिये॥ जोये होय तौ होवै योग। वहै जगतके भोग॥ जग रासीकूं पहल सुनीजै। पाछे भेद योगको दं यम अरु नियम दोऊ बतलाये। अच्छी नीकी भांति सुनाये॥ अब आसन समझाऊं। जुदे जुदे कहि सबै सुनाऊं॥ योग पहिल आ साधे। आसन बिना योग बरबादे ४५॥

अथ आसन वर्णनं॥

दो० चरणदास निश्चय करौ बिन आसन नहिं योग॥
जो आसन दृढ़ होय तौ योग सधै भजि रोग ४६

चौ० चौरासीलखै आसन जानौ। योनिनकी बैठक पहिंचानौ॥ में चौरासी चुक लीन्हें। ऊरधभेद सुगम सो कीन्हें॥ सो तुमकूं पहिले लाये। जिनकूं साधेंगे चितलाये॥ तिनमें दोय अधिक परधानें। सब योगेश्वर जानें॥ आसनसिद्ध पदम कहलावें। इनकूं करि नि ठहरावें॥ अरु आसन सब रोग भजावें। ये दो आसन योग सधावें॥ कूं साधै जो जन कोई। ध्यान समाधि लगावै सोई॥ चरणदास गु कहँयों। आसन दोनों वरणों हैं ज्यों ४७॥

अथ पद्मआसन विधि॥

चौ० पहिले आसनपदम बनाऊं। ज्योंकीत्यों मूरति दिखलाऊं॥ पा

---

१ नवलख जलचर दशलख नभचर ग्यारहलख कृमि पारहलख वनचर चा मनुष्य तीसलख पशुयोनि इत्यादि चौरासीलखयोनि हैं २ मत्य॥

बावाँ पाँव उठावै। दहिनी जंघा ऊपर लावै॥ दहिना पांव फेरियों लाकै। बाईं साथल ऊपर राखै॥ बावाँ कर पीछे सों लावै। वाम अँगूठा गहितन लावै॥ ऐसे हाथ दाहिना लावै। दहिन अँगूठा पकड़ दृढ़ावै॥ ग्रीवालटकव कहिये आवै। नासा आगे दीठि लगावै॥ देवदृष्टिहो कौतुक दरशै। कहै शुकदेव अभैपद परशै ४८॥

दो० कै हिरदै राखै चिबुक कै सम राखै देह॥
कै घंटों दोउ हाथ रखि कै अँगुठा गहिलेह ४९

॥ अथ सिद्ध आसन विधि॥

चौ० दूजा आसनसिद्ध जुकीजै। बावां पांव गुदाढिग दीजै॥ दाहिन पांव लिंगपर आवै। दृष्टि सुभृकुटी पै ठहरावै॥ अन्नरज जहां अधिक दरशावै। खुले कपाट मोक्ष गति पावै॥ आसन साधि व्याधि परिहरै। भूंख नींद जोपे वश करै ५०॥

दो० एँड़ी पावै पांवकी सीवन मध्ये राख॥
लिंग गुदा के मध्य में मूल बोलिये साख ५१
संयम सूं इन्द्री गहै राखै सरल शरीर॥
दृष्टि उठा भृकुटी धरै मिटै जुदोनों पीर ५२
दहिनी लावै लिंगपर भाग बराबर राखि॥
वारीवारी कीजिये शुकदेवा कहै भाखि ५३

॥ अथ प्राणायाम अंग वर्णन॥

चौथे प्राणयामहीं कहूं सुनो चित लाय॥
जावत जीते पवनकूं चढ़ै गगन कूं धाय ५४
षटचकर कूं छेदि करि सुखमनही की राह॥
दलसहसके कमल में पहुँचै करै उछाह ५५
हिरदै में अस्थान है प्रान वायुका जान॥
वाके रोके सबरुकें वायुन में परधान ५६
जैसे गंगा एकही घाट घाट को नाँव॥

ऐसे प्राणहिं वायुके नावँ कहे बहु ठावँ ५७
चौरासी अस्थान पर चौरासीही वायु॥
तामें दश ये मुख्यहैं वरणों मुनिये ताहि ५८
प्राण अपान समानही और व्यान उदान॥
नाग धनंजय देवदत कूरम किरकल जान ५६
दशवायू जो एकही तिनमें दीरघ दोय॥
सेवें प्राण अपानहैं तिन्हें पिछाने कोय ६०
प्राणजाय प्राणें मिलै रहे प्राणके प्रान॥
शुकदेवकहिवर्णनकरूं गवइनकेअस्थान ६१

चौ० प्राणवायु हिरदे के ठाहीं। वसे अपान गुदा के माहीं॥ वायु मान नाभि अस्थाना। कंठ माहिं वाई उदाना॥ व्यान जु व्यापक है (सारे। नाक वायु सों उठे डकारे॥ पलक उघाड़े कूरमवाई। देवदत्तसूं है जँभाई॥ किरकल वायु जु भूंख लगावै। मुवे धनंजय देह फुलावै॥ सब में प्राण वायु मुख जानों। सो हिरदे के मध्य पिछानों॥ हिरदाही देही के माहीं। जो कुछहै सो भांई भांईं॥ योगेश्वर ह्यांई फल पावै। ह्यांई अनहद नाद जगावै ६२॥

अथ चक्रवर्णन॥

दो० अब चक्रे[१] वरणन करूं पाछे प्राणायाम॥
वरणूं नारी सुषमना सुधरें सबही काम ६३
हैं वे सूरति कमल की छोटे और विशाल॥
मूड़सुं लेकरशीशलों एकहि जिनकी नाल ६४

कुं० लालरंग पहिला कहूं चक्रधार[२] तिहि नावँ। चार पँखुरी[३] तासु की हैं जु गुदा के ठावँ॥ हैं जु गुदा के ठावँ देह नाड़ी पर राजै। चारों अक्षर तहां देव गनेश बिराजै॥ पवन सुरत लौ धरै खोलि कहैं शुकदेव। दूजा

१ मिलाहुआ २ आधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूरक, अनहद, विशुद्ध, आज्ञा ये छः चक्र शरीर के अन्तर रहते हैं ३ पँखुरी॥

लिंगस्थानहीं जाको सुन अवभेव ६५ पीतवरण पट पैंखरी नामजु स्वाधिष्ठान। पट अक्षर जापै दिये ब्रह्मा देवत जान॥ ब्रह्मा देवत जान संग सो[1]वित्री दासा। इन्द्र सहित सबदेव तहां सबही का बासा॥ मणिपूरक चक्कर कहूं तीजा नाभि स्थान॥ नीलवरण दश पैंखरी दश अक्षर परमान ६६॥

दो० विष्णु जहांका देवता महालक्ष्मी संग॥
चरणदास अब कहतहूं चौथे को परसंग ६७
अनहदचक्र हिरदय विपे द्वादशदल अरु श्वेद॥
शिवशक्ति[2] जहँ देवता द्वादश अक्षर भेद ६८
पँचवां चक्कर कंठ में विशुद्ध नाम जिहिकेर॥
पोड़श दल जीव देवता पोड़श अक्षर हेर ६९
छठयों मोहन बीच में आज्ञा चक्कर सोय॥
ज्योति देवता जानिये दो दल अक्षर दोय ७०

शिष्यवचन॥

दो० कमलों पर अक्षर कहे समझ न आई मोहिं॥
कौन कौन अक्षर तहां सतगुरु कहिये सोहिं ७१

गुरुवचन॥

चौ० पहिला कमल अधार सुनाऊं। वशपस अक्षर वरण बताऊं॥ दूजा कमल जु स्वाधिष्ठाना। बमभय बमभयरल जु बखाना॥ तीजे मणिपूरक जो कहिये। डढण तथही लहिये॥ दध नपफ जो गाये। ये दशअक्षर बरण बताये॥ चौथे चक्र अनाहद माहीं। द्वादश अक्षर वरण बताहीं॥ क ख ग घ ङ जो जान। च छ ज झ ञ ट ठ जु मान॥ पँचवां पोड़श विशुद्ध जो आछे। आदि अकार अकार सु पाछे॥ छठा जो अज्ञा चक्कर मानो। हंस वरण दो अक्षर जानो ७२॥

दो० भवँर गुफा मंडल अखँड तिरबेणी जहँ न्हान॥
नित प्रवीन जहँ होत हैं करै पाप की हान ७३

---

१ सरस्वती २ पार्वती॥

चौ० वहतरसहस आठसौ चौंसठ। नाड़ी जंइहै नाभि मध्यम तिनमहँ दश नाड़ी शिरमौरी। पँचवायें पँच दहनीओरी॥ जिनमें ती अधिक परधान। इड़ा पिंगला सुषमनजान॥ उनमें सुषमन अधिक अनू सो वह कहिये अग्नि स्वरूप॥ दश नाड़ी अस्थान बताऊं। ठौरठौर ते कहि समुझाऊं ६०॥

दो० नाड़ि शङ्खिनी गुदामें किरकल लिङ्गस्थान॥
पोषा सरवन दाहिने जसनी वायें कान ६१
गंधारी दृग वामही हस्तिनि दहिने नैन॥
नारि लम्बका जीभमें सब सवाद सुखदैन ६२
नासा दहिने अंगहै पिंगल सूरज वास॥
इड़ा सुवायें ओर है जहँ ससियर परकास ६३
दोऊ मध्यमें सुषमना अद्भुत वाको भेव॥
ब्रह्म नाड़िहू कहत हैं यों कह सो शुकदेव ६४
इड़ा ब्रह्मयमुना जहां सुषमन विष्णु निवास॥
और सरस्वति जानिये येहो चरणहिं दास ६५
शिव पिङ्गल गंगासहित सो वह दहिने अंग॥
तिरवेणी याते भई मिली जु तीनौ संग ६६
कबहुं इड़ासर चलत है कबहूं पिङ्गल मांहिं॥
मध्य सुषमना वहतहै गुरु बिन जानै नाहिं ६७
सो वह अग्नि स्वरूप है वड़ी योग सरदार॥
याहीते कारज सरै ऐसी सुषमन नार ६८

चौ० इनसों प्राणायाम करीजै। पूरक कुम्भक रेचकहीजै॥ इड़ा पिं मारग थाकै। उलटि सुषमना चालन लागै॥ बायें खैंचना पूरक जानो। रावनको कुम्भकमानो॥ फेरि उतारै रेचक वोई। प्राणायाम कहावै सोई६

दो० इड़ा पवन पूरक करै कुम्भक राखै रोक॥
रेचक पिंगल सों करै मिटै पापके थोक १००

चौ० पिंगल रोके पवन न जावे । इड़ा और सो वायु चलावे ॥ कुम्भककरि हिय चिबुक लगावे । जितकातित मनको ठहरावे ॥ सोलह मात्रा पूरक लीजे । चौंसठि कुम्भकमें जपकीजे ॥ रेचक फिरि बत्तीस उतारे । धीरेधीरे ताहि निवारे ॥ पहिल पहिलही कीजे आधे । तीनि महीने ऐसें साधे ॥ यासे आगे फेरि वढ़ावे । दोय आठ अरु चारि चढ़ावे ॥ वढ़त वढ़त ऐसेंही वढ़े । योंहीं चौंसठि ताहीं चढ़े ॥ इड़ा वायुसों पूरक कीजे । पिंगल सों रेचक तजिदीजे ॥ फिरि पिंगलसों पूरक धारे । बहुरि इड़ाहीसों निरवारे ॥ ऐसे बारी बारी करिये । तीजे प्राण वायु अघ हरिये । होयसके कुम्भक सरकावे । चौंसठि में भी परे वढ़ावे १०१ ॥

शिष्यवचन ॥

दो० चरणदास करजोरि कह सुनो गुरु शुकदेव ॥
कौन समे याको करे राति दिना कहिदेव १०२
मात्रा कासों कहत हैं जो वंतलायो जाप ॥
केतो करे अहारही जाको कहिये नाप १०३

गुरुवचन ॥

ॐ बिन्दी के सहितही ताहि मात्रा जान ॥
बीजमन्त्र तासोंकहत प्रणवआदिपहिचान१०४
कोमल भोजन कीजिये आधी रखिये भूख ॥
पवन वसे सुखसों जहां तन नहिं पावै दूख १०५
साठिघरी दिन राति की आठ तासु के याम ॥
लीजे चौथा भागही कीजे प्राणायाम १०६
चारभाग ताके करे चार समें ठहराय ॥
चार चार घटिका करे दृढ़मत चित्तलगाय१०७

चौ० और दूसरि भांति सुनीजे । होयसके तो याको कीजे ॥ बारहलों ॐ पवन चढ़ावे । कुम्भक माहिं बीस ठहरावे ॥ बारह पिंगल पवन उतारे ।

१ दावी २ प्रणव अर्थात् ॐकार बिन्दी सहित ॥

राति दिनामें चारहिवारे ॥ फेरि चढ़ावै कुम्भक दुगुनी । फेते घोसनो फिर तिगुनी १०८ ॥

अष्टपदी ॥ प्राण वायुकी युक्ति कहौं जेहि घातहै । द्वादश अंगुल न सिका आगे जातहै ॥ संयमही सों सहज जु उलट घटाइये । शनैशनै साथ जु ताहि समाइये ॥ अपान वायुको खैंचि प्राण घर लाइये । बि बाहर सों रोंकि जु तिन्हें मिलाइये ॥ तीनि कर्म पूरकके कुम्भकके के रेचकही के कर्म दोय निरचय रहे ॥ दो रेचक के कर्म पूरकके तीनहीं । सबही रहिजायँ होय जब क्षीनहीं ॥ पूरक रेचक छूटै केवल कुम्भकयहै ठौर समैका बंधनराखै नाशही ॥ या क्रियाको अन्तजानों तुम हां तहं प्राणनयुको रोंकै कायाके महीं १०६ ॥

दो० सावहजार इकीसलख सवै स्वास परमान ॥
यह तौ रोंकै देहमें जबलग एकहि प्रान ११० ॥
याकेहू ये सौ दिना साधन भवै जु सिद्धि ॥
केवल कुम्भक जानिये पूरी ह्वै जु विद्धि १११ ॥

अष्टपदी ॥ इतनी होवै शक्ति रुकन जब श्वासकी । रहै नहीं परमाण जु गिनती मासकी ॥ द्वादशके सौ बरष सहसकैलाखही । चाहै जबलग रखै सांच यह साखही ॥ गुप्त महा यह जान कठिन है साधना । कोटिनमें कोइ एक करै आराधना ॥ देखा देखी बहुत मनुष याकूं लगैं । कोई चढ़ै परमान वने मथमैथके ॥ चरणदास यह समुझिकहैं शुकदेवही । शनैशनै सों करै पाय या भेवही ११२ ॥

दो० मूलबंध अरु खेचरी मुद्राही को जान ॥
दोनों के साधे विना होय न प्रान अपान ११३ ॥

चौ० खेचरिमुद्रा कहूं बखानै । जाको कोटिन में कोइ जानै ॥ सकल शिरोमणि योग मँझारी । ज्यों मन लोवै छत्रधारी ॥ शीशफूल ज्यों गहनो माहीं । या बिन ताड़ी लागै नाहीं ॥ साधन कर कर जीभ बढ़ावै ।

१धीरेधीरे ॥

ब्रह्मरंधरताई लावै॥ उरैताल वा ठौर कहावै।रसना सूं ह्यां बन्ध लगावै॥ सूं पवन न सरकन पावै। श्रवण नैनजू बाट रुकावै॥ प्राण वायु बाहर हैं जावै। या प्रकारसों युक्ति बनावै॥ शुकदेव कह चरणदास बताऊं। गे मूलबन्ध समुझाऊं ११४॥

दो० मूलबन्ध जानौ यही एँड़ी गुदा लगाव॥
यक दहनी बाईं कभी सिध आसन ठहराव ११५

चौ० मूलबन्धजा कारण दीजै। सो मैं कहूं सबै सुनि लीजै॥ अधार कसूं पवन उठावै। स्वाधिष्ठानहिं के ढिग लावै॥ दहिनी ओर कूं ताहि करावै। ऐसी तीन लपेट लगावै॥ सीधा हो ऊपर कूं धावै। मणिपूरक कर में आवै॥ शनई शनई ताहि चढ़ावै। चक्कर चक्कर में पहुंचावै॥ सूच- र के ऊपरताई। ब्रह्मरंध के लावै ठाईं॥ ऐसे पट चक्कर कूं शोधै। प्राण ायु को यों परबोधै॥ प्राण वायु जो ह्यांतक आवै। प्राण वायुहै सहजस- ावै॥ शुकदेव कह सुन चरणहिं दासा। सहज शून्यमें करै निवासा११६॥

अथ अष्टप्रकार के कुम्भक वर्णते॥

शिष्यवचन॥

दो० प्राणायाम कि विधि सबै गुरु तुम दई सुनाय॥
सो लेकरि हिरदै धरी ताहि न देउँ भुलाय ११७
चरणदासके शीश पर तुमहीं गुरु शुकदेव॥
कुम्भक अष्ट प्रकारके तिनको कहिये भेव ११८
लक्षण नाम स्वभाव गुण जुदे जुदे समुझाय॥
चरणदास के मन विषे सुनबेको अतिचाय ११९

गुरुवचन॥

अब आठो कुम्भक कहूं नावँ भेद गुण रूप॥
शुकदेव कहै परसिद्ध है योगहि माहिं अनूप १२०
कहूं नावँ लु सूरज भेद॥

…न, शीतलि, भ्रामरी, मूर्छा, केवल ये आठकुम्भक हैं॥

दूजे ऊजाई सुनो साथे छूटे खेद १२१

शीतकार अरु शीतली पँचवीं भस्त्रहि जान॥

छठीजु भ्रमरी जानहे नीके समझि विधान १२२

नावैं मूर्च्छा सातवीं अठवीं केवल होय॥

रणजीता सबसे बड़ा आयु बढ़ावै सोय १२३

चौ० पवन पूर पूरकही कीजे। पाछे बन्ध जलन्धर दीजे॥ कुम्भक के मधि जानो। छाई बन्ध उहां न पिछानो॥ पवन जोरहीमूं गहि व अर्ध ऊर्ध्व संकोच न कीजे॥ मध्यम कीजै पश्चिम ताने। ब्रह्म तारि हिंसमानै॥ वाही पवन खेंचिये ऐसे। भरिये सब संधान जु जैसे॥ अ वायु कूं ऊपर लावे। प्राण वायु नीचे लेजावे॥ जोपै यह साधन बनि वै। योगी बूढा होन न पावे॥ तरुण अवस्था देखे ऐसो। नित जानिये जैसो १२४॥ अथ सूर्यभेदन॥

कुं० कुम्भक सूरजभेदही पहिले देहुं सुनाय।

सुख आसन कै कीजिये अथवा बज्र लगाय॥

अथवा बज्र लगाय पूर दहिने स्वर कीजे।

नख शिख सेती रोकि वायु कूं बन्ध करीजे॥

बायें सेती रेचिये धीरे धीरे जान।

कपालशोधकनी जानिये चरणदास पहिंचान १२५

दो० वायु क्रिम पीड़ा हरै कीजै बारंबार॥

कुम्भक सूरजभेदनी शुकदेव कह हियधार १२६

अथ ऊजाई॥

चौ० अब ऊजाई कुम्भक सुनिये। समझ सीख मन माहीं गुनिये। दोउ स्वर समकर पवन चढ़ावै। पेट कण्ठ लों ताहि भरावै॥ ताको रोके दृढ़ करि राखे। सहज इडा सों रेचक नाखे॥ ऐसे जो कोइ साधन करे। रोग सलेपम के सब हरे॥ हिरदय कण्ठ माहिं जो होई। कफका रोग रहै नहिं कोई॥ रोग जलन्धरही का भागे। सबै वायु दुख पावक जागे॥ बैठत

तत पवनको भरे । यही उजाई कुम्भक करे ॥ चरणदास शुकदेव बतावैं । जी शीतकार समुझावैं १२७ ॥

अथ शीतकार ॥

दो० ओड़ जँभाई नासिका लीजे खिंचे जु पौन ॥
ताहि कछु ठहरायकै छोड़ै मुख सों जौन १२८
धीरे धीरे खेंचिये सीसी शब्द उच्चार ॥
सुन्दर होवै तेजवत अधिक रूपको धार १२९
भूख प्यास व्यापै नहीं आलस नींद न होय ॥
तनचेतनही होतहै रहै उपाधि न कोय १३०
यहि विधि साधतही रहै होय योगिन में भूप ॥
चरणदास शुकदेव कहि कुम्भक यही अनूप१३१

अथ शीतली ॥

चौ० कहूं शीतला कुम्भक आगे । जो कोई करै भाग तिहि जागे ॥ तालु मूल जिह्वा चल सेती । प्राण वायु पीवै कर हेती ॥ कुम्भकराखै सबतन माहीं । ढीला गात रमावै छाहीं ॥ नासा सेती रेचक कीजे । एकमास सिधिहो सुनिलीजे ॥ पीजे पवन जीभको मोड़ । सहजे छोड़ै नासा ओड़ ॥ दोनों रंधरसे तजि दीजे । यों अभ्यास पूर करि लीजे ॥ तापतिलो गोला जु रहाई । वाके तनमें रहै न कोई ॥ देह पुरानी नौतन होय । तीनि बरप साधै जो कोय ॥ जैसे सांप कैचुली भौहिं । श्वेत बाल तजि काले होहिं ॥ काहू भांतिक दुख नहिं व्यापै । भूख प्यास पितभाजे आपै १३२ ॥

अथ भस्त्रिका ॥

दो० अबकहुं कुम्भक भस्त्रिका पित कफ बायु नशाय ॥
अगिनि बढ़े अभ्यासमों तीनि गांठि खुलिजाय१३३

चौ० आसनपद्म सुयाविधि करै । बामजंघ दहिनो पग धरै ॥ बावों पग दहनी परलावै । जांघनसों दोउहाथमिलावै ॥ ग्रीवा पेट बराबरराखै । आगे सनु शुकदेवा भाखै ॥ मुख मूंदे रेचे नासासूं । पूरक चपल करै श्वासासूं ॥

रेचक पूरक ऐसे कीजै। बारंबार तजै अरु लीजै॥ जैसे खाल लोह रेचक पूरक आतुर करै॥ करत करत जबहीं थकिजावै। नेक दर्श विधि लावै॥ फिरि पूरक सूरजसों करै। पवन उदरके माहीं भरै॥ अँगुली सों दृढ़ रोंके। नासामध्य यानकरिजोखे १३४॥

दो० कुम्भक पिबली भांतिकरि रेच इड़ासों वाय॥
कफ पित वाय नशायके लेवैअग्नि बढ़ाय १३५।
कुण्डलिनी देवैजगाय यह कुम्भक सुखदाय॥
करै जुहित मत धारिकै चरणदास चितलाग १३६
कुण्डलिनी सरकायके बेधै तीनों गांठ॥
ऐसी पँचवींभस्त्रिका रहै न कोई आंठ १३७

चौ० ब्रह्मनाड़िकाके छिदमाहीं। रोंकिरही मुखदेरहि ढाहीं॥ ला पेटे नाभी ठाहीं। दृढ़ह्वै बैठी सरकै नाहीं॥ सदा बिलसत कि जाकी तामें प्रस्थित जीव सनेही॥ शक्ति नागिनी यही जु कहिये। याक गुरूसों लहिये॥ महाअपरबल जागे नाहीं। ताते नर सब मरिमरि हीं॥ कोइ इक योगी ताहि डुलावै। सुषमन बाट गगन लैजावै॥ ब्र में जाय समावै। लगै समाधि बहुत सुखपावै॥ जो कछु होय सो कह जावै। चरणदास शुकदेव सुनावै १३८॥

दो० शिव शक्ती भे लाभ वै रहै न द्वितिया भाव॥
कुण्डलिनी परबोधका जो कोइ करै उपाव १३९

॥ शिष्यवचन॥

व्यासपुत्र शुकदेवजी किरपाकरी दयाल॥
चरणदास आधीनहीं समभो भयो निहाल १४०
एकबार फिरि खोलिकै कुण्डलिनी समुभाव॥
याके सबके भेद को सुनवेको अतिचाव १४१

॥ गुरुवचन॥

फिरभी तोसों कहतहों कुण्डलिनी विस्तार॥

ताके सगरे भेदही सुनिकै हियमें धार १४२
नाभिस्थान नागिन रहै कुण्डल शशीअकार ॥
प्राण पियारा वही है आगे सुनो विचार १४३
कुंभक कर्म्म कोई करै देवै शक्ति जगाय ॥
जैसे लागी लष्टिको नापत शीश उठाय १४४

चौ० सीखिगुरूसों कुंभकसाधै। नीकी विधि ताको अवराधै॥ पवन चकलग ताहि जगावै। तब ऊरधै को शीश उठावै॥ नाभि ठौर ताका है ।सा। पद्मराग मणि ज्यों परकासा॥ सात लपेटे वाई जानो। ताते शक्ति कुण्डली मानो॥ नाड़ी सहस लगी हैं वाको। सोपर छुटी जानिको ताको॥ जिनमें तीन नारि अधिकाई। इड़ा पिंगला सुषमन गाई॥ तिनके माहिं शिरोमणि सुषमन। नाल कमल जानत योगीजन॥ जायपहुँचि ब्रह्मरंधर ताहीं। ऊरध कमल सातवें माहीं॥ आवन जोन पवन की बाटा। सकल चढ़न ऊरधका घाटा॥ कहि शुकदेव चरणहीं दासा। आगे कहूं जु हो परकासा १४५॥

दो० नागिन सूक्षम जानिये बाल सहस वा भाग॥
शुकदेव कहै अकारही रक्त बरण ज्यों नाग १४६
कुंभक हो अत्यन्त जब तब ऊरधको जाय॥
ब्रह्मरंध्र में आयकर घड़ी दोय ठहराय १४७
ईश्वर को करि ध्यानहो पूरण हो अभ्यास॥
उड़ते देखै सिद्ध तब वाको माहिं अकास १४८

चौ० पै देखतहै नैन विनाहीं। चहै करै लीला उन माहीं॥ खेचर मिलि खेचर है जावै। यह भी शक्ति उड़नकी पावै॥ अधिकी ठहरै लगै समाधा। यह तो कहिये खेल अगाधा॥ शिव शक्ती जहँ मेला होई। होय लीन मन उनमन सोई॥ योग युक्ति करि याको पावै। परासक्त अपने वल लावै॥ चाहै अर्द्ध ठौर लै आवै। जब चाहै ऊरध लेजावै॥ कबहूं हिरदयके

१ लाठी २ ऊपर॥

मधि जाने। ताही को आपनपौ जानै॥ इच्छा करै सिद्धि की जैसी। भास सो योगेहि तैसी॥ चहै अस्थूल सूक्ष्म तन धारूं। वैसाही होय सवारूं॥ कहि शुकदेव सुन चरणहिदासे। जो कुंडलिनी हृदयप्रकासै॥

दो॰ कुण्डलिनी परकाशही भौंरा एक अनूप॥
सोय प्रकाशत है तहां सुवरणकोसो रूप॥ १५०
हिरदयमें उजियारही होत चपल यहि भांति॥
जैसे धूमर मेघमें बिजलीही दमकाति॥ १५१

चौ॰ कहि शुकदेव चरणदास बताऊं। और अनूठी सिद्धि सुना॰ चाहै पर देही में वरूं। अपनी कायाको परिहरूं॥ रेचक प्राणायाम म॰ कुण्डलिनी जो अपनी आपै॥ रेचक किये बाहेर आवै। परकायामें॰ समावै॥ अस्थिर होय जाय ज्यों जानो। सदा विराजत ऐसे मानो॥ पहिली देह गिरावै। ज्यों मणिको डोरा तजिजावै॥ जब चाहै अपने माहीं। परासक्रही आवै ह्वाहीं॥ काया पलट कहतहैं याको। कोइक यो जानत ताको १५२॥

दो॰ चाहै तनको छोड़ करि देह कलप धरि और॥
मनमाने जहँ गवनकरि फिरि आवै अपठौर १५३

॥ अथ भ्रामरी कुंभक ॥

दो॰ छठौ जु कुम्भक भ्रामरी सुनिये चरणहिदास॥
[illegible] तामें करौ विलास १५४
[illegible] सुनिकरि यों उपजै हिय माहिं॥
[illegible] कीजिये परगट सुनिये नाहिं १५५
[illegible] करै यही शब्द ले साथ॥
[illegible]नि सहत रेचै मन्द सुहात १५६
[illegible]के कियेसे चित चंचल रहै नाहिं॥
[illegible]लाकरै चिदानन्द के माहिं १५७

॥अथ मूर्छा॥

सतवीं कुंभक मूरछा पूरक ऐसे होय॥
खेंचत होवै सोरसा मेघधार ज्यों जोय १५८
वन्ध जलन्धर दीजिये सहज करउ तल जान॥
रेचत वाई मूरछित होय यही पहिंचान १५९
सुखदायी सुखकी करन कही सोइ शुकदेव॥
केवल कुम्भक आठवीं गुरुसों पावै भेव १६०
पूरक रेचकही सहत ये कुम्भक करि लेहि॥
केवल कुम्भकनामभै जवलग ह्यां चितदेहि१६१
केवल कुम्भक आशधरि येहु साधत लोग॥
फलपावै वशपौनहो और भजें तन रोग १६२

॥अथ केवल कुंभक॥

आयु बढ़ावै सिद्धिदे लागै और समाधि॥
केवलकुम्भकगुणभरी बिनपरमाणअगाधि१६३
केवल कुम्भक जब सधै तब ये सब रहिजाहिं॥
जैसे सूरज उदयते तारे सब लुकि जाहिं १६४
केवल कुम्भक योग में ज्यों नगरी में भूप॥
रेचक पूरक के बिना जैसे बँधा जु कूप १६५
सो तुमसों पहिलेकही विधिगतिसब समुझाय॥
सो सुनि तुम हिरदय धरी देहो नां बिसराय १६६

१० प्राणायामै बड़ातप सोई। प्राणायाम सों वल नहिं कोई॥ प्राण
ो यह वश लावै। मनको निश्चल करि ठहरावै॥ आयुर्दायको यही
बढ़ावै। तनमें रोग रहन नहिं पावै॥ पाप जलावै निर्मल करै। उपजै ज्ञान
तिमिरै सब हरै॥ योग युक्तिकी जड़ यह जानो। याहि टेकगहि करना
ठानो॥ अड़ि आसन सों याको कीजै। नवो द्वार पटनी करि दीजै॥ पां-

गधि आनै। याही को आपनपौ जानै॥ इच्छा करै सिद्धि की जैसी। होय प्राप्त सो वेगहि तैसी॥ चहै अस्थूल सूक्ष्म तन धारूं। वैसाही होय जाय सभारूं॥ कहि शुकदेव सुन चरणहिदासै। जो कुंडलिनी हृदयप्रकासै१४६॥

दो० कुण्डलिनी परकाशही गौरा एक अनूप॥
सोउ प्रकाशत है तहां सुवरणकोसो रूप १५०
हिरदयमें उजियारही होत चपल यहि भांति॥
जैसे धूमर मेघमें बिजलीही दमकाति १५१

चौ० कहि शुकदेव चरणदास बताऊं। और अनूठी सिद्धि सुनाऊं॥ चाहे पर देही में बरूं। अपनी कायाको परिहरूं॥ रेचक प्राणायाम प्रतापै। कुण्डलिनी जो अपनी आपै॥ रेचक किये बाहर आवै। परकायामें जाय समावै॥ अस्थित होय जाय ज्यों जानो। सदा बिराजत ऐसे मानो॥ ऐसे पहिली देह गिरावे। ज्यों मणिको डोरा तजिजावे॥ जब चाहे अपने घट माहीं। परासकही आवे ह्वाहीं॥ काया पलट कहतहैं याको। कोइक योगी जानत ताको १५२॥

दो० चाहे तनको छोड़ करि देह कलप धरि और॥
मनमाने जहँ गवनकरि फिरि आवै अपठौर १५३

अथ भ्रामरी कुंभक॥

दो० छठो जु कुम्भक भ्रामरी सुनिये चरणहिदास॥
शुकदेवा हों कहतहूं तामें करो विलास १५४
जैसे भृंगी धुनिकरै यों उपजै हिय माहिं॥
दोनों स्वरसों कीजिये परगट सुनिये नाहिं १५५
बलसेती पूरक करै यही शब्द लै साथ॥
भृंगीकीसी धुनि सहत, रेचै मन्द सुहात १५६
या अभ्यास के कियेसे चित चंचल रहै नाहिं॥
योगीश्वर लीलाकरै चिदानन्द के माहिं १५७

१ भवँरा॥

नैन जु भोगैं रूपको और गन्ध को घ्रान ॥
षटरस भोगै जीवही शब्दहि भोगै कान १७४
त्वचा भोगि अस्पर्शको बाढ़ै अधिक बिकार ॥
पांचों इन्द्री जानिले इनका यही अहार १७५
इनसेमिलिमिलिमनबिगड़िहोयगयाकुछऔर॥
इन्द्री रोकै मन रुकै रहै जु अपनी ठौर १७६
ज्यों ज्यों होवै प्राणवश त्यों त्यों मनवश होय ॥
ज्यों ज्योंइन्द्रीथिररहैं विषयजायसव खोय १७७
ताते प्राणायाम करि प्राणायामहिं सार ॥
पहिले प्राणायामकर पीछे प्रत्याहार १७८

इति प्रत्याहार अंग सम्पूर्णम् ॥

अथ षष्ठधारणाअंगवर्णन ॥

दो० छातनकी कहुं धारणा तिनमें करै प्रवेश ॥
शनइः शनइः साधिकरि पहुंचै निर्भय देश १७६

चौ० पहिले भूमि धारणाकीजै । ठौर काल जीमें चितदीजै ॥ पीतवरण चौकोर अकारो । विधि दैवत है तहां विचारो ॥ प्राणलीनकरि पांच घड़ीहीं । चित अस्थिर होवैगा जवहीं ॥ यासों पृथिवीको वश करिये । यह धारणा जो नित धरिये ॥ हिरदय से ऊपर जल जानो । कराठ तहँ ताके पहिचानो ॥ चन्द्रकांक अरु श्वेत अकारो । ऋषीकेश तहँ देव निहारो । यां हूं पांच घड़ी अस्थापै । प्राणलीन करि चितदे आपै ॥ व्यापैना त्रिकाहू विधिको । शुकदेव कहैं फल जलके सिधिको १८०॥

चो इन्द्रीके रस पेलो।इड़ा पिंगला सुषमन खेलो॥ कहि शुकदेव चरणदासा। प्रत्याहार सुनि विषै निरासा१६७॥

इति चौथा भाग,यम अंग सम्पूर्णम्॥

अथ पांचवां प्रत्याहार अंगवर्णन॥

दो॰ प्रत्याहार[१] जो पांचवां समझाऊं चर्णदास॥
शुकदेव कह कहुँ खोल करि नीके समझो तास१६८

चौ॰ प्रत्याहार पांचवां कहिये।सो योगी को निश्चय चहिये॥ विषय ओर इन्द्री जो जावै। अपने स्वादन को ललचावै॥ तिनकी ओर न जाने देई। प्रत्याहार कहावै एई॥ रोंकिरोंकि इन्द्रिनको लावै। ध्यान आतमा माहिं लगावै॥ जैसे कछुआ अंग समेटै। रंक शीतकाला में लेटै॥ जैसे माता पूत पलावै।बालक वश तोकू ललचावै॥ सरप आग अरु शस्तर कोई। कछू और दुखदायी होई॥ तिनको बालक नाहीं जानै। पकड़नको दौड़ै मन आनै१६९॥

दो॰ बालक जानत है नहीं दुखदायी सब एह॥
जो पकरूंगा हाथ से दुख पावैगी देह१७०
माता जानत है सबै खोटी खरी विकार॥
राखै सुतको खैंचिकरि बारंबार निवार१७१
ऐसेही बुधि ज्ञान सों पांचौ इन्द्री रोग॥
विषय ओर सों फेरिये लहै न अपना भोग१७२
ज्यों ज्यों इनको भोगदे परबल होती जाहिं॥
बिना भोग होनी नहीं वह बलरहे जुनाहिं१७३

१ दशौं इन्द्रिय विषयसे रोंकना॥

जो कछु होय सो आगेहि आगे। टेक पकरि मारगमें लागै॥ चरणदास शुकदेव बतावै। सती शूरिमा ज्यों मन लावै १६१॥

दो० प्राण वायुकी धारणा परमेश्वर पहिंचान॥
परमातम है जात है जोपै रोपै प्रान १६२
बारह मात्रा सों चढ़ै ह्वां तक पहुंचै जाय॥
बारह में अरु छानवे कुंभक में ठहराय १६३
यही धारणा अंग है शनै शनै कर ध्याव॥
यातें दुगुनी ध्यान में प्राण वायु पहुंचाव १६४
दूजा योनि समाधि लो ध्यानहिं सेती एहु॥
पांच सहस औ एकसौ चौरासी गिनिलेहु १६५

इति धारणांगसम्पूर्णम्॥

अथ सातवां अंगवर्णन॥

शिष्यवचन॥

अंगधारणा का कहा सो धारा चित माहिं॥
ध्यान अंग बरणन करो मैं रहुं चरणन छांहिं १६६

गुरुवचन॥

चरणदास अब ध्यान सुन, कहूं तोहिं समुझाय॥
कहिशुकदेवतोसुनिसमुझिकरोताहिचितलाय१६७
ध्यानजु चारि प्रकार के कहूंजु उनकी रीत॥
पदस्थ पिंड रूपस्थहै चौथा रूपातीत[1] १६८

अथ पदस्थ ध्यान॥

हिय पदपंकज ध्यानकरि फिरि करि सारी देह॥

---

[1] चारप्रकारका अर्थात् पदस्थ, पिंडस्थ, रूपस्थ, रूपातीत॥

दो० कण्ठसे ऊपर तालुका लो पावक अस्थान
लालरंग तिरकोनहै रुद्र देवता मान १८१
तहां लीन करि प्राणको पांच घड़ी परमान
भय व्यापै नहिं जालको अग्नि धारणा जान १८२
जाके आगे वायु है भृकुटीलौं मर्य्याद।
मेघ वरण षट कोनहै ईश्वर देवत साध १८३
प्राणलीन तहँ कीजिये पांच घड़ी रे तात।
पैहै खेचर सिद्धिही तत पदही है जात १८४
ब्रह्मरंध्र आकाश है वड़ा जु ततत्तन माहिं॥
श्याम वरण सुर ब्रह्महै योगी जहां सिराहिं १८५
प्राण लीन घटि पांचकरि पावै मुक्ति अनूप॥
व्योमे तत्त्वकी धारणा जहां छाहँ नहिं धूप १८६
पृथ्वी संग लकारही जल के संग वकार॥
पावक संग रकार है मारुत संग मकार १८७
पंच तत्त्व आकाश ही सब के ऊपर जान॥
अक्षर जहां हकारही शुकदेव कहै बखान १८८
पहिलि धारणा थंभनी दूजी द्रावण होय॥
तीजी दहनी जानिये चौथि भ्रामनी सोय १८९
पँचवीं नाम जु शंखिनी इन को लेवो जान॥
शुकदेवा अब कहत है आगे और विधान १९०

चौ० गुरु की प्रथम धारणा लीजे। अपना रूप उन्हीं सा कीजे॥ ऐसे ध्यान सभी सुधि पावे। जैसी धारे सो होयजावे॥ वेगिहि सब साधन सधि आवे। आलस कायरता भजि जावे॥ लोक प्रलोक सभी सुख लेवे। जो गुरुको ऐसो व्रत सेवे॥ दूजे परमातम की धारण। मुक्ति देनअरु बन्ध निवारण॥ धारनसों चित घना लगावे। सिमिटि सभी ओरनसों जावे॥

१ आकाश॥

झिलमिल झिलमिल तेजमय भासै सब संसार॥
तन मन उपजै सुखघना आनँद अधिकअपार २११
जल अथाह में डूबज्यों देखै दृष्टि उधार॥
जो दीखै तो नीरही दश दिशि अपरम्पार २१२
यहौ ध्यान प्रत्यक्ष है गुरु कृपासों होय॥
कहिशुकदेवचरणदासकरितनमनआलसखोय २१३

अथ रूपातीत ध्यान॥

चौ० रूपातित शून्यध्यानहिं जानो। शून्यहि को परब्रह्म पिछानो॥ त्रिकुटी परे शून्य अस्थान। सो वह कहिये पद निर्वान॥ चिदानन्द ताको हिय आनो। याही में मनहींको सानो॥ आठपहर जहँ चित्त लगावो। याके कीन्हे सों लयपावो॥ ज्यों अकाशमें पक्षी धावै। धावत धावत दृष्टि न आवै॥ बहुरि अज्ञानके दीखै आई। वह ध्यानी ऐसा ह्वै जाई॥ इसपर शून्यक अधिकी ध्याना। सब ध्याननमें है परधाना॥ सो योगी यह लहै ठिकाना। सायुज्यमुक्ति होइजाय निदाना २१४॥

दो० यासों लगै समाधिही निद्रा कहिये योग॥
ध्याता होवै लीनही रहै न त्रिकुटी रोग २१५
सतवां कहा जु ध्यानहीं अठवीं कहूं समाधि॥
ज्ञाता ध्यान जहँ बीसरै तहां न विद्यावाद २१६

नखशिखलौं छवि निरखिकै चरणनमेंचितदेह १६६
कै कुंभकही कीजिये हुवौ प्रणवे का जाप॥
मन निश्चलहो सहजमें भाजै त्रैविधि ताप २००
पदस्थ ध्यान याको कहै करे सो जानै भेव॥
पिंडस्थ ध्यान वर्णन करें खोलि २ शुकदेव २०१

अथ पिंडस्थ ध्यान॥

ब्रह्म सोई यह पिंडहै यामें धरि करि वास॥
कमलन के लखि देवता लहो परापत तास २०२
खोले सिगरे पिंडको पट चक्रहु को ध्यान॥
शोधत शोधत आवहै भँवर गुफा अस्थान २०३
तिरबेणी संगम बहै ज्योति जहां दरशाय॥
सातजन्म सुधि होय जब ध्यान करैमनलाय २०४
आगे कमल हजार दल सतगुरु ध्यान प्रधानै॥
अमृत दरिया बहिचलै हंसकरै जहँ न्हान २०५
ऊपर तेजहि पुंजे है कोटि भानु परकास॥
शून्य शिखर ताऊपरै योगीकरै विलास २०६

अथ रूपस्थ ध्यान॥

रूपस्थ ध्यानको भेद सुनि कीजैमन ठहराय॥
देखे त्रिकुटी मध्यहै निश्चल दृष्टि लगाय २०७
ध्यान किये पहिले जहां अगन फूल दृष्टाय॥
केते द्योसन माहिंहीं दीप ज्योति प्रगटाय २०८
शनैशनै आगे जहां दीपमाल दरशाय॥
फिरितारोंकी मालसी दामिनि बहु दमकाय २०९
बहुत चन्द सूरज घने देखे कोटि अनन्त॥
अणज्यों करि सूभरे भरे ध्यानमाहिं दरशन्त २१०

१ ओंकार २ दैहिक दैविक भौतिक ३ मुख्य ४ इकट्ठा ५ नक्षत्र॥

झिलमिल झिलमिल तेजमय भासै सब संसार ॥
तन मन उपजै सुखघना आनँद अधिकअपार २११
जल अथाह मैं डूबज्यों देखै दृष्टि उघार ॥
जो दीखै तौ नीरही देश दिशि अपरम्पार २१२
यहाँ ध्यान प्रत्यक्ष है गुरू कृपासों होय ॥
कहिशुकदेवचर्णदासकरितनमनआलसखोय२१३

अथ रूपातीत ध्यान ॥

चौ० रूपातित शुन्यध्यानहिं जानो । शून्यहि को परब्रह्म पिछानो ॥ त्रिकुटी परे शून्य अस्थान । सो वह कहिये पद निर्बान ॥ चिदानन्द ताको हिय आनो । वाही में मनहींको सानो ॥ आठपहर जहँ चित्त लगावो । ताके कीन्हे सों लयपावो ॥ ज्यों अकाशमें पक्षी धावै । धावत धावत दृष्टि न आवै ॥ बहुरि अचानक दीखै आई । वह ध्यानी ऐसा है जाई ॥ इसपर शून्यक अधिकी ध्याना । सब ध्याननमें है परधाना ॥ सो योगी यह लहै ठिकाना । सायुज्यमुक्ति होइजाय निदाना २१४ ॥

दो० यासों लगै समाधिही निद्रा कहिये योग ॥
ध्याना होवै लीनही रहै न त्रिकुटी रोग २१५
सतवां कहा जु ध्यानहीं अठवीं कहूं समाधि ॥
ज्ञान ध्यान जहँ वीसरे तहां न विवाबाद २१६

इति ध्यानांगसम्पूर्णम् ॥

अथ आठवांसमाधिअंगवर्णन ॥

अरिल्लछन्द ॥

अठवीं कहूं समाधि लछन वर्णन करूं। जोको सब समुझाय तेरी दुबिधा हरूं ॥ जबही लगै समाधि योगी आनँद लहै। योग भया सिध जाकिया कोइ ना रहै ॥ मिलि ध्याता अरु ध्यानएक होवै जहां। दूजा रहै न भाकि रैन जहां ॥ निरउपाधि निर्द्वंद ऐस वह देशहै। करम भरम अरु रग नहीं कोइ लेशहै ॥ आपा रहै न कोय सकल आशा गेरै। चिन्ता का दु नाहिं वासना सब जेरै ॥ पंचे विषय जहँ नाहिं नहीं गुणतीनहीं। होवै स्वरूप जीवता क्षीनहीं ॥ जाग्रत स्वप्न सुषोपति जहां होवै नहीं। चौथे प को पाय होय जहँ लीनहीं ॥ ऐसे कहै शुकदेव सुनो चरणदासही। य निर्द्वंद समाधिको जहँ वासही २१७ ॥

दो० जहां कछू गम ना रहै विद्या वेद न बाद ॥
ऋधिसिधि मिटि आनँदलहै ऐसी शून्य समाधि २१८

अ० छं० ॥ तहां किये परवेश रहै न अकारही। रूप नाम गुण क्रिया यही साकारही ॥ पाप पुण्य सुख दुःख जहां नहिं पाइये। मतमारग कुल धर्म न देत दिखाइये ॥ भूख प्यास अरु उष्ण जहां नहिं शीतहै। हर्षशोक नहिं नेक वैरनहिं प्रीतहै ॥ इन्द्री मन नहिंरहत गलतहैजातहै। सिष साधक गुरु शिष्यन भाव रहातहै ॥ उडुगनें चन्द न सूरे न दिवस न रातहै। त्वंपद ईश्वरब्रह्म जुजान्यो जातहै ॥ जैसे जल में नीर क्षीरमें क्षीरही। असि पदमें यों जीव नीर में नीरही ॥ अहं मिटै मिटि जाय जु आपा थोकही। ना परमातम आतम बंध न मोषही ॥ ऐसे कह शुकदेव यों होय समाधि में। वैसाही है जाय सोई था आदि में २१९। २२० ॥

दो० हुता आदि परमातमा बिचउठि लगा विकार ॥

१ काम,क्रोध,मोह,लोभ,मात्सर्य २ दूसरे के बिना ३ गर्म ४ नक्षत्र ५ सूर्य ६ छूटजाना॥

मिलि समाधि निर्मल भवै लहै रूप ततसार २२१

अ०छं०॥ जहँ आतमदेव अभेव सेव्यनहिं सेवहै। स्वामीजी हां नाहिं पूजा नहिं देवहै॥ नौधा नेम न प्रेम ज्ञान नहिं ध्यानहै। जड़ चेतन कछु नाहिं सुरत नहिं ज्ञानहै॥ विधि निषेध नहिं भेद अन्वै वितरेकना। निश्चय अरु व्यवहार कछु तामें न हां॥ उत्तम मध्यम भाव न शुभना अशुभहै। सिंह सर्प डरनाहिं औ शस्तर को न भै॥ पावक दग्ध न करै वहावै जल नहीं। हां नहिं पहुँचै काल न ज्वालाहै तहीं॥ ऐसा भवन समाधि भागि सों पाइये। तजि के जक्त उपाधि तहां मन छाइये॥ यतन करै लख माहिं और सब वेषही। कोटिनमें कोइहोय समाधी एकही॥ हांतक पहुँचे जाय सोई सिध साध है। कहै शुकदेव पुकारि जु कठिन समाधि है २२२॥

दो० भक्ति योग अरु ज्ञानकी त्रैविधि कहूं समाधि॥
गुरू मिलै तो सुगमहै नाहीं कठिन अगाधि २२३

अथ भक्तिसमाधि॥

सब इंदिन को रोकिकै करि हरि चरणन ध्यान॥
बुद्धि रहै सुरतिहु रहै तो समाधि मत मान २२४
ध्याता विसरै ध्यान में ध्यानहोय लय ध्येह॥
बुद्धि लीन सुरति न रहै पद समाधि लखि लेह २२५

अथ योगसमाधि॥

आसन प्राणायाम करि पवन पंथ गहिलेहि॥
षट चक्रन को छेद करि ध्यान शून्य मन देहि २२६
आपा विसरै ध्यान में रहै सुरति नहिं नाद॥
लीन होय किरिया रहित लागै योग समाध २२७

अथ ज्ञानसमाधि॥

जबलग तत्त्व विचारि करि कहै एक अरु दोय॥
ब्रह्मवत बंधे रहै ह्यांलग ध्यानहिं होय २२८

१ ब्रह्मस्वरूप २ श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वंदन, दास्य, सख्य, आत्म-निवेदन ३ शब्दहोना॥

मैं तू यह वह भूलि करि रहै जु सहज स्वभाय ॥
आपादेहि उठाय करि ज्ञान समाधि लगाय २२९
ज्ञान रहित ज्ञाता रहित रहित ज्ञेय अरु जान ॥
लगी कभी छूटै नहीं यह समाधि विज्ञान २३०
पूछे आगे अंग ते योग पंथ की बात ॥
शुकदेव कहै तामें चलौं गुरू कृपा लै साथ २३१

इति समाधियज्ञसम्पूर्णम् ॥

अथ छहौकर्महठयोगवर्णन ॥

शिष्यवचन ॥

दो॰ अष्टांग योग वर्णन कियो मोको मैं पहिचान ॥
छहौंकर्म हठयोग के वरणों कृपानिधान २३२

गुरुवचन ॥

पहिले ये सब साधिये काया होवै शुद्धि ॥
रोग न लागै देह को उज्ज्वल होवै बुद्धि २३३

चौ॰ अरसाधै षटकर्म बताऊं। तिनके तोकोनाम सुनाऊं॥ नेती धोती नसती करिये। कुंजर करम देह सब हरिये॥ न्योली किये भजै तन बाधा। देखि देखि जिन गुरु सों साधा॥ त्राटक कर्म दृष्टि ठहरावै। पलक पलक सों लगन न पावै २३४॥

अथ नेतीकर्म ॥

कुं॰ मिही जु सूत मँगाय के मोटी बाटै डोर।
ऊपर मोम लगाय के साधै उठ कर भोर ॥
साधै उठ कर भोर डेढ़ बालिस्त कि कीजै।
ताको सीधी करै हाथ अपने में लीजै ॥
नासा रन्ध्र में गेल कर खींचै अँगुली दोय।

फेरि विलोवन कीजिये नेती कहिये सोय २३५ ।
दो० कान नाक अरु दांत को रोग न व्यापे कोय ॥
उज्ज्वल होवे नैनही नित नेती करि सोय २३६

॥ अथ धोतीकर्म ॥

धोती कर्म यासों कहैं पट्टी सोलह हाथ ॥
फोर अठारह नामवैं करै जु नित परभात २३७
कुं० चौड़ी अंगुल चारिकी मिही वस्त्र की होय ।
जलमें भेय निचोय करि निगलन्कंठ सों सोय ॥
निगल कंठ सों सोय सिरा बाहर रहिजावे ।
फेरि निकासै ताहि पित्त कफ दोऊ लावे ॥
काया होवै शुद्धही भजे पित्त कफ रोग ।
शुकदेव कहै धोती करम साधै योगी लोग २३८

॥ अथ वस्तीकर्म ॥

तीजे वस्ती कर्मही कहौं सुनो चितलाय ।
क्रिया करे गन्नेशाही कुंजी तहां लगाय ॥
कुंजी तहां लगाय मूल को धोवन कीजै ।
नहिं पसार संकोच सुरत दै यह करि लीजै ॥
नीर गुदा सों खैंच करि थांमे उदर मँझार ।
कछु डोल अस बैठकर फिरि दे ताहि उतार २३९
दो० यही जु वस्ती कर्म है गुरु बिन पावै नाहिं ॥
लिंगगुदा के रोग जो गर्मी के नशिजाहिं २४०

॥ अथ गजकर्म ॥

गज कर्म याही जानिये पियै पेट भरि नीर ॥
फेरि युक्ति सों काढ़िये रोग न होय शरीर २४१

॥ अथ न्योलीकर्म ॥

चौ० न्योली पदमासन सों करै । दोनों कर घुटनों पर धरै ॥ पेट पीठ

बराबर होय। रहने पावें नहीं विलोय॥ मेल पेटमें रहन न पावे वायु तासों बश आवे॥ तापतिली अरु गोला शूल। होन न पावे मूल॥ जोगुरु करिके ताहि दिखावे। न्योली कर्म सुगम करि पावे उदर के रोग कहावें। सोभी वे रहने नहिं पावे २४२॥

अथ त्राटककर्म॥

त्राटक कर्म इकटकी लागै। पलक पलक सों मिले न ताके॥ धारेही नितरहै। होय दृष्टि थिर शुकदेव कहै॥ आंखउलटि त्रिकुटी नो। यह भी त्राटक कर्म्म पिछानो॥ जेते ध्यान नैन के होई। घर पूरणहो सोई २४३॥

दो॰ कपाल भांति अरु धौंकनी बाघी शंख पखाल॥
चारि कर्म ये औरहैं इनहिं वहीं के नाल २४४

इति त्राटककर्म॥

अथ खेचरीमुद्रा॥

शिष्यवचन॥

दो॰ एकबार फिरभी कहो मुद्रा पांच दयाल॥
मोसे रंक अधीनपर होकर बहुत कृपाल २४५

गुरुवचन॥

अष्टपदी॥ आगे मुद्रा तोहिं कही समुझाइया। फिरभिकहूं अब सो सुनो चितलाइया॥ पहिले मुद्राखेचरी को साधन अर्न्न। जैसे आगे क सबी ऋषि मुनिजन्न॥ ताते जलके कुरलेकरि जुनगाइये। तापाछे चौबर को चूरणलाइये॥ जिह्वा हाथमें पकरि मर्दन छीलनकरै। दोहनतानन्तक बहुरि दशनन [illegible] । तालू ज्यं कटिजाय यत्न [illegible] । यायें अ ऊके ऊपर कागको धारिये॥ सहज सहज सरकायके आगे लाइये। यह

सब साधन कठिन गुरुसे पाइये ॥ दो अँगुली कूँचीसूँ करि मेलना । जिह्वा उलटी राख जु नितप्रति खेलना ॥ यह उपाय षट मास करै तजि मानहीं । रसना यों बँधिजाय चढ़े अस्थानहीं २४६ ॥

दो० चार काज यासूँ सरैं फलदायक बहुभांति ॥
योग माहिं बड़ भूप है अधिकी जाकी क्रांति २४७

अष्टपदी ॥ एक जु प्राणायाम जीभसूं कीजिये । दूजे बन्ध उदान यही सूं दीजिये ॥ तीजे करि करि ध्यान निरखि जहँ ज्योतही । चौथे अमृत पिवै खुलै तहँ सोतही ॥ खैंचे त्रिकुटी पाट सहज अरु फेरिये । द्रवै सुधो रसनीर जहां मन घेरिये ॥ इन्द्रवती के स्वादको कौन बखानई । जो कोइ अँचवै सोइ मुन जानई ॥ दिन दिन पलटै देह रक्त दूधाभवै । बीस बरस अरु चार माह ऐसा ह्वै ॥ इत्याचारी होय बरस छत्तीसमें । सब लोकन में जाय आपनी शक्ति लै २४८ ॥

दो० जेते विष व्यापै नहीं रोग न दहै शरीर ॥
जो कोइ पीवै युक्तिसूं कामधेनु को क्षीर २४९
भूख प्यास अरु नींदके रहै न तीनों लेव ॥
नाद बिन्दु गुटका बँधे कहै यही शुकदेव २५० ॥
तीन महीने चार का बालक गोदी माय ॥
नावहै पीवै नीरही अन्न नहीं वह खाय २५१ ॥
वह तो जीवै दूधसूं वाकूं वही जु काम ॥
लगो रहै माता कुचन निसरै एक न याम २५२

[illegible]

ऐसे धारै तो बनै सुधा रसीला संत ॥
दिविकाया होजायजब धनिकहै कमलाकंत २५३
आठपहर लागारहै पीवै कैके ध्यान ॥

१ अमृत २ इन्द्रकी गौ ॥

मैं कह जैसाही बनै परसै पद निरवान २५५
भेद गुरुसे ये लहै और छिपावै ताहि॥
जोजोफल याके अधिक होयपरापति ताहि २५६
योगेश्वर अरु देवता मुनी ऋषीश्वर जान॥
रखवारे याके घने करन न देवैं ध्यान २५७
टेक गहै सो जापिये और करै हां ध्यान॥
यती सती अरुगुरुमुखी जाकी ऐसी आन २५८
बड़ी जु मुद्रा खेचरी मुख में याका बास॥
जो कहिमैं शुकदेवजी जानलेहु चरणदास २५९

अथ भूचरी मुद्रा॥

दूजी मुद्रा भूचरी नासा जाको बास॥
प्राण अपान जुदी जुदी एक करै चरणदास २६०
जितकी तित रख प्राणको वा घरलाय अपान॥
ताहिमिलावै युक्तिसूं करिकरि संयमध्यान २६१
जब वह जीतै पवनकूं मन चंचल ठहराय॥
गगनचढ़नकीआशाहो कहैंशुकदेवसुनाय २६२
गुदाधार बँध दीजिये एँड़ी पांव लगाय॥
आसनसिद्धजु कीजिये मनपवनाबिरमाय २६३
अपान बायु जब बशभवै ऊरध खैंच चलाय॥
सनई सनई जा चढ़ै प्राण बायु ह्वै जाय २६४

अथ चाँचरी मुद्रा॥

तीजी मुद्रा चाँचरी जाको नैनन बास॥
नासा आगे दृष्टिकूं राखै मन धर आस २६५

चौ० अंगुले चार नासिका आगे। चित अस्थिर करि देखन लागे॥ खुले पांच तत करै जु कोई। मन अरु पवन जहां थिर होई॥ फिर वासूं नासा परि आवे। अचल टकटकी तहां लगावे॥ जहँ बहुतक अचरज

दरशावै । विमल स्वर्ग के आगे आवै ॥ जितसूं पलट तिरकुटी माहीं । ध्यान करै कहुँ अन्त न जाहीं ॥ दीरघ तारासा परकासै । उदय होय सूरज ज्यों भासै ॥ चित चेता दोउ मेला करै । लै उपजै अरु दुबिधा हरै ॥ यही चाचरी मुद्रा जानै । चरणदास याकूं पहिंचानै २६६ ॥

अथ अगोचरीमुद्रा ॥

कहूं अगोचरि चौथी मुद्रा । तामें सुख पावै योगींद्रा ॥ यामुद्राका सेवन वासा । शुकदेव कहैं सुन चरणहि दासा २६७ ॥

दो० ज्ञान सुरति दोउ एक है पलट अगोचर जाय ॥
शब्द अनाहद में रतै मन इन्द्री थिरपाय २६८

अथ उनमनीमुद्रा ॥

पँचवीं मुद्रा उनमनी दशवें द्वारे वास ॥
सिद्धसमाधि मिलै जहां दग्धहोय सब आस २६९
आनंदहि आनँद जहां तहां न काल कलेश ॥
तीनोंगुन नहिं पाइये ह्यांनहिं मायालेश २७०
जीवातम परमात्मा होय जाय वा ठौर ॥
ध्याता[1] ध्यानन[2] ध्यान जहँ तहां न किरिया और २७१

महाबन्धसाधनविधि ॥

चौ० महाबन्ध तोहिं पहल बताऊं । पाछे मूलबन्ध समझाऊं ॥ बायांपाँव सिवन गहि दीजै । मूल द्वार एँड़ी बँध कीजै ॥ दहिनी जंघ जंघपर लावै । गउमुख आसन नाम कहावै ॥ राखे चिबुक हृदय पर लाय । पवनराह पूरबकी जाय ॥ ध्यान त्रिकुटी संयमकरै । प्राण वायु हिरदे में धरै ॥ महाबन्ध ऐसे करि साधै । गुरु प्रताप याहि अवराधै ॥ बिना पुरुष तिरियाकूंजानो । बन्ध विना मुद्रा पहिंचानो ॥ निरफल जाय पुरुष बिननारी । महाबन्ध बिन मुद्राधारी ॥ माहिं कण्ठके ध्यान लगावै । सुरत निरतद्वांई बहरावै २७२ ॥

दो० महाबंध अरियत करै सो योगी है जाय ॥

१ कान २ न देख पड़ना ३ ध्यान करनेवाला ॥

गं करै जैसाही बने परसे पद निरवान २५५
भेद गुरुसे ये लहै और छिपावे वाहि ॥
जोजोफल याके अधिक होयपरापति ताहि २५६
योगेश्वर अरु देवता मुनी ऋषीश्वर जान ॥
रखवारे याके घने करन न देवें ध्यान २५७
टेक गहै सो जापिये और करैं ह्यां ध्यान ॥
यती सती अरुगुरुमुखी जाकी ऐसी आन २५८
बड़ी जु मुद्रा खेचरी मुख में याका वास ॥
जो कहिमे शुकदेवजी जानलेहु चरणदास २५९

अथ भूचरी मुद्रा ॥

दूजी मुद्रा भूचरी नासा जाको वास ॥
प्राण अपान जुदी जुदी एक करै चरणदास २६०
जितकी तित रख प्राणको वा घरलाय अपान ॥
ताहिमिलावे युक्तिसूं करिकरि संयमध्यान २६१
जब वह जीते पवनकूं मन चंचल ठहराय ॥
गगनचढ़नकीआशाहो कहैंशुकदेवसुनाय २६२
गुदाधार बंध दीजिये एँड़ी पांव लगाय ॥
आसनसिद्धजु कीजिये मनपवनावशलाय २६३
अपान वायु जब वशभवै ऊरध खैंच चलाय ॥
सनईं सनईं जाचढ़ै प्राण वायु ह्वै जाय २६४

अथ चाँचरी मुद्रा ॥

तीजी मुद्रा चाँचरी जाको नैनन वास ॥
नासा आगे दृष्टिकूं राखे मन धर आस २६५

चौ० अंगले चार नासिका आगे । चित अस्थिर करि देखन लागे
खुले पांच तत करै जु कोई । मन अरु पवन जहां थिर होई ॥ फिर ढार
नासा परि आवे । अचल टकटकी तहां लगावे ॥ जहँ बहुतक अचरु

धिकाय। जो चाहे तौ वहुलै खाय॥ सुन चरणदास कहै शुकदेव। जो पूरा देवै भेव २७९॥

अथ जलंधरबंध॥

दो० - मूलबंध तोसूं कहा गुण कह तब समुझाय॥
बंध जलंधर कहतहूं सुन सरवन करि चाय २८०

चौ० तीजा बंध जलंधर जानौ। कंठ वास ताका पहिचानौ॥ ग्रीवा नीचे करके चिबुक पर लावै। कंठ पवनपर लैपहुंचावै॥ हिरदैप्राण पूरकरि रहिये। बंध जलंधर यासूं कहिये॥ उरध पवन नीचे को जाय। अरध पवन ऊरधहू लाय॥ उदर मध्य लै ताहि बिलोय। ब्रह्म घरजा पहुँचै सोय॥ इह विधि ब्रह्मपंथकूं धावै। सहजै सहजै मध्य समावै॥ जरा मरण जहँ भय नहिं व्यापै। लहै अमरपद होरह आपै॥ चरणदास शुकदेव बतावै। जो बंध उद्यान लगावै २८१॥

अथ उद्यानबंध॥

दो० बंध उद्यान आगे कहा जिह्वा उलट लगाय॥
कान आंख मुख नाकके स्वरसब बंधकराय २८२
इह सुबंध महिमा अधिक लागे बजरकिवाँर॥
सातद्वार की बाटहो निकसै नाहिं बयार २८३
पांचौ मुद्रा बंध सब दिखलाया यह देश॥
शुकदवे कहे रणजीत सुन और कहूं उपदेश २८४

षट्पदी छन्द॥

चौरासीही जानि जु आसन योगके। सिद्धपदम तिनमाहिं बड़ेही लोकके॥ बहुनारिनके माहिं जु नौनारी भनी। तिनमें सुषमन जानवड़ी गुरुमूं सुनी॥ तीन बंधके माहिं मूलकूं जानिये। मुद्राही में बड़ी खेचरी मानिये॥ वायुनमें परधान प्राणकूं देखिये। सबकुंभकहू माहिं केवलबड़ि लेखिये॥ बानीचारो मध्यपराही गाइये। चार अवस्थामाहिं तुर्यावड़िपाइये॥ परमशून्यको ध्यान परेसूंहेपरे। याकीसम कोइनाहिं ध्यान तिनको भरे॥

पवन पंथ मुंदित करै ध्यान कण्ठ में लाय २७३ ।

चौ० शशि परकूं सूरज पर लावै । रेचक पूरक पवन फिरावै ॥ महा करै अभ्यासा । अमृत अँचवै बुझै पियासा ॥ जरा अमृत देही नहिंआवै। महाबंध तीनौ गुनपावै ॥ जठर अग्नि परचै बहुभारी । निशिदिन माहिं अठवारी ॥ पहर पहर भर पवन भरीजै । प्रथम अल्प अभ्यास करीजै ॥ सिय सेवन तापन नहिंकरै । कामअग्नि काया नहिंजरै २७४ ॥

दो० ऐसी विधि साधै पवन योग पंथ धरि पाय ॥
पहर पीछला चन तजन आयुरक्ष वढ़िजाय २७५

अथ मूलबंध ॥

मूलबंध अब कहतहूं अपान,वायु वश होय ॥
ऊपर कूं खैंचन करै मिलै प्राण में सोय २७६
कमल कमल सीधे भवै नाँभि तलेहो राह ॥
आगे मारग सुगमहो पहुंचै योगीनाह २७७

चौ० मूलबंध गुण ऐसाहोई । वायु अधोगति जाय न कोई ॥ रेता ऊ रध यासूं सधै । दिन दिन आयु सवाई बँधै ॥ यासूं कारज सब बनिआवै । रोगरक्त को सभी नशावै ॥ योगी पहिले या आराधै । अपानवायु कूं नीचे साधै ॥ अब मैं मूलबंध बतलाऊं । ज्योंका त्यों साधन दिखलाऊं ॥ गुद वास याका तुमजानौ । गुदा द्वार बंधनदे ठानौ ॥ बायें पांव कि ऐंड़ीसेती मूल द्वार रोंके करि हेती ॥ ऊरधेही कूं खैंचन कीजै । शुकदेव कहै नीके सुनलीजै २७८ अरु कबहूं मन ऐसीधरै । आसन पदम करन कूं करै । कपड़े की इकगेंद बनावै । गुदा मध्य कसबंध लगावै ॥ योंभी वायु सधै ब भांती । जोपै लगारहै दिनराती ॥ पवनतनय के ऊपर जावै । प्राण अपान सहज मिलजावै ॥ नाद बिन्दु रल मिलजा दोई । एकवर्ण साधै जोकोई ॥ योग माहिं यह भी परधान । बूढ़ी देह पलटहो ज्वान ॥ जठरअगन बाढ़

१ रोकना २ चन्द्रमा ३ चोटी ४ घाटै ५ ऊपर ६ देह ॥

जल वहुते पीवै नहीं सपरस करै न नार २९३
तन मन साधै वचन ही पाप न लगने देह ॥
शुकदेवकहै चरणदास मुनिजथकी साधनयेह २९४
सब जीवन मुख दीजिये सब सों मीठा बोल ॥
आतम पूजा कीजिये पूजा यही अतोल २९५
दया पुष्प चन्दन नवन धूप दीप दे मन्न ॥
भांति भांति नैवेद्य सूं करै देव परसन्न २९६
जो कोइ आवै राजसी देहु वड़ाई ताहि ॥
जाकूं देखो तामसी करो नम्रता वाहि २९७
जो कोइ होवै सात्विकी मिलै ताहि तजिमान ॥
गुढ़ी खोल चर्चाकरो लीजै ततमत ज्ञान २९८
सबही कूं परसन करै आपरहै परसन्न ॥
वासलहो हरि ध्यानही ह्यांकहै सब धन धन्न २९९
राजस तामस सात्त्विकी क्षेत्ररली नहिं भांति ॥
क्षेत्रक आतम देवहै सबको सहिये क्रांति ३००
सब में देखै आप कूं सब कूं अपने माहिं ॥
पावै जीवनमुक्ति को यामें संशय नाहिं ३०१
सब में देखै आतमा आपन में करि ध्यान ॥
यही ज्ञान ब्रह्मज्ञान है यही जु है विज्ञान ३०२
अहंकार मिटि ब्रह्महो परमातम निरवान ॥
शुकदेवाहो कहतहूं चरणदास हिय आन ३०३
जो तैं पूछा सो कहा भेद कहा सब खोल ॥
अरु तेरे हियमें कछू सकुच खोल कर बोल ३०४

॥ शिष्यवचन ॥

अपना लखि किरपाकरी समझायो बहुभांति ॥

१ भकाश ॥

अजपाहीके जापबराबर औरना। शीलदयासे मीत न कोई देहना॥ ^१^मन्मथ में बड़ि जान जु आतमकी करे। ज्ञानसमान न दान सकल विपताहरै॥ गुरुसा रक्षक और नहीं कोइ लोकमें। योग युक्तिमा स्वादनहीं कोइभोकमें॥ कहशुकदेव सुनो रणजीतही। बड़ी योगांश खोल तुमकूं जुदी २८५॥

छं०॥ अमरी करतें वजरी रोंके वजगी करतें वाई। रोंके छींक साधना करिकै नासालेहु जँभाई॥ जल संयमसूं नभकूं देखै संयम नादसुं ज्योती। संयम पवनहोय थिरकाया सो वश राखै मोती॥ जिया बिछावे मृत्यकजोंदे बूढ़ी होय न काया। संयम नींद बिंदनहिं जावै यह शुकदेव बताया॥ दहिनेस्वरमें भोजनकीजे बायें स्वरमें पानी। दहिने स्वरमें अमरी रेचै देह न होय पुरानी॥ दहिने स्वर में जलसूं न्हावै बायें स्वर में लङ्गी। शिव आसनसूं सेवनकीजे नारि न कीजै सङ्गी॥ पावकसूं तापन नहिं कीजै जो तापै वो नैना। भोजन गरम न खट्टाखावै फटे फिरै नहिं गैनी २८६॥

दो० गरमीही के रोग में चन्द चला रवि चन्द॥
शीतरोग सूरज चला शशि पर राखै बन्द २८७
तीन रोज के पांच दिन के दिन राखै सात॥
रोग देखि जैसी करै होय निरोगा गात २८८
सूरज रात चलाइये द्योस चलावै चन्द॥
पवन फिरै ऊपा बधै श्वास चलै जो मन्द २८९
कान आंख अरु दांतके सबही रोग भजाहिं॥
श्याम बालनहिं श्वेतहों करै जुनीकी दाहिं२९०
रुई पुरानी बहुतही दिनकूं दहिने राखि॥
बायें राखै रैनिकूं खोली साधन भाखि २९१
शीत उष्ण व्यापै नहीं बिष नहिं व्यापक होय॥
बीसवरस साधन किये रहै बिकार न कोय २९२
बासी ग्रास न खाइये छूछे करै अहार॥

१ कामदेव॥

जेती जगकी वस्तुहै तामें चित्त न लाय ॥
सावधान रहियो सदा दियो तोहिं समुझाय ३१७
बार बार तोसे कहूं ह्यां मत दीजो चित्त ॥
सिद्ध स्वर्गफलकामना तजि कीजो हरि मित्त ३१८
जो कीजे हरि हेतही एहो चरणहि दास ॥
भक्ति योग अरु शुभकरम नीकीठौर निवास ३१९

शिष्यवचन ॥

ऐसेही सब करूंगो तुम चरणन परताप ॥
अष्ट सिद्धि समझौं चहौं वर्णन कीजे आप ३२०
समझौं तौ त्यागूं उन्हैं करवायो पहिंचान ॥
कहानाम लक्षण कहा कौनरहै अस्थान ३२१

गुरुवचन ॥

कहि शुकदेव वर्णन करूं अष्ट सिद्धि के नाउँ ॥
लक्षण गुण सबही सहित नीके तोहिं समझाउँ ३२२

अथ अष्टसिद्धि के नाम ॥

चौ० प्रथमें अणिमा सिद्धि कहावै । चाहै तौ छोटा ह्वै जावै ॥ अणु समान छिपि जावै सोई । ऐसी कला जु पावै कोई ॥ दूजी महिमा लक्षण एता । चाहै बड़ा होय वह जेता ॥ तीजी लघिमा वह कहवावै । पुष्प[१] तुल्य हलका ह्वै जावै ॥ चौथी गरिमा कहूं विचारी । चाहै जितना होवै भारी ॥ पंचवीं प्रापति सिद्धि कहावै । जित चाहै तितही ह्वै आवै ॥ छठवीं प्राकाम्य गुण धरै । शक्ति पाय चाहै सो करै ॥ सतवीं सिद्धि ईशिता रानी । सबको आज्ञा माहिं चलानी ३२३ ॥

दो० वशीकरण सिधि आठवीं कहैं श्री शुकदेव ॥
चाहै जिसको वशकरै अपनाही करि लेव ३२४
चरणदास सिद्धै कही समझलेहि मनमाहिं ॥

१ फूल ॥

योग औलर्ते गुरूजी हिये में आई शांति २०५
तुम्हरी कहं अस्तुति करूं मोपै कही न जाय॥
इतनी शक्ति न जीभको महिमै कहै बनाय २०६
किरपाकरी अनाथ पर तुमहो दीनानाथ॥
हाथ जोड़ि मांगों यही मम शिर तुम्हरा हाथ २०७
मोसे रंक गरीबकी तुम गहि पकरी बाहँ॥
मवे बूड़त राखा मुझे चरण कमलकी छाहँ २०८
आपहि तुम किरपाकरी मैं किन लहता तोहिं॥
तुमको पाऊं ढूंढ़िकरि इतनी शक्ति न मोहिं २०९
व्यासपुत्र शुकदेव, तुम जक्त माहिं विख्यात॥
तुम दर्शन दुर्लभ महा पुरुषनको न दिखात २१०
बड़े भाग मेरे जगे पूरबले परताप॥
किरपा श्रीगोपालकी आय मिले तुम आप २११
चरणदास अपनो कियो दियो परम संतोष॥
बैठिकरूंगो ध्यानही अब कुछ रह्यो न शोक २१२
चलत फिरत ह्यां आइया तुमभरिदीन्ह्यो मोहिं॥
नैन प्राण तन मनसभी देखत अरपे तोहिं २१३
चाहमिटी सब सुख भये रहा न दुखका मूल॥
चाहूं तो चाहूं यही तुम चरणनकी धूल २१४

॥ गुरुवचन॥

योग तपस्या कीजियो सकल कामना त्याग॥
ताको फलमत चाहियो तजो दोष अरुराग २१५
अष्टसिद्धि जो पै मिलै नेक न कीजै नेह॥
धरि हिरदय परमात्मा त्यागे रहियो देह २१६

१ संसार २ अणिमा, गरिमा, लघिमा, महिमा प्राप्ति, ईशित्व, आदि आठ सिद्धियों के नामहैं॥

किरपाकरिअपनोकियो सबहीनिभिसोंहायवर३२५॥

इति श्रीगुरुचेलासंवादेअष्टाङ्गयोगसम्पूर्णम् ॥

अथ श्रीचरणदासकृतयोगसन्देहसागर प्रारम्भः ॥

दो० अर्थ बतावो पण्डिता ज्ञानी गुणी महन्त ॥
जो तुम पूरे साधुहौ भक्ता हरिके सन्त १
चरणदास पूंछै अरथ भेदी होय कहौ ॥
समझौ तौ चर्चा करौ नाहीं मौन गहौ २

चौ० ब्रह्मण्डे सो पिण्डे जानौ । ठौर ठौर घटमें पहिंचानौ ॥ सात स-र घटमें कहां । कछुवा रहै बतावो जहां ॥ शेषनाग केहि ठौर बिराजै । वराह कौन छबि छाजै ॥ कहा चारका यामें खान । चौरासी लख योनि न ॥ षट चक्कर को जो तुम जानौ । नाम सहित सब भेद बखानौ ॥ भि कुण्डली का परमान । कैसे जागे कहौ बखान ॥ सहज सहज वह ां समावै । योगी होय सो भेद बतावै ॥ चरणदास का गुरु शुकदेव । तौ जानै सबही भेव ३ ॥

दो० कहां जु बासा पवनका मन कौनी अस्थान ॥
कहां हिये की आंखि है कैसे करै पिछान ४

चौ० प्राण पुरुष अन्तर्गत कैसे । क्योंकरि भेद बतावो जैसे ॥ इड़ा गला सुषमन नारी । कैसे पलटैं बारी बारी ॥ आठ प्रकार के कुम्भक ानै । सो युक्ती मेरे मनमानै ॥ चारअवस्था चार शरीरा । बाणी चारि ाम कह बीरा ॥ के प्रकार अजपाका जाप । के अंगुल स्वासाका नाप ॥

१ भीतरमास २ बाल किशोर पौगण्ड इत्यादि चारअवस्था ॥

जो हैं जनुआ रामके इनमें उरभैं नाहिं २२५

चौ० योगकिये आठोसिधि पावै। के भोगै के चित न लगावै॥ यो॰ किये मन जीताजावै। पलटै जीव ब्रह्मगति पावै॥ योगेश्वर चाहै सो कीै भरी रितावै रीती भरै॥ योगेश्वर ईश्वर है जाई। दिन दिन बाढ़े कला सवाई॥ तजिये भोग योगही करिये। तिरगुणपरे ध्यानही धरिये॥ चौथेपदमें करै निवासा। काहूविधिका रहै न स्वासा॥ योग करै सोई परवीना। शुकदेव कहें प्रकट कहि दीना २२६॥

दो० पोथी मांहीं देखि करि करै जु कोई योग॥
तनछीजै सिधि नाभवै देही आवै रोग २२७
देखि देखि गुरुसों करै ले आज्ञा रहु संग॥
सिद्धि होय साधन सबै कछू न आवै भंग २२८
योग तपस्या में बड़ा पहुंचावै हरिवास॥
जन्म मरण विपता मिटै रहै न कोई आस २२९

शिष्यवचन॥

मैं समभी जानी सभी सूभभई हिय माहिं॥
किरपाकरि जो जो कहा ताकों बिसरूं नाहिं २३०
व्यासदेव श्री जनक जै जै जै श्री शुकदेव॥
जैजै यह सुकतारहै समुभायो करि हेव २३१
हियहुलसो आनँद भयो रोम रोम भयो चैन॥
भये पवित्तर काननये सुनि सुनि तुम्हरे बैन २३२
गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु गुरू देवनके देवा॥
सर्व सिद्धि फलदेन गुरू तुम मुक्ति करेवा २३३
गुरु केवट तुम होय करो भवसागर पारी॥
जीव ब्रह्म करिदेत हरो तुम व्याधा सारी २३४
श्रीशुकदेव दयालु गुरु चरणदासके शीशपर॥

१ छीजै २ निर्वाणपद अर्थात् ब्रह्ममें लीनहोना॥

क्यों आवे अरु क्यों वह जाय । याका ज्ञानी करो लखाय ॥ परा पश्यन्ती मध्यम कहा । कहा बैखरी देहु बता ॥ रणजीताका गुरु शुकदेव । सो जानै सवही भेव ५ ॥

दो० पद तीनों कहूँ विष्णुके स्वप्न जाग्रत भेद ॥
वामन अक्षर देह में पुष्पदीप कह स्वेद ६

चौ० कहँ इकीस काया में लोक । इन्द्र करे कहँ नित्तहि भोग ॥ ब्रह्मादिक शिव कहां त्रिदेवा । काविधि उनको पावे भेवा ॥ षोड़श चन्द कहाँ परकाशा । बारह सूर्य्यनका कितवाशा ॥ तारामण्डल कैसे दर्शै । त्रिकुटी संयम कैसे परशैं ॥ त्रिवेणी को कैसे पावे । रं रकार कह शब्द जगावे । बरणों अक्षर ॐकारा । तासेभयो सकल संसारा ॥ जाका कीजे जैसे ध्याना । कौन दिशा अरु को अस्थाना ॥ चरणदास का गुरु शुकदेव । सोतौ जाने सवही भेव ७ ॥

दो० निर्गम सुगम भेदकहु श्वास उसास बनाव ॥
कायामें विष कहां है बिन्दु कुण्ड दर्शाव ८

चौ० जीव ब्रह्ममें केता बीच । कौन कौन कायामें नीच ॥ अमृतकुण्ड कौन अस्थान । बङ्क नालकी कहु पहिचानं ॥ ब्रह्मरन्ध्र का भेद लखाव । कामधेनुका बरण बताव ॥ मानसरोवर तालबताव । तामें हंसा कैसेन्हाय ॥ बिना सीप कहँ उपजे मोती । बिना धीवकहँ जगमग ज्योती ॥ विनसूरज कहँ नितही धूप । भँवरगुफाका कैसा रूप ॥ शून्य शिखर का कीधर द्वारा । के सिरकी घर कहां अकारा ॥ चरणदास का गुरु शुकदेव । सोतौ जानै सवही भेव ६ ॥

दो० कहां दशौ दिगपाल हैं कहँ इन्द्रिन के देव ॥
अहार वास पँचतत्त्वको वरणि बतावो भेव १०

चौ० काशी अरु मथुरा है दोय । कहां देहमें कहिये सोय ॥ अरसठि तीरथ घटमें ज्योंकर । सबका गुरु पुष्करहै क्योंकर ॥ कहांबसे बाई उद्यान कहां अन्य लागे उद्यान ॥ कहँ कपाटका कुञ्जी ताला । द्वादश कला कौन

तवाला ॥ कण्ठ कूप उलटाहै कौन । नेजू कहा बनावो जोन ॥ पनिहारी हो कैसे भरै । घड़िया कहां कहां भरि धरै ॥ कै मकार अमृत का स्वाद । न ठौर सों अनहद नाद ॥ अग्र डोर कैसे करि पावै । मकर तारका भेद तावै ॥ चरणदासका गुरु शुकदेव । सोतौ जानै सबही भेव ११ ॥

दो० घंटा ताल का लम्बका और अम्ब्र का बोल ॥
चारि वस्तु ये कौन हैं इन्हें बतावो खोल १२

चौ० कौन कमलपर गुरू विराजे । कै प्रकार अनहद धुनि बाजे ॥ कै बानी हैं अनहद तूरा । जानैगा कोइ साधू पूरा ॥ तेजपुञ्ज कै योजन आगे । अमरलोक कवि सूजन लागे ॥ तीन शून्य कहँ चौथा शून्य । जितही भूले पढ़ि अरु गुन्य ॥ के कहिये कायाके द्वारे । भिन्न भिन्न कहु मेरेप्यारे ॥ बहत्तरसहस आठसै चौंसठ । नारी भेद बहुत है दुर्मठ ॥ कोठ बहत्तरि हैं कहँ कहां । नाम बतावो सो जहँ जहां ॥ चरणदास का गुरु शुकदेव । सोतौ जानै सबही भेव ॥ १३ ॥

दो० सात दीप नौ खण्डको भिन्न भिन्न कहु भेद ॥
काया में केहि ठौर हैं कहा नाम किसहेत १४

चौ० चौरासी बाई का नावँ । कहां कहां है कैसी दावँ ॥ जलका कोठा कोधर होय । कहां अग्नि का कहिये सोय ॥ ब्रह्म जाल कहु कैसे जागै । किस आसन से निद्रा भागै ॥ किस आसन से बीरज जीतै । दशमुद्रा कैसे करै नीतै ॥ नामरूप मुद्रों का ज्ञान । तीन बंध का नाम बखान ॥ चौरासी आसन का नावँ । और बतावो मन के पावँ ॥ स्वर्ग मर्त्य अरु कहां पताल । कहां सत्य अरु कहां तिताल ॥ चरणदास का गुरु शुकदेव । सोतो जानै सबही भेव १५ ॥

दो० कै मकारका योगहै कै प्रकारकी भक्ति ॥
पांच भूमिका ज्ञानकी सातकलाकी शक्ति १६

चौ० को नगरी का राज करै । को जीवै अरु कौन मरै ॥ पेट बड़ा

---

१ चार कोसका प्रमाण ॥

जिसका है ज्ञान। पूजा सही ताहि पहिचान॥ सब में बड़ा कौन आदि
ताको मुरला लेहु निहार॥ ताबिन एक घड़ी नहिं रहै। भेदी होय सां
कहै॥ सबमें बड़ी कहा जो पूजा। जाको सम दीखै नहिं दूजा॥ क्या
सबको जगमगजगा। कौन पुरुष सो गगन गगा॥ कहा घटै सो घटेंघटे। व
मढै सो बढ़ै इबढ़ै॥ ताहि बतावो गुरु शुकदेव। सोतो जानै सबही भेव १७

दो० क्षरके कहा जु अर्थ हैं मसर देहु दिखाय॥
निरअक्षर के रूपको भिन्न भिन्न दरशाय १८

चौ० ॐकारका अर्थ बतावो। महतत्व का रूप दिखावो॥ मन व
का कैसा रंग। मन मनसा दोउ कैसे संग॥ कौन घाटही लहौ समाव
कित जा देखे खेल अगाध॥ चौबिस शून्य हैं जहां जहां। वज्जर ता
लागे कहां॥ वज्रदार बिन पावै कहा। बिन पाये उरले घर रहा॥ आठ
हलका करो बखान। कासों कहिये पद निर्बान॥ जो तुम जानो अपरेता
तौ तुम भेद कहो अब केता॥ दीय मुदा अरु मुद्रा राज। जासों सुधरें का
काज॥ काया महलके जो तुम भेदी। ठौर ठौर कहु घटमें जेती॥ पांच
रवे की इन्द्री दश। यही बतावो आगे वश॥ चरणदासका गुरु शुकदेव
सोतो जानै सबही भेव १९॥

दो० चारभेद चौदह चौवारे भेदी होय सो जानै॥
चरणदास शुकदेवक बालक सो यह भेद बखानै २०

छप्पय॥ चंदकला कित छिपै बढ़ै जब कितसों आवै। बादर कित सं
होय फटै जब कहां समावै॥ दीपलोय बुझिजाय जाय कित मोहिं बतावो
राति दिना कित जाय धुवां केहि ठौर लखावो॥ चरणदास शुकदेव से
पूछतहौं शिरनाय के। तन छूटे जीजायकित आवतहै किहि ठाँयतें २१॥

कवित्त॥ देखो है तमाशा देह समुझिके बिचारिलेहु मूरखनरहोय जोय
बातमें हँसैगो। चीतेको मारि मृग नखशिख सुखायगयो बाघनीको मारि-
बोकसिंहको असैगो॥ बिल्लीको मारि चूहे प्रेमको नगारो दियो दादुरहू पांच

१ पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश॥

ै मारिके बसैगो । कहे चरणदास ऐसे खेलसों लगाई आस चिरिया के
श टोटे बाजको लसैगो २२ ॥

दो० पगलागूं शुकदेव के और वारने जावँ ॥
गुप्त भेद मोसों कह्यो सबै नावँ अरु ठावँ २३
सो तुमसों पूछत करों हौं पुरुषन के दाय ॥
या सागर संदेह को दीजे अर्थ बताय २४

इति श्रीमहाराजसाहबश्रीचरणदासकृतसंदेहसागरसम्पूर्णम् ॥

अथ श्रीचरणदासकृतज्ञानस्वरोदयप्रारम्भः

दो० नमो नमो शुकदेवजी परणम करों अनन्त ॥
तुम प्रसाद स्वरभेद को चरणदास वर्णन्त १
पुरुषोत्तम परमातमा पूरण विस्वावीश ॥
आदिपुरुष अविचल तुही तोहिं नवाऊं शीश २

कुं० क्षर ॐ सो कहत हैं अक्षर सोहं जान ।
निरअक्षर स्वासा रहत ताही को मन आन ॥
ताही को मन आन रात दिन सुरति लगावो ।
आपा आप विचारि औरना शीश नवावो ॥
चरणदास मथि कहतहैं अगम निगमकी सीख ।
यही वचन ब्रह्मज्ञानका मानो विस्वावीस ३
ॐ सो काया भई सोहं सो मन होय ।
निरअक्षर स्वांसा भई चरणदास भज जोय ॥
चरणदास भज जोय खेंचि मनवां तहँ राखो ।
क्षर अक्षर निरअक्षर एकै दुविधा नाखो ॥

१ पुराण २ वेद ॥

जब दरशै यक एकही वेष यह सभी तिहारो।
डार पात फल फूल मूल सो सभी निहारो ४॥
श्वासा सों सोहं भयो सोहं सों ॐकार॥
ॐ सों रा भयो साधो करो बिचार॥
साधो करो बिचार उलटि घर अपने आवो।
घट घट ब्रह्म अनूप समिटि करि तहां समावो॥
चारि वेद का भेद है गीता का है जीव।
चरणदास लखि आपको तो मैं तेरा पीव ५

दो० सब योगन को योग है सब ज्ञानन को ज्ञान॥
सर्व सिद्धिकी सिद्धिहै तत्त्व स्वरनको ध्यान ६
ब्रह्मज्ञान को जाप है अजपा सोहं साध॥
परमहंस कोइ जानि है ताको मतो अगाध ७
भेद स्वरोदय सो लहै समझै श्वास उसास॥
बुरी भली तामें लखै पवन सुरति मन गास ८
शुकदेव गुरु कृपा करी दियो स्वरोदय ज्ञान॥
जब सों यह जानी परी लाभ होय कै हान ९
इड़ा[1] पिंगला[2] सुषमना[3] नाड़ी तीन बिचार॥
दहिने बायें स्वर चलैं लखै धारणा धार १०
पिंगल दहिने अंग है इड़ा सो बायें होय॥
सुषमन इनके बीचहै जब स्वर चालें दोय ११
जब स्वर चालें पिंगला तेहि मधि सूरजवास॥
इड़ा सो बायें अंगहै चन्द्र करत परकास १२
उदय अस्त तिनकी लखै निर्गम सुगम बिद्धि॥
अरु पावै तत बरणको जब यह होवै सिद्धि १३

१ दाहिनी ओर की नाड़ी को कहते हैं २ बाईं ओरकी नाड़ीको कहते हैं ३ दोनों मध्य की नाड़ी को कहते हैं॥

शुकदेवकहि चरणदास सों थिर चरस्वर पहिचान॥
थिर कारज को चन्द्रमा चर कारज को भान १४
कृष्णपक्ष जबहीं लगै जाय मिलतहै भान॥
शुक्लपक्ष है चन्द को यह निश्चय करि जान १५
मंगल अरु इतवार दिन और शनीचर लीन॥
शुभकारज को मिलतहैं सूरजके दिन तीन १६
सोमवार शुक्रभलो दिन बृहस्पतिको देखि॥
चंदयोग में सुफल हैं चरणदास वीशेखि १७
तिथि अरु वार विचारकरि दहिनो बायोंअंग॥
चरणदास स्वर जो मिले शुभकारज परसंग १८
कृष्णपक्ष के आदिही तीनि तिथ्य तक भान॥
फिरिचंदा फिरिभान है फिरिचंदा फिरिभान १९
शुक्लपक्ष के आदिही तीनि तिथ्य लग चन्द॥
फिरिसूरज फिरिचन्दहै फिरि सूरज फिरिचन्द २०
सूरजकी तिथि में चलै जो सूरज परकास॥
सुखदेही को करत हैं लाभालाभ हुलास २१
शुक्लपक्ष चन्दा चलै ... ॥
फल आनँद .. २२
शुक्लपक्ष ति ... न॥
होय क्लेश पीड़ा कछू कै दुख कै कछु हान २३
कृष्णशुक्लपक्ष तिथि में चलै जो परिवाको चन्द॥
कलक करै पीड़ा करै हानि तापकै द्वन्द २४
ऊपर वायें सामने स्वर आयें के संग॥
जो पूंछे शशि योग में तौ नीको परसंग २५
नीचे पीछे दाहिने स्वर सूरज को राज॥
जो कोइ पूंछै आयकरि तौ समभो शुभकाज २६

दहिनो स्वर जब चलत है पूंछे बायें अंग ॥
शुक्लपक्ष नहिं बारदे तौ निष्फल परसंग २७
जो कोइ पूंछे आयकरि बैठि दाहिनी ओर ॥
चन्द चलै सूरज नहीं नहिं कारज बृधिकीर २८
जो सूरज में स्वर चलै कहै दाहिने आय ॥
लग्नवार अरु तिथिमिलै कहु कारज होइजाय २९
जो चन्दा में स्वर चलै बायें पूंछै काज ॥
तिथि अरु अक्षरवारमिलि शुभकारजको साज ३०
सात पांच नव तीन गिन पन्द्रह अरु पचीश ॥
काज वचन अक्षर गिनै भानु योग को ईश ३१
चार आठ द्वादश गिनै चौदह सोलह मीत ॥
चन्दा योग के संग है चरणदास रणजीत ३२
कर्क मेष तुला मकर चारो चरती राशि ॥
सूरज सौं चारो मिलत चरकारज परकाश ३३
मीन मिथुन कन्या कही चौथी अरु धन सीत ॥
द्विस्वभाव की सुषमना सुरलीसुत रणजीत ३४
बृश्चिक हरि बृष कुम्भ पुनि बायें स्वरके संग ॥
चन्द योगको मिलतहै थिरकारज परसंग ३५
चित अपनो असथिर करै नासा आगे नैन ॥
श्वासा देखै दृष्टि सौं जब पावै स्वर बैन ३६
पांचघड़ी पांचो चलैं फिरि वा चारहि बार ॥
पांचतत्व चालै मिलै स्वरबिच लेइ निहार ३७
धरती अरु आकाश है और तीसरी पौन ॥
पानी पावक पांचवों करत श्वास में गौन ३८
धरती तौ सोहीं चलै अरु पीरो रँग देख ॥

१ सिंह ॥

बारह अंगुल श्वास में सुरत निरतकर पेख ३९
ऊपर को पावक चलै लाल वरण है वेष ॥
चारि सु अंगुल श्वास में चरणदास औरेख ४०
नीचे को पानी चलै श्वेत रंग है तासु ॥
सोलह अंगुल श्वास में चरणदास कहै भासु ४१
हरो रंग है वायु को तिरछी चालै सोय ॥
आठ सुअंगुल श्वासमें रणजीत मीतकरि जोय ४२
स्वर दोनों पूरण चलैं बाहर ना परकाश ॥
श्याम रंगहै तासुको सोई तत्त्व अकाश ४३
जल पृथ्वी के योग में जो कोइ पूंछै बात ॥
शशिपर में जो स्वरचलै कहु कारज ह्वैजात ४४
पावक अरु आकाश पुनि वायु कमी जो होय ॥
जो कोइ पूंछै आयकरि शुभकारज नहिं होय ४५
जल पृथ्वी थिरकाज को चरकारज को नाहिं ॥
अग्नि वायु चरकाज को दहिने स्वरके माहिं ४६
रोगी को पूंछै कोऊ बैठि चन्द की ओर ॥
मरती बायें स्वरचलै मरै नहीं विधि ओर ४७
रोगी को परसंग जो बायें पूंछै आन ॥
चन्द बन्द सूरज चलै जीवै ना वह जान ४८
बहते स्वर सों आयकरि पूंछै वहते श्वास ॥
यह निश्चय करि जानिये रोगी को नहिं नाश ४९
शून्य ओर सों आय के पूंछै वहते पक्ष ॥
जेते कारज जगत के सुफल होयँ यों सच ५०
बहते स्वरसों आयकरि शून्य ओर जो जाय ॥
जो पूंछै परसंग वह रोगी ना ठहराय ५१
बहते स्वर सें आय करि जो पूंछै सुन ओर ॥

जेते कारज जगत के उलटे हों विधि और ५१
के बायें के दाहिने जो कोइ पूरण होय॥
पूंछे पूरण होरही कारज पूरण सोय ५३
बरस एक को फल कहै तत मत जानै सोय॥
काल समो सोई लखे बुरो भलो जग होय ५४

चौ० संक्रायत पुनि मेष विचारै। तादिन लगै सु घड़ी निहारै॥ तबहीं स्वर में करै बिचारा। चलै कौन सो तत्त्व निपारा॥ जो बायें स्वर पिरथी होई। नीको तत्त्व कहावै सोई॥ देश वृद्धि अरु समै बतावै। परजा सुखी मेह बरसावै॥ चारा बहुत ठौर को उपजै। नरदेही को अन्न बहु निपजै॥ जल चालै बायें स्वरमाहीं। धरती फलै मेह बरसाहीं॥ आनँद मंगल सों जगरहै। आपतत्त्व चन्दामें बहै॥ जल धरती दोनों शुभ भाई। चरणदास शुकदेव बताई॥ तीन तत्त्वका कहौं विचारा। स्वर में जाको भेद निहारा॥ लगै मेष संक्रायत तबहीं। लगतीघड़ी विचारै जबहीं॥ अग्नि तत्त्व स्वरमें जब चालै। रोग दोषमें परजा हालै॥ कालपड़े थोड़ोसो बरसे। देश भंग जो पावक दरसे॥ वायु तत्त्व चालै स्वर संगा। जग भयमान होय कछु दंगा॥ वायु तत्त्व चालै स्वर दोई। मेह न बरसे अन्न न होई॥ काल पड़े तृण उपजै नाहीं। तत प्रकाश जोहो स्वरमाहीं ५५॥

दो० चैत महीना मध्य में जबहीं परिवा होय॥
शुक्लपक्ष ता दिन लगै प्रातिसास्वै में जोय ५६
भोरहि परिवा को लखै पृथ्वी होय सुथान॥
होय समो परजा सुखी राजा सुखी निदान ५७
नीर चलै जो चन्द में यही समै की जीत॥
घन बर्षे परजा सुखी संवत नीको मीत ५८
पृथ्वी पानी समो जो बहै चन्द अस्थान॥
दहिने स्वर में जो बहै समो सुमध्यम जान ५९

१ प्रातः २ परिवा प्रभात॥

भोरहि जो सुषमन चलै राज होय उतपात ॥
देखनवारो विनशिहै और काल पड़ि जात ६०
राज होय उत्पात पुनि पड़ै काल विसवास ॥
मेह नहीं परजा दुखी जो हो तत्त्व अकाश ६१
स्वासा में पावक चलै परै काल जब जान ॥
रोगहोय परजा दुखी घटै राज को मान ६२
भय कलेश[1] हो देश में विग्रह फैलै अत्त ॥
परै काल परजा दुखी चलै वायु को तत्त ६३
संक्रायत अरु चैत को दीन्हों भेद लखाय ॥
जगत काज अब कहतहूं चन्द सूरको न्याय ६४

चौ० व्याहदान तीरथ जो करै। वस्तर भूषण घर पद धरै ॥ बायें स्वर में ये सबकीजै। पोथी पुस्तक जो लिखिलीजै ॥ योगाभ्यासरु कीजै प्रीत। ओषध बाड़ी कीजै मीत ॥ दिक्षा मंतर बोवै नाज। चन्द्र योग थिर बैठे राज ॥ चन्द्र योग में अस्थिर जानौ। थिरकारज सबही पहिंचानौ ॥ करै हवेली छप्पर छावै। बाग बगीचा गुफा बनावै ॥ हाकिम जाय कोटमें बैर। चन्द्र योग आसन पग धरै ॥ चरणदास शुकदेव बतावै। चन्द्र योग थिर काज कहावै ६५ ॥

दो० बायें स्वर के काज ये सो मैं दिये बताय ॥
दहिने स्वरके कहतहौं ज्ञानस्वरोदय गाय ६६

चौ० जो खांड़ो कर लीयो चाहै। जाकर बैरी ऊपर वाहै ॥ युद्ध वाद रण जीतै सोई। दहिनें स्वर में चालै कोई ॥ भोजन करै करै असनाना। मैथुन कर्म ध्यान परधाना ॥ बही लिखै कीजै व्यवहारा। गज घोड़ा वाहन हथियारा ॥ विद्या पढ़ै नई जोसाधै। मंतर सिद्धि ध्यान आराधै ॥ बैरी भवन गवन जो कीजै। अरु काहूको ऋण जो दीजै ॥ ऋण काहूपै जो तू मांगै।

---

१ गुरूसे मंत्र लेना २ दंदरा ॥

भिप अरु सूत उतारन लागे ॥ चरणदास शुकदेव विचारी। ये चरकर्म की नारी ६७॥

दो० चरकारज को भानुहै थिरकारज को चंद॥
सुषमन चलत न चालिये तहां होय कछु दंद ६८
गाँव परगने सैंत पुनि ईधर ऊधर मीत॥
सुषमन चलत न चालिये बरजतहै रणजीत ६९
क्षण बायें क्षण दाहिनें सोई सुषमन जानि॥
ढील लगै कै ना मिलै कै कारज की हानि ७०
होय क्लेश पीड़ा कछू जो कोई कहिं जाय॥
सुषमन चलत न चालिये दीन्हों तोहिं बताय ७१
योग करो सुषमन चलै कै आतम को ज्ञान॥
और काज कोई करै तौ कुछ आवै हान ७२
पूरब उत्तर मत चलै बायेंस्वर परकाश॥
हानि होय बहुरै नहीं आवनकी नहिं आश ७३
दहिने चलत न चालिये दक्षिण पश्चिमजानि॥
जोर जाय बहुरै नहीं तहां होय कछु हानि ७४
दहिने स्वर में जाइये पूरब उत्तर राज॥
सुख सम्पति आनँद करै सभी होय सुखकाज ७५
बायें स्वर में जाइये दक्षिण पश्चिम देश॥
सुख आनँद मंगलकरै जोर जाइ परदेश ७६
दहिने सेती आय करि दहिने पूंछै धाय॥
जो दहिनो स्वरवंधहै कारज अफल बताय ७७
दहिने सेती आय करि बायें पूंछै कोय॥
जो बायो स्वर वंधहै सुफल काज नहिं होय ७८
जब स्वर भीतर को चलै कारज पूंछै कोय॥

१ घन॥

पैजं बांधि त्रासों कहो मनसा पूरण होय ७९
जब स्वर बाहर को चलै तब कोइ पूंछै तोर॥
याको ऐसे साधिये विधि नहिं काज करोर ८०
बाईं करवँट सोइये जल बायें स्वर पीव॥
दहिने स्वर भोजन करै तौ सुख पावै जीव ८१
बायें स्वर भोजन करै दहिने पीवै नीर॥
दश दिन भूलो यों करै आवै रोग शरीर ८२
दहिने स्वर झाड़े फिरै बायें लघुशंकाय॥
युक्ती ऐसे साधिये दीन्हों भेद बताय ८३
चन्द चलावै द्योस को रैनि चलावै सूर॥
नित साधन ऐसे करै होय उमर भरपूर ८४
जितनोहीं बायों चलै सोई दहिनो होय॥
दश श्वासा सुषमन चलै ताहि विचारो लोय ८५
आठ पहर दहिनो चलै बदलै नहीं जुपौन॥
तीन बरस काया रहै जीव करै फिरिगौन ८६
सोलह पहर चलै जभी श्वास पिंगला माहिं॥
युगल बरष काया रहै पीछे रहनो नाहिं ८७
तीन रात अरु तीन दिन चलै दाहिनो श्वास॥
संवत भर काया रहै पाछे होवै नास ८८
सोलहदिन निशिदिन चलै श्वास भानुकीओर॥
आयु जान इकमासकी जीव जाय तन छोर ८९
नौ भृकुटी सातै श्रवण पांच तारको जान॥
तीन नाक जिह्वा इकै काल भेद पहिंचान ९०
भेद गुरू सों पाइये गुरु बिन लहै न ज्ञान॥
चरणदास यों कहत हैं गुरु पर वारौं मान ९१

१ मन २ पेशाब करना॥

एक मास जो रैनि दिन भानु दाहिनो होत॥
चरणदास यों कहत है नर जीवै दिन दोय ९२
नाड़ी जो सुषमन चलै पांच घड़ी ठहराय,॥
पांच घड़ी सुषमन बहै तबहीं नर मरिजाय ९३
नहीं चन्द नहिं सूर है नहीं सुषमना बाल॥
मुख सेती स्वासा चलै घड़ी चार में काल,९४
चारि दिना कै आठ दिन बारह कै दिन बीश॥
ऐसे जो चंदा चलै आवै जान बड़ ईश ९५
तीन रात अरु तीन दिन चालै तत्त्व अकाश॥
एक बरस काया रहै फेर काल बिसवाश ९६
दिन को तो चन्दा चलै चलै रात को सूर॥
यह निश्चय करि जानिये प्राण गमन बहुदूर ९७
रात चलै स्वर चन्द में दिन को सूरज बाल॥
एक महीना यों चलै छठे महीने काल ९८
जब साधू ऐसी लखै छठे महीने काल॥
आगेही साधन करै बैठि गुफा ततकाल ९९
ऊपर खैंचि अपान को प्राण अपान मिलाय॥
उत्तम करै समाधिको ताको काल न खाय १००
पवन पियै ज्वाला पचै नाभि तले करि राह॥
मेरुदण्ड को फोरिकै बसै अमरपुर जाय १०१
जहां काल पहुँचै नहीं यम की होय न त्रास॥
नभमण्डल को जायकरि करै उनमनी बास १०२
जहां काल नहिं ज्वालहै छुटै सकल सन्तापै॥
होय उनमनी लीनमन बिसरै आपा आप १०३
तीनों बन्ध लगाय कै पश्चवायु को साध॥

१ मृत्यु २ जो नाभि से लेकर मस्तक तक मिलीहुई नाड़ी है ३ आकाश ४ [illegible]

सुषमन मारग है चलै देखै खेल अगाध १०४
शक्ति जाय शिवमें मिलै जहां होय मन लीन ॥
महाखेचरी जो लगै जानै ज्ञान प्रवीन १०५
आसन पदम लगायकरि मूलबन्ध को बांधि ॥
मेरुदण्ड सीधो करै सुरति गगन को साधि १०६
चन्द सूर दोउ सम करै ठोढ़ी हिये लगाय ॥
षट चक्रको वेधिकरि शून्य शिखर को जाय १०७
इड़ा पिंगला साधिकरि सुषमनमें करि बास ॥
परमज्योति झिलमिल तहां पूजैमन विश्वास१०८
जिन साधन आगे करी तासों सब कुछ होय ॥
जब चाहै जबहीं तभी काल बचावै सोय १०९
तरुण अवस्था योग करि बैठि रहै मन जीत ॥
काल बचावै साध वह अन्त समय रणजीत ११०
सदा आप में लीन रहु करिके योगाभ्यास ॥
आवत देखै काल जब नभमण्डलकर बास १११
शनै शनै सों साधि करि राखै प्राण चढ़ाय ॥
पूरो योगी जानिये ताको काल न खाय ११२
पहिले साधन नाकियो नभमण्डल को जान ॥
आवत जानै काल जब कहा करै अज्ञान ११३
योग ध्यान कीन्हों नहीं ज्वान अवस्था मीत ॥
आगम देखै कालको कहा सकै वह जीत ११४
काल जीति हरिसों मिलै शून्य महल अस्थान ॥
आगे जिन साधन करी तरुण अवस्था जान ११५

काल जीति जगमें रहै मीत न व्यापै ताहि।
दशोद्वारे को फोरिके जब चाहै तब जाहि ११८
सूरज मण्डल चीरिके योगी त्यागै प्रान।
सायुज्य मुक्ति सोई लहै पावै पद निर्बान॥११८
कृष्ण पक्ष के मध्य में दक्षिण होय जु भान।
योगी वपु नहिं छांड़िये राज होय फिरि आन११९
राज पाय हरिभक्ति करि पूरबली पहिचान॥
योग युक्ति पावै बहुरि दूसर मुक्ति निदान १२०
उत्तरायण सूरज लखै शुक्ल पक्ष के माहिं॥
योगी काया त्यागिये यामें संशय नाहिं १२१
मुक्ति होय बहुरै नहीं जीव खोज मिटिजाय॥
बुन्द समुन्दर मिलि रहै छतियां ना ठहराय १२२
दक्षिणायन सूरज रहै रहै मास षट जानि॥
फिरि उत्तरायण जायकरि रहै मास षट मानि १२३
दोनों स्वरको शुद्ध करि श्वासा में मन राखि॥
भेद स्वरोदय पायकरि तब काहू सों भाखि १२४
जो रण ऊपर जाइये दहिने स्वर परकाश॥
जीति होय हारै नहीं करै शत्रु को नाश १२५
दुर्जन को स्वर दाहिनो तेरो दहिनो होय॥
जो कोइ पहिले चढ़ै खेत जीति है सोय १२६
सुषमन चलत न चाहिये युद्ध करन को मीत॥
शीश कटावै के फँसै दुर्जन होवै जीत १२७
जो बायें पृथ्वी चलै चढ़ि आवै कोई भूप॥
आप बैठि दल पेलिये बात कहत हौं गूप १२८
जल पृथ्वी स्वरमें चलै सुनै कान दै बीर॥

१ दशौ इन्द्रिय २ परब्रह्ममें योमिन होम...

सुफल काज दोनों करै कै धरती कै नीर १२९
पावक अरु आकाश तत बायु तत्त्व जो होहिं॥
कछू काज नहिं कीजिये इन में बरजौं तोहिं १३०
दहिनो स्वर जब चलत है कहीं जाय जो कोय॥
तीन पावँ आगे धरै सूरज को दिन होय १३१
बायें स्वर में जाइये बायें पग धरि चार॥
बावों डग पहिले धरै होय चन्द्र को वार १३२
दहिने स्वर में जाइये दहिने डग धरि तीन॥
बायें स्वर में चारि डग बावों कर परबीन १३३
गर्भवती के गर्भ को जो कोइ पूंछै आय॥
बाल होय कै बालकी जीवै कै मरिजाय १३४
पृच्छा बालक होनेकी जो कोउ पूंछै तोहिं॥
बायें कहिये छोकरी दहिने बेटा होहिं १३५
दहिने स्वर के चलतही जो वह पूंछै आय॥
वाको बावों स्वर चलै बालकहो मरिजाय १३६
दहिने स्वर के चलतही जो वह पूंछै बैन॥
बाहू को दहिना चले लरिका हो सुख चैन १३७
बायें स्वर के चलतही आय कहै जो कोय॥
बेटी है जीवै नहीं वाको दहिनो होय १३८
बायें स्वर के चलतही जो वह पूंछै बात॥
बाहू को बावों चलै पुत्रि होय कुशलात १३९
कहै गर्भ की आय॥
सतवांसो जाय १४०
कोइ पूंछै आय॥

जब छूटै फूटी देह जैस के तैसे रहिया।
चरणदास यहि मुक्ति गुरूने हमसों कहिया १५३
देह मरै तूहै अमर पारब्रह्म है सोय॥
अज्ञानी भटकत फिरैं लखै सो ज्ञानी होय १५४
देह नहीं तू ब्रह्म है अविनाशी निर्वान॥
नित न्यारो तू देहसों देह कर्म सब जान १५५
डोलन बोलन सो बनो भक्षण करन अहार॥
दुख सुख मैथुन रोग सब गरमी शीत निहार १५६
जाति वरण कुल देहकी सूरति मूरति नाम॥
उपजै विनशै देह सो पांच तत्त्व को गाम १५७
पावक पानी वायुहै धरती और अकास॥
पांच तत्त्व के कोट में आय कियो तैं वास १५८
पांच पचीसो देह सँग गुण तीनों हैं साथ॥
घट उपाधि सों जानिये करत रहैं उतपात १५९
जिह्वा इन्द्री नीरकी नभकी इन्द्री कान॥
नासा इन्द्री धरणि की करि विचार पहिंचान १६०
त्वचा सुइन्द्री वायुकी पावक इन्द्री नैन॥
इनको साधै साधु जो पद पावै सुख चैन १६१
निद्रा संगम आलकस भूख प्यास जो होय॥
चरणदास पांचों कही अग्नि तत्त्व सों जोय १६२
रक्त बिन्द कफ तीसरो मेद मूत्र को जान॥
चरणदास परकिरत ये पानी सो पहिंचान १६३
चाम हाड़ नाड़ी कहूं रोम जान अरु मास॥
पृथ्वीकी परकिरत ये अन्त सबन को नास १६४
वल करना अरु धावना उठना अरु संकोच॥
देह बढ़ै सो जानिये वायु तत्त्व है शोच १६५

काम क्रोध मोह लोभ में तत अकाश को भाग॥
नभकी पांचौं जानिये नित न्यारो तूजाग १६६
पांच पचीसौं एकही इनके सकल स्वभाव॥
निर्विकार तू ब्रह्महै आप आपको पाव १६७
निराकार निर्लिप्त तू देही जान अकार॥
आपनि देही मान मत यही ज्ञान ततसार १६८
शस्त्र छेदिसकै नहीं पावक सकै न जारि॥
मरै मिटै सो तू नहीं गुरुगम भेद निहारि १६९
जलै कटै काया यही बनै मिटै फिरि होय॥
जीवऽविनाशी नित्यहै जानै विरला कोय १७०
आंख नाक जिह्वा कहूं त्वचा जान अरु कान॥
पांचौं इन्द्री ज्ञान ये जानै जान सुजान १७१
गुदा लिंग मुख तीसरो हाथ पावँ लखि लेह॥
पांचौं इन्द्री कर्म हैं यह भी कहिये देह १७२
पृथ्वी काल जो ठौरहै मुखै जानिये द्वार॥
पीलो रँग पहिंचानिये पीवन खान अहार १७३
पित्ते में पावक रहै नैन जानिये द्वार॥
लाल रंग है अग्नि को मोह लोभ आहार १७४
जलको वासा भालहै लिंग जानिये द्वार॥
मैथुन कर्म अहार है धौलो रंग निहार १७५
पवन नाभि में रहतहै नासा जानि दुआर॥
हरो रंगहै वायुको गन्ध सुगन्ध अहार १७६
अकाश शीश में वास है श्रवण दुआरो जान॥
शब्द कुशब्द अहारहै ताको श्याम निदान १७७
कारण सूक्षम लिंगहै अरु कहियत अस्थूल॥
शरीर तीनमें जानिये मैं मेरी जड़ मूल १७८

चित बुधि मन अहंकार, जो अन्तःकरण सुधार ॥
ज्ञान अग्निसों जारिये करिकरि प्रीति विचार १७६
शब्द सपरसरु गन्ध है अरु कहियत रस रूप ॥
देह कर्म्म तनमात्रा तू कहियत निहरूप १८०
निराकार अद्वै अचल निरवासी तू जीव ॥
निरालम्ब निर्वैर सो, अज्ञ अविनाशी सीव १८१
बावों कोठा अग्नि को दहिने जल परकास ॥
मन हिरदय अस्थान है पवन नाभि में बास १८२
मूल कमल दल चारको लाल पैंखरी रंग ॥
गौरीसुत बासो कियो छस्से जाप इकंग १८३
षटदल कमल पियरे वरण नाभी तल संभाल ॥
षटसहस्र जपि आपले ब्रह्म सैवित्री नाल १८४
दशम पैंखरी कमलहै नील वरण सो नाभ ॥
विष्णु लक्षमी बास कियो षट सहस्र पर जाप १८५
अनहद चक्र हृदयरहै द्वादश दल अरु श्वेत ॥
षट सहस्र जपि आपले शिवशक्ती तहँ हेत १८६
षोड़शदल को कमलहै कण्ठ बास शशि रूप ॥
जाप सहस्र जहां जपै भेद लहै अतिगूप १८७
अग्नि चक्र दोदल कमल त्रिकुटी धाम अनूप ॥
जाप सहस्र जहां जपै पावै ज्योति स्वरूप १८८
दल हज़ार को कमलहै नभ मण्डल में बास ॥
जाप सहस्र जहां जपै तेज पुंज परकास १८९
योग युक्तिकरि खोजिले सुरत निरत करचीन ॥
दश प्रकार अनहद बजै होय जहां लवलीन १९०
कुं० एक भवँर गुंजारसी दूजे घुंघुरू होय ।

१ गारदा ॥

तीजे शब्द जु शंखका चौथे घण्टा सोय॥
चौथे घण्टा सोय पांचवें ताल जु बाजै।
छठे मुरली नाद सातवें भेरि जु गाजै॥
अठवें शब्द मृदंग का नाद नफीरी मोय।
दशवें गरजनि सिंहसी चरणदास सुनिलोय १९१

दो० दश प्रकार अनहद घुरै जित योगी होयलीन॥
इन्द्री थकि मनुआं थकै चरणदास कहि दीन १९२
तीन बन्ध नौनाड़िको दशवाई को जान॥
प्राण अपान समानहै अरु कहिदेत उदान १९३
व्यान वायु अरु किरकिरा कूरम वाई जीत॥
नाग धनंजय देवदत दशवाई रणजीत १९४
नवों द्वारको बन्ध करि उत्तम नाड़ी तीन॥
इड़ा पिंगला सुषमना केलिकरै परवीन १९५
करते प्राणायाम के तरि गये पतितै अनेक॥
अनहद ध्वनि के बीचमें देखै शब्द अलेख १९६
पूरक करि कुम्भक करै रेचक पवन उतार॥
ऐसे प्राणायाम करि सूक्षम करै अहार १९७
धरती बन्ध लगायके दशो बन्ध को रोक॥
मस्तक प्राण चढ़ायकरि करै अमरपुर भोग १९८
पांचो मुद्रा साधि करि पावै घट को भेद॥
नाड़ी शक्ति चढ़ाइये षट् चक्रको छेद १९९
योग युक्ति के कीजिये कै अजपा को ध्यान॥
ज्ञानी आप विचारिये परम तत्त्व को ज्ञान २००
शूद्र वैश्य क्षत्री है ब्राह्मण औ रजपूत॥

काया माया जानिये जीव ब्रह्महै मित्त॥
काया छाड़ि सूरत मिटे तू परमातम नित्त २०२
पाप पुण्य आशा तजो तजो मान अरु थाप॥
काया मोह विकारतजि जपे सु अजपा जाप २०३
आय भुलानो आपमें बँधो आपही आप॥
जाको हूंढ़त फिरतहै सो तू आपहि आप २०४
इच्छा दई बिसारिके होय क्यों न निर्वास॥
तूतो जीवनमुक्तहै तजो मुक्तिकी आस २०५
पवन भई आकाश सों अग्नि वायु सों होय॥
पावक सों पानी भयो पानी धरती सोय २०६
धरती मीठे स्वाद है खारी स्वाद सुनीर॥
अग्नि चरफरो स्वाद है खट्टो स्वाद समीर २०७
खट्टा मीठा चरफरा खारी पर गंन होय॥
जबहीं तत्त्व विचारिये पांच तत्त्व में कोय २०८
स्वाद नाय अरु रंगहै और बताई चाल॥
पांच तत्त्वकी परख यह साधि पाव ततकाल २०९
तिरकोनी पावक चलै धरती तौ चौकोन॥
शून्य स्वभाव अकाश को पानी लांबो गोल २१०
अग्नि तत्त्व गुण तामसी कहो रजोगुण वाय॥
पृथ्वी नीर सतोगुणी नभहै अस्थिर भाय २११
नीर चलै जब स्वासमें रण ऊपर चढ़ि मीत॥
वैरीको शिर काटकरि घर आवै रणजीत २१२
पृथ्वी के परकाश में युद्ध करै जो कोय॥
दोउ दल रहें बराबरी हारि वायु में होय २१३
अग्नि तत्त्व के बहतही युद्ध करन मति जाव॥

न चलमहै॥

हारिहोय जीते नहीं अरु आवै तनघाव २१४
तत्त अकाश में जो चले तौ छाई रहिजाय ॥
रणमाहीं कायाछुटै घरनहिं देखै आय २१५
जल पृथ्वी के योग में गर्भ रहै सो पूत॥
वायु तत्त्व में छोकरी अंबर सूनक सूत २१६
पृथ्वी तत्त्व में गर्भ जो बालक होवे भूप॥
धनवन्ता सोइ जानिये सुन्दर होय स्वरूप २१७
अग्नि तत्त्व जब चलतहै कभी गरभ रहिजाय॥
गर्भ गिरै माता दुखी हो माता मरिजाय २१८
वायु तत्त्व स्वर दाहिने करै पुरुष जब भोग॥
गर्भ रहै जो तासमै देही आवै रोग २१९
आसन संयम साधिकरि दृष्टि श्वासके माहिं॥
तत्त्वभेद यों पाइये विन साधे कुछ नाहिं २२०
आसन पदम लगायकै एक बरत नित साध॥
बैठे लेटे डोलते श्वासांही आराध २२१
नाभि नासिका माहिं करि सोहं सोहं जाप॥
सोई अपजा जापहै छुटै पुण्य अरु पाप २२२
भेद स्वरोदय बहुत है सूक्ष्म कह्यो बनाय॥
ताको समझि विचारिले अपनो चितमनलाय२२३
धरणि टरै गिरिवर टरै ध्रुव टरै सुन मीत॥
बचन स्वरोदय ना टरै कहै दास रणजीत २२४
शुकदेव गुरूकी दया सों साधु दया सों जान॥
चरणदास रणजीतने कह्यो स्वरोदय ज्ञान २२५
छप्पै डहरे में मेरो जनम नाम रणजीत पिछानो।
मुरली को सुत जान जाति दूसरि[1] पहिचानो॥

[1] लडकी॥

बाल अवस्था माहिं बहुरि दिल्ली में आयो।
रमत मिले शुकदेव नाम चरणदास बतायो ॥
योग युक्ति हरिभक्तिकरि ब्रह्मज्ञान दृढ़करि गह्यो।
आतम तत्त्व विचारिकै अजपामें सनिमनरह्यो २२६

इति श्रीचरणदासजीकृतज्ञानस्वरोदयसम्पूर्णम् ॥

श्रीचरणदासकृतपंचउपनिषद्अथर्वणवेदभाषाप्रथमहंसनादलिख्यते॥

वन्दत श्री शुकदेव को उन को हियमें लाय॥
छिप्यो भेद परगट कियो परमारथके दाय १
सहंस कृत भाषा करी ताको यह दृष्टान्त॥
खोलि खोलि सबही कही समझे छूटै भ्रान्ते २
ज्यों कूप सों नीर लै बाहर दियो भराय॥
बिना यतन कोई पियो तिरपौवन्त अघाय ३
पोदीन्ही शुकदेव ने मैं जल काढ़नहार॥
प्यासा कोइ न जाइयो टेरों बारम्बार ४
ब्राह्मण क्षत्री वैश्य जो अरु शूद्रहु जो होय॥
वह पीवेगा हेत करि बहु प्यासा जो कोय ५
मुक्तिहि नीकी प्यास जो काहूही को होय॥
और मनुष जग प्यासमें रहे जु मृत्यक सोय ६
यह जग ऐसो जानिये मृगतृष्णा को नीर॥
निकट जाय प्यासा कोई कभी न भागै पीर ७

---

२. पियासा॥

उनकी प्यास बुझै नहीं होय नहीं जियचैन॥
ज्ञान सुधा तजि जातहै धोखे को जल लैन ८
ज्ञान नीर तिरपत भये निश्चल बैठे दास।
संसारी प्यासे गये पूरी भई न आस ९
सहंस कथना कूप सम भाषा नीर निकास॥
प्याऊं जिज्ञासून को तिनकी भगै पियास १०

अष्टपदी॥ वेदहिकी उपनिषद् तुमें भाषाकरी। जोकुछ था ...
सोई जैसे धरी॥ सुनि समझै मन माहिं और करनीकरै। आवा...
टाय नहीं देही धरै॥ जगकी व्याधा छूटि मुक्तिपद पावई। जाग्र...
ठौर स्वप्न विसरावई॥ तिमिरै सभी भजिजाय उजारा होयहै। सूझै...
रूप द्वैतता खोयहै॥ उपजै अतिआनन्द द्वन्द्व दुखजायहै। तिरपति...
मैलज्ञान विज्ञान अघायहै॥ जोपै करै विचार और गुरुसौंलहै। वाकी...
नीगहै और रहनीरहै॥ गुरुशुकदेव प्रताप सो चितते गाइया। चरणनदा...
होय सवन शिरनाइया ११॥

दो० पूजे ऋषि मुनि देवता पूजे इन्द्रहु भूप॥
पूजा सवही इष्टको देखा हरिके रूप १२
सर्वत्रहि प्रभु देखिकरि सबको शीशनवाय॥
उपनिषदैं जो वेदकी परगट कहीं बनाय १३

अष्टपदी॥ प्रथम प्रकट करिदई छिपेही भेदकी। हंस नामऽहंनाम...
थर्वणवेदकी॥ गौतमऋषिकरि चाव ऋषीश्वरपै गये। संत सुजानत न...
वहुत आदरकिये॥ गौतम अस्तुतिकरी वहुतही प्रीतिसों। फिरि पूंछी यह वा...
जुलवुता रीतिसों॥ परमेश्वर पहिचान मोहिं समुझाइये। मुक्तहोनके प...
सबै जु दिखाइये॥ ह्वैकर बहुत प्रसन्न ऋषीश्वर बोलिया। गौरा अरु मह...
देवकि चरचा खोलिया॥ सब देवनके देव महादेवहैं सही। उपनिषदैं जो...
देइ कि गौरासों कही॥ सो मैं तुमसों कहौं प्रीतिके भावसों। ...

१ दुख २ नमस्कार॥

ी अधिकही चावसों ॥ गुप्त गहा यह भेद हिये में राखिये। जो जड़
तहोय तासु नहिं भाखिये १४॥

दो० हरिभक्ता अरु गुरुमुखी तप करने की आस ॥
सतसंगी सांचायती ताहि देहु पद दास १५

अष्टपदी ॥ अब मैं कहौं सँभाल सुरतह्यां दीजिये। यह तौ अचरज
ा श्रवण सुनि लीजिये ॥ वही श्वास कहि हंस आय अरुजायहै। पूरा
गुरुमिलै तौ भेद लखायहै ॥ जो कोउ याको समझिकै अरु ध्यानही।
द्धि सिद्धि सुखहोहिं जु उपजै ज्ञानही ॥ अन्त मुक्तिही होय अभैपद में
। बहुरो जन्म न होय परमआनँद लहै ॥ अब मैं वरणों हंस और परम
ही। जो समझै है ब्रह्म जाय सब संशही ॥ हंस हंस जो मंत्र अर्थ पहि-
निये। वह मैंहूं यों कहै निश्चय करि जानिये ॥ यह मंतर सब माहिं
ाही भरिह्यो। कोटिन में कोइ जानि ध्यान सोइ धरिह्यो ॥ जैसे
ठमें आगि तिलों में तेलहै। तैसे सब घटमाहिं इसीका मेलहै १६ ॥

दो० दूध मध्य ज्यों घीवहै मेहँदी माहीं रंग ॥
यतन बिना निकसै नहीं चरणदास सो ढंग १७
जो जानै या भेदको और करै परवेश ॥
सो अविनाशी होतहै छूटे सकल कलेश १८

अष्टपदी ॥ तन मथने को यतन कहूं अब जानिये। ज्यों निकसै तत-
र विलोवन ठानिये ॥ पहिले चक्कर जानि मूल द्वारे विषे। जितही पावँ
 एँड़ी सूवन्ध देखे ॥ मूल चक्रसों खैंचि अपान चलाइये। दूजे चक्कर
स जु आनि फिराइये ॥ दहिनी ओरसों खींचि लपेटे दीजिये। तीजे च-
र माहिं गमन फिरिकीजिये ॥ चौथे चक्कर माहिं पवन जो लाइये। बहुरो
चवें चक्रमें जु पहुंचाइये ॥ पञ्चम चक्कर माहिं जु ताहि चढ़ाइये। सोत्रि-
टी के मध्य तहां ठहराइये ॥ रोकै त्रिकुटी माहिं आनिकै वायुको। पट्च-
रको छेदि चढ़ै जब धायको ॥ अपान वायु चढ़िजाय वही अस्थानहै।

१ योगी ॥

प्रान वायु ले जाय साधु कोइ जानहे ॥ रोके प्रानहिं वायु त्रिकुटी मध्य ॐका करै ध्यान शीशमें गध्यही ॥ यह तो ऊंचाध्यान जु अधिकउ पही। चरणहि दासाहोय जु ब्रह्मस्वरूपही १६ ॥

दो० नाम ब्रह्म का है नहीं है वह तो ॐकार ॥
जानै आपन को वही मैं हौं तत्त्व अपार २०

आष्टपदी ॥ अनहद शब्द अपार दूरसों दूरहै। चेतन निर्मल शुद्ध भरपूरहै ॥ ताहि न अक्षर और निष्कर्म है। परमातम तेहिमानि वही परब्रह्म है ॥ हृदय कमल के माहिं ध्यान सोहंकरै। वाहिको अजपा जान सुरति मनलै धरै ॥ विनहिं जपे जयहोय सुसांची बातही। सहस इकीस अरु छसै जहां दिनरातही ॥ याक़ोकीजे ध्यान होतहै ब्रह्मही। धारै तेज अपार जाहि सब गर्भही ॥ वा पटतर कोइ नाहिं जु यौंही जानिये। चन्द सूर्य अरु सृष्टि के माहिं पिछानिये ॥ सो वह तेज अपार आपको मानिये। निश्चय अरु वहि सांच जु मन में आनिये ॥ जबलग वाही भेद जो जानाथा नहीं। जीवातम अरु हंसहोरहाथा तहीं ॥ जभी अगोचरै भेद जु मनमाहीं लहा। परमातम परमहंसरूप निश्चय भया २१ ॥

दो० जो जीवातम सो भया परमातम अरु ब्रह्म ॥
वाकी सरवरि को करै पाई परै न गम्य २२
पहुँचे ना वा तेज को कोटि कोटिही भान ॥
चरणदास कोइ जानहीं ताको निर्मलज्ञान २३

अ० ॥ परमज्योतिको प्रापत सोनर होतहै। जिनमन जीताहोय लगाया गोतहै ॥ जिनमन जीतानाहिं विषय आशावहै। हृदयकमलदल आठ ढंई फिरतारहै ॥ अष्टपैंखरीजान जुआठों अंगही। वही दिशाहें आठकरै मनभंग ही ॥ पँखरी पूरब दिशाजवै मनजातहै। तब इच्छा हिश्पुण्य करनकी आत है ॥ अग्नेय दिशाहै पेंखरी जब जावैमना। ऊंच नींद अरु आलसजित आवैघना ॥ दक्षिणहिंजु दिशापैंखरी राजई। उपजैबहुत किरोध कठोरतासाज-

१ न देखाई। २ हुई ॥

ईई ॥ दिशा जु नैऋत पैंखरी पैमन रंगही। पापकरनकी उपजै हिये तरंगही ॥ पश्चिमदिशा जु पैंखरी पैमन आरहै। होयखुशी परफुल्ल जुलीलाकोचहै २४

दो० वायव दिशा जु पैंखरी जब मन पहुँचै जाय ॥
हलन चलन उपजै हिये बैठे देहि उठाय २५

अष्टपदी ॥ उत्तरदिशा जु पैंखरी पैमनआवई । मैथुनकरन कि चाहहिये उपजावई ॥ ईशान दिशा पैंखरी पर मन आवै जभी। दान करनकी चाह अधिक उपजै तभी॥ हृदय कमलके बीच जवै मन जारहै। उपजि त्याग वैराग तेजन जगको कहै॥ हृदय कमलको छेदि बाहर मन फिरतही। आं- सेपांसे जानि होय जाग्रतही॥ हृदय कमलके घेरके मध्यम जातही। जब आवै वह स्वप्न जहां बहुभांतिही॥ धान बराबर छेदि तहां मनजातहै। होहि सबै गुण लीन सखी पतियातहै॥ हृदय कमलको छोड़ि होय जब न्यारही। तुरिया में मनजात जु तत्त्व अपारही ॥ यों जीवातम जान जु अनहद लीनहो। सो परमातमहोय जीवताजायखो २६॥

दो० ॥ अजपाही के जापको सिद्ध भयो जबजान ॥
पहुँचै या अस्थानहीं रहै न दूजा ज्ञान २७
यह जो सब कुछ में कहो हिरदे जानाजाय ॥
ताहीको पहिंचानिये चरणदास चितलाय २८

अष्टपदी ॥ कैसे अनहद उठै हिये अस्थानसों। यह जीवातमसुनै हृदय बल ध्यानसों॥ दशप्रकार के नाद कहूं भिन भिन्नही। सो उपनिषदहि माहिं कहे सब चिह्नही॥ पहली ऐसेहोय चिड़िया ज्यों चीकला। एकवार कहै चिह्नसुनो सोईसुरतला॥ ऐसेही दोवार जुदूजी जानिये। चिह्न चिह्नही होत ताहि पहिंचानिये॥ क्षुद्रघंटिका तीसरि चौथी शंखज्यों। पंचम ऐसी जान बजतहै बीनत्यों॥ छठींबजै ज्योंताल सातवीं बाँसुरी। अठवें शब्द मृदङ्गलगै मनगांसुरी॥ नवें नफीरी नाद जु दशवें सिद्धिहै। बादर कीसी गरज ददह दहंदहै॥ करतेमें अभ्यास जुनादें सबखुलें। जैसे बटाऊ चलतनगर नौमग

मिलैं ॥ दशवें पहुँचे जाय नवें बिसराइया। रहन किया वादेश र छाड़िया ॥ ऐसेही नौछोड़ नाद दशवां गहै। बादलकीसीगर्ज ज देरहै ॥ वाको छोड़ै नाहिं सदारहै लीनहीं। यही जुअनहदसार ज बीनहीं ॥ याको प्रापतकहूं जो मनमें आनिये। गोरासों शिव कह करि जानिये २९ ॥

दो० चरणदासने अब कही जुदी जुदी दशनाद ॥
वही परापत को लहै जो कोइ साधै साध ३०॥

अष्टपदी ॥ पहिलि परीक्षा जान जु अनहद नादकी। सबै रोमा जु वाके गातकी ॥ अरु दूजी जब सुनै नाद चितलावई। सब तन माहिं आलकस छावई ॥ तीजी अनहद नाद सुनै जितही जुटै। झन हिय माहिं प्रेम पीड़ा उटै ॥ चौथि सुनै जबनाद परीक्षा पावई। घूमनलगै अमले ज्यों खावई ॥ पँचवीं उठै जो नाद सुनै तामें पगै शीश सों जानि अमी उतरन लगै ॥ छठीं उठै जब नाद सुरति व कण्ठसों नीचे उतरि अमी पीवनकरै ॥ सतवीं खुलै जो नाद बिना सुनै। अन्तर्य्यामी होय लखै सबके मनै ॥ दूर दूरके वचन सुनै को होय परेकी दृष्टि छिप्यो कछुनारहै ॥ अठवें परीक्षा जानि परापत ज सबमाहीं सब ठौर नाद अनहद सुनै ॥ है सबही के मांफ बैन समझै यह समझै अरु सुनै ताहि नीकेगुनै ३१ ॥

दो० खुलै नवीं जब नादही लक्षण यह पहिचान ॥
सूक्ष्म होय जित तित गमन करै धरै जो ध्यान ३२
काहू हीकी दृष्टिसों रहै अगोचर होय ॥
होय सकै दीखै नहीं वह सब देखै जोन ३३
जैसे सुर सबको लखै उन्हें न देखै कोय ॥
रणजित कहै अस्थूलहो चाहै सूक्ष्म होय ३४

अष्टपदी ॥ दशवीं खुलै जो नाद परै सोदंपरे। पारब्रह्म होइजाय

१ अमल २

ो करे ॥ ध्यानी को मन लीनहोय अनहद सुनै। आप अनाहद होय
नो सब सुनै॥ पाप पुण्य छुटिजाय दोऊफल नारहैं। होयपरमकल्याण
गुणै नागहैं॥ होवे बोधस्वरूप तेज ह्वैजातहै। अटक रहै नहिंकोयसबै
समातहै॥ अज अविनाशी शुद्ध पवित्तर सत्तहीं। होवे आनँदरूपपरम
तत्त्वही॥ निर्विकार निर्लेप ओर निर्वानहीं। आनँद सबको देत आप
जानहीं॥ या ध्यानी को नाम जु ॐकारहै। सब नामन में बड़ा किया
विचारहै॥ याको ऐसे मानै कि वह जो मैंहींहूं। रूपनाम गुणजान
यह सब वाहीमूं ३५॥

दो० करते अनहद ध्यानहीं ब्रह्मरूप ह्वै जाय॥
चरणदास यों कहतहै बाधा सब मिटिजाय ३६

इति हंसनाद उपनिषद संपूर्णम्॥

अथ सर्वोपनिषद द्वितीय प्रारम्भः॥

दो० दूसरि जो उपनिषद है ताको कहों बनाय॥
सर्व नाम तिहि जानिये ताहि देहुँ प्रकटाय १

अष्टपदी॥ परजापति के शिष्य जो पूछी आयकै। बन्धमुक्तिका भेद
हु समझायकै॥ काहि कहतहैं बन्ध मोक्ष कासों कहैं। विद्याऽविद्या भेद
हौ कैसेलहैं॥ जाग्रत स्वप्न सुषोप्त मोहिं बतलाइये। अरु तुरिया को भेद
भी जु सुनाइये॥ कोठे पांचकोभेद गुरू वर्णनकरो। जुदाजुदा समझाय
तिमिर दुविधा हरो॥ पहिल अन्नसों भरा दुजा भरा प्रानसों। तीजा मन
सों भरा चौथ बुधि ज्ञानसों॥ पँचवाँ आनँद भरा मोहिं कहि दीजिये। हाँ
। चरणहिंदास कृपाजो कीजिये॥ आतमको जो कर्ता कैसे कैकहैं। किन
अनर्थ सों जीव जु याही कोठहैं॥ अरुकहैं याको देहक जाननहारहै। देह
हो साक्षी कहे सो कौन विचारहै २॥

१ मनकी इच्छा २ सत्, रज, तम ३ जाहिरकरना ४ ब्रह्मा ५ माया ६ अँधियारा॥

मिलें ॥ दशवें पहुँचे जाय नवें बिसराइया। रहन किया वादेश जहां व छाइया॥ ऐसेही नौछोड़ नाद दशवां गहै। वादलकीसीगर्ज जहां मन देरहे॥ वाको छोड़ै नाहिं सदारहै लीनहीं। यही जुअनहदसार जानिपर बीनहीं॥ याको प्रापतकहूं जो मनमें आनिये। गोरासों शिव कह्यो सांत करि जानिये २६॥

दो० चरणदासने अब कही जुदी जुदी दशनाद॥
वही परापत को लहै जो कोइ साधे साध ३०

अष्टपदी॥ पहिलि परीक्षा जान जु अनहद नादकी। सबै रोमावलि उठै जु वाके गातकी॥ अरु दूजी जब सुनै नाद चितलावई। सब तन अंगन माहिं आलकस छावई॥ तीजी अनहद नाद सुनै जितही जुटै। सब अङ्गन हिय माहिं प्रेम पीड़ा उठै॥ चौथि सुनै जबनाद परीक्षा पावई। तब शिर घूमनलगै अमले ज्यों खावई॥ पँचवीं उठै जो नाद सुनै तामें पगै। वाके शीश सों जानि अमी[2] उतरन लगै॥ छठीं उठै जब नाद सुरति वामें धरै। कण्ठसों नीचे उतरि अमी पीवनकरै॥ सतवीं खुलै जो नाद बिना श्रवणन सुनै। अन्तर्यामी होय लखै सबके मनै॥ दूर दूरके वचन सुनै कोई कहै। होय परेकी दृष्टि छिप्यो कछुनारहै॥ अठवें परीक्षा जानि परापत जो बनै। सबमाहीं सब ठौर नाद अनहद सुनै॥ है सबही के मांझ बैन समझै सुनै। यह समझै अरु सुनै ताहि नीकेगुनै ३१॥

दो० खुलै नवीं जब नादही लक्षण यह पहिंचान॥
सूक्ष्म होय जित तित गमन करै धरै जो ध्यान ३२
काहू हीकी दृष्टिसों चहै अगोचर होन॥
होय सकै दीखै नहीं वह सब देखै जौन ३३
जैसे सुर सबको लखैं उन्हें न देखै कोय॥
रणजित कहै अस्थूलहो चाहै सूक्ष्म होय ३४

अष्टपदी॥ दशवीं खुलै जो नाद परे सोहंपरे। पारब्रह्म होइजाय ध्यान

१ नशा २ अमृत॥

को करे ॥ ध्यानी को मन लीनहोय अनहद सुनै। आप अनाहद होय
मनो सब मुनै॥ पाप पुण्य छुटिजाय दोऊफल नारहैं। होयपरमकल्याण
त्रिगुणै नागहैं॥ होवै बोधस्वरूप तेज हैजातहै। अटकारहै नहिंकोयसबै
समातहै ॥ अज अविनाशी शुद्ध पवित्तर सत्तही। होवै आनँदरूपपरम
तत्त्वही ॥ निर्विकार निर्लेप और निर्वानहीं। आनँद सबको देत आप
जानहीं॥ या ध्यानी को नाम जु ॐकारहै। सब नामन में बड़ा किया
विचारहै॥ याको ऐसे मानैं कि वह जो मैंहींहूं। रूपनाम गुणजान
यह सब वाहीहूं ३५॥

दो० करतै अनहद ध्यानहीं ब्रह्मरूप है जाय॥
चरणदास यों कहतहैं बाधा सब मिटिजाय ३६

॥ इति हंसनाद उपनिषद सम्पूर्णम् ॥

अथ सर्वोपनिषद द्वितीय प्रारम्भः ॥

दो० दूसरि जो उपनिषद है ताको कहौं बनाय॥
सर्व नाम तिहि जानिये ताहि देहुँ प्रकटाये १

अष्टपदी॥ परजापति के शिष्य जो पूछी आयकै। बन्धमुक्तिका भेद
देहु समझायकै॥ काहि कहतहैं बन्ध मोक्ष कासोंकहैं। विद्याऽविद्या भेद
कहो कैसेलहैं॥ जाग्रत स्वप्न सुपोप्त मोहिं बतलाइये। अरु तुरिया को भेद
सभी जु सुनाइये॥ कोठे पाँचकोभेद गुरु वर्णनकरो। जुदाजुदा समझाय
तिमिर दुविधा हरो॥ पहिल अन्नसों भरा दुजा भरा प्रानसों। तीजा मन
सों भरा चौथ बुधि रानिसों॥ पँचवाँ आनँद भरा मोहिं कहि दीजिये। हौं
तो चरणहिंदास कृपाजो कीजिये॥ आतमको जो कर्ता कैसे कैंकहैं। किन
अनर्थ सों जीव जु याही कोठहैं॥ अरुकहैं याको देहक जाननहारहै। देह
को साक्षी कहै सो कौन विचारहै २॥

१ मनकी इच्छा २ सत्, रज, तम ३ जाहिरकरना ४ प्रज्ञा ५ माया ६ अँधियार॥

दो० ऐसो यह बन्धन बँधो कहैं तज्ञ निर्बन्ध ॥
अन्तर्यामी क्यों कहैं मोहिं बतावो सन्ध ३
आतमहीं को क्यों कहैं जीव आतमा मान ॥
माया यासों कहतहैं दूरिकरो अज्ञान ४

अष्टपदी ॥ परजापति सब मुनिके यह उत्तर दिया। आतमहींका ज्ञान सभी परगट किया॥ जीव आतमा देह मानिके मैं कहैं। तातेपरो अज्ञान सबै दुख सुखसहैं॥ आपको लम्बाजान कि ठिंगना जानई। कबहूं दुबला जान कि मोटा मानई॥ आपको जानै वृद्ध कि बालक तरुने हैं। जानत नारी पुरुष जु मानत बरन हैं॥ देह संगहै देहकरै जु विहार हैं। आपन को गयो भूलिरहै न विचारहै॥ वाको बन्धन यही सुनो चितमें धरो। देहभाव छुटिजाय मुक्ति निश्चय करो॥ जाही वस्तुसों उपजै तन अभिमानहै। वही अविद्या जान वही अज्ञान है॥ यही भरम उडिजाय जिसी जु विचारसूं। वाही विद्या जांनि वहीको ज्ञानहूं ५॥

दो० चौदह इन्द्री देवता मिलि जो करैं व्योहार॥
चरणदास यों कहतहैं जाग्रत यही विहार ६
जीव जु अन्तःकरण के चारो देवत संग॥
सूक्षम देही साथही देखै स्वपना रंग ७
चौदहही सब लीनहै जीव आतमा माहिं॥
यही सुषोपति जानिये कछुभी सूझैनाहिं ८

अष्टपदी॥ तीन अवस्था मिटैं मिटैऽहंकार है। तुरियाही रहिजाय जु तत्त्व अपारहै॥ परमातम जो पुरुष सदा निर्लेपहै। केवल ज्ञान स्वरूप जु ब्रह्म अभेद है॥ अब कोठेंकी बातकहूं चित दीजिये। जुदा जुदा विस्तार सबै सुनिलीजिये॥ पहला कोश कहूँ अन्नमैनी भरो। षट कोठे तेहिमाहिं सोई श्रवणन धरो॥ तीन पिताकीओर सो लायासंगही। वीरजमींगी हाड़ सफेद जु रंगही॥ अब माता के अंश तीनिहीं जानिये। लोहू त्वचा अरु

१ बोध २ ज्ञान ३ जो न मानामान॥

स अरुण पहिंचानिये ॥ प्रानसे कोठा भरा दूसौ जहां वायु है। अगले भी कहे जु रहे समाय है॥ तीजा कोठा जानिये जहँ शुद्धि दी। मन चित अरु अहंकार भरी जहँ बुद्धिही ॥ चौथा कोठा देख इन्हीं का जानना। तामें भरे है ज्ञान सभी को पिछानना ॥ पँचवाँ कोठा जानि जो आनँद सों भरा। जैसे सगरो वृक्ष बीजमाहीं धरा ६॥

दो० चारो कोठे जो कहे अरु कारण को देखि॥
जहँ सभी से रहत हैं वा ठौरी को पेखि १०॥
वा ठौरी को जानिये ज्यों तरुवर को बीज॥
डाल पात फल फूल ही रहे जु ताके बीच ११॥
ऐसे वाको समभिकै रहे जु आनँद आहि॥
आनँदही आनँद भरा पँचवें कोठे माहि १२॥

अष्टपदी॥ आतम करता जानु जु जामें बुधि है। दुखसुख वाही माहिं सभी आशा गहै॥ इच्छा पूरी भये होत मन मोद है॥ जब पूरी नहिं होय घना दुख होत है॥ दुखसुख दोनों होत जो पंचमके विषे। सो वे इन्द्री जान बिना इनके कसे॥ स्रवनते सों सुनि शब्द बुरा भला को यही। और त्वचा सों जान सपर्स कि होय यही॥ आंखन सों लखि होय जु रूप कुरूप सों। अरु जिह्वा सों होय जु परसैं स्वाद सों॥ नासा सेती होय बुरी भलि गंध ले। इनसे उतपति होय जु दुखसुख भै अभै॥ आतम को जीवातम इसकारण कहै। सूक्षमैं अरु अस्थूलै देह भँगही रहै॥ छोभले जो कामन के फल में बँधा। बीचहि लिया जु श्वेत दिखात है॥ जीवातम इहिभांति फलन त्यागन करै। आनपही रहिजाय जीवता ना रहे॥ खोटे कर्म जु त्यागि भले सहजै करै। तिनकाफल जो होय नहीं आशा धरै १३॥

१ आनन्द २ कान ३ छूना ४ मद्दा, खारी, मीठा, कड़वा, चरपरा, कसैला ५ दुख- मा ६ भोग ७ सफेद ॥

दो० जीव ब्रह्म यों होत है रहै न कछू लगाव॥
चरणदास यों कहतहैं ऐसा किये उपाव १४

अष्टपदी॥ देहको जाननहारा ऐसे मानई। सूक्ष्म अरु अस्थूलको
पनी जानई॥ कबहुं कहे ममशीश आंखमुख हाथहै। कभी बतावै पांव
मेरागातहै॥ मनबुधि चितऽहङ्कार समझ ये चारहैं। अरु पांचों हैं बा
कोइ निहारहै॥ प्राण अपानह व्यान उदान समानहैं। सात्त्विक
तामस तीनों जानिहै॥ बैरप्रीति अरु तीसरि इनकी दूंदहै। चौथ मर्द
तीनिक सब मिलि फंदहै॥ भलेबुरे जो कर्म और मन आनिये। सूक्ष्म
को मूल ये सब पहिंचानिये॥ अरु यह सूक्ष्म शरीर आतमा साथ जो।
भासतें सत्य सत्यहै बातसो॥ जब आतम पहिंचान हिये में आवई
सूक्षमको सांच सबै उठि जावई १५॥

दो० सूक्ष्म शरीरु आतमा भिन्नलखै नहिंकोय॥
यही जु मनकी गांठहै खुले मुक्तिही होय १६
जानी जाननहारही और तीसरी जान॥
इन तीनों को जो लखै सो साक्षी परधान १७
उपजैं तीनों द्वैतसों मिटै एकता होय॥
उपजन मिटना तीनका जानै न्यारा सोय १८
अपनेहीं परकाश में आप रहा परकास॥
सोई साक्षी जानिये कहै चरणहीं दास १९
यद्यपि बन्धनमें बँधा कहै जु निरबँध दूर॥
चींटी ब्रह्मा आदिलों हिरदय में भरपूर २०
सबही हिरदय के मिटे वही एक ठहराय॥
नाकुछआया नागया ज्योंकात्यों रहिजाय २१
बन्धन में आवै सही लीला करन दयाल॥
निरबँधकानिरबँधरहै अज अविनाशि अकाल २२

१ दिखाता २ मुख्य जाननेवाला ३ जो बँधाहुआ

अंतर्यामी के अरथ सब वह रहो समाय ॥
जैसे डोरेके विषे भांतिभांति मणिकाय २३
सबही के भीतर बसे सबका जाननहार ॥
वाहीते परगट भई नाना वस्तु अपार २४
घनेरूप किरिया घनी घनेनाम दृष्टान्त ॥
सूझै ज्ञानप्रकाश सूं जब गुरु मेटै भ्रान्त २५
रूपनाम किरिया लगी जगलग याके साथ ॥
याहीते जी आतमा कहलावै यह बात २६
जैसे कञ्चन मृत्तिका भांड़े किये सँचार ॥
नामरूप किरिया भई देखो दृष्टि निहार २७
रूपनाम किरिया मिटै रहै न कछू विचार ॥
जोया सोई रहगया परमातम ततसार २८
आतम अरु जीवातमा देह धरेसे दोय ॥
तातै वढ़ो उपाधही मैं तू तू मैं होय २९
तत्त्वमसी जो यह कहा ताको याही अर्थ ॥
वह तूही है जानले परमतत्त्व है सत्य ३०

अष्टपदी ॥ अरु वह ज्ञानस्वरूप अनन्द अनन्त है । उपजावन सब सृष्टि कों जीवन कन्त है ॥ वस्तुकाल अस्थान तीनों मिटिजातहै । वह इकरस सतरूप ब्रह्म रहिजातु है ॥ सब को जाननहार मिटै उपजै नहीं । तासूं कहैं वहिज्ञानअर्थ जानोतहीं ॥ और कहैं जु अनन्त सो यासूं जानिये । सब भांड़ेमें इक माटी जु पिछानिये ॥ कनकके बरतन बहुत जु सोना एकिये । सब बसननके माहिं जु सूतहि देखिये ॥ ऐसेहि आदिरु अन्त ब्रह्म सबमाहिं है । कहिये याहि अनन्त भेद कछु नाहिं है ॥ अरु जो आनँद कहै समुझ लीजो वही । वाहीको अंश पिछान जु आनँदहो कही ॥ ऐसेही मोहिं समझायो गुरु शुकदेव ने । चरणहिं दासाहोय लखो या भेवने ३१ ॥

१ मणियोंकासमूह २ मिसाल ३ हृदयका संदेह ४ वेदान्त ५ मतलब ॥

दो० चार पताका वेदके संत आनन्द अनन्त ॥
चौथा ज्ञानस्वरूप है कहैं वेद अरु सन्त ३२ ॥

अष्टपदी ॥ सर्वस में सबठौर जुइकरस निरखहै । तत्त्वमसीके अर्थ तू सारपहै ॥ जब तू करिके ज्ञानहोय परब्रह्महीं । आपनहीं कूं पाय [illegible] सही । आपकु व्यापकजान [illegible] अरु एकहीं । जब परमात्म [illegible] रूप नहिं रेजहीं ॥ माया याते कहै भरम अरुअन्तहै । ज्ञानमये [illegible] कछू न रहन्तहै ॥ ज्यों रसरीको साँप भरमसूं मानिये । रामे लखा जब [illegible] माया जानिये ॥ साँच सो लागै झूठ झूठ सच जानहै । माया यही सु [illegible] भरम अज्ञान है ॥ रसरीकूं कहै सर्प जु अपने भरमसूं । ऐसेही जड़ [illegible] सनातन ब्रह्मकूं ३३ ॥

दो० झूठ जगत दीखत रहै दीखै ना सत ब्रह्म ॥
यहीजु माया जानिये यही तिमिर यहि भर्म ३४

[illegible]

अथ तृतीयतत्त्वयोग उपनिषद प्रारम्भः ॥

अष्टपदी ॥ तीजी अरु जो कहूं अथर्वन वेदकी । तत्त्वयोग जिहि न[illegible] गुपनहीं भेदकी ॥ अपने शिषसूं कहाजु परजापत्तिनें । योगसार में [illegible] जुगते नरतिनें ॥ योगेश्वरकूं जोगहोय जाकेकिये । पढ़े पाप भजिजाय सु[illegible] रावे हिये ॥ निश्चय होवै मुक्त यही तू जानियो । चौथे पदलहै वास सां[illegible] करि मानियो ॥ यहां योगेश्वर मिलन अधिक तपदानहै । जाकी मायागत[illegible] बदी परमानहै ॥ योगी करिके योग सुज्योति निहारही । दीपककोसो लो[illegible]

१ वेदान्त २ विद्यारूपा ३ ब्रह्म ॥

ऐसे होय पारही ॥ सो वह विष्णु सरूप सबन के माहिं है। घट घटमें भरपूर खाली कोइ नाहिं है॥ ऐसी ज्योति कुं छोड़ि और मन लावई। वे नर मोंदू नान जुकूर[१] कहावई १ ॥

दो० दूधपिया जिन कुचनसूं उनकूं मल मुख लेत ॥
जन्म खोय खाली चलें नारिनसूं करि हेत २ ॥

अष्टपदी ॥ जिस द्वारेसूं निकस जन्म जग में लिया। ताही में परवेश करन फिर मन किया ॥ वही नारिको रूप जु तासूं माकही। लगे भार्या कहन जु अपने सँगलई॥ जाही पुरुष स्वरूपकुं कहते बापही। फिर लगेपुत्तर कहन वाहीकूं आपही॥ वही पुत्र जो जगत में पिता कहावई। सोई पुत्तर भया बढ़ो अति चावई॥ जैसे कूपका रहँट लोटरीतें भरे ॥ वस्तुएकहीजान कभी ऊपर तरे॥ याही भरम अज्ञानसूं आशाहीदहे ॥ बहुलोकनके माहिं सदा भरमत रहे॥ अब मैं कहूं उपाय जगतसूं ज्यों छुटे। आवागमन का फंद सिताबीही कटे ॥ जासूं भरमें नाहिं रहे थिर होयके। पावे निज अस्थान विपति सब खोयके ३ ॥

दो० ॐकार बड़ नाम है हिरदे ध्यान करे ॥
शुकदेव कहैं चरणदाससूं सबही ब्याधि टरे ४ ॥

अष्टपदी ॥ ॐकारके अक्षर कहिये तीनहैं। अकार उकार मकार जानै परवीनहैं॥ तीनो अक्षर माहिं तीनो हैं योंकही। पहले अक्षर में जु रहे भलो कही ॥ दूजे अक्षर बीचजानो आकाशही। तीजे अक्षर माहिं बैकुण्ठ निवासही॥ तीनो अक्षर माहिं जो तीनो वेदहैं। ऋग् यजु वेदरु साम तिहूं जो भेदहैं॥ तीनो अक्षर माहिं तिहूं जो देवहैं। ब्रह्मा विष्णु महेश तिहूं जो अभेवहैं॥ तीनप्रकार कि अग्नि तीन अक्षर महीं। एक अग्नि यह जान दिखे प्रत्यक्षहीं॥ दूजी अग्नि प्रचण्ड सूर्यकी भासई। तृतिय अग्नि सब माहिं जठर परकासई॥ तीनोंगुण तिनमाहिं समझजानो यही। रजगुण सतगुण और तमोगुण है सही ५ ॥

---

१ बुद्धिमान् ॥

दो० यह अक्षर ॐकारके जिनका चौथाभाग ॥
अर्द्धमात्रा बोलिये ऊपर बिन्दी लाग ६

अष्टपदी ॥ जो कोउ याकोजपै समझ अरु ध्यावही । ऊपर क
सवनको पावही ॥ अक्षर साढ़ेतीन प्रणवके माहिं है । सब व
माहीं कछु नाहिं है ॥ ऐसे रह यामाहिं पुरुषमें गंधज्यों । जैसे
दूधमें घीवत्यों ॥ जैसे पाइन माहिं जु कनकै बताइये । ऐसेई
सबको पाइये ॥ वाही को किये ध्यान परमपदको लहै । वेदपुरा
साखियोंही कहै ॥ अब परणवका ध्यान जुदेहू बतायकै । सबही
कहूं समझायकै ॥ हिरदयहीके माहिं जुकमल पिछानिये । ऊपर
नीच मुख जानिये ॥ वाही के छिद बीच रहत मनरूपहै । कहैं च
जु भेद अनूप है ७ ॥

दो० अक्षर में ॐकार के पहिला है जु अकार ॥
ताहि कहेसों होत है हिरदा शुद्ध विचार ८

अष्टपदी ॥ दूजा जपै उकार कमल विकसै कली । शनैशनै
बसै तामें अली ॥ तीजा जपै मकार प्रकटहो नादही । सुनि सु
होहि जु परम अगाधही ॥ अर्द्धमात्रा विन्दु सदा थिर जानिये ।
लन कछु नाहिं यही चित आनिये ॥ यामें मनहै लीन ज्योति है
निर्म्मलहू अरु शुद्ध बिलौरकी भांतिहै ॥ सूरजकीसी किरण मह
वही । जोई करै यह ध्यान पुरुष पावै सही ॥ सबमें ज्योति स्वरू
भरपूरहै । निकट निकट सों निकट दूरसों दूर है ॥ जो इसकाही ध्य
किया जापना । तौ कै [illegible]
होय रोंके नौदारही । [illegible]

दो० दोय पगएडी बाँधिये नीचे के दो द्वार ॥
दोउ अँगूठे हाथ के रोंको स्रवन वार १०

१ ॐकार २ बाहर ३ पत्थर ४ सोना ५ भ्रमर ॥

अष्टपदी ॥ तर्जनि अँगुली दऊ दृगनपर दीजिये । मध्यमसे दोउ नाक द्वंद कीजिये ॥ अनामिका दोउ हाथकि और कनिष्ठिका । होंठनको बँद करै जुनीके पुष्टका ॥ नासाके दोउ छेद एकही जितभये । दोउ भौंहनके बीच चरणदासा कहे ॥ निश्चय ताहि बनारस देह कि जानिये । वाहीकी तौ ओर दृष्टिको तानिये ॥ महाकुम्भक इहि नाम इसी विधि साधिये । ध्यान किये होय मुक्ति यही अवरोधिये ॥ इन्द्रिनहूं के मारगको जो बँद करै । वायु बिना घट माहिं यथा दीपक बरै ॥ होय घना परकाश इसी जो देह में । इसही ध्यान प्रताप मिलै जा गेहमें ॥ पावै चेतन शुद्धि किये इस योगही । कर्मन को ह्वै नाश मिटै मन रोगही ११ ॥

दो० उपनिषदा पूरी भई नाम योगही तत्त्व ॥
अंग अथर्वण वेदकी चरणदास कहिसत्त १२

इति तृतीयतत्त्वयोगउपनिषदसम्पूर्णम् ॥

अथ योगशिखाउपनिषदचतुर्थप्रारम्भः ॥

दो० योगशिखा चौथी कहूं तामें अद्भुत ध्यान ॥
परजापति ऐसे कही शिष्य सुनो दे कान १

अष्टपदी ॥ यामें अद्भुत राह बड़ेही ज्ञानकी । कांपन लागै देह कठिन सुनि ध्यान की ॥ जब आवै मनमाहिं मोह तन ना रहै । पांयनहीं की थाग नहीं हियमें दहै ॥ वाकी विधि में कहूं सभी सुनि लीजिये । बैठि इकांतहि ठौर जु आसन कीजिये ॥ आसन पद्म लगाय कि सुख आसन

१ अँगूठाके पासकी अँगुलीकी तर्जनी संज्ञाहै २ तर्जनी के पासकी अँगुलीकी मध्यमा संज्ञाहै ३ चौथी अँगुलीकी अनामिका संज्ञाहै ४ छंगुनियांको कहते हैं ५ छेदये ६ देह ७ मद्या ८ काम क्रोध लोभ मद मात्सर्य्य ९ पल्थी मारकर बैठना सब अङ्गों को समेट कर इसको पद्मासन कहते हैं ॥

करो। सीधे गले मरु नैन नासा धरो ॥ दोउ हाथन के साथ लाइये। सब स्वादन को छाँडि जो मनको लाइये ॥ सर्वेंद्री मनमें राखिये। इस विन और उपाय सकलको नाखिये ॥ जो ध्यान ताको करै। आठपहर संग्राम विना साँई लरै। देहगढ़ घर जानिये। तामें दीरघ थंभ एक पहिचानिये २ ॥

दो० अरु यामें नौ द्वार हैं छोटे थंभहु तीन ॥
पांचदेवता तेहि विषे लहैं साथ परवीन ३
यह घर जो मैंने कहा सोइ पुरुषन की देह ॥
कहैं गुरु शुकदेवजी चरणदास सुनिलेह ४

अष्टपदी ॥ एक बड़ा जो थंभ मेरुकी डंडहै। सोइ पीठीका हा[ड़]
सब मंडहै ॥ अरु वाहीके बीच नाड़ि सुषमन भली। सब नाड़िन शि[र]
योगी मानें रली ॥ नौ द्वारे अब कहूं तिन्हैं पहिचानिये। दो सर[व]
आंख भली विधि मानिये ॥ नासा छिद्र दोय जु मुखका एक है।
गुदा दो ज्ञान नवोंका लेखहै ॥ तीन जु छोटेथम्भ तीन गुणहीकहे
गुण तमगुण और रजोगुणही लहे ॥ पांच देवता कहे सो पांचो प्र[ा]
प्राणापानरुव्यान उदान समानहैं ॥ ऐसे मंदिर माहिं हृदयमें छेदहै
सूरजमण्डल अचरज भेदहै ॥ ताकी बड़िही ज्योति किरण उजिया[री]
एम योगीहोय सो ताहि निहारि है ५ ॥

दो० ज्योतिमयी मंडल लखै हृदय कमलमें होय ॥
तामें दीखै और इक दीवे कीसी लोय ६

अष्टपदी ॥ दीपककीसी ज्योति मानु ऊपर चलै। रहै अपनिह[ि]
भांति ऐसे हिलै ॥ वाही ज्योति को जानै ब्रह्मस्वरूपही। यही सम[ा]
ध्यानकरै जु अनूपही ॥ योगीकरै जो ध्यान यही हिय माहिंहीं। अन[्]
तन छूटि उपरको जाहिंहीं ॥ सूरजहूका मंडलजावै वेधही। सुषमन [...]

१ ॐकार २ तलवार की सादृश्य ३ प्राण, अपान, उदान, व्यान, समान ४ ज[...]
कि मैरो से लगाकर पृष्ठभागसे मस्तक तक मिली हुई है ५ रूपक अर्थात् देखि ॥

ाप शीश को छेदही ॥ सायुजे मुक्तिको जाय परापत होयही । कोटिन
ाहींलहे जु विरलाकोयही ॥ सब ज्योतिनकी ज्योति बड़ी जो ज्योतिहै ।
ाको पाये होय एकही गोत है ॥ आलस सौं दुर्भाग्य ध्यान करिना सके ।
ौ दिनमें तिरकाल पाठकरने लगे ७ ॥

दो० प्रातकाल अरु मध्य में संध्याही की बार ॥
उपनिषदन तीनोंसमे पढ़े विचार विचार ८
करम करे यमही डरे चौरासी हरजाय ॥
देही पावै मनुषकी पूरा गुरु मिलजाय ६
फिर पावै यह ध्यानहीं पीछे कहा ज़ुलोल ॥
जावै परमहि धामकूं छोड़े सब झकझोल १०
थोड़ासा यह ध्यानही में समझायों तोहिं ॥
परजापति शिषपसों कहै बड़ा जो निश्चयमोहिं ११
यह पदवी मोकूंमिली इसी ध्यान परताप ॥
जीवन मुक्ताहीहूं छुटे आप अरुथाप १२
निश्चल होया ध्यानकूं करै जो कोई और ॥
जगत छुटै आपामिटै पावै निरमय ठौर १३
आनन्दहि आनन्दजहँ अवधिन काल कलेश ॥
चरणदास या ध्यानसों पावै ऐसा देश १४
बहुलोकनमें जन्मधरि पाप मिटा नहिं सूर ॥
चरणदास इस ध्यानसों सबै होतहै दूर १५
दूरकरन दुख जगतके आन उपाव न होय ॥
योगीकूं या ध्यानसम और वस्तुनहिं कोय १६
उपनिषदा चौथी यही भई समापत येह ॥
चरणदास कहै पांचवीं हित चितदे सुनिलेह १७

इति योगशिखाचौथीसम्पूर्णम् ॥

१ ब्रह्ममें लीन होजाना ॥

अथतेजविंदउपनिषदपांचवींप्रारम्भः

दो० उपनिषदा जो पांचवीं वेद अथर्वण माहिं ॥
तेज बिंद जिहिनामहै समझ मुक्ति होजाहिं १

अष्टपदी ॥ तेज बिन्दके अर्थ यही हिय गूंथहै । बड़े ध्यानके त
की यह बूंदहै ॥ उसकाहै यह ध्यान जो सबसे ऊंच है । सबसूं पर नि
शुद्ध अरु सूचहै ॥ हिरदयहीके मध्य और सूक्षम महा । अरुकेवल श्रा
किन्हीं ज्ञानीलहा ॥ अनंतशक्ति जिहिमाहिं निराअस्थूलहै । बहुत वि
ब्रह्मांड सबनका मूलहै ॥ बड़ा बिना परमान गहानहिं जातहै । वाकि
स्या ध्यान कउन जु दिखातहै ॥ वाका देखब दुलभ सुलभनहिं जान
वह तो समुद अथाह कछु परमानना ॥ ज्ञानी पण्डित और सबै बुधि
नहीं । पावै आदि न अन्त और मध्यानहीं ॥ केवांधे ब्रह्मवतकैरके ध
हीं । वाहीकेहो रूपपावै तब जानहीं ३ ॥

दो० जीतै पहिल अहारही दूजे और क्रिरोध ॥
बहुमनुषों का संग तजि छांड़े प्रीति विरोध २

अष्टपदी ॥ परबल इन्द्रीजान सबनकूं वशी करै । शीत उष्ण दुख

अस्थान जो तीनोंहों सही ॥ जाग्रत स्वपन सुषोपत परगट जानिये
तुरिया निज अस्थान गुप्त पहिंचानिये ४ ॥

दो० इन तीनों से बड़ाहै तुरिया कूं नितजान ॥

चरणदास पोषणे जगत वाके ना अस्थानं ५।

अष्टपदी॥ जैसे भूत अकाशयों व्यापक होरहो। सब इन्द्रिनके माहिं सूक्षम है रहो॥ वाकी सत्तासेती चेतनहींरही। वही बड़ापद जान त्रिगुण नहिं सही॥ वाके नेत्रहैं तीन जो तीनों वेदही। अरु वाके गुणैं तीन जो भयो न भेदही॥ है सबका आधार त्रिलोकी धारई। आपरहै निरधार जो ... अखंड अगाधही। हैतो निस्सन्देह पहुंचे ... कारणगुणरूपही। अरु सब गुण वामाहिं ... पही। बावन अक्षर माहिं ... नहीं। कठिन परातम ... य दुलभ देखे नहीं ६॥

दो० वह उपजे बिनशै नहीं अजं अविनाशी सोय॥

बिन इच्छा थिरही रहै चरणदास नित जोय ७

अष्टपदी॥ वह सबही को राउ पिण्ड अरु जीवहै। नाना कौतुक होयँ अन्तवहि सीवहै॥ ज्ञानसे जुदा न जान निरा वह ज्ञानहै। वही महा आकाश नहीं परमानहै॥ सबमाहीं परवेश जो आतम सत्तहै। आपमें पूरण आप परमही तत्तहै॥ अज्ञानी जानै कूड़ कूड़ पहुँचै नहीं। वह तो सदा नितजान कभी बिनशै नहीं॥ वाकूं कहा नहिंजाय जाप जापक कभी। अरु सारे हैं जाप उसी माहीं सभी॥ और जपामीगया जाप जापक वही। सबकुछ उसकूंजान गुप्त परगटसही॥ वहनिर्गुण निर्लिप्त कोई गुणनाहिंने। परसूं परतापरे जानिलो वाहूने॥ वासूंपर नहिं और विचारा जायना। कहैं चरणहीदास कछू वा माहिंना ८॥

है नहीं वाकूं स्वप्न न कोय॥

है नहीं जाग्रत कैसे होय ६

नाहिं न जानें सबहूं॥ सबको जानत मूल जुड़ाती, लोपदी। दीव पराकाशी जाने सबको यही॥ जाकूं लोभ न होय अविद्या होयना अभिमानकुकर्म वासना कोयना॥ गरमी जाड़ा भूखप्यास व्यापै पइये क्रोध न मोह नेकवामें फर्दा॥ वाहिन इच्छा होय न पूरी च त्रिया अभिमान न उनके माहिंहीं॥ माननहीं अपमान न सबसूं होय निवृत्त ब्रह्मकूं पावई॥ तेज बिन्द उपनिपद सँपू शुकदेव के दास चरणदासा कही॥ ताहिसुने मनराखि विचा॥ निरवयहोवै मुक्त जगतमें नापरे १०॥

दो० कही गुरु शुकदेव ने मेरी कछू न बुद्धि॥
पढ़ो नहीं मूरखमहा मोकूं नेक न शुद्धि ११
मेरे हिरदय के विषे भवनें कियो गुरु आय॥
वहँ बिराजतहैं सदा मेरी देह दिखाय १२
जबसूं गुरु किरपाकरी दर्शन दीन्हों मोय॥
रोम रोममें वे रमे चरणदास नहिं कोय १३
जाति बरण कुल मनगया गया देहअभिमान॥
अपने मुखसों कह कहौं जगही करे बखान १४
रहे गुरु शुकदेवजी में मैं गई नशाय॥
मैं तें तें में वही है नखशिख रहो समाय १५

॥ इति श्रीचरणदासकृततेजोबिन्दूपनिषदसंपूर्णम् ॥

अथ चरणदासजीकृतभक्तिपदार्थप्रारम्भः॥

दो० प्रणवों श्रीमुनि व्यासजी मम हिरदयमें आय॥
भक्ति पदारथ कहतहूं तुमहीं करो सहाय १

प्रेम पगावन ज्ञान दे योग जितावन हार॥
चरणदास की वीनती सुनियो वारवार २
तुम दाता हम माँगता श्रीशुकदेव दयाल॥
भक्तिदई व्याधागई मेटे जग जंजाल ३
किसू कामके थे नहीं कोऊ न कौड़ी देह॥
गुरु शुकदेव कृपाकरी भई अमोलक देह ४
कोहै कोई न जानता गिनती में नहिं नावँ॥
गुरु शुकदेव कृपाकरी पूजन लागे पावँ ५
सीधी पलक न देखते छूते नाहीं छाहिं॥
गुरु शुकदेव कृपाकरी वरणो दिव्य लजाहिं ६
दुसरे के वालकहुते भक्ति विना कंगाल॥
गुरु शुकदेव दयाकरी हरिधन किये निहाल ७
जा धन कूं ठग ना लगै धारी सकै न लूट॥
चोर चुरायसकै नहीं गाँठ गिरै नहिं खूट ८
वलिहारी गुरु आपने तन मन सदके जावँ॥
जीव ब्रह्म क्षण में कियो पाई भूली वावँ ९
हरिसेवा सो कृत वरस गुरु सेवा पलचार॥
तौभी नहीं वरावरी वेदन कियो विचार १०

चौ० गुरुकी सेवा साधू जाने। गुरु सेवाकहं मूढ़ पिछाने॥ गुरु सेवा वहुन पर भारी। समझ करो सोई नर नारी॥ गुरु सेवा सों विघन विनाशै। दुरमति भाजै पातक नाशै॥ गुरु सेवा चौरासी छूटै। आवागमनका डोरा टूटै॥ गुरुसेवा यमदण्ड न लागै। ममता मरै भक्ति में जागै॥ गुरुसेवा सूं प्रेम प्रकाशै। उनमत होय मिटै जग आशै॥ गुरुसेवा परमातम दरशै। त्रैगुण तजि चौथापन परशै॥ श्रीशुकदेव वतायो भेवा। चरणदास कर गुरुकी सेवा ११॥

१ उपदष २ दो० । नवजलचर दशस्थोमचर ऊर्मिग्यारह वनवीस। लरर चौरासी कृष्ण ६ मनुष चार पशु भीस॥

दो० गुरु सेवा जाने नहीं पाँय न पूजे धाय॥
योगदान जप तप कियो सबी अफल है जाय १२

चौ० योगदान जप तीरथ न्हाना । गुरु सेवा बिन निर्फल जा
गुरु सेवा बिन बहु पछितैहो । फिर फिर यम के द्वारे जैहो ॥ गुरु सेवा
अति दुखपैहो । जग में पशु दारिद्री ह्वैहो ॥ गुरु सेवा बिन कौन उ
भवसागर सूं बाहर डारे । गुरु सेवा बिन जड़ कह कारि हैं । कालीना
करि तरि हैं ॥ गुरु सेवा बिन कछु नहिं सरि है । गहा अंध कूपन में प
गुरु सेवा बिन घट अँधियारा । कैसे प्रकटे ज्ञान उज्यारा ॥ नारद निश
गुरु शुकदेवा । चरणदास करि तिनकी सेवा १३ ॥

दो० इन्द्रीजित निरबैरता निरमोही निरबन्द ॥
ऐसे गुरुकी शरणसूं मिटै सकल दुखद्वन्द १४

चौ० राग द्वेष दोनों से न्यारे । ऐसे गुरू शिष्यकूं तारे ॥ आशा तृ
कुबुधि जलाई । तनमन वचन [illegible] उदासी
निरविकार जानो निरवासी ॥ [illegible] ध्यान वि
रवान अशंका ॥ सारग्रही और सरबंगी । संतोषी ज्ञानी सतसंगी ॥ अ
चीक जत निर अभिमानी । प्रश्न रहित स्थिर शुध बानी ॥ निहतंग नाहीं
परपंचा । निहकरम निरलिप्तजो संचा ॥ शीतल तासु मती शुकदेवा
चरणदास कियोसो गुरुदेवा १५ ॥

दो० सतवादी अरु शीलवत सुहृदे अरु योगीश ॥
निश्चल ध्यान समाधि में सो गुरु बिस्वेबीश १६
भरम निवारण भय हरण दूरकरन सन्देह ॥
सुठिया खोले ज्ञानकी सो सतगुरु करलेह १७
सतगुरु के लक्षण कहे ताकूं ले पहिचान ॥
निरखपरख करदीजिये तनमन धन अरुप्रान १८
ऐसा सतगुरु कीजिये जीवत डारे मारि ॥

१ शत्रुता॥

जनम जनम की वासना ताकूं देवे जारि १९
सतगुरु के ढिग जाइके सन्मुख खावै चोट॥
चकमकि लगपथरी भरै सकल जरावै खोट २०
सतगुरु मेरा शूरमा करै शब्द की चोट॥
मारै गोला प्रेम का दहै भरम का कोट २१
मुखसेती बोलनथका सुनै थकाजू कान॥
पावँनसू फिरनाथका सतगुरु मारा बान २२
मैं मिरगा गुरुपारधी शब्द लगायो बाण।
चरणदास घायल गिरे तब मन बींधे प्राण २३
शब्दबाण सों मारियो लगी कलेजे माहिं।
मारहँसे शुकदेवजी बाकी छोड़ी नाहिं २४
सतगुरु शब्दी तेग है लागत दो करदेहि।
पीठि फेरि कायर भजै शूरा सन्मुख लेहि २५
सतगुरु शब्दी सेल है सहै धमूका साध॥
कायर ऊपर जो चलै तौ जावै बरबाद २६
सतगुरु शब्दी तीर है तनमन कीयो छेद॥
बेदरदी समझै नहीं बिरही पावै भेद २७
सतगुरु शब्दी लागिया नावकका सा तीर॥
कसकत है निकसत नहीं होत प्रेमकी पीर २८
सतगुरु शब्दी बाण है अँग अँग डारे तोड़।
प्रेम खेत घायल गिरे टाँका लगै न जोड़ २९
सतगुरु शब्दी मारिया पूरा भाया वार।
प्रेमी जूझे खेत में लगा न राखा तार ३०
ऐसी मारी खेंचकर लगीवार गइ पार।
जिनका आपा ना रहा भये रूप ततसार ३१
सतगुरु के मारे मुये बहुरि न उपजे आय।

चौरासी बन्धनछूटे हरिपद पहुँचे जाय ३२
सतगुरु के वचनों मुये धन्य जिन्हों के भाग।
त्रैगुणते ऊपरगये जहां दोष नहिं राग ३३
वचन लगा गुरुदेवका छूटे राजके ताज॥
हीरा मोती नारिसुत गज घोड़ा अरु बाज ३४
वचन लगा गुरु ज्ञानका रूखे लागे भोग॥
इन्द्रकि पदवी लौ उन्हें चरणदास सबरोग ३५
सतगुरु ढूंढा पाइये नहीं सुहेला होय॥
शिष्य वोपूरा कोइहै सानी माटी जोय ३६
जाति वरन कुल आश्रम मान बड़ाई पोय॥
जब सतगुरु के पग लगें सांचे शिष्यहै सोय ३७

चौ० गुरु के आगे राखे माथा। कहै पाप दुख मेटो नाथा॥ मैं अ तुम्हारो दासा। देहु आपने चरणन बासा॥ यह तन मनले भेंट चर अपनी इच्छा कुछ न रहायो॥ जो चाहै सो तुमहीं करो। या भाँड़े कुछ भरो॥ भावे धूप छांह में डारो। भावे बोरो भावे तारो॥ गुण कुछ बुधि नहिं मेरी। सब विधि शरण गही प्रभु तेरी॥ मैं चकई अ किय डोरा। मैं जो फिरूं सब तुम्हरे जोरा॥ मैं अबबैठा नाव तुम्हारी शा नदी सुं करिये पारी॥ भ्रमर जाल जग सूं मोहिं काढ़ो। हाथ चरणदासा ठाढ़ो ३८॥

दो० गुरु के आगे जाय करि ऐसे बोले बोल॥
कछू कपट राखे नहीं अर्ज करे मन खोल ३९
यह आपा तुमकू दिया जित चाहो तितराख॥
चरणदास द्वारे परो भावै झिड़को लाख ४०

चौ० ऋद्धि सिद्धिफल कछु न चाऊं। जगत कामना को नहिं ला और कामना मैं नहिं राखूं। रसनानाम तुम्हारो भाखूं॥ राज भो

१ प्रेम २ जिहा॥

न सांसा। नहीं इन्द्र पदवी लौ आसा॥ चौरासी में बहु दुख पायो। रण तिहारी आयो॥ मुक्त होनकी मनमें आवै। आवागमन सों जीव ।रामभक्तिकी चाह हमारे। याते पकड़े चरण तुम्हारे॥ प्रेम प्रीति में भीजै। यहीदान दाता मोहिं दीजै॥ अपनाकीजै गहियेबाहीं। धरिये हाथ गोसाईं॥ चरणदासको लेहुउबारे। मैं अंडा तुम सेवनहारे ४१॥

अण्डा जब आगे गिरै तब गुरु लेवै सेइ॥
करै बराबर आपनी शिष्य को निस्सन्देह ४२
अपना करि सेवन करै तीनि भांति गुरुदेव॥
पंजा पक्षी कुंजगन कछुवा दृष्टि जु भेव ४३
जो वे बिछुरें घड़ी भी तो गंदा होइ जाय॥
चरणदास यों कहतहै गुरुको राखि रिझाय ४४
पितु सों माता सौ गुना सुत को राखै प्यार॥
मनसेती सेवन करै तन सों डाटरुमार ४५
जो देवैं दुरशीश भी हो हो लगे अशीश॥
सेवन करि समरथ कियो उनपर वारौं शीश ४६
माता सों हर सौगुना जिन सें सौ गुरुदेव॥
प्यार करैं औगुण हरैं चरणदास शुकदेव ४७
कात्ति भीत सों रहै ज्यों कुम्हार को नेह॥
करै जु बाहर चोटैं देह ४८
करैं निहाल॥

अष्टपदी॥ गुरु बिन और न जान मान मेरी कही। चारहुवेद
... मैं नहीं रही॥ वेदरूप गुरु होय कि कथा सुनावई। पंडितकी पहि
अर्थ बतावई॥ गुरु है शेष गणेश सांति चेतनकरै। गुरुब्रह्मा गुरुविष्णु
जानियै॥ कल्पवृक्ष गुरुदेव मनोरथ गवहरे। कामधेनु गुरुदेव सुधां दे
॥ गंगासम गुरुहोय पाप सब धोवई। शशिधर सम गुरु होय तम
खोवई॥ सूरजसम गुरुहोय तिमिर सब लेवई। पारब्रह्म गुरु होय मुक्ति
देवई॥ गुरुही को करिध्यान नाम गुरुको जपो। आपापदीजै मेट
गुरुही थपो॥ समरथ श्री शुकदेव कहा महिमा करौं। अस्तुति कही न
शीश चरणन धरौं ५२॥

दो० हरि रूठै कुछ डर नहीं तुमही देहुटकाय॥
गुरुको राखो शीशपर सब विधिकरै सहाय ५३

अष्टपदी॥ गुरुको तजि हरिसेव कभी नहिं कीजिये। वे मुखको
ठौर नरक में दीजिये॥ गुरु निंदक नहिं मुक्त गर्भ फिरि आवई। चौ
लख भुक्ति महादुख पावई॥ प्रथम करे गुरुसेव परसि चरणों परे। अ
धारण ध्यान टेक उरमें धरे॥ गुरुको रामहिं जान कृष्ण सम जानिये।
नृसिंह अवतार जु वामन मानिये॥ गुरुको पूरणजान जु ईश्वर रूपही।
कुछ गुरुको जानय बात अनूपही॥ हरि गुरु एकहि जानय निश्चय
इये। दुविधाही को बोझ जु वेग बगाइये॥ धर्म्म पिता गुरुजान जु ह
राखिये। लाज सकुच करिकान ढीठता नाखिये॥ मेरा यह उपदेश हि
धारियो। गुरु चरणन मनराखि सेवतनगारियो॥ जो गुरु फिरके
तौ मुख नहिं मोड़ियो। गुरुसों नेह लगाय सबन सौं तोड़ियो॥ जो
सांचा होय तो आपा दीजिये। चरणदासकी सीख समझकर लीजिये।
को श्रीशुकदेव यही समझाइया। वेद पुराणन माहिं जु यों हीं गाइया ५

दो० गुरु अस्तुति कह कहि सकै चरणदास कहा बुद्धि॥
भक्ति ची अब करत हौं जोवे देवै शुद्धि ५५

१ शिव.चन्द्रमा २ मुख ३ अन्धकार॥

भक्तनकी अस्तुति किये तन मन हियो सिराय।
कलिका मैल रहै नहीं बुधि उज्ज्वल है जाय ॥
साधन की सेवाकरो चरणदास चित लाय ॥
जनम मरण बंधनकटैं जगतव्योधिछुटिजाय ५६

चौ० जो भक्तोंकी सेवा करै । यमके फंदे नाहीं परै ॥ जिन साधों का दरशन देखा । तिनका यमसों रहा न लेखा ॥ जो भक्तनको शीश नवावै । छूटै जब दुख नहिंपावै ॥ जो कोइ साध संगमें रलै । जठरै अग्नि में नहीं जलै ॥ जो साधोंकी अस्तुति भाखै । भावै भक्ति प्रेम रसचाखै ॥ जो भक्तन सों प्रीति लगावै । वह निश्चय हरिको अपनावै ॥ जो भक्तन की कीरती गावै । समझै अर्थ परम पदपावै ॥ साधु संग बिन गति नहिं होनी । ॥ तपसी अरु क्या भयो मौनी ॥ चरणदास भक्तोंकी शरना । छूटै जीना छूटै मरना ५७ ॥

दो० भक्तवान निर्मल दिशा संतोषी निर्वास ॥
मनराखै नवधा विषे और न दूजी आस ५८

चौ० दयावान दाता गुण पूरे । पैज धारणा वचनों शूरे ॥ मुक्त कामना तू नहिं चाहैं । सिद्ध सिद्ध अरु त्यागे ताहैं ॥ हानि लाभ जिनके नहिं ग । वैरी मित्र खरा नहिं खोटा ॥ मानपमान कछु नहिं तिनके । दुख सुख एक बराबर जिनके ॥ शुभ अरु अशुभ कछू नहिं जानैं । रावरंक को पहिचानैं ॥ कंचन कांच बराबर देखै । जग व्योहार कछु नहिं लेखै ॥ हार जीत नहिं वाद विवादा । सदा पवित्र समझ आगाधा ॥ हर्ष शोक तनके नहिं कबहीं । लख चौरासी प्यारे सबहीं ॥ हिंसा अकस भाव नहिं जा । सब जीवनकी राखै पूजा ॥ चरणदास शुकदेव बतावै । ऐसे लक्षण साधु कहावै ५६ ॥

दो० भक्तन की पदवी बड़ी इन्द्रहुसे अधिकाय ॥
तीन लोक के सुख तजे लीन्यो हरि अपनाय ६०

१ दुःख २ गर्भ ३ जिसकी थाह न मिलै ४ वैरभाव ॥

अनन्य[1] भक्त निष्काम जो करै सोइ चरणदास ॥
चार मुक्ति[2] बैकुण्ठ लौं सब से रहैं निरास ६१
प्रभु अपने मुख से कहो साधू मेरी देह ॥
उनके चरणन की मुझे प्यारी लागै खेह ६२
आठ सिद्धि वै लें नहीं कनक कामिनी नाहिं ॥
मेरे सँग लागे रहैं कभी न छोड़ैं बाहिं ६३
सब तजि कर मोको भजै मोहीं सेती प्रीति ॥
मैं भी उनके कर बिक्यो यही जु मेरी रीति ६४
साधु हमारी आतमा सब से प्यारे मोहिं ॥
नारद निश्चय कीजिये सांच कहत हौं तोहिं ६५
जिन के कारण मैं रचौं अद्भुत यह संसार ॥
उनहीं की इच्छा धरूं हर युग में अवतार ६६
प्रेमी को ऋणियां रहौं यही हमारो मूल ॥
चारि मुक्ति दइ ब्याज में दे न सकौं अवमूल ६७
सर्वस दीन्हों भक्त को देख हमारो नेह ॥
निर्गुण सौं सगुण भयो धरी पशुकी देह ६८
मेरे जन मोमें रहैं मैं भक्तन के माहिं ॥
मेरे अरु मम सन्तके कछु भी अन्तर नाहिं ६९
साध सोवै तहँ सोयरहुं भोजन सँगही जेवँ ॥
जो वह गावै प्रेम सों मैंहू ताली देवँ ७०
मग भक्ता जित जित फिरैं गवनै लागाजावँ ॥
जहां तहां रक्षा करौं भक्तवछल मेरो नावँ ७१
भक्त हमारो पग धरै जहां धरूं मैं हाथ ॥
लारे लागोही फिरौं कबहु न छोडूं साथ ७२
मोको वशकियो जो चहै भक्तन की करि सेव ॥

[1] जो दूसरेका भक्त न हो [2] सारूप्य सालोक्य सामीप्य सायुज्य है नाम ॥

उन में है कर में मिलौं करौं बहुतहीं हेत ७३॥
पृथ्वी पावन होत है सबही तीरथ आदि॥
चरणदास हरि यों कहै चरण धरें जब साध ७४
जिनकी महिमा प्रभु करैं अपने मुख सों भाखि॥
तिनकी कौन बराबरी वेद भरत हैं साखि ७५
जिनकी आशा करत हैं स्वर्ग माहिं सब देव॥
कबहूं दरशन पाय हैं चरण कमल की सेव ७६
अपने अपने लोक में सभी करैं उत्साह॥
साधूकाया छोड़करि गमन करै किसराह ७७
धनि नगरी धनि देशहै धनि पुर पट्टन गावँ॥
जहँ साधूजन उपजियो ताके बलि बलि जावँ ७८
भगत जु आवैं जगत में परमारथ के हेत॥
आप तरैं तारैं परा मिंडैं भजन के खेत ७९
भव सागर सों तारि करि लै जावैं बहु जीव॥
साधू केवँट राम के पार मिलावैं पीव ८०
काम क्रोध मद लोभ हनि गर्भ तजै जो साध॥
राम नाम हिरदे धरै रोम रोम आराध ८१
साधू महिमा को कहै शोभा अधिक अपार॥
रसना दोय हजार सों शेषहु जावैं हार ८२
अनन्य भक्ति करि प्रेम सों जीति लिये गोविन्द॥
चरणदास हो वश किये पूरण परमानन्द ८३
तप के वरप हजारहू सत संगत घड़ि एक॥
तौभी सरिवर ना करै शुकदेव किया विवेक ८४

चौ० सतसंगति महिमा बड़भाई। स्मृति वेदपुराणन गाई॥ मुनि वशिष्ठ कहो याही भेवा। साधु संगको तरसैं देवा॥ साधु संगको नारद

---

१ स्नेह २ गवाही ३ शहर ४ नाव खेनेवाला मल्लाह ५ जीभ॥

जानै। सो वह पिछलो जन्म पिछानै॥ देखो संगति की अधिकाई। वा लमीकि अरु शबरी गाई॥ अजामील सतसंगति परिया। अनगिन पा किये सब जरिया॥ सतसंगति बहु पतितै उधारे। अधम सरीखे मुक्तिपधारे॥ जाट जुलाहा अरु रैदासो। संगति साधु हुआ परकासा॥ साधुन की संगति मुकताई। चरणदास शुकदेव बताई ८५॥

दो॰ जब जब दरशन रामदे तब मांगों सतसंग॥
चाहों पदवी भक्ति की चढ़े मुतवधा रंग ८६

चौ॰ कूबा सैना सदना नाई। बहुतक नीच भये उँचपाई॥ जैसे और ठौर को पानी। सुरसरि मिलि भो गंगारानी॥ तैसे काठ लोह को तारे। ऐसे संगति मिलि भय पारे॥ जैसे पारस लोहा लागा। सो वह कंचन भयो सुभागा॥ देवल तीरथ बहु मग धावै। साधुसंग बिन गति नहिं पावै। ढाकापात पानके साथा। संगति मिलिगयो भूपनहाथा॥ त्यों गोविंद सँग गाई कुबरी। सूवाके सँग गणिका उबरी॥ हरिभगतन में दीजै बासा जन्म जन्म मांगै चरणदासा ८७॥

दो॰ ऊंची पदवी साधुकी महिमा कही न जाय॥
सुरनर मुनि जग भूपहीं देखतरहे लजाय ८८

रागसारंग॥ करो नर हरिभक्तनको संग। दुखबिसरे सुखहोय घनेरो तन मन पलटै अंग॥ है निष्काम मिलो संतनसों नाम पदारथ संग। जिहि पाये सब पातक नाशैं उपजै ज्ञानतरंग॥ जो वै दयाकरें तेरे पर प्रेम पि लावें भंग। जाके अमल दरश है हरिको नैनन आवै रंग॥ उनके चरण शरणहीं लागो सेवा करो उमंग। चरणदास तिनके पग परशन आश क रतहै गंग ८९॥

दो॰ बिनहोनी हरि करिसकैं होनी देहिं मिटाय॥
चरणदास करु भक्तिहीं आपादेहु उठाय ९०

चौ॰ हरि चितवै सो सांची बाता। औरन सों नहिं टूटै पाता॥ जो

१ नीच २ चमार ३ देहु॥

चाहा सोउन करई। अब चाहे सोभी सब सरई॥ अग्नि माहिं तृण बचावै। घटमें सिगरी सिद्धिसमावै॥ पावक राखै पानी माहीं। जल जहँ धरती नाहीं॥ गिरिवर सागर माहिं तरावै। चाहे हलकाकाठ डु-
। मूलें पात विन लकड़ी बाढ़ै॥ नरकी छाती
अकासै॥ चाहे गूंगे वेदपढ़ावै। अँधरे आंखें
ले दिखावै॥ सबलायक सामर्थ गुसाई। चरणदास शुकदेवबताई ६१॥

दो०॥ प्रभुचाहे सोई करै ताकूं टोके कौन॥
॥देखि देखि अचरजरह्या चरणदास गहिमौन ६२

चौ० महलपवनपर रचैमुरारी। अग्निके माहिंकरै फुलवारी॥ चाहे बादल बरसावै। विनसूरज दिनकरि दिखलावै॥ खाली भरै भरे निघ। जो चाहे सोई प्रगटावै। पाथर पानी करै बहावै। छिनमें सगरो सिद्ध वै॥ चाहे जलका थल करिडारै। राईकूं परबत करै भारै॥ रंकनै कूं करै र धारी। चाहे भूपन देह उजारी॥ जो चाहे सो आपहि फेरै। औरनके र झूठे धरै॥ चरणदास शुकदेव जनावै। सांचे गुणवाद जो गावै ९३॥

दो०। यह अस्तुति करतार की जिन रचिया संसार॥
अद्भुत कौतुक करिरह्यो लीला अगम अपार ६४

चौ० उपजावै पालै विनशावै। अनगिन चन्द सूर दरशावै॥ कोटिक एड पलकमें करै। जब चाहे तब कुछ ना रहै॥ जब फैलै तब रूप अनेका। य समिटै तब एकहि एका॥ घटक बीजका खेलनहारा। एक बीजका हल पसारा॥ तामें बीज अनन्तहि देखा। गिनूं कहांलों रंग न रेखा॥ ते हरि आपा विस्तारा। कहत सुनत देखतहूं हारा॥ अपरमपार पार नहिं ऊं। अस्तुति करता मैं सकुचाऊं॥ समझि समझि मनमें रहिजाऊं। च- णदास हो शीश नवाऊं ६५॥

दो०। लीला सिद्ध अगाध गति मोपै कही न जाय॥
चरणदास यों कहत है शोचत गयो हिराय ६६

---

१ जड़ २ दरिद्री ३ वनाना॥

चौ० कोटिक ब्रह्मा अस्तुति करहीं। वेद कहत प्रभु परे परेहीं॥ कोटि शम्भू करैं समाधा। जानि परै नहिं रूप अगाधा॥ कोटिक नारद से गावैं। गुण अगाध कछु अंत न पावैं॥ कोटिक ध्यानी ध्यान लगावैं। हरि सो कछु रूप न पावैं॥ ज्ञानी कोटि कथैं बहु ज्ञाना। समझ थकी उनहूं ना जाना॥ कोटिक शारद करैं विचारा। बुद्धि थकी जब कहा अपारा॥ नर मुनि वा भेद न लहिया। शोचि शोचि बकि बकि थकि रहिया॥ रगुण सरगुण कहा न जावै। चरणदास शुकदेव सुनावै॥ ९७॥

दो० चरणदास वा रूप की पटतरै दई न जाहि॥
रामसरीखे राम हैं और बतावौं काहि॥ ९८॥

चौ० वाकी अस्तुति कहा बखानूं। जैसा वह तैसा नहिं जानूं॥ चार करि हारा ज्ञाना। अनभै थकी नाहिं पहिचाना॥ आदि न अंत मध्य नहिं ज्ञाका। दहिना बावां पीठ न आगा॥ हरा पीत श्वेता नहिं काला। नारी पुरुष न वृद्ध बाला॥ रूप न रंग मिहीं नहिं मोटा। नया पुराना बड़ा न छोटा॥ नाम रूप किरिया सूं न्यारा। नहिं हलका नहिं कहिये भारा॥ बानी चार परै निरबाना। काहू विधि वह जाय न जाना॥ पुष्प गन्ध नादन तें झीना। गुरु शुकदेव सुनाय जु दीना॥ ९९॥

दो० कौन लखै को कहि सकै अचरज अलख अभेव॥
ज्ञान ध्यान पहुँचै नहीं निर्विकार निर्लेव॥ १००॥

चौ० सुनत अचम्भा मोकूं आया। जाके वचन रूप नहिं काया॥ निराकार नहिं ना आकारा। नहिं अडोल नहिं डोलनहारा॥ पांचतत्त्व त्रैगुण ते आगे। अद्भुत अचरज ध्यान न लागे॥ नहिं परगट नहिं गूप न गाऊं समझ सकौं नहिं थकि थकि जाऊं॥ जैसो आगे मैं कहि आयों॥ फिर समझौ वैसो नहिं पायों॥ जो कुछ कहिया नाहीं नाहीं। सो सब देखा वाके माहीं॥ सकल सर्बदा ह्यां पहिचानी। चरणदास शुकदेव बखानी॥ १०१॥

१ जिसकी थाह नहीं है २ बराबरी ३ शरीर ४ जिसको आकार नहीं॥

दो० वामें गुण अनगिनत हैं अपरमपार अगाध ॥
देखो परगटही भये रूप नाम अरु नाद १०२ ॥

चौ० वृक्ष वीजको भेद बताऊं । भिन्न भिन्न परगट दिखलाऊं ॥ जो कोइ

...र ॥ अकथ कथा कछु कथिय न जाइ । जो भापै सोइ मुरखाइ ॥ कोइ कहीं
नि मन आनो । वैसा नहिं निश्चय करि जानो ॥ बड़े बड़े ऋषि मुनि
पण्डित भारे । चरणदास सब खोजत हारे १०३ ॥

दो० वही निरगुण सरगुण वही वहि दोनो से न्यार ॥
जोया सो जाना नहीं शीश आरपार १०४
अनंत सकल लीला अनंत गुण अनंत बहुभाव ॥
कौतुक रूप अनंत हैं चरणदास बलिजाव १०५
नाम भेद किरिया अनंत अनंत धरे अवतार ॥
बीस चार तिनमें अधिक कहैं शुकदेव विचार १०६
राम कृष्ण पूरण कला चौबीसों में दोय ॥
निर्गुण सं सरगुण वही भक्ति कारण होय १०७

राग बिलावल ॥ अलख निरंजन अगम अपार । एक अनेक वेप वहु
कीन्हे सुन्दर रचना रची सँवार ॥ निरगुण हरि सरगुण ह्वै खेलो अचरज
लीला करि विस्तार । अपनो चरित आपही देखे एसो अद्भुत कौतुकधार ॥
रूप वराह प्रकटि हिरण्याक्षहि धरती लाये ताहि सिधार । यज्ञपुरुष अरु द-
त्तात्रेयी अरु श्रीबद्रीपतिहि विचार ॥ सनत्कुमार ऋषभदेव वपू भरत पृथु
मच्छ कूर्म उदार । हयग्रीवा अरु हंसरूपही गहावली नरसिंह बलधार ॥
हरि परगट ह्वै गजै छुटायो बामन कपिल सरस गुणसार । मन्वन्तर धन्व-
न्तर प्रकटे परशुराम रामचन्द्र मुरार ॥ पूरण कला ईश तिहुंपुर को कृष्ण प्र-

१ अहं २ जो कहने लायक न हो ३ जिसका अन्त नहीं ४ जो दोष न धरे ॥

फट्टो ग्रंम पसार। वेदव्यास अरु बोध कलंकी ये भये सब चौबीस अ
तार॥ युग युग माहिं आप परगटहै दुष्ट दलन सन्तन रखवार। बाबा
शुकदेव श्यामकी बाँकी गतिको वार न पार १०८॥

दो० एक एकसों आगरो महिमा कही न जाय॥
अनंत रँगीले महल में आपहि बैठे आय १०६

चौ० अनन्त रँगीले महल बनाये। तामें आप रामहीं आये॥
रूप गुण न्यारे न्यारे। गिनत शारदा गणपति हारे॥ मन्दिर रूप
छवि साहै। जहां तहां मेरो मन मोहै॥ हरे श्वेत पीत अरु काले। गि
की ऊदे अरु काले॥ बेलदार लहरा छवि बूटे। चीतमताले और ढि
बूंद बुंद अब गंडेदारे। जानो चित्तर हाथ सँवारे॥ रँगा रंग बहु वि
कारी। कहूं कहाँलौं मों बुधिहारी॥ दो पाये अरु पुनि चौपाये। बहु
कछु कहे न जाये॥ वृक्षरूप अरु पक्षीनाना॥ कीट पतंगो थिरै चर जाना
जलमें मीने बहुत परकारे। चरणदास शुकदेव विचारे ११०॥

दो० थावर जंगम चर अचर बहुत छबीली भांति॥
राजस तामस सात्त्विकी बहु अधीन बहु क्रांति १११
बानर नर असुरा सुरा यक्षगण गन्ध्रव प्रेत॥
सबही महल बराबरी सबही सेवी हेत ११२

चौ० खिरकी नैन चावसों खोले। मुख द्वारे नाना विधि बोले॥ बहुत
भांति की नाना बानी। चतुर कूट भोली अरु यानी॥ कहिं अबोल कहिं
बोल न आवे। पै सब महलन वह दरशावै॥ साक्षात हरिही कूं जानै। भ
वन भवनमें ताहि पिछानै॥ काया क्षेतर ज्ञानी जानै। क्षेत्रग आतमरूप
बखानै॥ देही क्षर गीता में गायो। अक्षर जीव खोल दिखलायो॥ काया
मन्दिर आप रमायो। तातै राम नाम धरवायो॥ देह सँयोग राम कहलायो
चरणदास शुकदेव बतायो ११३॥

दो० सूरज चींटी आदि दै लघु दीरघके माहिं॥

१ खिरकी २ पांखी ३ न चलनेवाले ४ चलनेवाले ५ मछली ६ न जाननेवाली॥

सब में पोई आतमा बाहर कोई नाहिं ११४

छोटे भांड़े में करे छोटाही परकाश ॥
बड़े जु भाँड़े में करे ज्यादा होय उकाश ११५

ज्ञानवन्त कूं में दियो दीपक को दृष्टान्त ॥
जो वह समझे तावसूं मिटे तिमिर अरु भ्रांत ११६

जैसेही है पिण्ड में तैसेही ब्रह्मण्ड ॥
भीतर बाहर रमिरह्यो सातदीप नवखण्ड ११७

चौ० आप लखेते वाकूं पावै। जो पै सतगुरु भेद बतावै ॥ ज्ञान दृष्टि ती दरशावै। आपामिटै ब्रह्मठहरावै ॥ ज्ञाता ज्ञानज्ञेय जहँ नाहीं। ध्याता ध्यान ध्येय मिटिजाहीं ॥ जबही एक दूसरा नासे। बन्ध मुकत के रहें न ासे ॥ मृतक अवस्था जीवत आवै। करम रहत अस्थिर गति पावै ॥ तब ोइ मिन्तर वैरी नाहीं। पाप पुण्यकी परै न छाहीं ॥ हरष शोक सम होजा ोऊ। रक्षाकरो कि मारोकोऊ ॥ कोऊ हाथमें भोजन देजा। कोउ छीनकर रोंहीं लेजा ॥ दोनों एकबराबर वाके। जग व्योहार कछू नहिं जाके ॥ हरि वेन और पिछान न कोई। तिनके इच्छा रही न दोई ॥ ज्ञान दिशा ऐसे हरि गाई। चरणदास शुकदेव बताई ११८ ॥

दो० ज्ञान दिशा आवन कठिन विरला जानै कोय ॥
ज्ञानदिशा जब जानिये जीवत मृतक होय ११९

चौ० बाचक ज्ञानी बहुतक देखे। लक्ष्ं ज्ञानी कोइ लेखे लेखे ॥ ज्ञानी बिगड़े विषयी होई। कथै एक अरु चालै दोई ॥ बुरेकरम औगुण चितलावै। भलेकरम गुण सब बिसरावै ॥ विषय बासना के रँगराते। झूंठ कपट छल बल मदमाते ॥ इन्द्री वश मन हाथ न आवै। पाप करनसों नाहिं डरावै ॥ ज्ञानकथे अरु वाद बढ़ावै। रहन गहनका भेद न पावै ॥ ब्रह्मवतका आवन भारी। चरणदास शुकदेव बिचारी १२० ॥

दो० उनतीसों लक्षण लिये भक्त सहतहो ज्ञान ॥

---

१ कर्म। २ अँधेरा ३ कहनेवाले ४ हृदयान्तरसे देखनेवाले ॥

ज्ञानदिशा जब आवहै करै आतमाप्यांत १२३॥

भक्ति दिशा अब कहतहों विसरै आपाआप॥

चरणदास यों कहतहै छूटे तीनों तापै १२६॥

अष्टपदी॥ नवधा भक्ति सँभारि अंग नौ जानिले। श्रवण कि
और कीर्तन मानिले॥ सुमिरण वन्दन ध्यान और पूजाकरो। प्रभुमें
लगाय सुरति चरणन धरो॥ होकरि दासहिभाव साधुसंगति रहो। य
की करसेव यही मतहै भजो॥ आपा अर्पण देय धीर्य दृढ़ता गहो॥
शील सन्तोष दया धारेरहो॥ यह जो मैंने कहा वेदका फूलहै। योग
वैराग्य सबनका मूलहै॥ प्रेमा भक्ता तात पात तीनों नसें। अर्थ धर्म
मोक्ष सकल तामें बसें॥ जो राखे मनमाहिं विवेक विचारसों। पावै पद
र्वाण बचे जग भारसों॥ कहै गुरु शुकदेव मयाके भावसों। चरणहिं
होय सुनो बहुचावसों १२३॥

राग सोरठ व गौरी व आसावरी॥ साधो नवधाभक्ति करोरे। कलियु
में यह बड़ो पदारथ गहिगहि ताहि तरोरे॥ जेजे यासों भये शिरोमणि ति
को नाम सुनाऊं। बढ़ै कथा विस्तार कहूंतो याते सूक्ष्म गाऊं॥ जन प्र
ल्हाद तरो सुमिरणते वन्दनसों अक्रूर। चरणकमलकी सेवासेती लक्ष्मी रहै
हजूर॥ चन्दन चर्चतहू पृथुराजा उतरो भवजलपार। बलिराजा तन अर्पण
कीन्हो सदारहैं हरिद्वार॥ परमदास हनुमतहू उबरो उत्तम पदवीपाई। सख
सुभाव तरोहै अर्जुन ताकी महिमा गाई॥ मुक्त भयोहै परीक्षित राजा सुनि
भागवत पुराना॥ श्रीशुकदेव मुनीसे वक्ता हुयेरूप भगवाना॥ ज्ञान यो
वैराग्य सबन सों प्रेम प्रीति है न्यारी। चरणदास ने गुरु किरपा सों सां
चात विचारी १२४॥

दो॰ नवो अंगके साधते उपजै प्रेम अनूप॥

रणजीता यों जानिये सब धर्मनका भूप १२५॥

चौ॰ सब मत अधिकी प्रेम बतावै। योग युगत सूं बड़ा दिखावै॥ प्रेमहिं

१ दैहिक, दैविक, भौतिक॥

। वैराग। प्रेमहिंसूं उपजै मन त्याग॥ प्रेम भक्तिसूं उपजे ज्ञाना। होय ना मिटे अज्ञाना॥ दुरलभ प्रेम जु हाथ न आवै। हरिकिरपा करिदेतो ॥ प्रेम प्रीति के वश भगवाना। सकल शास्त्र कियो बखाना॥ किसी हिये प्रेम जु जागे॥ तौ हरि दरशन देवे जु आगे॥ प्रेमहिंसूं जग कूं नावे। निरगुण सरगुण होहो आवे॥ सकल शिरोमणि प्रेमहि जानो। दास निहचे मन आनो॥१२६॥

दो० प्रेम बराबर योग ना प्रेम बराबर ज्ञान॥
प्रेम भक्तिबिन साधिबो सबही थोथाध्यान॥१२७
प्रेम छुटावे जगतकूं प्रेम मिलावे राम॥
प्रेमकरे गति औरही लैपहुंचे हरिधाम॥१२८

अष्टपदी॥ वह करे कांग सूं हंस। एकुरहे पियो का संसा॥ वह जात कुलखोवे अरु बीज बिरह का बोवे॥ जो प्रेम तनकु चित आवे। वह गुण सबै नशावै॥ प्रेमलता जब लहरे। मन बिना योगहीं बहरे॥ कोई खिलारी खेले। वह प्रेम पियाला भेले॥ जो धड़पे शीश न राखे। प्रेम पियाला चाखे॥ तन मन सूंजा बौराई। वह रहे ध्यान लौलाई॥ पहुँचे हरिके पासा। यों कहैं चरणहीं दासा॥१२६॥

दो० प्रेमीजन हरि आपहो आपा निकसे नाहिं॥
गुरु शुकदेव दिखाइई समझ देखि मनमाहिं॥१३०
हिरदे माहीं प्रेम जो नैनों झलके आय॥
सोइ छको हरिरस पगो वा पग परसो धाय॥१३१
गदगद वाणी कंठ में आंसू टपकें नैन॥
वहतो बिरहिनि रामकी तलफतहै दिनरैन॥१३२
हाय हाय हरि कब मिलें छाती फाटीजाय॥
ऐसीदिन कबहोयगा दरशन करें अघाय॥१३३
बिन दरशन कल ना पड़े मनुआँ धरे न धीर॥
चरणदासकी श्याम बिन कौन मिटावे पीर॥१३४

पीवबिना ना जीवना जगमें भोरीजान ॥
पिया मिले तो जीवना नहीं तो छूटे प्रान १३५
मुख पियरो सूखे अधर आँखें सरी उदास ॥
आहिउ निकसै दुखभरी गहिरे लेत उसास १३६
वह बिरहिनि बौरी भई जानत ना कोइ भेद ॥
अगिनि बरै हियरा जरै भये कलेजे छेद १३७
अपने वश वह नारही फँसी विरह के जाल ॥
चरणदासरोवतरहे सुमिरि सुमिरि गुणख्याल १३८
बातनको बिरहा लगो ज्यों घुन लागो दारु ॥
दिन दिन पीरी होतहै पिया न बूझै सार १३९
वे नहिं बूझैं सारही बिरहिनि कौन हवाल ॥
जब सुधि आवै लालकी चुभत कलेजे भाल १४०
पीव चहो के मत चहो वहतो पीकीदास ॥
पियके रँगरातीरहै जग सों होय उदास १४१
पीपीकरते दिन गया रैनि गई पिय ध्यान ॥
बिरहिनि के सहजै सधै भक्ति योग अरु ज्ञान १४२
बिरहिनि एकै राम बिन और न कोई मीत ॥
आठपहर साठौघड़ी पियामिलनकी चीत १४३
जापकरै तौ पीवका ध्यान करै तौ पीव ॥
पीव बिरहिका जीवहै जी बिरहिनिका पीव १४४

अथ चारौयुगवर्णन ॥

कुण्डलिया ॥ सतयुग सांचा बोलते परमहंस को ध्यान । सत
शलते सतनहिं देतेजान ॥ सतनहिं देतेजान प्रान जोपै तजि देहैं
श्चय होती मुक्ति दरशते राम सनेही ॥ शुकदेव कहि चरणदास

१ ओंठ २ काठ ॥

युग जान ।सतबोलो सतसों रहो सतकी गहियेआन १ त्रेतामें तपसा-
आसन संयम धार। पांचों इन्द्री रोकते जब मन जाताहार ॥ जब मन
ताहार खैंचि अनहदमें धरते । कै अपनोही इष्ट ध्यान ताही को करते ॥
प विसर्जन होय मुक्ति निश्चयकरि पाते । चरणदास शुकदेव तपस्या
ल दिखाते २ द्वापर पूजा वंदना प्रेमसहित जोहोय । कहा राजसी मान-
पूजा कहिये दोय ॥ पूजा कहिये दोय जैसि जाके मन भावै । धरे नेम
चार अंतना चित्तडुलावै ॥ हितकरि पूजाकीजिये द्वापरको यह भेव ।
रणदास निश्चय करो कहिया श्री शुकदेव ३ कलियुग हरिगुण गाइये
णावादही सार । भजन करो मन मगन ह्वै भय अरु सकुच निवार ॥
य अरु सकुच निवार जातिकुल गर्वबहावो । साज बाज लै संग रामको
ाय रिझावो ॥ कथा कीर्त्तन सों तरें कलियुगहीके माहिं ॥ शुकदेव कहि
रणदास सों तारौ गुहि गहि बाहिं ४ ॥

॥ इति श्रीचारौयुगसम्पूर्णम् ॥

अथ अंगवर्णन ॥

दो० प्रणऊं[1] श्री शुकदेव कूं वाणी कहूं अगाध ॥
महिमागाऊं नाम की सब मिलि सुनियो साध १
ज्योंकी त्योंही कहत हूं कछू न राखूं भेद ॥
निश्चय आवै नाम की छूटै सबही खेद २
जनम मरन यमदंड के गर्भ वास की त्रास ॥
नाम रटे सबही छुटै लख चौरासी गास ३
कई बार जो यज्ञ करि योग करै चितलाय ॥
चरणदास कहैं नाम बिन सबी अकालहि जाय ४
आठ धात में गुण नहीं जो पारस के माहिं ॥

[1] नमस्कार ॥

तप तीरथ व्रत साधना राम नाम सम नाहिं ५
ज्यों सेमर की सेवना ज्यों लोभी को धर्म॥
अन्न बिना भुस कूटना नाम बिना यों कर्म ६
छोड़े सबही वासना हो बैठे निष्काम॥
चरणकमल में चित धरै सुमिरै रामहिं राम ७
ऐसा हो जब संत हो तब रीझै करतार॥
दरशन दे अपना करै कभी न छोड़े लार ८
चार वेद[1] किये व्यास ने अर्थ विचार विचार॥
नामें निकसी भक्तिही राम नाम ततसार ९
जिन कहिया शुकदेव कूं सुनिया प्रेम प्रतीति॥
तिन जग में परगट कियो जैसी चहिये रीति १०
ब्रह्महत्या अरु नारि की बालक हत्या होय॥
राम नाम जो मन बसै सब कूं डारै खोय ११
हिय आवत जग दुख टरै कंठ आय अघ जाय॥
मुख सूं बोलै आयकरि ताकी कौन चलाय १२
ऐसाही हरिनामहीं मोहिं रामकी सौंहिं॥
जाकूं होवै परखही सो समझै ह्यां लौहिं १३
बिन समझे पातक नशैं समझ जपै हो मुक्त॥
चरणदास यों कहत हैं जो कोइ जानै युक्त १४
नामहिं लै जल पीजिये नामहिं लेकर खाह॥
नामहिं लेकरि बैठिये नामहिं लै चल राह १५
जबलग जागै राम कहु तन मन सूं यहि चीत॥
चरणदास यों कहतहैं हरि बिन और न मीत १६
तेरा तो कोइ है नहीं मात पिता सुत नार॥
तातें सुमिरो राम कूं है मन बारंबार १७

[1] ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, अथर्वणवेद ॥

जिहि कारण भटकत फिरे घर घर करत सलाम ॥
तेरे तो ऐंहें नहीं ये मन सुमिरो राम १८
जीवतही स्वारथ लगै मूये देह जराय ॥
ऐ मन सुमिरो राम कूं धोखे काहि पराय १९
हाथी घोड़े धन घना चंदमुखी बहुनार ॥
नाम बिना यमलोक में पावे दुःख अपार २०
जबलग जीवे रामकहु रागहिं खेती नेह ॥
जीव मिलैगो राम में पड़ी रहैगी देह २१
अचरज साधन नामका भक्ति योग का जीव ॥
जैसे दूध जमाय कै मथि करि काढ़ा घीव २२

कुंडलिया॥ आठ मास मुखसूं जपै सोलह मास कँठजाप। बतिसमास हिरदे जपै तनमें रहै न पाप॥ तन में रहै न पाप भक्ति का उपजै योधा। मन रुकजावै जहां अपरबल कहिये योधा॥ शुकदेव कही चरणदास सूं यही भेद ततसार। निहुरु आवे नाभिमें ताका वहूं विचार २३॥

दो० पांच बरष जप नाभिसों रगरग बोलैं राम ॥
देहजीव निज भक्तहो पहुँचै हरिके धाम २४
त्रिकुटी में जप रामकूं जहां उजाला होय ॥
स्वासा माहीं जपेते द्विविधा रहै न कोय २५
गगन मँडल में जापकरि जितहैं दशवांद्वार ॥
चरणदास यों कहतहैं सो पहुँचै हरिवार २६
नासा अग्रे जापकरि देखै नूर अगाध ॥
वहुतक अचरज अरुखुलै चरणदास कहेसाध २७
नाम उठाकर नाभिसूं गगन माहिं लेजाय ॥
जहां होय परकाशही शुकदेव दिया बताय २८
मनहीं मनमें जापकरि दरपण उज्ज्वल होय ॥
दरशनहोवै रामका तिमिरै जाय सब खोय २९

१ संयोग॥

कूककूक कर नाम जप छुटै सात अरु पांच ॥
जासों मन ठहरा रहै चरणदास कहैं सांच ३०
सुरत माहिं जो जपकरै तन सूं न्यारा जौन ॥
मिलै सच्चिदानन्द में गहे रहै जो मौन ३१
सकल शिरोमणि नाम है सब धर्मन के माहिं ॥
अनन्य भक्त वहि जानिये सुमिरण भूलै नाहिं ३२
आन धरम मानै नहीं आनदेव नहिं ध्यान ॥
ऐसे भक्त अनन्य कूं कोई पावै जान ३३
पतिव्रता वह जानिये आज्ञा करै न भंग ॥
पिय अपने के रँग रतै और न सूनै ढंग ३४
अपने पियकूं सेइये आन पुरुष तजिदेह ॥
परघर नेह निवारिये रहिये अपने गेह ३५
आज्ञाकारी पीवकी रहै पियाके संग ॥
तन मनसूं सेवाकरै और न दूजो रंग ३६
रंग होयतौ पीवको आन पुरुष बिषरूप ॥
छाहँबुरी परघरनकी अपनी भली जु धूप ३७
अपने घरका दुख भला परघरका सुख छार ॥
ऐसे जानै कुलवधू सो सतवन्ती नार ३८
पतिकी ओर निहारिये औरन से कहकाम ॥
सबै देवता छोड़करि जपिये हरिका नाम ३९
खसम तुम्हारो रामहै इत उत रुख मतमारि ॥
चरणदास यों कहतहैं यही धारणा धारि ४०
यह शिरजावै तो रामकूं नाहीं गिरियो टूट ॥
आनदेव नहिं परसिये यह तन जावो छूट ४१
पतिव्रता को मनगहो व्यभिचारिणि अँगडार ॥

[illegible]

पतिपावे सब दुख नशैं पावै सुक्ख अपार ४२
जब तू जानै पीवही वह अपनो करिलेहि ॥
परमधाममें राखिकरि बांह पकरि सुख देहि ४३
यही सिखापन देतहूं धारो हिरदय मांहिं ॥
ऐसा पौधा बोइये ताकी बैठै छांहिं ४४
सतबादी सतसूं रहो सतही मुखसूं बोल ॥
एकओर हरिनाम रख एकओर जग तोल ४५
सभी निचोरे कहतहूं भक्ति करो निष्काम ॥
कोटि तपस्या यही है मुखसूं कहिये राम ४६
रामनाम मुखसूं कहै रामनाम सुन कान ॥
रोमरोम हरिकूं रटो ऐसी गहिये बान ४७
विद्या माहीं वादहै तपके माहीं ऋद्धि ॥
राम नाम में मुक्तिहै योग माहिं यों सिद्धि ४८
तातें त्यागो वासना राखो रामहिं नाम ॥
कोटिबन्ध छुटिजायँगे पहुँचै हरिके धाम ४९
राम नाममें ये सबै ऋद्धि सिद्धि औ मोक्ष ॥
ऐसा इष्ट सँभारिये चरणदास कहि सोक्ष ५०
जाका कीया सब बना सात द्वीप नवखण्ड ॥
चरणदास यों कहतहैं तीन लोक ब्रह्मण्ड ५१
तब कारण सब कुछ किया नाना विधि सुखदीन ॥
तैं वाकूं जाना नहीं नाम न कबहूं लीन ५२
अबकै औसर फिरि बन्यो पाई मानुष देह ॥
चरणदास यों कहतहैं राम नामहीं लेह ५३

राग केदारा ॥ सुनोभाई नामकी महिमा। मुक्तिचारों सिद्धिआठों बसत हैं तहिमा॥ बालमीकि सो बनकेवासी कियेथे जिन पाप। भयोहै सबऋषि शिरोमणि जपे उलटे जाप॥ गणिकासी अति महापापी सो पढ़ावतकीर।

नामके परतापसेती कियो हरिपुरसीर ॥ अजामिल से पतित कामी
सों रति कीन। चढ़ि विमानैगयो सुरपुर नाम सुतहित लीन ॥ औ
पतित तारे गिने कापैजादि। दान जप तप योग संयम नामसम तुल
व्यास नारद शिव ब्रह्मादिक रटत जाकूं शेश। गुरुशुकदेव नामको
दासकूं उपदेश ५४ ॥

कवित्त॥ नामके प्रताप नन्दलाल आप भयेप्रभु नामके प्रतापफ
शरथको कहायो है। नामके प्रताप पैज राखी प्रहलादजूकी नामके
दोरो द्वारकासूं धायो है॥ नामके प्रतापकी न महिमा मोपै कहीजाव
के प्रताप सब सन्तन महायो है। सोइ नाम बास अब आस लगो चरण
सोईनाम चारवेद बिमल बिमल गायो है ५५ नामके प्रताप शबरी सुल
सरस करी नामके प्रताप ध्रुवअलोककूं पठायो है। नामके प्रताप अजा
लकूं विमान आयो नामके प्रताप गज ग्राहसूं छुटायो है ॥ नामके प्र
सब दीननको दुखहरो नामको प्रताप शुकदेवजी दृढ़ायो है। सोई नाम
अब आस लगो चरणदास सोई नाम चारवेद बिमल बिमल गायो है५

दो॰ नाम अंग महिमा अधिक मोपै कही न जाय ॥
पांच प्रेत अब कहतहूं जाकूं सुनि चितलाय ५७
योग तपस्या भक्तिकूं ज्ञान बिगाड़न पांच ॥
जीवत दुखदै जगतमें मुये नरक दै आंच ५८
काम क्रोध मोह लोभसे और पांचवां गर्व॥
राज करै बसुधा विषे इन वश कीने सर्व ५९
काम बली वर्णन करूं जिन मारे बलवन्त ॥
जाका बकसी नारि है जीते गुणी महन्त ६०

राग सोरठ ॥ साधो नारि सबलरे भाई। नहिं मानै राम दुहाई ॥ ब
ज्यों पकरि नचावै। हरिजीसूं नेह छुड़ावै ॥ दया धर्म सब खोवै। जब
कजल भरि जोवै ॥ जिनका चितचोरा रांड़ी। तिनकी जग थू थू भांड़
उन सबही सरबस खोया। नरवीश पकरि करि रोया ॥ जन्म पढ़

ना। स्याही का टीका दीना॥ दोनों गुलमें खाया। फिर फिरके गरभ आया॥ कामकटक में सूरी। वह साँवत कहिये पूरी॥ बड़े बड़े योधा मारे। बहुतक शूर पछारे॥ गुरु शुकदेव बतावे। बटमारन तोहिं दिखावे॥ चरणदास यह जानो। तुम छलबल करा पिछानो ६१ नारी नेहरि सुमरण खोये। राजा परजा मुंडत मुंडत नैनकटाक्षन मोहे॥ राती चूनर चटक मटकले भूषण काजल साधे। मुख मुसक्यावे मधुरी बानी प्यार प्रीत कर बांधे॥ बहुतनको उन योग छुटायो बहुतनका तप छीनों। बहुतनकी उन भक्ति बिगारी अंग विषय रस दीनों॥ बहुधा करि बहु नाच नचायों फंदा मोह लगायो। याते सावधानही रहियो मैं तुम कूं समुझायो॥ गुरु शुकदेव बतावें साधो निश्चय ठगिनी जानो। चरणदास कहें हाथ न आवो तिके ताहि पिछानो ६२ साधो परतिरियां सूं डरियो। जाके दरश परशके कीये जीवत नरकमें परियो॥ गौतम घरनी सुन्दरि सुनिके इन्द्रासन तजि धायो। जो गति भई जगत में जानी भलो कलंक लगायो॥ शृङ्गीऋषि बनमें तप कीन्हो सुरपति देखि डरायो। रंभा भेजि हरो सत जाको सबही तेज सिरायो॥ देवत देवत नर जो हूये नारी देख लुभाये। ताको फल ऐसोही पायो अजहूं कुयश सुनाये॥ चरणदास शुकदेव गुरूने दे उपदेश बचाये। यती सती कोइ हाथ न आयो कामी पकरि नचाये ६३ अरे नर पर नारी मत तकरें। जिन जिन ओर तको डायनकी बहुतनकूं गई भखरे॥ दूध आकके पात कटइया झाल अँगनकी जानों। सिंह भुजंग विषकारेको ऐसे ताहि पिछानो॥ खानि नरककी अतिदुख वाई चौरासी भरमावें। जनम जनमकूं दाग लगावें हरिगुरु तुरत छुटावें॥ जगमें फिरि फिरि महिमा खोवें राखें तन मन मैला। चरणदास शुकदेव चितावे सुमिरो राम सुहेला ६४॥

दो० नर नारी सब चेतियो दीन्हो प्रकट दिखाय॥
परतिरिया परपुरुषहो भोग नरकको जाय ६५
परनारी के आपनी दोनों बुरी बलाय॥

१ श्री २ अप्सरा ३ मदार॥

मायामोह बिछाइया जालसे भाल सँभारि॥
आय आय तामें फँसे बहुत पुरुष बहुनारि ७९
फँसे आय करि चावसूं लेन गया नहिं कोय॥
चरणदास यों कहत हैं पछिताये कह होय ८०
छूट सकै नहिं जालसूं मिरगा ज्यों अकुलाय॥
कूद कूद निकसो चहै ज्यों ज्यों उरझतजाय ८१
मोह शहद सम जानिये मक्खी सम जियजान॥
लालच लागे जित फँसे शीश धुनैं अज्ञान ८२
बन्दीखानो भवन है सब दिन धंधेजार॥
मोह छुटावै रामसूं डारै नरक मँझार ८३
लख चौरासी योनिमें फिर वह भरमे जाय॥
ह्वाँसे निकसै कठिन सूं कबहूं औसर पाय ८४

चौ० तिरिया मोह महाबलदायी। मोह संतान सदा दुखदायी॥ मोह कुटुंब अरु भाई बंधा। समझै नहीं मूढ़ मति अंधा॥ देव भूत जिहि कारण धावै। ठग चोरी करि खोट कमावै॥ बस्तर भूषण वाहन मोहा। सब मि किया जीव सूं द्रोहा॥ द्रव्य लाल अरु हीरा मोती। सब मिलि मोह लगोती॥ मोह महल धरती अरु गाऊं। बड़ा मोह जो अपना नाऊं॥ फँसे रंक अरु राजा। तिहिकारण धंधा दुखसाजा॥ परकाजें बहुतै दुखपा अपना सबही मूल गवाँया॥ बड़े बड़े खेद उठाये सबहीं। भूले ध्यान का जबहीं॥ जीते मे [illegible]॥ होय मु जगबहुरि न आवै।

दो० मोह बड़ा दुख रूप है ताकूं मार निकास॥
प्रीति जगतकी छोड़ दे जब होवै निरबास ८६
जग माहीं ऐसे रहो ज्यों जिह्वा मुखमाहिं॥
घीव घना भक्षण करै तोभी चिकनी नाहिं ८७

१ पद २ पैर ३ दृष्टि ४ वासना से रहित॥

जगमाहीं ऐसे रहो ज्यों अम्बुज सर माहिं ॥
रहै नीर के आसरे पै जल छूवत नाहिं ८८
ऐसा हो जो साधु हो लिये रहै बैराग ॥
चरणकमल में चित धरै जगमें रहै न पाग ८९
मोहबली सब सूं अधिक महिमा कही न जाय ॥
जाको बांधो जम सबै छूटै ना बौराय ९०

अथ लोभ अंग ॥

लोभ नीच वर्णन करूं महापाप की खानि ॥
मंत्री जाका झूठ है बहुत अधर्मी जानि ९१
तृष्णा जाकी जोय है सो अंधा करि देय ॥
घटी बढ़ी सूझै नहीं नहीं कालका भेय ९२
दम्भमकर छल भगल जो रहत लोभके संग ॥
मुये नरक लै जायँगे जीवत करै उदंग ९३
देहै धर्म छुटाय हो आन धर्म लेजाय ॥
हरि गुरु ते बेमुख करै लालच लोभ लगाय ९४
चहुं देश भरमत फिरै कलहै कलपना साथ ॥
लोभ कंज उठ उठ लगैं दोउ पसारै हाथ ९५

चौ० लोभी भक्त होय नहिं कबहीं। साधु पुराण कहतहैं सबहीं ॥ लोभी सती न होवै शूरा। लोभी दाता सन्त न पूरा॥ लोभी हिन्दू न होवै सांचा। लोभी रहै जगत में रांचा॥ लोभी रहै द्रव्य के माहीं। तन छूटै पै निकसै नाहीं ॥ लोभी करै जीवकी घाता। लोभी करै कपटकी बाता ॥ लोभी पाप न करता डरै। लोभी जाय कष्ट में परै॥ लोभी बेचै अपना शीशा। लोभी होवै बिसवैवीशा॥ गुरु शुकदेव बतावैं हमकूं। सो वह कथा कही मैं तुमकूं ॥ चरणदास कहै लोभ न कीजै। हरिके पदपंकज मनदीजै ९६ ॥

दो० चींटी बांदर खगन कूं लोभ बहुत दुखदीन ॥

१ तालाब २ जल ३ स्त्री ४ लड़ाई ५ मारना ६ पक्षी ॥

याकूं तजि हरि कूं भजै चरणदास परवीन ९७
लोभ घटावै मानकूं करै जगत आधीन॥
बोझघना भिष्टल करै करै बुद्धिको हीन ९८
लोभ गये ते आवई महाबली संतोष॥
त्याग सत्यकुं संगले कलह निवारण शोक ९९
घट आवै सन्तोषही काहु चहै जग भोग॥
स्वर्गआदिलौं सुखजिते सबकूं जानै रोग १००
संतोषी निरमल दिशा रहै राम लवलाय॥
आसन ऊपर दृढ़रहै इत उतकूं नहिं जाय १०१
काहूसे नहिं राखिये काहूविधि को चाह॥
परम संतोषी हूजिये रहिये बेपरवाह १०२
चाह जगतकी दासहै हरि अपना न करै॥
चरणदास यों कहतहैं व्याधा नाहिं टरै १०३

अथ अभिमानअंग॥

चारअंग पूरे किये कहूं गर्व गुण गाय॥
बहुत सिकंदी मारिया शिरपर छत्र फिराय १०४
अभिमानी चढ़िकरि गिरे गये बासनामाहिं॥
चौरासी भरमत भये क्योंहीं निकसै नाहिं १०५
अभिमानी मींजेगये लूट लिये धनधाम॥
निरअभिमानी होचले पहुँचे हरिकेधाम १०६
चरणदास कहै आपाथपै गिनै आपको पांच॥
मान बड़ाई कारने सहै जगतकी आंच १०७
करै बड़ाई कारनै परपंची छल धूत॥
अभिमानी फूले फिरै ज्यों मर्कटका मूत १०८
चौ० अभिमानीकी मुक्ति न होई। अभिमानी गति अपनी खो॰

१ सौ॰ २ बुद्धि॥

अकड़ अभिमानी माहीं । अभिमानी नीचा हो नाहीं ॥ बिन नान्हापन नहिं पावै । आनँद पदकूं कैसे जावै ॥ झूठकपट अभिमानी खेलै । न बरतन माटी मेलै ॥ भगली दम्भ नितहि मन माहीं । निकट साँचसू नाहीं ॥ हूं हूं हूं करताही डोलै । काहूते सीधा नहिं बोलै ॥ इन लक्षण त दुख पावै । नरक माहिं नन छूटे जावै ॥ चरणदास शुकदेव बतावै । सो अभिमान नशावै १०६ ॥

दो० चरणदास यों कहतहैं सुनियो सन्त सुजान ॥
मुक्तिमूल आधीनता नरकमूल अभिमान ११०

चौ० रूपवन्त गरबावै । कोइ मोसम दृष्टि न आवै ॥ तरुणापा गरबाना । अँधरा होवै राना ॥ कहै धन मोपै में परवीना । सब मेरेहो आधीना ॥ कुल अभिमानी सूचा । मैं सब जातिनमें ऊंचा ॥ वह विद्या गर्व जु । करै बाद विवाद अनारी ॥ अरु भूप करै अभिमाना । उन आपैही जाना ॥ उन काल नहीं पहिचाना । सो मार करै घमसाना ॥ गुरु शु व चितावै । तोहिं परगट नैन दिखावै १११ यम बांधि पकरि लैजावैं । हुते त्रास दिखावैं ॥ जब कहाजाय अभिमाना । मेरा नीका सुन यह ना ॥ फिर डारै नरक मँझारी । सुनि चेतो नर अरु नारी ॥ तो मद म रता तजि दीजै । साधों के चरण गहीजे ॥ हरिभक्ति करो चितलाई । सकल व्याधि छुटिजाई ॥ कर जाति बरणकुल दूरा । हो सतसंगति में ॥ जबहीं मुक्तधामकूं पावै । फिरके गर्भयोनि नहिं आवै ॥ कहैं गुरु कदेव बखानो । यह चरणदास मत आनो ११२ ॥

दो० मनमें लाय विचारिकूं दीजे गर्व निकार ॥
नान्हापन सब आयहैं छूटै सकल विकार ११३
पांचो उतरैं भूत जब हैहो महा अरूप ॥
आनँद पदकूं पायहो जित है मुक्तस्वरूप ११४
पांच मेत जो ये कहे सतगुरु के परताप ॥

---

१ हर २ काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद ॥

शील अंग अब कहनहूं जासूं छूटे पाप ११५

अथ शील अंग वर्णन ॥

दो० अब मैं गाऊं शीलकूं येही सन्त सुजान ॥
नर,नारी सबही सुनो देदे चित बुधिवान १
रूपगुणी कुलवन्त जो अरु होवै धनवन्त ॥
शील बीस शोभा नहीं मिटै नरक पड़न्त २
शील बिना जो तपकरै करै शील बिन दान ॥
योग युक्तिकरै शील बिन सो कहिये अज्ञान ३
शील बड़ोही योगहै जो कर जानै कोय ॥
शील विहीनो चरणदास कबहुँ मुक्ति नहिं होय ४
सब शुभ लक्षण तो बिषे शील न आया एक ॥
जप तप निष्फल जाहिंगे चरणहिं दास विवेक ५
पूजा संयम नेम जो यज्ञ करै चितलाय ॥
चरणदास कहैं शील बिन सबी अकारथ जाय ६
सोइ सती सोइ शूरमा सोइ दाता अधिकाय ॥
शील लिये नितही रहै तौ निष्फल नहिं जाय ७
शील अंग ऊंचो अधिक उनतीसों के बीच ॥
जाघटै शील न आइया सो घट कहिये नीच ८
शील न उपजै खेत में शील न हाट बजाय ॥
जोहो पूरा टेक का लेवै अँग उपजाय ९
शील बिना नरकै परै शील बिना यम दण्ड ॥
शील बिना भरमत फिरै सात द्वीप नौ खण्ड १०
शील बिना भटकत फिरै चौरासी के माहिं ॥
पहिले होवै मैतही त्यामें संशय नाहिं ११
सब तजि सेवो शील कूं राम नाम लौलाय ॥

१ शरीर ॥

जीवत शोभा जगत में मुये मुक्ति ह्वै जाय १२
जाको शील सुभाव है जाकी दूर वलाय ॥
ताकी कीरति जगत में सुनहो कान लगाय १३
शील रहेते सब रहें जेते हैं शुभ अंग ॥
ज्यों राजा के रहेते रहे फौज को संग १४
सत्यगया तो क्या रहा शील गया सब झाड़ ॥
भगत खेत कैसे बचै टूट गई जब बाड़ १५
ज्ञानी शील न राखिया बिगड़ गई सब देह ॥
अब पछितावा क्या करै मुख पर उड़िया खेह १६
शील गये शोभा घटै या दुनिया के माहिं ॥
कूकर ज्यों झिड़क्यो फिरै कहींभी आदर नाहिं १७
शील गये गुरु सूं फिरै हरि सों बेमुख होय ॥
चरणदास कहँ लों कहैं सर्वस डारै खोय १८
धिक जीवन संसार में ताको शील नशाय ॥
जग में फिर फिर होत है मुये त्राचना पाय १९
शील कसैला आँवला और बड़ों के बोल ॥
पाछे देवै स्वाद वे चरणदास कहि खोल २०
शील निरोगा नींबसा औगुण डारै खोय ॥
पहिले करुवा दुख लगै पाछे गुण सुख होय २१
लाख यही उपदेश है एक शील कूं राख ॥
जन्म सुधारो हरि मिलो चरणदास की साख २२
शीलवंत के चरण का जो चरणोदक लेय ॥
रोग दोष मिटिजायँ सब रहै न यमको भेय २३
आठ अंग सूं शीलही जाघट माहीं होय ॥
चरणदास यों कहत हैं दुर्लभ दर्शन सोय २४

१ यश २ धूरि ३ पावोंका धोया हुआ जल ॥

शीलवंत दर्शन बड़े देखत पातक जाय॥
वचन सुनै मन शुद्ध हो खोटी दृष्टि सिराय २५
शील सरोवर न्हाय, करि करौ राम की सेव॥
यासम तीरथ और ना कहिया गुरु शुकदेव २६
शील अंग पूरो कियो महिमा अधिक अपार॥
दया अंग वरणन करूं समझै छुटै विकार २७

अथ दया अंग वर्णन॥

दो० परमारथ में दया बड़ जो घट उपजै आय॥
परगट हो निर्वैरता[1] कर्म गांठि खुल जाय १
थावर जंगम चर अचर या जग में हो कोय॥
सबही पै हित राखिये सुखदानीही होय २
भोजन करौ सँभाल करि पानी पीजो छान॥
हराबृक्ष नहिं तोड़िये कर्म बचै यों जान ३
औरौ बहुत विचारि ले जामें लगै न कर्म॥
यही तपस्या जानिये यही दया यहि धर्म ४
इक इन्द्री दो इन्द्रियां तीं इन्द्री अरु चार॥
पंच इन्द्री लौं जीवकी हिंसाअकस[2] निवार ५
खानै वस्तु विचारि कै बैठै और विचार॥
जो कुछ करे विचारि करि किरिया यही अचार ६
मन सों रहु निर्वैरता मुख सूं मीठा बोल॥
तन सूं रक्षा जीव की चरणदास कहि खोल ७
करुआ वचन न बोलिये तन सूं कष्ट न देहु॥
अपनासा जो जानिकै बनै तो दुख हरिलेहु ८
मुख सूं जो करुवा कहै तन सूं देवै कष्ट॥
यही जु हिंसा जानिये दया धर्मजा नष्ट ९

१ बुरीनजर २ किसीसे मकार्ई न मानना॥

दश इन्द्री मन ग्यारवां करि विचारिले जान ॥
इनहीं सूं सुख दीजिये चरणदास पहिंचान १०
काहू दुख नहिं दीजिये दुर्जन हो के मीत ॥
सुखदायी सब जगत को गहो दया की रीत ११
कोमलता परपीरता सज्जनता निर्दोष ॥
सबी दया के अंग हैं इन ते पावै मोष १२
दया ज्ञान का मूल है दया भक्ति का जीव ॥
चरणदास यों कहत हैं दया मिलावै पीव १३
दया नहीं तौ कुछ नहीं सबही थोथी बात ॥
बाहर कथनी सोहनी भीतर लागी घात १४
छापे तिलक बनायके माला पहिरी दोय ॥
दया बिना चक्रसम वही साधुरूप नहिं होय १५
दया न आई घट विषे हीया बड़ा कठोर ॥
यह नगरी कैसे बसे ताने हिंसा चोर १६
पँडिताई बहुतै करी दया न राखी जीव ॥
छाँछि छाँछि तो लैलई डारि दिया तत पीव १७
तोहिं पण्डित मैं कह कहूं मूरख कैं परवीन ॥
लिया न तैं मत सूपका चलनीका मत लीन १८
दया गहेते सब नशैं पाप ताप दुख द्वन्द ॥
ऐसी परम पुनीतकूं तजै सो मूरख अन्ध १९
दया बिना नर पतित है दया बिना नर दुष्ट ॥
दया बिना सुनवत बने सबही थोथी गुष्ट २०
जन्म मरण छूटै नहीं नाहीं कर्म नशाहिं ॥
दया बिना बदला भरै चौरासी के माहिं २१
काम क्रोध मोह लोभसे गरबआदि भजिजाहिं ॥

---

१ एकुला २ जीवमारना ३ मट्ठा ४ पवित्र ॥

चरणदास कहै दया जो घटमें पहुँचै ओहिं २२
जितने बैरी जीवके तनमें रहैं न एक॥
चरणदास यों कहतहैं दया जो आवै नेक २३
दुख भाजें सुख हों घने काया नगरी देश॥
हिंसा रानी जो भजे लेकर अपनो संग २४
धन्य दया धनि शीलकूं जिनसे रीझै राम॥
गुरु शुकदेव बतावहीं सबही सुधरै काम २५

इति दयाका अंग सम्पूर्णम्॥

अथ मायारूप वर्णन॥

रागभैरव॥ बैठा गुरुसूं चलता चेला॥ सुखी होय रहै रैन औ
दया क्षमा रस राग सुहाती। बातकहै करुई न हिताती॥ बिन जी
देश न दीजै। तर्की सूं चर्चा नहिं कीजै॥ मौन गहै थोरासा बोले
लक न मिलै नैन रहै खोले॥ दृष्टिराख नासाके आगे। सत्य वचन
मुख भाषे॥ रसना उलट अकाश चढ़ावै। बिनहीं बादल जल बर
पवन साधि मनकूं ठहरावै। कामिनि कनकरूप बिसरावै॥ आसन
सुरत अनहद में। अन्तर खोल मिलै नहिं जगते॥ चरणदास शुक
तावै। ऐसा होय महन्त कहावै १॥

दो॰ जो बोलै तौ हरिकथा मौन गहै तौ ध्यान॥
चरणदास यह धारणा धारै सो सज्ञान २
मायाकी अस्तुति करूं होय रही संसार॥
अद्भुत लीला कर रही शोभा अगम अपार ३
माया सकल पसार है नाना रँग बहु क्रान्ति॥
जहँलग यह आकारहीं चंचल मिथ्या भ्रान्ति ४
जैसे सपना रैनका मुख दर्पण के माहिं॥
भासै है पर है नहीं ज्यों ‥वर की छाहिं ५

१ तर्ककरनेवाले अर्थात् पाखण्डी २ ‥ दिखै नहीं ३ भ‥

चौ० यह माया सबकूं मोहै। वश होय न ऐसा कोहै॥ यह बहुत सो-
ी लागे। सबही नर नारी पागै॥ कहिं चमक दमक बहुरूपा। अरु कहीं
; कहिं भूपा॥ अरु जहँतहँ बहुततमासे। वह भांतिभांतिही भासे॥ अरु
हँलग सकल सवादा। कोइ करै जु वाद विवादा॥ अरु काम क्रोध मद
ोभा। अरु मान बड़ाई शोभा॥ अरु पांचों इन्द्री जानो। सब मायारूप
छानो॥ अरु पांच तत्त्व गुण तीनो। सो मायाही कूं चीन्हो॥ वह मकर
च छल जाने। अरु पहर पहर बहुवाने॥ गुरु शुकदेवजनावे। सब माया
ल दिखावे ६॥

दो० जेते सुख संसार के सबही माया जार॥
ताम दो कणको धरे एक द्रव्य इक नार ७
लालच लागे चावसूं गिरे आयकरि लोय॥
फँसे आपसूं आपही गहिनहिं लाया कोय ८
पांचों इन्द्री सों लखे सो माया आकार॥
याहीसेती सब भयो जहँलग है साकार ९

चौ० अरु मायारूप अनन्ता। कोइ जाने साधूसन्ता॥ कहा सुना अरु
खा। सब माया रूप विशेखा॥ आठ सिद्धि नौ माया। जहँ योगी तपी
ुलाया॥ अरु माया फंदे माहीं। सब जीव आइ फँसि जाहीं॥ वे नरक
ाहिं दुख पावें। यम धपु मैन त्रास दिखावें॥ फिर भुगते लख चौरासी।
। गरभ योनिके वासी॥ वे पशू देह धरि धावें। नहिं मुक्त ठिकाना पावें।
रणदास कहै नर चेतो। तजो मायाहीसूं हेतो १०॥

दो० जगत वासना के तजे मायाकी न बसाय॥
कर्म छुटै मिटै जीवता मुक्तरूप होजाय ११
फँसे न इन्द्री स्वाद में चरणकमल में ध्यान॥
पर आशा कोइ न रहै लगे न माया बान १२
सबमें अधिकी ज्ञानहै तासे ऊंचो ध्यान॥

१ पृथ्वी, अप, तेज, वायु, आकाश २ सात्त्विक, राजस, तामस॥

ध्यान मिलावै पीवकूं पावै पद निरवान १३
ध्याता ध्येय कैसे मिलै होय न बिचमें ध्यान ॥
तीनौं एकहुये बिना लहै न पद निरवान १४
इन्द्रिन के वश मन रहै मनके वश रहै बुद्ध॥
कहो ध्यान कैसे लगै ऐसा जहां बिरुद्ध १५
जित जित इन्द्री जातहैं तित मनकूं लेजात ॥
बुधिभी संगहि जातहै यह निश्चयकरि बात १६
जित इन्द्री मन हूं गया रहा कहांसूं बुद्धि ॥
चरणदास यों कहतहैं करिदेखो तुम शुद्धि १७
इन्द्री मनके वशकरै मनकर बुधिके संग ॥
बुधिराखै हरि पद जहां लागै ध्यान अभंग १८
इन्द्री मन मिल होतहै बिषय वासना चाह ॥
उपजै जैसे कामही नारी मिल अरु नाह १९
न्यारे न्यारे ततरहैं होत न कछू उपाध ॥
जुदे राख मन इन्द्रियन गुरुगम साधन साध २०
इन्द्रिनसूं मन जुदाकरि सुरत निरत करि शोध ॥
उपजै ना बिष वासना चरणदास कर बोध २१
इन्द्री रोकेते रुकै श्रौर यतन नहिं कोय ॥
मन चंचल रिझवारहै रसक सवादी होय २२
चलोकरे थिर नारहै कोटि यतनकरि राख ॥
यह जबहीं वश होयगा इन्द्रिनके रसनाख २३
न्यारे न्यारे चहतहैं अपने अपने स्वाद ॥
इन पांचौमें प्रीतिहै कछू न बाद बिवाद २४
दुर्जनके फूटे बिना तेरी होय न जीत ॥
चरणहिदास बिचारिकरि ऐसी कहिये रीत २५

१ वैर २ जो भंग न हो ३ पति ॥

जुदी जुदी पांचो कही एक एकका भेद ॥
जो कोइ इनकूं वशकरै सबही छूटै खेद २६

चौ० यह इन्द्री आंख विचारो। सोदेत महादुख भारो ॥ वह राग द्वेष उ-
जावै। अरु हरष शोक ले आवै ॥ सो रूप माहिं फँसिजावै। तन मन में
ाधि उठावै॥ वह देह औरके हाथा। करिडारै बहुत अनाथा ॥ वह फंदे
ाहीं डारै। अरु काम अगिनि में जारै ॥ यह डोलै दौरी दौरी। करचित
धिकी गति औरी॥ कोइ साधुशूरमा मोड़े। जग सेती नैना तोड़े॥
ैं चरणदास सुनिलीजै। कछु याका यतन करीजै२७॥

दो० दीपक त्रिया निहारि करि गिरै पतंगे ज्यों जाय ॥
कछू हाथ आवै नहीं उलटो आप जराय २८

चौ० उन तन मन सभी जराया। कछु मोदू हाथ न आया॥ अरु विषय
ासना फैला। जब छूटा राम का गैला ॥ तो मुक्ति कहां सों होई। दिया
जन्म पदारथ खोई॥ अब क्या शिर मारै कोई। घरही में दुर्जन सोई॥ यह
दृष्टि सदा की बैरी। जो सुरत बिगारै तेरी॥ वह मायामोह लगावै। अरु
चौरासी भरमावै॥ शर्म संकुच सब खोवै। अरु बीज कुबुधि का बोवै॥ यह
ठग चोरीकी वानी। अरु जारै करम अगवानी॥ यह पानय सभी घटावै।
यमपुर के त्रास दिखावै॥ कहैं गुरू शुकदेवा। ये आंख महादुख देवा २९॥

दो० ऐसी इन्द्री आंख की सो अपनी नहिं होय॥
गुरु शुकदेव बतावई चरणदास सुन लोय ३०
दर्शन कीजै साधुका कौ गुरु का कर लोय॥
जहँ तहँ ब्रह्म देखिये दुबिधा दुर्मति खोय ३१
बैरी मितर एकसा एकै रूपक रूप॥
ऐसी होवै दृष्टिही जब समझै मन भूप ३२

चौ० सुन दूजे इन्द्रीकाना। सो गुरु परतापै जाना॥ जब सुनै कामरसरीता।
तब भूले पद सुन गीता॥ नपजै कामतरंगा। जब होतध्यानमें भंगा॥

१ पांखी

जुदी जुदी पांचों कही एक एकका भेद॥
जो कोइ इनकूं वशकरे सबही छूटे खेद २६

चौ० यह इन्दी आंख विचारो। सोदेत महादुख भारो॥ वह राग द्वेष उ-
पावै। अरु हरष शोक लै आवै॥ सो रूप माहिं फँसिजावै। तन मन में
व्याधि उठावै॥ वह देह औरके हाथा। करिडारै बहुत अनाथा॥ वह फंदे
माहीं डारै। अरु काम अगिनि में जारै॥ यह डोलै दौरी दौरी। करचित
विषेकी गति औरी॥ कोइ साधू शूरमा मोड़े। जग सेती नैना तोड़े॥
कहैं चरणदास सुनिलीजे। कछु याका यतन कीजे २७॥

दो० दीपक त्रिया निहारि करि गिरे पतंगे ज्यों जाय॥
कछू हाथ आवै नहीं उलटो आप जराय २८

चौ० उन तन मन सभी जराया। कछु मोंदू हाथ न आया॥ अरु विषय
वासना फैला। जब छूटा राम का गैलो॥ तो मुक्ति कहां सों होई। दिया
जन्म पदारथ खोई॥ अब क्या शिर मारै कोई। घरही में दुर्जन सोई॥ यह
दृष्टि सदा की बैरी। जो सुरत बिगारै तेरी॥ वह मायामोह लगावै। अरु
चौरासी भरमावै॥ शर्म संकुच सब खोवै। अरु बीज कुबुधि का बोवै॥ यह
ठग चोरीकी बानी। अरु जारै करम अगवानी॥ यह पानय सभी घटावै।
यमपुर के त्रास दिखावै॥ कहैं गुरू शुकदेवा। ये आंख महादुख देवा २९॥

दो० ऐसी इन्दी आंख की सो अपनी नहिं होय।
गुरु शुकदेव बतावई चरणदास सुन लोय ३०
दर्शन कीजे साधुका औ गुरु का कर लोय।
जहँ तहँ ब्रह्म देखिये दुबिधा दुर्मति खोय ३१
बैरी मितर एकसा एके रूपक रूप।
ऐसी होवै [illegible]

चौ० सुन दजे
तब भूले

फिर लोभ वचन सुन औरै । जब तृष्णा चहुंदिशि दौरै ॥ कहिं इनको लगि जावै । यों शोचि शोचि दुख पावै ॥ कहै ठग चोरीकर लाऊं ॥ कहिं गड़ा दवाहो पाऊं ॥ काहू सुनै जु दौलत बंधा । सुनतेही मन गोवै अंधा ॥ यों उपजै अधिकी लोभा । जब बढ़ै पापकी गोभा ॥ कहैं चरणदास विचारी । सुन चेतो नर अरु नारी २३ फिर सुनै बड़ाई कुलकी । जब फूल हँसतहै मुलकी ॥ जो अपनी सुनै बड़ाई । जब भकहुंहोत अकड़ाई ॥ करन बड़ाई लागै । सोता ज्यों कूकर जागै ॥ जब उपजै बहु अभिमाना । अरु नेक न होवै ज्ञाना ॥ परनिन्दा बहुत सुहावे । नहिं और बड़ाई भावै ॥ अहंकार बढ़ा मन माहीं । आधीन विना गति नाहीं ॥ सुनि उपजै क्रोध अंगा । जब करै बहुतही दंगा ॥ मन क्रोधरूप होजावे । उठ उठकर न धावै ॥ कभी सुनै मोह के बैना । लगै हर्ष शोक दुख देना ॥ जब सुनै कुटुंबकी नीकी । तब करै खुशी बहु जीकी ॥ कोइ कुटुंब माहिं दुख पावै । सुन रोरो नैन गवँावै ॥ जो हिरन कानवशे हूवा । तौ तीरलाग करि मूवा ॥ शुकदेव कहैं सुन जानौ । सब कान विकार पिछानौ २४ ॥

दो० मन दै सुनिये हरिकथा सुनिये हरियश कान ॥
ताहि विचारि जु कीजिये होय भक्ति का ज्ञान २५ ॥

चौ० उपजै ज्ञान भक्ति अरु योगा । सुन सुन उपजै राम वियोगा ॥ उपजे प्रेम अनन्य उमाहा । होय उमाह दरश का चाहा ॥ सुनि सुनि उपजै लक्षण साधू । सुनि सुनि पावै भेद अगाधू ॥ उपजै साधु संतकी सेवा । गुरुमुख होय सुनै यहि मेवा ॥ सुनि सुनि उपजै भय अरु लाजा । सौवे सकल सँवारन काजा ॥ सुनि सुनि यती सती होजावे । नान्हाहो अभिमान नशावे ॥ सुनि सुनि छूटे यमकी त्रासा । चौरासी में लहै न वासा ॥ सुनिसुनि चारपदारथ पावे । आवागमन क बीज जरावे ॥ सुनिसुनि कागं हंस होजाई । चरणदास शुकदेव बताई २६ ॥

दो० सुनि सुनि उपजै सुबुधिही लागै हरिका रंग ॥

१ त्रिमाद ॥

सुनि सुनि उपजे कुबुधिही खोटी उठै तरंग ३७
ऐसी इन्द्री कानकी जाके युगल सुभाव॥
कथा कीरतनही सुनो करि करि कोटि उपाव ३८
बचन सुनो गुरु साधुके मनकूं लावो ओर॥
विषय वासनासूं निकस आवै हरिकी ओर ३९
सरवन इन्द्री में कहो दोनों अंग दिखाय॥
जिह्वा इन्द्री कहतहैं चरणदास चितलाय ४०
कुटिल जु इन्द्री जीभकी चाहै षटरस स्वाद॥
यावश होवै गुण करै जन्म जाय बरबाद ४१

चौ० यह बहुत चटोरी कहिये। याहीते डरते रहिये॥ यह चोरीभी कर-। यह पकड़ बन्धमें यावै॥ करै याही कारण जारी। यह करै बहुतही री॥ यह अमले खान सिखलावै। अरु गाली मार दिलावै॥ अरु ब-झूठ बुलावै। हो जीत नरक लेजावै॥ खेलै याही कारण जूवा। इनि-। फिर फिर हूवा॥ ये पांचों ऐब सुनाऊं। रसना में सभी दिखाऊं॥ यह अपरबल जानो॥ अरु रणजीता हो मानो ४२॥

दो० जिह्वाके जीते बिना गये जन्म सब हार॥
चरणदास यों कहतहैं भये जगतमें ख्वार ४३
बंशी डारी तालमें मछरी लागी आय॥
जिह्वाकारण जिवदियो तलफि तलफि मरिजाय ४४
तजा न जिह्वा स्वादकूं वा सँग दीन्हे प्रान॥
जो कोइ ऐसा जगत में सो अज्ञानी जान ४५
यासूं ले हरनामहीं गुणा बादही भाख॥
जो बोलै तौ सांचही नाहीं मुखमें राख ४६
मीठा वचन उचारियो नवता सबसूं बोल॥
हिरदे माहिं विचारि करि जब मुख बाहर खोल ४७

१ नशा॥

फिर लोभ वचन सुन औरै । जब तृष्णा चहुंदिशि दौरै ॥ कहिं क लगि जावै । यों शोचि शोचि दुख पावै ॥ कहै ठग चोरीकर लाऊं । गड़ा दबा हो पाऊं ॥ काहू सुनै जु दौलत बंधा । मनही मन रोवै अं यों उपजै अधिकी लोभा । जब बढ़ै पापकी गोभा ॥ कहै चरणदास चारी । सुन चेतो नर अरु नारी ३३ फिर सुनै बड़ाई कुलकी । जग हँसतहै मुलकी ॥ जो अपनी सुनै बड़ाई । जब अकहुंहोत अकड़ाई करन बड़ाई लागै । सोता ज्यों कूकर जागै ॥ जब उपजै बहु अभि अरु नेक न होवै छाना ॥ परनिन्दा बहुत सुहावै । नहिं औरबड़ाई अहंकार बढ़ा मन माहीं । आधीन बिना गति नाहीं ॥ सुनि उपजै अंगा । जब करै बहुतही दंगा ॥ मन क्रोधरूप होजावै । उठ उठक न धावै ॥ कभी सुनै मोह के बैना । लगै हर्ष शोक दुख देना ॥ ज कुटुँबकी नीकी । तब करै खुशी बहु जीकी ॥ कोइ कुटुँब माहिं दुख सुन रोरो नैन गवँवै ॥ जो हिरन कानवश हूवा । तौ तीरलाग करि शुकदेव कहैं सुन जानौ । सब कान बिकार पिछानौ ३४ ॥

दो० मन दै सुनिये हरिकथा सुनिये हरियश कान ॥
ताहि बिचारि जु कीजिये होय भक्ति का ज्ञान ३५ ॥

चौ० उपजै ज्ञान भक्ति अरु योगा । सुनै सुन उपजै राम बियं उपजै प्रेम अनन्य उमाहा । होय उमाह दरश का चाहा ॥ सुनि सुनि लक्षण साधू । सुनि सुनि पावै भेद अगाधू ॥ उपजै साधु संतकी सेव मुख होय सुनै यहि भेवा ॥ सुनि सुनि उपजै भय अरु लाजा । सौवै सँवारन काजा ॥ सुनि सुनि यती सती होजावै । नान्हाहो अभिमान वै ॥ सुनि सुनि छूटै यमकी त्रासा । चौरासी में लहै न बासा ॥ सुनि चारपदारथ पावै । आवागमन क बीज जरावै ॥ सुनिसुनि काग हंस ई । चरणदास शुकदेव बताई ३६ ॥

दो० सुनि सुनि उपजै सुबुधिही लागै हरिका रंग ॥

१ विसाद ॥

सुनी न हरिकी गुण कथा सतसंगति नहिंकीन ५८
फिर ऐसो कब होयगो पावै मानुप देह ॥
अबतो चौरासी विपे जाय कियो उन गेह ५९
जीतो इन्द्री त्वचाकी कहिया श्रीशुकदेव ॥
यासे तपही कीजिये चरणदास सुनलेव ६०

ौ० शीत उष्णका दुख नहिं माने। कोमल सकल एककरि जाने ॥ काया उमर गर्वांत्रै। अष्ट सुगन्ध निकट नहिं जावै ॥ आन त्वचों र नहिं करै। काम अगिनि हियमें नाजरै॥ काया तावत करनी ठानै। तपस्या मनमें आनै॥ त्वचा सुइन्द्री जीतो ऐसे। मैं यह भेद बतायो ॥ गुरु शुकदेव बतावै सबही। चरणदासकरि तनसूं तपही ६१ ॥

ो० त्वचासुं इन्द्री वश किये छूटै काम कलेश ॥
यत शत शीलसँतोपसूं लगै न माया लेश ६२
त्वचा अंग पूरो कियो कहूं नासिका भ्रंग ॥
तबिल अलिसुत दीजियो जाको कहूं प्रसंग ६३
वास आस गुंजत फिरो बैठो कमल मँझार ॥
सूरै छिपेसे मुँदिगयो अब शिर देदै मार ६४
कुंजरै आयो तालपै जल पीवन के काज ॥
प्यासबुझी करनेलगो खेलकरिनको साज ६५
खेल करत कमलहि गह्यो लीन्ह्यो ताहि उपारि ॥
फेरिदियो मुख माहिंही चाबिगयो मुद धारि ६६
ऐसेही ये नर फँसे परे काल मुख जाय ॥
चरणदास यों कहतहैं चलिभे जन्म गँवाय ६७
सुगँध ओर हरपै नहीं दुरगन्धे न सिराय ॥
ऐसी जीतै वासना मन भँवरा ठहराय ६८
समझनकूं तुक इकरहै भूलनकूं तुकलाख ॥

१ कहा २ देहकी खाल ३ सूर्य ४ हाथी ॥

विना स्वादही खाइये राम भजन के हेत॥
चरणदास कहै शुरगा ऐसे जीतो खेत ४८
जिन जीताहै जीभकूं जिन जीती सब देह॥
कहै गुरु शुकदेवजी मुक्ति धाम फल लेह ४६
रसना जीते भक्ति जो सो योगी सो साध॥
अगम पन्थ वहि पगधरै पहुँचे देश अगाध ५०
त्वचा सुइन्द्री कामकी नितही खेले दाव॥
पशु पक्षी असुरा नरा फँसे आपकरि चाव ५१

चौ० यह त्वचा सुमलै मल मांजै। अरु काजल सुरमा आंजै॥ फुलेल लगावै। अरु चिकना गात बनावै॥ अरु वस्तर भूषण प अंजन मंजन गहिरे॥ अरु सपरसकी विधि ठानै। सब याहीकूं सु अरु फँसे आपे करि दोऊ। अब निकसत कैसे होऊ॥ हित गां दीन्हा। दोउ नेह वचन बहु कीन्हाँ॥ अरु एक एकतै बाधा। व नाहीं आधा॥ अब शीरा धुनैं पछितावैं। दोउ चले नरक कूं जा चरणदास नहिं जानौ। तुम औगुण ना पहिंचानौ ५२॥

दो० त्वचा स्वाद सब वशभये फँसे जगत के माहिं॥
जो कोई निकसो चहै सोभी निकसै नाहिं ५३
धोखे की हथिनी लखी आयो गज ललचाय॥
खंदक माहीं रुकिगयो शीश धुने पछिताय ५४
कछू हाथ आयो नहीं परो फन्दमें जाय॥
मैन महावत वश भयो शिरमें अंकुश खाय ५५
जङ्गल में आनन्दसूं बहुते केलि कराय॥
अबतौ द्वारे भूपके परो बन्ध में आय ५६
ऐसेही यह नर फँसो देखि कामिनी रूप॥
जन्म गवाँयो दुखभरो पड़ो अविद्या कूप ५७
करी न हरिकी भक्तिही गुरुसेवा तजिदीन॥

मोह कल्पना के उठे मोह वरण हो सोय ७७ ॥
मनहीं खेले खेल सब मनहीं कर अभिमान॥
मनहीं यह जग है रहो अब सुनि मनका ज्ञान ७८

चौ० कबहूं यह मन होवे गिरही॥ कबहूं यह मन होवे विरही ॥ कबहूं मन होवे रोगी। कबहूं यह मन होवे शोगी॥ कबहूं यहमन होवैनारी। हूं यह मन राखे रुग्नारी ॥ कबहूं यह मन दौरा डोले । कबहूं यह मन वोले ॥ कबहूं यह मन कुलका ऊंचा । कबहूं यह मन नकटा बूचा ॥ हूं यह मन इन्दि मचावे॥ कबहूं क्षमा शील घर आवे ॥ कबहूं यह मन दाता। कबहूं करे सूमसों वाता॥ चरणदास कहैं मनकूं जानो । ऐसी घे मनकूं पहिंचानो ७९ ॥

दो० बहुरूपी बहुरंग या बहुतरंग बहु चाव ॥
बहुतभांति संसार में करि करि घने उपाव १८०

चौ० यह मन राजा होवे भोगी। यह मन त्यागी होवे योगी॥ यहमन वै हरिका भक्ता। यह मन होवे शोगरु युक्ता॥ यह मन होय विवेकी नी। यह मन तपिया जपिया ध्यानी॥ यह मन करै दयाकी बातें। यह न करै जीवकी घातें॥ यह मन यती सती अरु शूरा। यह मन काशी पेडतपूरा॥ यह मन तीरथ वर्त उपासी। यह मन ठकुरानी अरु दासी॥ ह मन होवे देवी देवा। या मनका कोइ लहै न भेवा॥ यह मन प्रेमी नेमी नहीं। चरणदास कहैं सबकुछ मनहीं ८१॥

दो० या मनके जाने विना होय नहीं कबहूं साध॥
[illegible] वासना ना छुटे लहै न भेद अगाध ८२
[illegible] मनकूं जाना नहीं करी न याकी सार॥
चौरासी छूटी नहीं खपना बारंबार ८३

[illegible] कानोहरियश कथा सुनावो ॥ भांति
[illegible] क्यों न रंगावे॥ त्रोयाको ज्ञानीही

१ उपाय करनेवाला २ विचार करनेवाला ॥

गुण अवगुण इन्द्री कहैं सो तू मनमें राख ६९
जो इन्द्रिनके वश भयो बांधो नरकै जाय॥
चौरासी भरमत फिरै गर्भयोनि दुखपाय ७०
जो इन्द्रिन के वशभयो पावै ना आनन्द॥
बार बार जगमाहिंही छूटैना सम्बन्द ७१
भक्ति माहिं चित ना लगै सबही बिगड़ैं काम॥
जो इन्द्रिनके वशभयो ताको मिलै न राम ७२
चरणदास यों कहतहैं इन्द्री जीतन ठान॥
जग भूलै हरिकूं मिलै पावै पद निरबानै ७३

चौ० इन्द्री जिते सो ब्रह्मज्ञानी। इन्द्री जीते सोई ध्यानी॥ ... सो हरिदासा। अमरलोक में पावै वासा॥ इन्द्री जीते सोई सि... कला अरु पावै ऋद्धा॥ इन्द्री जीतै सोई शूरा। इन्द्री जीतै सो ... इन्द्री जीते सो सतवंन्ता। इन्द्री जीते गुणी महन्ता॥ इन्द्री जीते राम रि... वै॥ इन्द्री जीते सब कुछ पावै॥ इन्द्री जीते सो संन्यासी। इन्द्री जीवे सो... उदासी॥ इन्द्रीजीतै सब फलदायक। इन्द्रीजीतै सबकुछ लायक॥ इन्द्री जीते छुटै त्रिदेशा। या जगमें कुछ लगै न लेशा॥ इन्द्री जीतै परम सुखा... [illegible] इन्द्री जीवै आन... मिलै भगवन्ता॥ इन्द्री जीते जीवनमुक्ता॥ चरणदास सुनि कहैं शुक... वा। इन्द्री जीते सो गुरुदेवा ७४॥

दो० मन इन्द्रिन के वश भयो होय रह्यो बेढंग॥
आपा बिसरो जगरलो ज्यों जों नाना रंग ७५
आवै क्रोध तरंग जब होत स्वुवां के रूप॥
काम लहर कबहूं उठै ताके होत स्वरूप ७६
लोभ कामना जब उठै जभी लोभ रँग होय॥

१ ब्रह्मपद २ आत्माका जाननेवाला ३ भवानी॥

...और जाने नहिं दीजै ॥ कै दीजै हरिहीका ध्या...
में याकू सानू ॥ कै कीजै यह योगी पूरा । याहि सुनावो अ...
या मनकूं कीजै बैरागी । याकूं कीजै सर्वस त्यागी ॥ जग रँग...
रँग लागै। जाते कर्म भर्म भय भागै ॥ चरणदास शुकदेव क...
फेरिनकी राह दिखावै ८४॥

दो० मन ने आयु गवाँइया ज्ञान बुझाया दीव ॥
करमलगा भरमत फिरो मिला न अपने पीव ८५
दौरि दौरि रसओरही होय रहा कंगाल॥
नातरु आगे भूपथा ऊंचा वड़ा दयाल ८६
पांचौ इन्द्री स्वादमें भयो निपट आधीन ॥
राजबड़ाई सब नशी भयो मूढ़ मति हीन ८७
सरकिजाय विवओरही बहुरि न आवै हाथ ॥
भजनमाहिं ठहरै नहीं जो गहि राखूं बाथ ८८
मन निश्चल आवै नहीं निकसिनिकसि भजिजाय॥
चरणदास यों कहतहैं काहूकी न वसाय ८९
पचिहारे ज्ञानी तपी रहे बहुत शिर मार ॥
मन परेत सूं डर लगै लै डूबै मँझधार ९०
यह मन भूत समान है दौड़ै दांत पसार ॥
बांस गाड़ि उतरै चढ़ै सब बल जावै हार ९१
ज्यों आतम में मन धरै होय जहां लौलीन ॥
ठहरिरहै फिरिना चलै सकल विकलहो क्षीन ९२
भलातो जानि न दीजिये घेरि घेरि करि लाव ॥
या मनकूं परचायकरि ध्यानहिं माहिं लगाव ९३
और कहों बिधि दूसरी सुनियो चित्त लगाय ॥
रामनाम मनसूं जपे चंचलता थकिजाय ९४

करम्द का थामा २ मेघमें ...

पवन रुके जब मन थके और दृष्टि ठहराय ॥
ऐसी साधन साधिये गुरुगम भेद मिलाय ६५
इन्द्री रोके मन रुके अरु उत्तम विधि एहु ॥
चरणदास यों कहतहैं यह साधन करिलेहु ६६
इन्द्रिनकूं मन वश करै मनकूं वशकरै पौन ॥
अनहद वशकर वायुकूं अनहद कूं ले तौन ६७
याको नाम समाधि है मन तामें ठहराय ॥
जन्म जन्मकी वासना ताकूं दग्ध कराय ६८
इन्द्री पलटै मन विषे मन पलटै बुधि माहिं ॥
बुधि पलटै हरि ध्यानमें फेरि होय लै जाहिं ६६
दग्ध वासना होय जब आवागमन नशाय ॥
कहें गुरू शुकदेवजी मुक्तरूप ह्वैजाय १००
मनके सगरे भेदही जाको दियो जिताव ॥
चरणदास यों कहतहैं झूंठ सांच को न्याव १०१
जो कोइ बोलै झूठही ताकूं लागै पाप ॥
जन्म जन्म छूटै नहीं दुखदे तीनों ताप[२] १०२

चौ० बोलै झूठ महाअपराधी। धरम छुटै उठि लागै बाधी॥ झूठा सो सो सौगँद खाय। झूठा लेवै कर्म लगाय॥ झूठा करै बिराना बुरा। झूठा रहै जक्त में गिरा॥ झूठे की परतीत न होई। झूठा बोल न बोलै कोई॥ झूठा हरिकी भक्ति न पावै। झूठा घोर कुण्ड में जावै॥ झूठेकूं लागै यम मार। झूठा चौरासी में छार॥ झूठ बचन का भारी दोष। झूठेकी होय गती न मोष॥ झूठे के नहिं गुरू न राम। झूठेकूं नाहीं विश्राम॥ चरणदास शुकदेव बतावैं। झूठे सबी नरककूं जावैं १०३॥

दो० झूठे के मुंह दीजिये नौसादर का थाप॥
हराकरै सकुचा रहै वह शरमिंदा आप १०४

---

१ भलामा २ दैहिक, दैविक, भौतिक॥

फीजे। जक्र ओर जाने नहिं दीजे॥ कै दीजे हरिहीका ध्यानू। ग
में याकू सानू॥ कै कीजे यह योगी पूरा। याहि सुनावो अनहद
या मनकूं कीजे बैरागी। याकूं कीजे सर्वस त्यागी॥ जग रँग उ
रँग लागे। जाते कर्म भर्म भय भागे॥ चरणदास शुकदेव बतावे
फेरिनकी राह दिखावे ८४॥

दो० मन ने आयु गवाँइया ज्ञान बुझाया दाँव॥
करमलगा भरमत फिरो मिला न अपने पाँव ८५
दौरि दौरि रसओरही होय रहा कंगाल॥
नातरु आगे भूपथा ऊंचा बड़ा दयाल ८६
पांचों इन्द्री स्वादमें भयो निपट आधीन॥
राजबड़ाई सब नशी भयो मूढ़ मति हीन ८७
सरकिजाय विषओरही बहुरि न आवै हाथ॥
भजनमाहिं ठहरै नहीं जो गहि राखूं बाथ ८८
मन निश्चल आवै नहीं निकसिनिकसि भजिजाय॥
चरणदास यों कहतहैं काहूकी न बसाय ८९
पचिहारे ज्ञानी तपी रहे बहुत शिर मार॥
मन परेत सूं डर लगै लै डूबै मँझधार ९०
यह मन भूत समान है दौड़े दांत पसार॥
बांस गाड़ि उतरै चढ़ै सब बल जावै हार ९१
ज्यों आतम में मन धेरै होय जहां लौलीन॥
ठहरिरहै फिरिना चलै सकल विकलहो क्षीन ९२
भलातो जानि न दीजिये घेरि घेरि करि लाव॥
या मनकूं परचायकरि ध्यानहिं माहिं लगाव ९३
और कहौं विधि दूसरी सुनियो चित्त लगाय॥
रामनाम मनसूं जपै चंचलता थकिजाय ९४

१ ब्रह्मरन्ध्र का बाजा २ प्रेमसे भलाहिदा॥

चरणदासकी सीख सुन यही राखि मनमाहिं ११३
कथा सुनी व्रतहू किये तीरथ किये अघाय ॥
गुरुमुख के होये बिना जपतप निष्फल जाय ११४
अब गुरुमुख के लक्षण गाऊं। जुदे जुदे करि सब समझाऊं॥ समझ धरै हिय कोई। पूरा गुरुमुख कहिये सोई॥ प्रथमहिं गुरुसों न बोलै। खोटी खरी करै सब खोलै॥ दूजे गुरुको पथ न लगावै। नि- गुरुके चरण मनावै॥ तीजे आज्ञाकारी जानों। इन लक्षणे गुरुमुखी नों॥ जो कोइ गुरुका लेवै नाम। ताको निहुरि करै परणाम॥ जो देखै गुरुका बाना। ताकूं जानै गुरू समानां॥ चरणदास शुकदेव नै। गुरुभाई को गुरुसम जानै ११५॥
दो० गुरुभाई कूं पूजिये धरिये चरणन हैं शीश॥
चरणोदक फिरि लीजिये गुरुमत विस्वाबीस ११६
ौ० जो कहुं गुरुका वस्तर पावै। हिये लगाय चूकं दृग छ्वावै॥ गुरू- ा का मानुप आवै। दै परिक्रमा वलि वलि जावै॥ कहां दया करि द- ा दीन्हे। मेरे पाप भये सब क्षीन्हे॥ जो अपने गुरुद्वारे जइये। देखत रे बहुत हरपइये॥ ढाई सूं दण्डवत जु कीजै। दर्शन करिकरि सर्वस जै॥ फिर ठाढ़ो रहै जोरे हाथा। बैठे तब आज्ञा दे नाथा॥ जो बोलै सो न में धरिये। अपने अवगुण सबही हरिये॥ चरणदास शुकदेव बतावै। सा गुरुमुख राम रिझावै ११७॥
दो० साधुन की निंदा बुरी मत कोइ कीजो भूल॥
दुनिया में दुख पायहै रहै नरक में भूल ११८
चौ० साधुक निन्दक तन मन दुखी। साधुक निन्दक होय न सुखी॥ न्दक साधु दरिद्री होय। निंदक हारै सर्वस खोय॥ साधुक निंदक नरक भार। निश्चय खावै यमकी मार॥ साधुक निंदक पूरापापी। साधुक निं- पी॥ मूरखहोय सो निन्दा करै। साधु संत कूं अवगुण धरै॥

१ द्वीप २ चरणों का धोयाहुआ जल ॥

चौ० झूठहू दग्याय जानो। झूठेकूं ठग चोर पिछानो॥ झू शराबी होय। झूठा कहिये कामी सोय॥ झूठही को जानो अ देखि सबही नर नारी॥ सकल ऐब झूठे में पाऊं। एकएक क्या लाऊं॥ पांचो खोट सबन के राजा। सो मैं कहै चितावन काजा की कहिये खानि। सो वह करै पुण्यकी हानि॥ सबही अवगुण चरणदास शुकदेव बताही १०५॥

दो० सांच बिना साधू नहीं कबहुं न मिलिहैं राम॥
सांच बिना गतिनालहै पावैना निजधाम १०६
सत सत मुखपूं बोलिये सतही चलिये चाल॥
सतही मनमें राखिये सतही रहिये नाल १०७
सांचे कूं अहना लगे सांचे कूं नहिं दाग॥
सांचे श्राप न लागई सब दुख जावें भाग १०८
बड़ी तपस्या सांच है बड़ा बरत है सांच॥
जासों पाप सभी जरें लगे न गर्भकी आंच १०९
जाका बर्तन शुद्ध नहीं सांचे सब व्यवहार॥
चरणदास त्रयलोक में कभी न आवे हार ११०

चौ० सांचे के मनही में राम। सांचा करे न छलके काम॥ होकर सुमिरण करे। आप तरे औरन लै तरे॥ सतबादी की पति है ताकूं लगे न दिवकी आंच॥ सांचे चोर चुराया घोड़ा। परमेश्वर ता मोड़ा॥ और चोर चोरीसूं गया। सांच प्रताप अचम्भा भया॥ थोरी प्रताप अनंता। सबही जानें साधू संता॥ लाख बातका एकहि जोड़। पुरुष सबन शिरमोड़॥ आवे सांच परमसुख पावे। चरणदास शु सुनावे १११॥

दो० सांचेकी पदवी बड़ी इष्ट साधुके माहिं॥
दोनों अस्तुतिही करें निन्दक कोई नाहिं ११२
गुरू कहै सो कीजिये करै सो कीजे नाहिं॥

चरणदासकी सीख सुन यही राखि मनमाहिं ११३॥
कथा सुनी ब्रतहू किये तीरथ किये अघाय॥
गुरुमुखके होये विना जपतप निष्फल जाय ११४

अब गुरुमुख के लक्षण गाऊं। जुदे जुदे करि सब समझाऊं॥ समझ धरै हिय कोई। पूरा गुरुमुख कहिये सोई॥ प्रथमहिं गुरुसों न बोलै। खोटी खरी करै सब खोलै॥ दूजे गुरुको पथ न लगावै। निव गुरुके चरण मनावै॥ तीजे आज्ञाकारी जानौ। इन लक्षण गुरुमुखी जानौ॥ जो कोइ गुरुका लेवै नाम। ताको निहुरि करै परणाम॥ जो देखै गुरुका बाना। ताकूं जानै गुरू समाना॥ चरणदास शुकदेव नै। गुरुभाई को गुरुसम जानै ११५॥

दो० गुरुभाई कूं पूजिये धरिये चरणन [१]शीश॥
चरणोदक[२] फिरि लीजिये गुरुमत बिस्वाबीस ११६

चौ० जो कहुं गुरुका बस्तर पावै। हिये लगाय चूंक हग छवावै॥ गुरुका मानुष आवै। दै परिक्रमा बलि बलि जावै॥ कहां दया करि दन दीन्हे। मेरे पाप भये सब क्षीन्हे॥ जो अपने गुरुद्वारे जइये। देखत रि बहुत हरषइये॥ हाईं मूं दण्डवत जु कीजे। दर्शन करिकरि सर्वस जे॥ फिर ठाढ़ो रहै जोरे हाथा। बैठै तब आज्ञा दे नाथा॥ जो बोलै सो न में धरिये। अपने अवगुण सबही हरिये॥ चरणदास शुकदेव बतावै। सा गुरुमुख राम रिझावै ११७॥

दो० साधुन की निंदा बुरी मत कोइ कीजो भूल॥
दुनिया में दुख पायहै रहै नरक में झूल॥११८॥

चौ० साधुक निन्दक तन मन दुखी। साधुक निन्दक होय न सुखी॥ निन्दक साधु दरिद्री होय। निंदक हारै सर्बस खोय॥ साधुक निंदक नरक मझार। निश्चय खावै यमकी मार॥ साधुक निंदक पूरापापी। साधुक निंदक हूवै आपी॥ मूरखहोय सो निन्दा करै। साधु संत कूं अवगुण धरै॥

१ किसी प्रकारका धुंट दोष २ चरणों का धोयाहुआ जल॥

चौ० झूठकूं हत्यारा जानो। झूठेकूं ठग चोर पिछा
शराबी होय। झूठा कहिये कामी सोय॥ झूठेही को जा
देखि सबही नर नारी॥ सकल ऐब झूठे में पाऊं। एकप
खाऊं॥ पांचौ खोट संतन के राजा। सो में कहे त्रितापन
की कहिये खानि। सो वह करै पुण्यकी हानि॥ सबही अ
चरणदास शुकदेव बताहीं १०५॥

दो० सांच बिना साधू नहीं कबहुं न मिलिहैं राम
सांच बिना गतिनालहै पावैना निजधाम १
सत सत मुखसूं बोलिये सतही चलिये चाल
सतही मनमें राखिये सतही रहिये नाल १०७
सांचे कूं भहना लगै सांचे कूं नहिं दाग॥
सांचे शाप न लागई सब दुख जावै भाग १०८
बड़ी तपस्या सांच है बड़ा बरत है सांच॥
जासों पाप सभी जरें लगै न गर्भको आंच १०६
जाका बचन मुड़ै नहीं सांचे सब व्यवहार॥
चरणदास त्रयलोक में कभी न आवै हार ११०

चौ० सांचे के मनही में राम। सांचा करै न छलके काम॥
होकर सुमिरण करै। आप तरै औरन ले तरै॥ सतवादी की पति है
ताकूं लगै न दिवकी आंच॥ सांचे चोर चुराया घोड़ा। परमेश्वर ताक
घोड़ा॥ और चोर चोरीसूं गया। सांच प्रताप अचम्भा भया॥ यों सां
प्रताप अनंता। सबही जानै साधू संता॥ लाख बातका एकहि जोड़। सांचा
रूप सबन शिरमोड़॥ आवै सांच परमसुख पावै। चरणदास शुकदे
नावै १११॥

दो० सांचकी पदवी बड़ी इष्ट साधुके माहिं॥
दोनों अस्तुतिही करें निन्दक कोई नाहिं ११२
गुरु कहे सो कीजिये करै सो कीजे नाहिं॥

चरणदासकी सीख सुन यही राखि मनमाहिं ११३
कथा सुनो व्रतहू किये तीरथ किये अघाय ॥
गुरुमुखके होये बिना जप तप निष्फल जाय ११४

अब गुरुमुख के लक्षण गाऊं। जुदे जुदे करि सब समझाऊं॥ समझ धरे हिय कोई। पूरा गुरुमुख कहिये सोई॥ प्रथमहिं गुरुसों बोलै। खोटी खरी करै सब खोलै॥ दूजे गुरुको पथ न लगावै। नि- गुरुके चरण मनावै॥ तीजे आज्ञाकारी जानो। इन लक्षण गुरुमुखी नो॥ जो कोइ गुरुका लेवे नाम। ताको निहुरि करै परणाम॥ जो देखै गुरुका बाना। ताकूं जानै गुरू समाना॥ चरणदास शुकदेव ने। गुरुभाई को गुरुसम जाने ११५॥

दो० गुरुभाई कूं पूजिये धरिये चरणन हैं शीश॥
चरणोदके फिरि लीजिये गुरुमत बिस्वाबीस ११६

ौ० जो कहुं गुरुका बस्तर पावै। हिये लगाय चूके दृग छ्वावै॥ गुरू- का मानुष आवै। दै परिकमा चलि चलि जावै॥ कहां दया करि द- ा दीन्हे। मेरे पाप भये सब क्षीन्हे॥ जो अपने गुरुद्वारे जइये। देखत रे बहुत हरषइये॥ दाईं सूं दण्डवत जु कीजै। दर्शन करिकरि सर्वस जै॥ फिर ठाढ़ो रहै जोरे हाथा। बैठे तब आज्ञा दे नाथा॥ जो बोलै सो न में धरिये। अपने अवगुण सबही हरिये॥ चरणदास शुकदेव बतावै। सा गुरुमुख राम रिझावै ११७॥

दो० साधुन की निंदा बुरी मत कोइ कीजो भूल॥
दुनिया में दुख पायहै रहै नरक में भूल॥११८

चौ० साधुकू निन्दक तन मन दुखी। साधुकू निन्दक होय न सुखी॥ न्दक साधु दरिद्री होय। निंदक हारे सर्वस खोय॥ साधुक निंदक नरक झार। निश्चय खावै यमकी मार॥ साधुक निंदक पूरापापी। साधुक निं-

चौ० झूठहि ल्यार जानो । झूठे कूं ठग चोर पिछानो ॥ शराबी होय । झूठा कहिये कापी सोय ॥ झूठेही कूं जानो ... देखि सबही नर नारी ॥ सकल एव झूठ में पाऊं । एकएक ... लाऊं ॥ पांचो खोट सबन के राजा । सो मैं कहे चितावन काज ... की कहिये खानि । सो वह करे पुण्यकी हानि ॥ सबही ... चरणदास शुकदेव बताही १०५ ॥

दो० सांच बिना साधू नहीं कबहुं न मिलि हैं राम ।
सांच बिना गतिनाल है पावैना निजधाम १०६
सत सत मुखसूं बोलिये सतही चलिये चाल ॥
सतही मनमें राखिये सतही रहिये नाल १०७
सांचे कूं भटना लगे सांचे कूं नहिं दाग ॥
सांचे श्राप न लागई सब दुख जावैं भाग १०८
बड़ी तपस्या सांच है बड़ा वरत है सांच ॥
जासों पाप सभी जरें लगै न गर्भकी आंच १०९
जाका वचन मुड़े नहीं सांचे सब व्यवहार ॥
चरणदास त्रयलोक में कभी न आवे हार ११०

चौ० सांचे के मनही में राम । सांचा करे न छलके काम ॥ ... होकर सुमिरण करै । आप तरै औरन ले तरै ॥ सतवादी की पति है सां... ताकूं लगै न दिवकी आंच ॥ सांचे चोर चुराया घोड़ा । परमेश्वर ताको ... मोड़ा ॥ और चोर चोरीसूं गया । सांच प्रताप अचम्भा भया ॥ औरो सां... प्रताप अनंता । सबही जानैं साधू संता ॥ लाल बातका एकहि जोड़ । सांचा पुरुष सबन शिरमोड़ ॥ आवै सांच परमसुख पावै । चरणदास शुकदे... सुनावै १११ ॥

दो० सांचकी पदवी बड़ी दुष्ट साधुके माहिं ॥
दोनों अस्तुतिही करें निन्दक कोई नाहिं ११२
गुरु कहे सो कीजिये करै सो कीजे नाहिं ॥

चरणदास यों कहतहैं क्यों पावै हरिधाम १२६
हेरिफेरि धनको करत बितै पहर इकरात॥
तीनपहर निशिके रहैं सोवै नारी साथ १३०
नारी के फैलाव को दीखै ओर न छोर॥
द्रव्य माहिं तृष्णा रहै चाहै लाख किरोर १३१
द्रव्य जोरि मरिजाय जब होवैठे तहँ नाग॥
नारी में जो चितरहै ह्वैहै कूकर काग १३२
ऐसेही भरमत फिरै लख चौरासी देह॥
कनक कामिनीकूं तजै जबलग नाहीं नेह १३३
कनक कनकते चौगुनो मादकता अधिकाय॥
वह खाये बौरातहै यह पाये बौराय १३४
मूरख त्याग न करिसके ज्ञानवन्त तजिदेह॥
चौंकायल मृग ज्यों रहै कहीं न साजै गेह १३५
जो कोइ छोड़े कुटुँबही ऐसी कर पहिंचान॥
जैसे छूटै बन्धसूं यम जोरासूं जान १३६
जीवत यम तो कुटुँब है घेरि घेरि दुख देय॥
ऐसे मानुप देहकूं लूटैही नित लेय १३७
कै ठग सबकूं जानिये कै धाई कै चोर॥
रणजित कहै तु देखले लूटतहैं निशि भोर १३८
बाहर कलकल करतहैं भीतर लावहिं लाव॥
ऐसो बांधो खैंचकरि छुटै हाथ नहिं पांव १३९
लाजतोंक गल में पड़ा ममता बेरी पांय॥
रसरी मूरख नेह की लीन्हे हाथ बँधाय १४०
डारि दियो अज्ञान में परो परो बिललाय॥
निकसनकूं जबहीं चहै कुतका मोह लगाय १४१

१ विषय व सुवर्ण॥

साधुक निन्दक श्वान समान। साधक निन्दक सुकर जान
कहिये देह। निन्दक ... ... नारी ... ॥ चरणदास निन्द
भक्तनकी अस्तुतिही कीजै ११६॥

दो॰ साधुनकी अस्तुति किये हरिकी अस्तुति होय
भक्तनकी निन्दा किये प्रभुकी निन्दा सोय १२०

अथ मोह छुड़ावन अंग वर्णन॥

कुण्डलिया॥ भक्ति हढ़ावनकूं कहे नानाही परसंग। शुक
अब कहूं मोह छुटावन अंग॥ मोहछुटावन अंग कोई हियमाहीं
हृँय जानिसूं छूटिलगैं हरिचरणों लारै॥ चरणदास यों कहत हैं
वैराग। जक्त नींदहीसूं खुलै चौथे पद में जाग १२१॥

दो॰ गुरू पूजि जग छोड़िये भवसागर के दन्द॥
साधुनकी संगतिकरो तजो जाति कुल बन्ध १२२
बन्धु नारि सुत कुटुँब सब यमकी फांसी जान॥
तोहिं छुटावैं रामसूं इनका कहा न मान १२३
खैंचि पकड़ि डुबैं राखिहैं जहां मोहका जाल॥
जीवत वह दुख भांतिके मुये नरक ततकाल १२४
या प्राणीकूं ठग लगै सकल कुटुँब परिवार॥
तिनमें दो बलवन्तहैं एक द्रव्य इकनारि १२५
नारि किये दुख बहुतहैं बन्धन बँधै अनेक॥
जो सुख चाहै जीवका तिरियाकूं मत पेख १२६
द्रव्यै माहिं दुख तीनहैं यह तू निश्चय जान॥
आवत दुख राखत दुखी जात प्राणकी हान १२७
तातै इनकी प्रीति मन उठै सभी निरवार॥
ये दुर्जन दुखरूप हैं ऐसो करो विचार १२८
जो कोई इनमें पगै तिनमें छूटे राम॥

१ फंसनेवाली वस्तु २ धन॥

चित्त लगइये ॥ हम तो हैं दुनिया के कूते । जाति वरणमें होहिं स-हत्ये करो पालो सुत वाम । कथा कीरतन सूं क्या काम ॥ अव तुम मारी हूजे । हमने किये सो तुमहूं कीजे ॥ ऐसी बुद्धि बड़ाई दीन्ही ॥ हिरदय में धारि लीन्ही ॥ चरणदास कहैं देखो प्यार । मुये नरक जी-रुवार १५३ ॥

दो० पिता बुद्धि ऐसी दई रहिये कुटुंब मँझारि ॥
जो कुछ है सो जक्रमें धनसम्पति सुत नारि १५४
हरि की राह भुलाय करि दीन्हो कुटुंब चिताय ॥
ताते दुख जग में घने चौरासी भरमाय १५५.

चौ० अब सुन माताहू की बातैं । अपना जानि खिंयावे तौतैं ॥ द्रव्य ज उद्यमहीं कीजै । लै माताको गोदी दीजै ॥ करै कमाई सोई सपूता । हीं तो वह पूत कपूता ॥ नारी कूं भूषण पहिनावो । सुत पुत्री को व्याह गावो ॥ पूजो पित्तर देवी देवा । सकल कुटुंबकी कीजै सेवा ॥ अपने कु-को न्योति जिमावो । ताते बहुत बड़ाई पावो ॥ बहु विधि स्वारथही सि-लावै । परमारथकी राह भुलावै ॥ बारम्बार जगमें उरझावै । ऐसे तौ नितही लि आवै ॥ जित का तित ह्वांई रखि लीन्हा । चरणदास कहैं जान न न्हा १५६ ॥

दो० माताहू ने प्यार करि बहुत दिया शिरभार ॥
यही जो नीको धारियो महल द्रव्य सुतनारि १५७

चौ० अब नारी की गति सुनि लीजै । तामें चित्त कवहुं नहिं दीजै ॥ छल बलकरि वश अपने राखै । मधुर वचन रससने जु भाखै ॥ कहै कि शिर के छत्र हमारे । हम तो लागीं शरण तुम्हारे ॥ तुमतो बहुतै लगो पियारे । मोको तजि मतहूजो न्यारे ॥ ऐसे कहि कहि बांधाबाहे । आठो अंग कामके बाहे ॥ वस्तर भूषण देह शिंगारे । नानाविधि करि रूप सँवारे ॥

१ संपाय २ पुत्र ३ निकटवास देहस्पर्श, कटाक्ष हेर, मीठी बातोंसे रिझावना, हावभाव करना, स्वरूपकी एकता, स्नेहबढ़ाना, शृङ्गाररस दर्शावना ये आठअंग कामके हैं ॥

रसवारे जहँ पांच हैं इन्द्रिन के रस जान॥
तबहीं देह भुलाय के जो कुछ उपजे ज्ञान १४२
कुटुँब ओर इन पांच कूं एक गतोही जान॥
प्राणी कूं जग में फँसा चहै खान अरु पान १४३
ये सब स्वारथही लगें इनका सगा न कोय॥
जो शिर मारें धरणिपर कल्प कल्प करि रोय १४४
मात पिता सुत नारि की इनकी उलटी रीति॥
जग में देह फँसाय के करिके प्रीतिहि प्रीति १४५
जैसे बधिक बिछाय के जाल माहिं कणडार॥
प्रीति करै पक्षी गहै पाछे करै जु ख्वार १४६
जैसे ठग बहु प्यार करि भोलापनही देह॥
पहिले लड्डू खवाय के पाछे सरबस लेह १४७
हित सूं हरिण बोलाय के गोली मारै तान॥
चरणदास यों कहतहैं ऐसे इनकूं जान १४८
जल में बंशी डारिया अटकाया जहँ मांस॥
मछरी जानै हितकियो लखो न अपनो नास १४९
भोंदू यह गति ना लखी पड़ो कुमति के धंध॥
ज्योंकी त्यों सूझी नहीं कियो मोह ने अंध १५०
सब ठग यह देखी नहीं कपट हेत नहिं जान॥
इनहीं में मिलकर चलो समझो ना अज्ञान १५१
अब इन के छल कहत हूं समझै होय उदास॥
जानै ना छाँड़ै रहै कहैं चरणहीं दास १५२

चौ० अब इनके छल कहि समझाऊं। भिन्न भिन्न परगट दिखलाऊं॥
पिता कहै तुम पुत्र हमारे। बहुत भरोसे मोहिं तुम्हारे॥ अब तुम ऐसी विद्या पढो। अपने कुल में ऊंचे चढ़ो॥ सतसंगति में कभी न जइये। अपने

काम क्रोध लोभ अरु मोहा। सबही राखैं तोसूं द्रोहा ॥ जिन से रता भारी। जक्त बड़ाई तिनकी सारी ॥ आपा लिये सदाहीं रहै। न झूठ बहु कहै॥ इनके संग घनेही दुष्टी। तेरे तनमें रहैं अदृष्टी ॥ करैं अकारज तेरा। चरणदास कहैं या विधि घेरा १६६ ॥

बहु बैरी घट में बसैं तू नहिं जीतत कोय ॥
निशिदिन घेरेही रहैं छुटकारा नहिं होय १६७

० जो कहुं निकसि बाहरे आवै। अरु विरक्त का रूप बनावै॥ कुटुँब उपजै बैराग। जक्त रहा चरणों से लाग ॥ कछू वासना मनमें धँसी। लोक बड़ाई हँसी॥ पुष्टभयो आपा अभिमान। सहजहि आया मोह ॥ सबही संगी लिये बुलाय। या विरक्तकूं घेरो आय ॥ ताकूं बांधि कीन्हा। फेरि कुटुँबके माहीं दीन्हा ॥ कुटुँब मित्र गाढ़ा करि बांधा। ड़े आँखों ऐसा आंधा ॥ चरणदास कहैं घरमें आया। घरके दुर्जन बँधाया १६८ ॥

० कुनवे में से निकसि करि फिर कुनवे में जाय ॥
निश्चय नरकी होयगा दुनिया में दुखपाय १६९

० एक तपा बनमें जा रहा। शीतउष्ण पावस शिरसहा॥ सूखे पातों अहारा। छूटे सबही जग व्यवहारा ॥ रहै ध्यानमें निशिदिन लागा। चरणकमल में पागा ॥ महिमा सुनि राजा तहँ आया। दै परिक्रमा नवाया॥ हाथ जोरि ठाढ़ो फिरि भयो। तपसी मुखना बैठन कह्यो॥ यै बार बहु भई। तब राजाने मनमें कही ॥ यह तपसी है बहु अभि-। मो आवन महिमा नहिं जानी॥ ऐसी कहि मनमाहीं ऐंठ। आपहि भूप वह बैठ १७०॥

दो० जो हरिके रँग में रँगे भूपन सूं क्यां काम॥
चरणदास कुछ भय नहीं ना कुछ चहिये दाम १७१

चौ० तपसी कछू न मुखसूं भाषा। राजा उठि चढ़ि मारग लागा ॥

सबमें ...॥

करै कटाक्ष बहुतही मारै। वशकरने को टोनाडारै॥ काजलभरी आँ
जोहै। अंग विषे रसदैदैमोहै॥ह्यांसूं निकसन कैसेपावै। चरणदास शु
सुनावै १५८॥

दो॰ तिरियाही के जाल में आय फँसे जो कोय॥
तलफि तलफि ह्वाँई रहै निकसि सकै नहिं सोय १५९

चौ॰ सुत पुत्री वनितासूं जानौं। समधाने यासूं पहिंचानौं॥
वँधे बहुतै वँधवार। नाई ब्राह्मण बहु परिवार॥ सेंठ मशानी देवी भूत।
नक्षत्रहु लगै अऊत॥ चौथ अहोई लागै सौन। तिरिया कारण स
मौन॥ औरौ बहुत बखेड़े जान। नारी से तोहीं पहिंचान॥ महा
बहु दुख तेहिमाहीं। मरिके चौरासी में जाहीं॥ ताते तूजे बेगि उद
समुझि तजो तिरियाकी आस॥ कहि शुकदेव चरणहीं दासा। सभी
डूँवहै नरकनिवासा १६०॥

दो॰ सुतकी बोली तोतली करै चोचले चाय॥
मन मोहै वांधै घनो छूटै की न उपाय १६१
हँसि गोदी में आय करि बहुत बढ़ावै नेह॥
तामें घने विकारहैं अन्तकाल दुख देह १६२
मोह लगा मरजाय जब तन मन लागै आग॥
चरणदास यों कहतहैं सुख चाहै तो त्याग १६३
जिहिकारण चिन्तालगै जबलग घटमें प्रान॥
हरिगुरु हिये न आवई यही जु पूरी हान १६४
तन छूटै सुत में रहै एक न तेरी आस॥
जनम जु सूकर को लहै मुये नरकही जास १६५

चौ॰ कुटुँब पेंच ऐसे करि जानौ। फांसीगरै तिनकूं पहिचानो॥
और नरक मँझारा। ताते होहि सबनमें न्यारा॥ बहुतक दुर्जनहैं घटमा
तू उनकूं जानतहै नाहीं॥ हैं वैरी तू जानत मीना। स्वपनेहू इनकी

ो० फिरि भारी अंगुली गरि लीन्हा । बहुरो मुखके माहीं दीन्हा ॥ ति टिकन काम करिआई । घर आकर बहुते हुलसाई ॥ फिर दां दिना ठहराई । उतनहिं गई यहीं मन आई ॥ पातुरि चतुर ढीले सूं गई । तू कही कहां तुम रही ॥ जबहीं पातुरि प्रीति पिछानी । अपनी कला जानी ॥ वादिन व्यंजन कछू न लाई । बहुविधि भोजन बात सुनाई ॥ ाकुर सेवा चित्त लाऊं । नानाविधि के भोग लगाऊं ॥ ले आज्ञा निज पधारी । चरणदास कहें छल कियो नारी १७७॥

दो० तपसी कूं जीतन कियो टेक बांधि करि वादे ॥
हाँरेहारै लाय हूं या जिह्वा के स्वाद १७८
नानाविधि के स्वाद करि लैगइ वाही पास ॥
कह्यो कि यह परसादहै लीजे कोई ग्रास १७९

चौ० ठाकुरको परसाद जु लीजे । याको नाहीं कबहुं न कीजे ॥ नाहीं ये होय अपराध । तुमतो कहियेपूरे साध ॥ कछूक पातुरि वचन सुनायो । क तपसी के मन आयो ॥ डारो हाथ थार के माहीं । ज्यों ज्यों खात हत जाहीं ॥ पातुरि कह्यो सदा ले आऊं । जो जो ठाकुर भोग लगाऊं ॥ कछू दोष नहिं लागै । तनमनका सब पातक भागै ॥ वाकूं वश करिके आई । सखियन कूं यह कथासुनाई ॥ कामदेवकी सौगंद खाऊं । तपसी वा करि दिखलाऊं १८० ॥

दो० रसना स्वादहि वश किये मनभै जीतन वाद ॥
कभी आप वांदी कभी पहुँचायो परसाद १८१

चौ० कबहूं वा तपसी ढिग जावे । नानाविधि के भोजन खावे ॥ कबहूं जै बाँदी हाथा । कहियो छूटी मोहिं न नाथा ॥ वह जाने मम सेवा करे । ह तो भजन तपस्या करे ॥ एक दिना पातुरि वां गई । हाथ जोरि आपन ी भई ॥ कहो कि मेरे भवन पधारो । करो पवित्तर अंगुलि डारो ॥ लावन ी बहु बात बनाई । सो तपसी के मन नहिं भाई ॥ वांई रही दोना सो

१ देर २ शर्त ३ कौर ॥

क्रोधभरा महलन में आया। खोटा मनमें मता उपाया॥ पातुरि भेजि अजमाऊं। भेदकूड़ सांचेको पाऊं॥ जबहीं पातुरि लई बुलाई। ये बा समझाई॥ कहै पातुरी आज्ञा दीजै। देखि तमाशा वाका लीजै॥ ले पातुरि घर आई। प्रथमें लौंडी एक पठाई॥ वा तपसी का लावो कौन वस्तु से वाको हेत॥ कहां सुभोजन करै अहारा। छूटै भजन मूं बारा॥ बांदी गई भेद सो लाई। पातरिकूं सब बात सुनाई १७१॥

दो० झारै जा मुख धोयकै फिरि तलाव में न्हाय॥
चरणदास फलपात जो गिरे पड़ेही खाय १७२

चौ० पातुरि सुनि मनमें डरपाई। कैसे वाकूं वशकरूं जाई॥ कि किये रीम नहिं रीझै। काढ़ि नगर सूं बहुतै खीझै॥ ताते, मकर पेंच कीजै। तपसी काम नरकमें लीजै॥ जो कहुं इच्छा नेकहु पइये। छल करि वा मदनं जगइये॥ यह विचार पातुरि जब कियो। नानाविधि भो करि लियो॥ गई तहां तपसी अस्थान। वह तौ करत हतो हरि-ध्या बैठ रही धीरज उरधारि। जबलग उठै ध्यान निरवारि॥ उठे ध्यानतें खोली। करि दण्डवत नारि यों बोली॥ पुत्र नहीं हमरे घरमाहीं। कारण दर्शन कूं आई १७४ यह कहि भोजन आगे राखा। तपसी भो लिया न भाखा॥ वादिन तौ योंहीं उठिआई। अंगुली टिकन गेरे पाई॥ दूजे दिन गइ बहुत सवारा। न्हाकर आये थे, उहिवारा॥ कहा भोजन हमरा कीजै। हमरे नैननको सुख दीजै॥ तपसी कहै न चित्त लाऊं। सूखेपात और फल खाऊं॥ पातुरि कहै दूर सूं आई। तुमतौ दय वन्त सुखदाई॥ यही मान मेरो तुम राखो। बहुत नहीं अंगुलीभरि चाखो कहि कर बचन बाहि पघिलाया। अंगुली भरि भोजन चखाया॥ चाट चाटत रहा। रणजित कहै यों मन बहि गया १७५॥

दो० पातुरिने करजोरि करि बहुरो बचन सुनाय॥
एकबार अरु लीजिये इन्द्रीजित ऋषिराय १७६

१ काम २ इच्छा॥

रा॥ वेगहि उठि जंगल कूं गया। चरणदास कहैं रमता भया १८५॥

दो० जो इन्द्रिनके वश भयो यही हाल ह्वैजाय॥
पछतावा मन में रहै करै हाय दुखहाय १८६

चौ० पांचों चोर महादुखदाई। सो या जगमें देह फँसाई॥ तन मन बहु व्याधि लगावैं। कायिके वाचिके पाप चढ़ावैं॥ करम लगा बहुतै रमावै। यम के छप्पन त्रास दिखावै॥ फिर चौरासी माहिं फिरावै। जठर अगिनिमें ताहि तपावै॥ जन्म मरण भारी दुख पावै। मानुष देहका सर्वस जावै॥ तीन लोकमें डोलै हाला। सुरपुर मृत्यु और पाताला॥ कैसे मुक्ति धाम कूं पावै। जो इन्द्रिन के वश हो जावै॥ छूटै जब गुरु किरपा करैं। चरणदास के शिर कर धरैं १८७॥

दो० स्वारथही के सब सगे कुटुंब मित्र कुल गोत्र॥
परमारथ समभावई जो दयाल गुरुहोत्र १८८
परमारथ में दुख मिटै कलह कलपना जाय॥
स्वारथ माहीं सुख नहीं तामें चित्तलगाय १८९
स्वारथ में चिन्ता घनी जो ढांकर हो गेह॥
विना आग की चिता में जीवत जरिहै देह १९०
चिन्ता घट में नागिनी ताके मुख हैं दोय॥
निशि दिन खाये जातहैं जानसकै नहिं कोय १९१
ताघट चिन्ता नागिनी जामुख जप नहिं होय॥
जो टुक आवै यादभी उहीं जाय फिरि खोय १९२
चिन्ताही सूं लगत है चरणदास उर आग॥
तहां ध्यान हरिचरण को कैसेही अब लाग १९३
जक्त वासना के विषे घर चिन्ता का जान॥
जगकीआशा छोड़िकरि हरिसुमिरणही ठान १९४
नदिया में चले सदा मनोरथ नीर॥

१ मारमर्य २ देह सम्बन्धी ३ वाक्यसम्बन्धी

कीन्हो। तपसी को मन वशकरि लीन्हो ॥ दूजे रसकी कला दिख
बढ़ो अरु आँस लजाई ॥ भोरभये फिर बात सुनाई। छलबल करी
आई ॥ चरणदास तपसी नहिं जानी। अजहूं ठगनी ना पहिचानी।

दो० घरमें ला बहु सुख दिया दिना आठही शानि॥
तपसीहू वा वशभयो पांचन सूं रस चाखि १८३

चौ० इन्द्रीवश पातुरि घर आया। अपने तपका तेज घटाया।
भया सब फूस फूटा। लागा ध्यान सु एका छूटा ॥ देखे घरके वैरी
पकड़ बांधि औरों को दिया ॥ फिर पातुरि राजा पै गई। तपसी
सब कही ॥ नेक नेक सब कह समझाई। तब राजाकूं हांसी आई।
कही बेगि ले आवो। वाकी सूरत हमें दिखावो ॥ फिर पातुरि
धाई। तपसी कूं इकबात सुनाई॥ राजा दर्शन करन बोलावे। कि
खाने कूं आवे ॥ वाकूं चलकरि दर्शन दीजे। किरपा प्यार बहुतही
हमतो उनकी सदा कहावें। नित उठिकरि मुजरे को जावें ॥ हांती
घरही जानो। उठिये चलिये सकुच न मानो १८४ पाछे तपसी आगे
ऐसे राज दुआरे चाला ॥ जा राजा कूं दई अशीशा। राजा
[illegible]

रा॥ वेगहि उठि जंगल कूं गया। चरणदास कहैं रमता भया १८५॥

दो० जो इन्द्रिनके वश भयो यही हाल हैजाय॥
पछतावा मन में रहै करै हाय दुखहाय १८६

चौ० पांचौं चोर महादुखदाई। सो या जगमें देह फँसाई॥ तन मन बहु व्याधि लगावैं। कायिक वाचिक पाप चढ़ावैं॥ करम लगा बहुतै भरमावै। यम के छप्पन त्रास दिखावै॥ फिर चौरासी माहिं फिरावै। जठर अगिनिमें ताहि तपावै॥ जन्म मरण भारी दुख पावै। मानुष देहका सर्वस जावै॥ तीन लोकमें डोलै हाला। सुरपुर मृत्यु और पाताला॥ कैसे मुक्ति धाम कूं पावै। जो इन्द्रिन के वश हो जावै॥ छूटै जब गुरु किरपा करैं। चरणदास के शिर कर धरैं १८७॥

दो० स्वारथही के सब सगे कुटुंब मित्र कुल गोत्र॥
परमारथ समझावई जो दयाल गुरुहोत्र १८८
परमारथ में दुख मिटै कलह कलपना जाय॥
स्वारथ माहीं सुख नहीं तामें चित्तलगाय १८९
स्वारथ में चिन्ता घनी जो छांकर हो गेह॥
बिना आग की चिता में जीवत जरिहै देह १९०
चिन्ता घट में नागिनी ताके मुख हैं दोय॥
निशि दिन खाये जातहैं जानसकै नहिं कोय १९१
ताघट चिन्ता नागिनी जामुख जप नहिं होय॥
जो टुक आवै यादभी उहीं जाय फिरि खोय १९२
चिन्ताही सूं लगत है चरणदास उर आग॥
तहां ध्यान हरिचरण को कैसेही अब लाग १९३
जक्त वासना के विषै घर चिन्ता का जान॥

१ काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य २ देह सम्बन्धी ३ वाक्यसम्बन्धी

॥ परमारथ उपजै नहीं मन नहिं पकड़ै धीर १६५
धीर बिना नहिं ध्यान है निश्चल जप नहिं होय॥
जो चाहै हरिभक्त कूं जक्त वासनो खोय १६६
जबलग जग सूं प्रीति है तबलग दुःख अपार॥
भय भारी चिन्ता घनी भवन पिछानोदार १६७
जग सूं छुटि बाहर परै उसी समय सब चैन॥
उपजै आनंद परमही तहँ कुछ लैन न दैन १६८
रहै एक हरिभक्तिही बाधा सब छुटि जाहिं॥
जबै राम अपनो करैं वेगहि पकरैं बाहिं १६९

चौ० तातें सुन मन मेरे मीत । जक्त छुटनकी राखो चीत॥ ऐसा अवसर फिर नहिंपावो । काहे मानुप देह गँवावो॥ संगी तेरा नहिं धनधाम। तू क्यों पचे मूढ़ बेकाम॥ पिछली गई तासकूं रोय । आगें रहियो हिम्मत खोय॥ इकइक घड़ी अमोलक जान । चेत चेत गतहोय अजान॥ अपने घरका करो सँभाल । ललकारत आवतहै काल॥ यातें कीजै यहीविचार । डारि सिदौसी जगजंजार॥ शुकदेव कही हो चरणहिंदास । हरिके चरण कमल हरि बास २००॥

दो० यामें ढील न कीजिये यह विचार मन आन॥
चरणदास यों कहत हैं यह गो यह में दान २०१
आयुर्दा यों जात है जस तरुवरकी छांह॥
चेत सितावी भक्ति में तजो जक्त की बांहें २०२
तहीं पकरो जक्त नें तेरी पकरो आय॥
ज्यों नलिनी को सुवटा धोखे पकड़ो जाय २०३

चौ० जैसे बांदर आपहि फँसिया । समझ्यान मनमाहीं हँसिया॥ मूठ चनों की जो वह तजता । तौ काहेकूं फँसा जु रहता॥ ज्यों कांटेसूं मच्छी लागी। आपहि आई चली अभागी॥ सरवर में तरवरकी छाहीं । त्यजपो

१ मनोरथ २ सबेरेरी ३ इष्ट ४ वासना ५ बकरी॥

देखि गिरी ता मांहीं ॥ जैसे पक्षी जाल मँझारा । आपहि आय फँसा वजमारा ॥ खन्दक में हाथी आ परिया । लैन गयो कोउ आपहि गिरिया ॥ बाजत बीण मृग चलि आया । प्रकर कौन चंचल कूं ल्याया ॥ योंहीं तुम अपनी गति जानो । आपहि बंधे यही पहिचानो ॥ ऐसे जगते तू नहिं पकड़ा । चरणदास कहैं योंहीं जकड़ा २०४ ॥

दो० अबकी चूके चूक है फिरि पछिताया होय ॥
जो तुम जक्त न छोड़िहौ जन्म जायगो खोय २०५
छोड़ जक्तकी वासना यही जु छुटन उपाव ॥
ये मन ऐसी धारिये अबहीं नीको दांव २०६
जग माहीं न्यारे रहो लगे रहो हरिध्यान ॥
पृथ्वी ऊपर देही रहै परमेश्वर में प्रान २०७
ज्यों तिरिया पीहर बसै सुरति पिया के माहिं ॥
ऐसे जन जग में रहैं हरिकूं भूलैं नाहिं २०८
ज्यों किरपण बहु दाम हीं गाड़ि जिमीं के बीच ॥
सदा वोहि तक्तो रहै सुरति रहै ताबीच २०९
तन छूटे हो सरप ही जा बैठे वा ठौर ॥
जहां आशा तहँ वास है कहूं न भरमे और २१०
चित रहै गोविंद के विषे जग में सहजे सुभाय ॥
तन छूटे हरिकूं मिलै चरणकमल लपटाय २११
जग त्यागो बैरागले निश्चय मनकूं लाय ॥
आठपहर साठोघरी सुमिरत सुरति लगाय २१२
सदसूं रहु निर्वैरता गहो दीनता ध्यान ॥
अंत मुक्तिपद पाइहो जगमें होय न हान २१३
चरणदास यों कहत हैं बड़ी दीनता जान ॥
औरन की तो क्या चले लगे न मायाबान २१४

१ नैहर ॥

परमारथ उपजे बढ़े मन नहिं पकड़े धीर १९५
धीर बिना नहिं ध्यान है निश्चल जप नहिं होय ॥
जो चाहै हरिभक्ति कूं जक्त बासना खोय १९६
जबलग जग सूं प्रीति है तबलग दुःख अपार ॥
भय भारी चिन्ता घनी भवन पिछानौदार १९७
जग सूं छुटि बाहर परे उसी समय सब चैन ॥
उपजे आनँद परमही तहँ कुछ लैन न दैन १९८
रहे एक हरिभक्तिही बाधा सब छुटि जाहिं ॥
जबै राम अपनो करैं बेगहि पकरैं बाहिं १९९

चौ० ताते सुन मन मेरे मीत । जक्त छुटनकी राखो चीत ॥ ऐसा अवसर फिर नहिंपावो । काहे मानुष देह गँवावो ॥ संगी तेरा नहिं धनधाम तू क्यों पचे मूढ़ बेकाम ॥ पिछली गई तासकूं रोय । आगे रहियो हिम खोय ॥ इकइक घड़ी अमोलक जान । चेत चेत मतहोय अजान ॥ अप घरका करो सँभाल । ललकारत आवतहै काल ॥ याते कीजे यहीविचार डारि सिदौसी[1] जगजंजार ॥ शुकदेव कही हो चरणहिंदास । हरिके चरणकमल हरि बास २०० ॥

दो० यामें ढील न कीजिये यह विचार मन आन ॥
चरणदास यों कहत हैं यह गो यह में दान २०१
आयुर्दा यों जात है जस तरुवर की छांह ॥
चेत सितावीं[2] भक्ति में तजो जक्त की बांहें २०२
तुही पकरो जक्त नें तैंहीं पकरो आप ॥
ज्यों नलिनी को सूवटा धोखे पकड़ो जाय २०३

चौ० जैसे बांदर आपहि फँसिया । समझवान मनमांही हँसिया ॥ मूठ चनों की जो वह तजता । तौ काहेकूं फँसा जु रहता ॥ ज्यों कांटेसूं मच्छी लागी । आपहि आई चली अभागी ॥ सरवर में ~

१ मनोरथ २ सबेरेही ३ हठ ४ बासना ५ बकरी

कलिमल सब छुटि जायँगे पातक रहै न कोय २२७
अरसठ तीरथ तो विषे बाहर क्यों भटकाव ॥
चरणदास यों कहत हैं उलटाहो घर आव २२८
श्वासा सँभल विचारिकरि तहां करो विश्राम ॥
जाते हरिहीं हरिकहो आवत कहिये श्याम २२९
श्वासा लेवें नाम बिन सो जीवन धिक्कार ॥
श्वासं श्वासमें राम जप यही धारणाधार २३०
उलट पलट जप रामही टेढ़ा सीधा होय ॥
याका फल नहिं जायगा कैसेहीलो कोय २३१
खाते पीते नामले बैठे चलते सोय ॥
सदा पवित्तर नाम है करै ऊजलो तोय २३२
नीचन कूं ऊंचा करै ऊंचन को कर देव ॥
देवन कूं हरिही करै रहै न दूजा भेव २३३
भरमत भरमत आइया पाई मानुष देह ॥
ऐसो अवसर फिरि कहां नाम सिताबी लेह २३४
कै घरमें कै बाहरे जो चित आवै नाम ॥
दोनों होहिं बराबरी कै जंगल कै ग्राम २३५
करै तपस्या नाम बिन योग यज्ञ अरु दान ॥
चरणदास यों कहतहैं सबही थोथे जान २३६
अधिकी ऊंचा नाम है सब करणी का जीव ॥
अष्टादश अरु चारिका मथिकरि काढ़ा घीव २३७
चारोयुग मे देखिले जिन जपिया जिन पाव ॥
टेक पकरि आगे धँसे परा न पीछे पांव २३८
जैसी गति उनकी भई गावत साधु पुरान ॥
वैसी तेरी होयगी यह निश्चय करि जान २३९

अठारह पुराण ४ वेद ॥

दया नम्रता दीनता क्षमा शील संतोष॥
इनकूं लै सुमिरण करै निश्चय पावै मोष २१५
ये सब लक्षण राम में प्रकटत देखें मोहि॥
जो वै आवैं तुझ विषै प्यारकरैं हरि तोहिं २१६
हरि सूं प्रीति लगायकै सब सूं लेहि उठाय॥
रहै सदा इक रामहीं और सकल मिटिजाय २१७
मिटते सूं मत प्रीतिकरि रहते सूं करि नेह॥
झूठे कूं तजि दीजिये सांचे में करि गेह २१८
सांचा हरिका नाम है झूठा यह संसार॥
शुकदेवकही चरणदासहो सुमिरणकरो विचार२१६
दशइन्द्रिन कूं खैंचकरि अभय अमर फलचाख॥
सहजहि सुमिरण होतहै तामें मनकूं राख२२०
मानसरोवर देहमें मुक्ताहल जो स्वास॥
चुगिये हंसस्वरूपह्वै खुलै कर्मकी गांस २२१
अजपा को यहि अर्थ है बिना जपेही होत॥
कछुवाकी ज्यों सिमटकरि तहां लगावो गोत२२२
आवतही कूं देखिये जाते कूं जो निहारि॥
ऐसे सुरति लगाइये चरणदास हियधारि २२३
सकारैतन छीजये हकारैं सुख होय॥
ऐसे सुमिरण संत कूं जानै बिरला कोय २२४
नाभिहि सेती उठति है फिर तामाहिं समाय॥
याको भेद अपार है सतगुरु देहु बताय २२५
नाभि नासिका माहिंकरि घाल हिंडोला झूल॥
उपजै अनिआनन्दही रहै न दुखका मूल २२६
नदी सिन्धुकी लहरहै तामें न्हान सजोप॥

चरणदास ह्वै जागिये आलस सकल गँवाय २५२
सोवनहीं में हानि है जागन में बहु लाभ ॥
बुद्धि उपजही होतहै मुखपर चढ़ै जु आभ २५३
दिनकूं हरिसुमिरणकरो रैनि जागकरि ध्यान ॥
भूखराखि भोजनकरो तजि सोवनकी बान २५४
चारि पहर नहिं जगिसकै आधीरात सुजाग ॥
ध्यानिकरो जपहीकरो भजन करनकूं लाग २५५
जो नहिं श्रद्धा दोपहर पिछिले पहरे चेत ॥
उठ बैठे रटना रटौ प्रभुसूं लावहि हेत २५६
जागै ना पिछिले पहर ताके मुखड़े धूल ॥
सुमिरै ना करतारकूं सभी गँवावै मूल २५७
जागै ना पिछिले पहर करै न आतम ध्यान ॥
ते नर नरकै जाहँगे बहुत सहैं यमसान २५८
जागै ना पिछिले पहर करै न गुरुमत जाप ॥
मुंह फारैं सोवत रहै ताको लागै पाप २५९
पिछिले पहरे जागि करि भजन करै चितलाय ॥
चरणदास वा जीवकी निश्चय गति ह्वैजाय २६०
पिछिलो पहरे जागिकरि भरिभरि अमृत पीव ॥
विषयजक्तकी ना रहै अमरहोय करि जीव २६१
जन्म छुटै मरणा छुटै आवागवन छुटिजाय ॥
एक पहर की रातमूं बैठा हो गुण गाय २६२
पहिले पहरे सब जगै दूजे भोगी मान ॥
तीजे पहरे चोरही चौथे योगी जान २६३
[illegible]

परनारी के आपनी तिनका नाहीं ज्ञान २७७
जैसा तैसा खाय करि पेट भरे भरि लेह॥
पड़कर सोवे ओरलों सो सूकर की देह २७८
हरिचरचा बिन जो बके सो कूकर की भूंस॥
कहि रणजित वह साँझलों खाय धूंसही धूंस २७९
जो पावे सोई चरे करे नहीं पहिचान॥
पीठ लदे हरिना जपै ताकूं खरही जान २८०
रोझ जान वा देह कूं ताकूं नहीं विचार॥
फिरे बिना मर्यादही बहुता करे अहार २८१
बहुता किये अहारही मैली रहे जु बुद्धि॥
हरि के निर्मल नामकी कैसे आवे शुद्धि २८२
सूक्षम भोजन खाइये रहिये ना परि सोय॥
ऐसी मानुष देह कूं भक्ति बिना मत खोय २८३
जन्म अलोही जात है ज्यों कूवे सैलाव॥
दौलत मृगकी छाँह को नेक नहीं ठहराव २८४
समझ सिताबी भक्ति ले नेक न ढील लगाव॥
आपा हरिकूं दे चुको याको यही उपाव २८५
जगका कहा न मानिये सतगुरु सों ले बुद्धि॥
ताकूं हिय में राखिये करो सिताबी शुद्धि २८६
गुरु सेती सतगुरु बड़े परमेश्वर के रूप॥
मुक्ति छाँह पहुँचाय दें जक्त छुटावें धूप २८७

कुण्डलिया॥ पहिला गुरुदाई कहूं दूजे माईजान। तीजा गुरु खिलावड़ी[१] चौथा पिता पिछान। चौथा पिता पिछान पाँचवें पाधों[२] जानो। कनफूका गुरु छठा सात पूजा दे मानो॥ सतवां सतगुरु जानिये जगसूं करें उदास। मुक्तिधाम सोइ देतहैं कहें चरणहींदास २८८॥

१ जो लड़कपन में खिलावें २ आचार्य॥

जे कोइ विरही रामके तिनकूं कैसी नींद॥
शस्तर लागा नेहका गया हियेको बींध २६५
तिनसे जग सहजै छुटा कहा रंक कह भूप॥
चलेगये घर छोड़िकै धरि विरक्तका रूप २६६
जिनको मन विरक्त सदा रहो जहाँ चितदोय॥
घर बाहर दोउ एकसा डारी दुविधा खोय २६७
सोये हैं संसार सूं जागे हरिकी ओर॥
तिनकूं इकरसही सदा नहीं सांझ नहिं भोर २६८
उनकूं नींद न आवई राम मिलनकी चीत॥
सोवै ना सुखसेज पै तजिकै हरिसों मीत २६९
कैसे वे हरिसूं मिले जिनके ऊंचे भाग॥
कैसे वे हरि त्यागिकै रहे जक्त सूं लाग २७०
सोवन जागन भेदकी कोइक जानत बात॥
साधूजन जागत तहां जहां सबनकी रात २७१
जो जागे हरिभक्ति में भवसागर में ख्वार॥
जो जागे संसार में सोई उतरे पार २७२
कै जागा ऊंका भरा कै जागा वश काम॥
कै जागा जग टहलमें लाग रहा धनधाम २७३
ऐसे जन्म गँवाय दिय महामूढ़ अज्ञान॥
चौरासीमें फिरि चले मनका कहा गुमान २७४

हि छिनमेंकियो। निराकार आकारसों चरणदास जिहि मनदियो३००॥
कवित्त॥ वही तो अडिग्ग राम चौथे पद वास जाको वही तौ अडिग्ग
हैं मथुरा में आयेहै। वही तौ अडिग्ग राम योगी जाको ध्यानधरैं वही
अडिग्ग राम सीतापति पायो है ॥ वही तौ अडिग्ग राम सभीठाम
रह्यो वही तौ अडिग्ग राम सन्तन सुहायो है । वही तौ अडिग्ग राम
चरणदास चेरो जाको वहीतौ अडिग्ग राम काया खोजि पायोहै ३०१ मा-
भ्रमफन्द देख साधनको संगपेख रामजूको पहिरि भेख कंचन तनतावरे।
नकूं पहिचान ज्ञान एकाएकी सबै जान नादके गहेते तू अनाहद बजा-
रे॥ उलटि पलटि काया बीच चारो कर दूर नीच ऐसी विधि मेरुपै समीर
चढ़ावरे। कहैं चरणदासा गगन मध्यकरौ वासा जहां नहीं शीत उष्ण
निरभय पद धावरे ३०२॥

दो० दुर्योधन रावण गये अरु यादव परिवार॥
चरणदास थिरको नहीं होय मिटै संसार ३०३

कवित्त॥ भोरसो बिहानो जात ढरैगी दुपहरीसी समझके विचारि देखि
चली अबेरातहै। भवँतहै शचान काल तेरेपर तकिरहो छिन पलकी खबर
नाहिंकरै आप घातहै॥ दारासुत सम्पति सब सपने को सुख भयो जानोगे
जभी जब छूटिजाय गात है। कहैं चरणदास अब तजै क्यों न विषयवास
पानी में नाव जैसे आव चलीजात है ३०४ कुपारगसूं भाज और लाज
खोटे करमनसूं चौरासी के त्रासनसूं मूढ़ क्यों न लजरे । साधुन के संग
बैठि धर्महूकी नाव लेहि गुरुहूको ज्ञान राखि प्रेमभक्ति सजरे॥ छूटै जब
नारी यमदेवें दुखभारी डारैं नरक मँझारी आवागमन क्यों न तजरे । कहैं
चरणदास अब तजै क्यों न विषयवास रामके सँवारे तू रामराम भजरे ३०५॥
सवैया॥ भूलिरहो जगमें जड़ता वश दारासुतासुत प्रीतिबढ़ावै । इनसूं
मन बांधिरहो गृहबीच सो अन्तसमै कोइपास न जावै॥ आनिगहैं यमराज

दो० गुरु मिलते ऐसे कहै कछू लाय मोहिं देह ॥
सतगुरु मिलि ऐसे कहै नाम धनीका लेह २८६
कनफूका गुरु जगतका राम मिलावन और ॥
सो सतगुरु को जानिये मुक्ति दिखावन ठौर २९०
गलियारे गुरु फिरत हैं घर घर कंठी देत ॥
और काज उनकूं नहीं द्रव्य कमावन हेत २९१
सतगुरु डंका देत हैं भक्ति रामकी लेहु ॥
पहिले हमकूं भेटही शीश आपनो देहु २९२
सो सतगुरु शुकदेव हैं समझि हिये में राखि ॥
तिनके शरणै आवमन चरणदास कहैं भाखि २९३
यह सिगरे उपदेशही मैं आपन कूं कीन ॥
मोमन कूं आपाघना कहीं होय आधीन २९४
सतगुरु सूं मांगौं यही मोहिं गरीबी देहु ॥
दूर बड़प्पन कीजिये नान्हाही करिलेहु २९५
जनक परम[illegible] ।
यही अर्ज [illegible]
चारौयुग के [illegible] ।
चरणहिं दासा होयकै तुम्हैं करूं परणाम २९७
आदिपुरुष किरपा करो सब अवगुण छुटिजाहिं ॥
साधहोन लक्षण मिलें चरणकमलकी छांहिं २९८
तुम्हरी शक्ति अपार है लीला को नहिं अन्त ॥
चरणदास यों कहत हैं ऐसे तुम भगवन्त २९९

छप्पै ॥ रच्यो आप में जगत रूप नारायण कीन्हो । दूजे लक्ष्मी भई बहुरि पानी रँग भीन्हो ॥ नाभि कमल फिरि भयो जहां ब्रह्माजी उपजे । विधिकी त्रिकुटी माहिं तहां शंकरजी निपजे ॥ चारि वेद अरु विष्णु है सकल

१ नादान ॥

अजपा गोत विचारिले चरणदास यहिमेव ३१४
भक्तिपदारथ उदयसूं होय सभी कल्याण ॥
पढ़ै सुनै सेवन करै पावै पद निरबाण ३१५
भक्तिपदारथ में कही कछु इक भेद बखान ॥
जो कोइ समझै प्रीतिसूं छूटै यमदुखसान ३१६
पाठकरै मनमें धरै बहुरूं करै विचार ॥
कहैं गुरु शुकदेवजी उतरै भवजलपार ३१७
जयजय श्री शुकदेवजी तुम्हें करूं परणाम ॥
तुमप्रसाद पोथी कही भये जो पूरणकाम ३१८
हिरदय में शीतल हुये तपनिगई सबदूर ॥
या बाणी के कहेते कायर मन भयो शूर ३१९
चन्दन चरचै पुष्पधरै बहुरि करै परणाम ॥
कथा बांचि सबही सुनी कहापुरुष कहवाम ३२०
कहै सुनै जो जो प्रेमसूं वाकूं राखै याद ॥
चरणदास यों कहतहैं बंजिहौ पूरे साध ३२१

इति श्रीचरणदासजीकृतभक्तिपदार्थसम्पूर्णम् = ॥

थ मनविकृतकरनगुटकासारप्रारम्भः॥

दो० नमोनमो श्री व्यासजी सतगुरु परमदयाल ॥
ध्यान किये आशानशै लगै न जगत बयाल १

अष्टपदी ॥ नमोनमो शुकदेव तुम्हें परणाम है । तुमकिरपासों आय मिलैं घनश्यामहै ॥ तुम्हरी दयासों होय जु पूरणयोगहै । तनकी व्याधाछूटै मिटै मन रोगहै ॥ तुव किरपासों ज्ञान पदारथ पावई । उपजै सार विचार

जवै सवही मिलि प्रीतम रामवतावै। चरणदास कहैं चेत। नर मूरख धन कोइ काम न आवै २०६ ॥

कवित्त ॥ धोवै भरम देवनकूं भीतनके लेवन कूं कोई संग साथी भीरपरे तेराहे। परसताहे चणडकी भूत अरु शीतलाकूं भजे क्यों न यम कटे यमवेराहे ॥ भैरों अरु वराही पाखण्ड पूजा सभी करें लगाहे नहीं नैनन न हेराहे। चरणदासकूं सब सन्तनको चेरो कहै ऐसो जग अन्ध कर्मनने घेराहे २०७ ॥

दो० यन्तर टोना मूड़हलावन और कीमियाँ झूठ॥
चरणदासकहैं सबभगालहे यह जगलीन्हालूट२०८॥

कवित्त ॥ भूतनकूं सेवै सो भूतनमें जाय मिले जादूको सेवै सो चल ताकी भाईसूं। देवतोंकूं सेवै तो देवलोक वासलहे औषधीकूं सेवै तो लाप रावराईसूं ॥ कीमियां सेवै तो खराब होय दुनियामें ऐसे धन खोवै सुनावे नहिं भाईसूं। कहें चरणदास हम इनने कूं गानें नाहिं देखि सबी ड़ि मन लगो है कन्हाई सूं २०९ ॥

कुण्डलिया ॥ पारामारा ना मरै गन्धक होय न तेल। केते पचिपचि गये शिरमें मिट्टी मेल ॥ शिरमें मिट्टीमेल भटककरि जन्म सिरायो। तर्द सूटि र्द फिरे यहीं कुछ हाथ न आयो ॥ बौरे हरि क्यों भजै न काहे जन्म सिरायो। चरणदास कीमियां झूठ शुकदेव सुनायो ३१० ॥

अरिल्ल ॥ सात पांचकी सेव तजो लागि एकसूं। साधनकी करि से मुद्दोमत वेषसूं ॥ वेषी माहिं अलेख यही तू जानियो। चरणदासकी सी निश्चय करि मानियो ३११ ॥

दो० आपे भजन करें नहीं औरे मने करें ॥
चरणदास कहै वे दुष्टनर भर्म भर्म नरके परें ३१२
औरनकूं उपदेश करि भजन करें निष्काम ॥
चरणदास कहै वे साधुजन पहुँचें हरिकेधाम ३१२
शून्य शहर हग वसन हैं अनहद है कुलदेव ॥

ह्रैंरा कहिये। माखी हाथी मृगा मीने अरु पिंगला लहिये ॥ चील्ह बाल कन्या कहूं तीर बनावनहार। सांप माकरी भृंगजो चौबीसों उरधार १० ॥

दो० भिन्न भिन्न अब कहतहौं जुदो जुदो विस्तारि ॥
ताको सुनि करि चेतियो चरणदास नर नारि ११

अष्टपदी ॥ दत्तात्रेय कि बात सकल[1]अब गायहौं। बीसचारि गुरुकिये ताहि समुझायहौं॥ जिसकारण जिसहेतु जु उन ऐसीकरी। जो जो शिक्षालई समझ हिरदयधरी॥ जासों भजे मनरोग जक्त व्याधानसी। उपजि परमसंतोष क्षमा हिय आवसी॥ परम भये आनंद पारमपद पाइया। जीवन्मुक्ता होय कि चाह उठाइया॥ सोइ कहूं अब साध सबै सुनि लीजिये। शुकदेव परीक्षित सों कहो सांच पतीजिये॥ दत्तात्रेय अवतार श्रीभगवान के। राजा यदुसों बोलि बचन भाषत भये॥ हमने गुरू चौबीस करे संसार में। तिनको ज्ञान विचार कहूं निर्धारमें॥ पहिले गुरुकी शरणगही बहुभीति सों। उन दीनो उपदेश मंत्र जो रीतिसों १२ ॥

दो० सतगुरु ने किरपा करी धरो हाथ मम शीश ॥
यही कही सुमिरण करो ध्यान करो जगदीश १३

अष्टपदी॥ काया छीजतै देखि यही मनमें धरो। बिरथा खोवन आव नेम तप को करो॥ गहि विरक्तकी रीति तमी गृहको तजो। रामभक्ति को चाव हमारे मन रचो॥ जगसों रहो उदास वास हरिपद जहां। छुटि छुटि जावें ध्यान न मन लागे जहां॥ बालक गारी देइ कोई बेलानहीं। शिरपै डारें खेहसोई वेकाजहीं॥ हँसि हँसि ताली पीट जु हमरे सँगलगें। मैंहूं चलो उठाय तो वे आगे भगें॥ ताते निशिदिन क्रोध आपने मनधरूं। हरि सुमिरण गो भूलि जक्तमें यों फिरूं॥ अब शिक्षा गुरु किये चौबिसो भेदही। सो अब वर्णन करूं छुटै सब खेदही॥ तिनसों सीखीचाल सभी उरमें धरी। चरणहिं दासा होय सुरति आनँद भरी १४ ॥

---

१ पद्धती २ पदव ॥

असारे छुटावई ॥ तुम्हरीदया सों होय भक्ति निसनोरहै । हियेसरोवरे
जु प्रेम हिलोरहे ॥ तुमकिरपा वैराग दूरलगि आवई । सकल वासना
परमपद पावई ॥ सब गुणदायक लायक परमदयालहौ । ममहिरदय
आय भेद सबही कहौ ॥ मोसे कछु नहिंहोय जु तुमबिन नाथजू । नि
रहै तुव हाथ जु मेरे माथजू ॥ अरजकरै रणजीत सुनो गुरुदेवजी । मो
सेती भाषिकहौ सबभेवजी २ ॥

दो० एकादश भागवतमें जाकी यह गति जान ॥
दत्तात्रेयी ने कह्यो राजा यदु सों ज्ञान ३
अब में भाषा कहतहौं तुमहीं करौ सहाय ॥
ज्योंकी त्यों मुखसे निकसि पूरीही ह्वै जाय ४
सुनियो ज्ञानी सन्तजन रहन गहनकी चाल ॥
जो कोइ लै हिरदय धरै होवै तुरत निहाल ५
चरणदास हौं कहतहौं परमारथ के काज ॥
जो अँग श्रीभागवत में साधु होनके साज ६
गुरु शुकदेव प्रताप सों कहूं विचार विवेक ॥
दत्तात्रेयी ने किये चौबीसो गुरु देख ७

कुण्डलिया ॥ एक दिना यदु भूपही खेलन गये शिकार । तहां न
के निकट जो द्वां थी अधिक उजार ॥ द्वां थी अधिक उजार एक अव
लेटे । मूरति पुष्ट प्रसन्न जक्तके भय सब मेटे ॥ राजा देखि प्रणाम करि
शीश नवाय । पाये आनँद कहा तुम मोसे कहौ उपाय ८ ॥

दो० बोले दत्तात्रेय जब सुनु हो भूप विशाल ॥
चौबिस परिक्षा गुरु किये तासों भये निहाल ९

कुण्डलिया ॥ पृथ्वी पवन अकाशहै नीर अग्नि शशि भानै । कपोत
गुरू अजगर लखो ओर सिंदको जान ॥ ओर सिंदको जान पतंगा भै

१ दिव्या २ जल ३ चंद्रमा ४ सूर्य ५ कबूतर ॥

अष्टपदी ॥ काहूको वह भलो बुरोहू ना कहै। ऐसे विरक्तरहै सभी दुख सुख सहै ॥ हरि सुमिरण में मगन सदा आनँद रहै। भलो बुरो नहिं मानै एकतां दृढ़ गहै॥ दूजे गुरु कियो पवन सीखलई जासुकी। दोय भांति पहिंचान हिये धरि तासु की॥ इक दिन बाग के माहिं सहजही मैं गयो। देखन लागयो फूल जाय ठाढ़ो भयो॥ पुष्पन सों लगि पवन बास मोहिं आइया। जबहीं कीन्हों ज्ञानवास सब पाइया॥ वह तो अतिहि सुगन्ध हरप उपजावई। फिर आई दुर्गन्ध बहुत अनखावई॥ गन्धहि सों लगि पवन आप गन्धहि भई। फिरआई बिन गन्ध शुद्ध निर्म्मल वई॥ वाको देखि स्वभाव यही मन आइया। चरणहिंदासा होय अंग उपजाइया २०॥

दो० एक दिना इच्छा करी भिक्षामांगी जाय॥
अपनी श्रद्धा उन दियो भोजन करमें लाय २१।

अष्टपदी ॥ वाकी अस्तुति नाहिं कछू मुखते कही। फिरि गयो दूजे द्वार दई भिक्षा नहीं॥ जाकी निंदा नाहिं कछूक उचारिया। अस्तुति निंदा त्याग यही जु विचारिया॥ जिन कछु दीन्हों नाहिं नहीं औगुण धरो। जो कछु पहिले आयो सोई भोजन करो॥ जो कहुं अपने काज गयो भलि ठांवहीं॥ गिरहण कीन्हों नाहिं रंग नहिं लावहीं॥ जो गयो भोंड़ीठौर बुरो नहिं जानियां। आतमरूप सँभाल जहां मन आनियां॥ सबही सों निर्लेप सबन के माहिं हूं। सहज भवनमें आय सहज कहि जाहिहूं॥ परालब्धजो पाय ताहि भोजन कियो। नातो करि परणाम बैठि योंहीं रह्यो॥ जिह्वा लौहीं जान स्वाद भोजन सभी। इकसम सबहीहोयँ उदर जावैं जभी॥ अबआयो सन्तोप कल्पना सब गई। चरणहिं दासा भयो जभी यह मति लई २२॥

दो० तीजे गुरु आकाश को कीन्हो सभी सँभार॥
जाकी मतिके लेतही पायो ब्रह्म विचार २३

अष्टपदी ॥ तामें बरसै मेह और आंधी चलै। बिजली चमक वामाहिं

१ जोबिना मांगे मिलै २ पेट॥

दो० पहिले गुरु पृथ्वी किया तीन सीखलइ तास॥
गिरिवर तरुवर मही जो भयो चरण को दास १५.

अष्टपदी॥ पहिले पृथ्वी गुरू हमारो जानिये। ताते लइतन तीन सीख हिय आनिये॥ पहिले पर्वत एक मही ऊपर लखा। जाके निकटे जायजु चढ़ि बैठा शिखा॥ कोइ ऊपर चढ़ि जाय कोई ओवै तले। जल बरषै ना बहै पवन सों ना हिलै॥ वा पर्वतकी सीख बुद्धि में मानियां। देह लोभ दियो त्याग जु थिरता आनियां॥ क्रोध दियो बिसराय जो तामस डारई। कोउ कहौ दुर्बचन कोउ क्यों न मारई॥ क्रोध लोभ जो होय करै मन भंगहै। कैसे सुमिरण होय लगै हरि रंगहै॥ क्रोध लोभ छुटिजाय रहन यु अगाध है। पर्व्वत की समहोय जो निश्चल साधहै॥ वृक्ष कहूं अब जान आगु मति पाइया। कहै चरणको दास जो चित्त लगाइया १६॥

दो० तरुवर ने काया धरी परमारथ के हेत॥
कोऊ बैठे छाँहँ में कोऊ कारज लेत १७

अष्टपदी॥ दूजे देखे वृक्ष धरणि ऊपर भले। तिनहूंकी लइ सीख गयो उनके तले॥ मन न हुती यह बात जु परकारज करूं। या प्राणीके काज नहीं करतो फिरूं॥ जब आई यह रीति वृक्षकी दृष्टिमें। मैं लीन्ही सोइ धारि भलीविधि सृष्टिमें॥ कोई बैठे छाँहँ कोई डारी हनै। कोई ले फल फूल वृक्ष कछु ना भनै॥ परमारथके काज वृक्षदेही धरी। सकल जीव ज्योसाह यही मनसा करी॥ जो विरछसों काज कोई आपनो कहै। वाको नाटै नाहिं सभी शिर पर सहै॥ काहूको कछु काज जो काया सों सरै। यह शिक्षा भलिभांति वृक्षकी मनधरै॥ तीजे शिक्षा और महीकी धारिया। चरणहिंदासा होय अहं को मारिया १८॥

दो० कोई खोदे नीचको कोई खोदे कूप॥
अरु ऐसे कारज किये ऐसो धरो स्वरूप १६

---

१ दास्य उत्कार २ कहेंहार॥

यण रूप ध्यान आनँद लयो ॥ कछू मैल मनमाहिं कबहुं व्यापै नहीं। ल अरु साधु भांति एकजानो तहीं ॥ जो कुचील कछु होय सो जलसों इये। वाको कीजै शुद्ध मैल सब खोइये ॥ साधु ऐसा होय ज्ञान सुख उ-रै। श्रोताके सब पाप ताप व्याधाहरै ॥ तातेही उपदेश भक्तिका कीजिये। नीच ऊंच मतदेख वृक्ष ज्यों सींचिये। मीठे शीतल नीरको यह गुण ली-जिये। मीठा सबसों बोलि परमसुख दीजिये ॥ गुरु शुकदेव प्रतापसों जल गुण गाइया। चरणहिं दासा होय न मनता आइया २६ ॥

दो० पंचम गुरु कियो अग्नि को समझ निहारि निहारि ॥
उत्तम मध्यम जारदे राखै कछु न विचारि २७

अष्टपदी ॥ ब्राह्मणहू करै होम शूद्र जोपै करै। दोउपवित्र करि देइ दोऊ के अघहरै ॥ ऐसे साधूलोग जहां भोजन करैं। याको पावन करैं पाप सबही हरैं ॥ गृही जु सेवाकरै आश ऐसी धरै। विरकत भोजन किये पाप निश्चय जरै ॥ धान्य हमारी खाय जु साधूजन कभी। हमरे प्राछ्तजाहिं और व्याधा सभी ॥ साधूजन जो होय अग्निके भांतिही। सकलपाप करै छार जु वाकी कांतिही ॥ सदा गुप्तही रहै प्रकट किये होतहै। ऐसे साधूभेद छिपावै जोत है ॥ षष्ठम गुरु कियो चंद सदा इकसम रहै। कला घटै अरु बढ़े मावस लगनारहै। पूनोंको सब होहिं कला भरपूरही। चांदनि सब जगमाहिं वि-राजत नूरही ॥ शशिमण्डल इकभांति रहै नाहीं घटै। योंहीं आतमरूप चरणदासा रटै २८ ॥

दो० उतपति परलय देहको घटै बढ़ै दुखहोय ॥
आतम इकरस जानिये अविनाशी है सोय २६

अष्टपदी ॥ तातें कियो विचार ये कायों ना रहै। जन्म मरणहीहोय क-लाके ज्योंयहै ॥ परमातम इकभांति सदाही जानिये। घटै बढ़ै यह नाहिं योमनमें आनिये ॥ काया छोटी होय बड़ी पुनि होतहै। कबहूं हो मनमगन कबों रोवैहै ॥ आतमहीं नितजानि जु कायामें रहै। वही सदा इकभांति

१ पवित्र २ पूर्णमासी ३ देह ॥

और पावक जलै ॥ सदारहै निर्लेप और निर्मलरहै । सबही जग बा
आप निर्लेपरहै ॥ पवन हलावै नाहिं अग्नि जारै नहीं । ताहि न हि
नीर गेरै मारै नहीं ॥ लघुदीरघ नहिं होय पुरानहिं नारहै । नहिं
नहिं मार यार नहिं पारहै ॥ शब्द उठै बहु भांति यही जो मथोलहै । ज
पति परलयै माहिं सदा जो अडोल है ॥ यह नभ ब्रह्मसमान लखे इत
है । निरखि हिये की आंखि गयो सब भ्रांतहै ॥ भौंहे कनक के होहिं
के देखिया । कांस पितलके होयँ मटी के पेखिया ॥ सब माहीं आक
कही जानिया । यों घट घट में ब्रह्म सकल पहिंचानिया ॥ थिर
माहिं जु थावर अंगमें । न्यारा अरु सब बीच भली विधि रंगते ॥ जो
गयो फूटि रहो आकाशहूं । ऐसेहि काया विनशिरहै नित ब्रह्मजू ॥
अनित्य विचार जभी निश्चय भई । पायो आतमज्ञान सभी दुविधा गई
ना काहूसे वैर नहीं कहुं प्रीति है । ना काहू दुख देहुँ नहीं सुख रीति है
काहूसे नहिं डरूं न काहू सँग लगूँ । काहु कि शरण न जावँ न काहू
भगूं ॥ कहैं श्रीशुकदेव विवेक विचार सों । दत्तात्रेयी कह्यो कथा यदुराज
सों ॥ यह शिक्षा आकाश सों लीन्हीं जानिके । चरणहिं दासा भयो यही
मत मानिकै २४ ॥

दो० चौथे गुरु किय नीरहीं जाको सुनिय प्रसंग ॥
आप महाउज्ज्वल रहै मिलिजावै सब रंग २५

अष्टपदी ॥ जल ज्यों निर्मल होय सदा विरकत वही । तजै न शीतल
अंग बसै नितही मही ॥ गृही संग जो चलै बाट कबहूं कहीं । मनसों न्यारा
रहै लेप लागै नहीं ॥ ऐसो रखै विचार यथा वरषा समै ॥ जल मैला ह्वै जाय
खेह सँगही रमै ॥ संगति गुणसों होय जु गँदला आपही । जाड़े में ह्वै शुद्ध
लगै नहिं पापही ॥ समझी यों चितमाहिं संगको गुण यहै । निर्मल नीर
स्वभाव सदा उज्ज्वलरहै ॥ संसारी के संगसो जब मन फिरगयो । तब ना

१ अग्नि २ छोटा बड़ा ३ नाश ॥

कछु शोच न हियमाहीं लहे ॥ इकदिन कह्यो कपोत कपोतिनि साथहीं।
ये बचा अब बडेभये सब गातहीं॥ येतौरहें गृहमाहिं दोऊ हम बन चलें।
चुगलावें बहुत करें भोजन भलें॥ है करि निरसंदेह दोऊ वनको चले।
कहें चरणहींदास चुगन लागे भले २४॥

दो० पाछे बधिक जु आइया दीनो जाल बिछाय॥
पकरन की मनमें करी दीन्ह्यो घातलगाय २५

अष्टपदी॥ दोऊ गे वनमाहिं बधिक इक आइया। उन बचनको देखि के जाल बिछाइया॥ तापर किणका डारि आपतो छिपिरह्यो। बचन चुगा देखि भेद कछु ना लह्यो॥ यहकण कारण मातपिता बनकोरमें। सोपायो यहिठौर चुगें क्यों ना हमें॥ दोऊ उतरें तहां जबै मुख डारिया। तब वहि बधिकने जाल फंदको मारिया॥ आये कपोतिनि जबै शब्दनाहीं सुनो। घरमें पायेनाहिं शीश तबहीं धुनो॥ बचन कारण शब्द कियो हंकारिके। बोले पिंजर माहिं जु बचन निहारिके॥ देखि कपोतिनि जालमें यह मन आनियां। अपना जीवन अफल जगतमें जानियां॥ तनमें अतिदुखपाय कलपना बहु करी। कहें चरणहींदास बुरी आशाभरी २६॥

दो० जाल माहिं मोसुत फँसे जाय परों वा ठौर॥
विकलहोय चलिभे तबै कियो बिचार न और २७

अष्टपदी॥ मोह फंद बशहोय जाल माहीं परी। वाहू को गहि बधिक पिंजर माहीं धरी॥ आयो बहुरि कपोत लख्यो सुत बालहूं। इन बिन कैसे जिऊं मरौं बेहालहूं॥ परो जालके माहिं बहुत दुख मानिके। चारो गहि ले चलो बधिक सुख जानिकै॥ राजा मोमनें हुती जु सुत दाराकरू। निरखि लई यह सीख बहुरि नहिं चितधरू॥ वाको कीन्हों गुरू चरित यह देखिके। हरि सुमिरण में पगोरहूं जु विशेषिकै॥ मोह महादुखरूप सकल बिसराइ-या। लिये रहूं बैराग परमसुखपाइया॥ सदारहूं निर्बंध दुःख सब भाजिया। चरणकमलको ध्यान हियेमें साजिया॥ तहां बसों निशि भोर अंत नाहीं बहूं। चरणहिंदासा होयके निज आनंद लहूं २८॥

१ बहेलिया ॥

कोई ज्ञानीलहै ॥ ताते श्रीभगवानको सवठां पेखिके । मनमाहीं गहिशा फिरतहूं भेखिके ॥ सतवें गुरुकिया सूर जु शिक्षा दोलई । आठमहीने किए नीर सूखतवही ॥ चारमास वह आप फेरि वरषा करे । वा जलको कछु लोभ नहीं मनमें धरे ॥ ऐसे साधू होय जु कछु कोइदेतहै । वाको आर्थोभांति सोई वह लेतहै ॥ मोह न कवहूं करे जु कोई कछु चहै । चरणहिंदासा जानि सोई यह गति लहै ३० ॥

दो० लेते कछु हरषै नहीं देते दुख नहिं होय ॥
ऐसे निर्लोभी रहै चरणदासहै सोय ३१ ॥

अष्टपदी ॥ दूजे जो प्रतिविम्ब सूर को देखिये । जल भांडों के माहिं सघन अवरेखिये ॥ खोजिकै देखौ वाहि सूर तौ एकहै । घटघटमें प्रतिबिंब विचारि अनेकहै ॥ ना काहूसे वैर प्रीतिहू ना करे । सूरज एक निहारि सकल घट छविधरे ॥ ऐसेही निर्लोभ सदा निर्लेपहै । वाको साधूजान सो ऐसी विधिरहै ॥ अठयेंकियो कपोत गुरू मैं विचारिकै । निर्मोहित मनभयो तभी जु निहारिकै ॥ उठी एक मनमाहिं नारि सुत कीजिये । जगमें है निश्चिन्त बहुत सुख लीजिये ॥ सहज बागके माहिं जाय ठाढ़ोभयो । वृक्षपै एक कपोत कपोतिनि को लह्यो ॥ ता ऊपर उनगेह आपनो साजिया । बहुत प्रीति सुखमानि सकल दुख भाजिया ३२ ॥

दो० करि विचार मनमें धरी धन्यभाग सुखहोय ॥
हम समान या जगतमें और न दीखै कोय ३३ ॥

अष्टपदी ॥ भयो कपोतिनि गर्भ अण्ड दैवादिये । प्रीतिसों सेवन किये फूटि दैसुनभये ॥ केतक दिवसन माहिं पंख निकसे सभी । उड़िके बैठन लगे डारऊपर तभी ॥ निरखत बहु सुखमानि कपोत कपोतिनी । हमरे अति बड़भाग दियो यह सुख धनी ॥ एकरहै घर माहिं जु रक्षा धारने । दूजेवनमें जाय जीविका कारने ॥ वनसे चूंगा लाय वचन मुख डारई । ताते उनकी क्षुधा सकल निवारई ॥ जन्म सुफल मनजानि रैनदिन यों रहै । वसुधामें

१ सूर्य २ पारा ३ मुग ४ पृथ्वी ॥

चली आवे वही ॥ मिलि नहिं फिरै स्वभाव तासु को जानिये। ऐसे विरक्तरहे जगत में मानिये ॥ बहुते होय गँभीर थाह नहिं पावई । ऐसा साधु जानि राम मन भावई ॥ वर्षाऋतुकी नदीरलैं बहुवादसों । घटै बढ़ै वह नाहिं रहै मर्यादसों ॥ एकादश जो पतंग कहूं मैं सुनायकै । देखि दीपकी ज्योति गिरैहैं आयकै ॥ दीन्हो आप जराय हाथ कछु ना लगो । समुझिकामिनी रूप सो मैं दूरीभगो ॥ ज्ञान जाय अरु नरकपरै इस रीति को । सुन्दररूप निहारि करो मत भीतिको ॥४४॥

दो० फूल फूलपर बैठिकै उदरभरै तिस नाले ॥
सो भवँरा गुरु बारवां लई जु बाकी चाल ॥४५॥

अष्टपदी ॥ भिक्षा कारण मांगने घर घर जात हो । कोऊ देतो आनि कोऊ जु रिसातहो ॥ ताते शिक्षा भवँर कि यह उरमें लही । सूक्षम सबही पुष्पसों उन रसना गही ॥ तब मैं कियो विचार इकट्ठो लेतहै । देनहार को दुःख बहुतही देतहै ॥ नेक नेकही लेहु बहुत घरजायकै । उदर पूरणा करूं जु आनँद पायकै ॥ जितना होय अहार सोई अब लेतहौं । बासी नेक न राखि न काहू देतहौं ॥ अलिसुतकी यह रीति भूखभरि खावई । और दिना के काज न नेक बचावई ॥ फूलनको रस चाटि नहीं उनसों बँधै । ऐसे विरकत रूप जगत में ना फँधै ॥ चरणदिंदासा होय त्यागमन राखई । राजा सों इहिभांति ऋषीश्वर भाखई ॥४६॥

दो० देखि दशा मालीनकी तजो सकल संदेह ॥
मिटि दुविधा निर्भय हुये भई सुखारी देह ॥४७॥

अष्टपदी ॥ तेरह शहदकी माखी ताहि पिछानियाँ । सबै वृक्षनको मीठो इकठौ आनियाँ ॥ जब छत्तामेंपूर किसी ने तोरिया । सब रस लीन्हो काढ़ि के बाहि मरोरिया ॥ बहुत भयो उन कष्ट जु वै भागी फिरी । बहुत मरीं बढ़ि ठावैं बहुत सिसकैं गिरी ॥ ताते माखी गुरू हिये माहीं धरो । कोउ जक्ककी वस्तुको संग्रहै ना करो ॥ चौदह हाथी जानि काम वश होयकै आपा आप

१ देना २ इकट्ठा ॥

दो० नवां गुरु अजगर कियो लियो परम संतोष ॥
परालब्ध दृढ़ करि गही रहा राग नहिं दोष ३९ ॥

अष्टपदी ॥ जिहि कारण गुरु कियो कहूं कारण सभी। जासों ह्वाँ बैठि भयो धीरज तभी॥ आगे भिक्षा काज ध्यान तजि डोलतो। कोऊ भीख कोउ दुर्बोलतो॥ जो कोउ भोजन दियो मगन होतो तहां। जो नाहीं दियो क्रोध करतो तहां॥ अजगर इकदिन लखो जहां उतपति निशिदिन ह्वांई रह्यो कहूं नाहीं गयो॥ आय अचानक मृगा सिंह खर्वसे। चौपाये यों आय तासु मुखमें फँसे॥ जो वह जागतहोय उन्हें सों गहै। तिनको भोजन करै उदर भरि यों लहै॥ परालब्ध जो होय ह्वां आरहै। परो रहै वहिठौर सभी दुख सुख सहै॥ ताकी लीनी रहनि सुखपाइया। चरणहिंदासा होय अधीर गँवाइया ४०॥

दो० जबसों पर आशा तजी गृही द्वार नहिं जावँ॥
लगो रहों हरि ध्यान में सहज मिलै सो खावँ॥४१॥

अष्टपदी ॥ मनराखों प्रभु ध्यान सदा आनंद में। ज्ञान दिशा अब रहो नहिं द्वन्दमें॥ याचके घर घर फिरै न भिक्षा पावई। साधनको बनमें भोजन हरि ख्वावई॥ जब भइ ऐसी समझ निचल बुधि आइया। जहँ जिह्वा स्वाद सभी जु गँवाइया॥ स्वादी अरु बिन स्वाद जो भोजन वई। करि सब अंगीकार सुरुचि सों पावई॥ सूखो गीलोहोय जु भून कछू। ताको फेरों नाहिं सभी लेकर भखूं॥ जो कछु आवै नाहिं ह्वांई रहूं। परालब्धही जानि बुरो भल ना कहूं॥ सकल विकल नहिं होय आशा कछु कहीं। नारायण के ध्यान रहूं लागो वहीं॥ अजगर की वृत्ति निरी मेरे रही। चरणहिंदासा होय भक्ति दृढ़करि गही॥४२॥

दो० दशवें गुरु कियो सिद्ध को कहूं सोई परसंग ॥
लीन्हे समझ विचारिकै जाके तीनों अंग ॥४३॥

अष्टपदी ॥ मारी नीर स्वभाव सदा इकरस वही। मीठी सरितों व

१ मिलिजारि २ नहीं ॥

ो परसंग सकल निर्वारिया॥ काठ कि पुतली होयकै कागज में रची।
रणहिंदासा होय सोभी देखनतजी ५२॥

दो० पन्द्रहवों गुरु मृगकियो ताकीगति सुनिलेहु॥
औगुणहीं को छोड़िकरि गुणहीं में चितदेहु ५३

अष्टपदी॥ मृग देखो वन माहिं तासु मति आनियां। जीव दियो वहि
ौर सोई हम जानियां॥ वधिक बजाई वीण राग गावनलगो। सरवण सुनि
ह हिरण रीझि आयो भगो॥ पहुँचो पारधिपास बाण उन मारिया। ता
देन रागको चाव सकल निर्वारिया॥ जो विरक्त सुनै राग जु रस शृङ्गारको।
ेसहि होवै ख्वार नरकमें जायसो॥ सुनिये गुण गोपाल जगत कर्त्तारको।
ासों दुख छुटिजाय ये मायाजारको॥ तासों उपजै ज्ञान ध्यान दृढ़ करि
ाहे। पावै पद निर्वान जहां सुखसों रहे॥ निश्चयही तू जान जु मैंने यह
कही। चंचलता गइछूटि जु बुधि निश्चल भई॥ ना नारी रीराग नाच वि-
सराइया। चरणहिंदासा होय चरण चित लाइया ५४॥

दो० कहूं सोलवीं मीन की बुरी जीभ की स्वाद॥
जो कोई यामें फँसै लगै बहुत उठि व्याध ५५

अष्टपदी॥ सोलहों गुरु सुन मीन जो ऐसे देखिया। वा मच्छीको एक
वधिक अवेरेखिया॥ थोरो मांस लगाय जु बंशी साथही। जलमें दी छुटकाय
डोरगहि हाथही॥ जिह्वा स्वादके काज मीन वह खाइया। गई उदरके माहिं
हिये अटकाइया॥ तीक्षण कांटा लोह उदरको फारिया। ताहीक्षण वह मीन
प्राण तजिडारिया॥ ताते मच्छी गुरु हियेमाहीं करो। जिह्वाको कछु स्वाद
नहीं मनमें धरो॥ जो विरक्तको स्वाद जीभको चाहिये। बहुत भांति दुख
होय नहीं सुख पाइये॥ जिह्वा स्वाद के काज गृही घर जायहे। आछो
भोजन पाय तौ रुचिसों खायहै॥ भोंड़ो भोजन होय तौ नाक चढ़ावई।
हरि सुमिरण को त्यागिकै जिंतातित जावई ५६ ताते साधूलोग नहीं घर
घर फिरैं। जिह्वाको कछु स्वाद नहीं चितमें धरैं॥ ऐसो भोजन खाय लखै

१ कान॥

बैधाय जन्म दियो खोयकै॥ इक गज मातो हूतो जँगलके बीचही।
बलवन्त विशेषि कोऊ वा सम नहीं॥ वा ढिग हस्ती और कोई नहिं
हो। मानुष पशुजिय योनि कहूँ कद चातहो॥ वाकी आई बात जु
चली। इक कुंजर बनमाहिं रहतहै अतिबली॥ सूरति अवादई
लीजिये। जामें आवै हाथ यतन सोइ कीजिये ४८॥

दो० पीलवान आज्ञालई खोदी खन्दक जाय॥
चरणदास तहँ छलकियो दीन्ही घास बिछाय ४९॥

अष्टपदी॥ मगले की हथिनिबनाय सवाँरी शुद्धिसों। खंदक
खरी करि शुद्धिसों॥ जल पीवनके काज जु हस्ती आइया। वा हथिनी
देखिकै अधिक लोभाइया॥ जब हथिनी की ओर चलो मतिही नहीं
सपरश इच्छा धारि परो खंदकमहीं॥ निकसन कैसे होय बहुत
अति दुर्बल तन भयो पराक्रम सब हरे॥ तब वापर चढ़ि बैठ महावत
कै। बाहर लायो काढ़ि जुगतहि सबायकै॥ फिरि राजाके पास लड़ो
लायकै। अँकुश शिरके माहिं जु बेड़ी पायँके॥ शीश धुनै पछिताय
नँद कितगये। जो सुख बनके माहिं सभी स्वपना भये॥ सदा हुतो
आय बंधन बँधो। कहैं चरणहीं दास काम फन्दन फँधो ५०॥

दो० सपरशकी इच्छा किये भया जु ऐसा हाल॥
पशु पक्षी नर नारिही फँसे कामके जाल ५१॥

अष्टपदी॥ आपन दत्तात्रेयजु साधूजन कभी। कामिनि ओर नि
करै सपरश तभी॥ हस्ती कैसो हाल साधुको होयहै। सुमिरण ज्ञान
जु सबही खोयहै॥ जो कहै हमहैं साधु जु कोई भाइयो। चूमैं हमरे चरण
स होयहै कहा॥ चरणन चूमै आय हाथ धरि पायँ पे। साधुमन चलि

कछु प्रीतिकै॥ पिंगला उपजो ज्ञान हिये परकाशही। उदय भयो संतोप
ा गयो नाशही॥ वर्ष सहसदश माहिं जु तप कोऊकरे। हिरदे निर्मल
। सभी कलिमल हरे॥ ऐसो ज्ञान उजास पिंगलाको भयो। तब उन हिरदे
हिं वचन ऐसो कह्यो॥ हीन हमारे भाग जन्म योंहीं गयो। मनुप रूपसों
म क्रोध लोभे छयो॥ ताते जिविका आप हिये में चाहिया। परमातम
ध्यान सों प्रीति न लाइया॥ सदा विराजत निकट दूरि नहिं होत है।
विधि पूरणकाम सकल जग ज्योति है॥ सबहीको नित हेतु खान अरु
नई। चरणहिंदासा होय सोई यह जानई ६१॥

दो० लख चौरासी योनि में सबको भोजन देय॥
सदा वही पालन करै अपनो नाम न लेय ६२

अष्टपदी॥ मनुपरूप जो होय एकदिन खानको। दूजे दिन वह बहुत
ावै मानको॥ नारायण सों भक्ति जो जगको सुख चहै। ऐसे वाको देय
दा इकरस रहै॥ जाके लीन्हे नाम सकल पातक नशैं। कथा जु उनकी
नै हिये आनँदलशैं॥ ऐसो हरि बिसराय मनुपको चाहिया। विरथा जन्म
वँायकै सुख नहिं पाइया॥ काया है इक गेह हाड़ अरु मासको। नाड़ी
एसों बांधिराखो है तासुको॥ चामरु लोहू पीव तहां नव द्वारहैं। सदा
हतही रहत यही जु विचार हैं॥ विष्ठा मूत जो होय यगेहके माहिंहीं।
से घरसों भोग मुदित मन चाहहीं॥ ऐसे विरथा आयु सकल जु गवाँइया।
रिके चरणनदास नहीं जु कहाइया ६३॥

दो० अब उरमें ऐसी उठी करूं भक्ति चितलाय॥
चरणकमलमें मन धरूं जगसों नेह उठाय ६४

अष्टपदी॥ अब करूं भक्ति उपाय जु हरि मनभाइया। ताते लेहुँ रि-
झाय परमगुण गाइया॥ जैसे लक्ष्मी सेवकरी मन लायकै। कीन्हे महा
प्रसन्न श्रीपति धायकै॥ ऐसे मन भगवान सों अपनो लायहौं। पावों पुरुप
निधान प्रीतिके भायहौं॥ लक्ष्मी करी जु भक्ति पुराणन में कहैं। नारायण
दई ठौर सदा हियमें रहैं॥ मैं हूं ऐसी भक्ति करूं अतिप्रेमसों। करूं महाप-

ज्यों ओषधी। सबही रोग नशाहिं रहै कायाशुधी॥ चीकन भोजन
नींद बहु आवई। ध्यान भजनकी रीति सकल बिसरावई॥ सब इन्द्रि
माहिं जो जिह्वा वशकरै। जो आवै सोइ खाय कभूं भूखोरहै॥ जो जिह्वा
होय तौ इन्द्री वश सबै। जो रसनावश नाहिं तौ सब परबल तबै॥ ची
भोजन खाय तौ इन्द्री सब जहां। अतिही है बलवन्त करै औगुण त
पटरसही के स्वादसों नारी वशभये। जगमाहीं दुखपाय मुये नरकै
मनमें देखि बिचारि गुरू कियो मीनहूं। जासों लीनी सीख इन्द्रि
नहूं॥ सबही स्वाद भुलाय शरण हरिकी लई। चरणहिंदासा होय
निर्मल भई ५७॥

दो० सत्रहवों गुरु पिंगलो लीन्हों जासों ज्ञान।
आशातजि निर्मलभयो लगो रहूं हरिध्यान ५८

अष्टपदी॥ गुरु सत्रहवों जान हमारो पिंगला। परआशा दई
रहूं आनँद मिला॥ इक दिन राजा जनक बिदेही के नगर। गयो
नक लखो पिंगला को बगर॥ पिंगला उठि परभात भली बिधि न्हाइ
भूषण बस्तर पहिरि सुगन्ध लगाइया॥ घरके द्वारे बैठि जु बाट निहारै
कोऊ दे बहु द्रव्य सु[1] आ[2] पग धारई॥ मारग में नर देखि यही आ
करै। आवतजानै ताहि सुखी हियमें धरै॥ जब वह आयो नाहिं दुखी
में भई। कबहूं आश निराश ऐसही निशि आई॥ ऐसे सब दिन बीतिग
यहि भांतिही। मनमें भई मलीन आइ पुनि रातिही॥ काया आलस
जु घर भीतर गई। पलँगा बैठी जाय जहां भलि सेजही॥ बिछे बि
स्वेतफूल तापरधरे। लेटी तहँ मग जोय नैन निद्राभरे॥ कबहूं उठि जा
कभूं जा भीतरे। कहै चरणहीदास नींद नाहीं परै ५६॥

दो० आशाकी डोरी बँधी क्षण घरमें क्षण द्वार।
थिरता ना संतोष बिन दुखी पिंगलानार ६०

अष्टपदी॥ ऐसे आधीराति गई जब बीतिकै। कोऊ आयो नाहिं

1 स्वप्निया 2 आप्त॥

रेस ठानिया। नारायण के ध्यान सुरति नहिं आनिया॥ यह शिक्षा लइ आनि पिंगलासे तभी। जगकी छोड़ी आश भये कारज सभी ६६॥

दो० चील्ह अठरहों गुरु कियो मिटो सकल सन्देह॥
रहों अकेलो संग तजि करों न कछु संग्रेह ७०

अष्टपदी॥ जब गृहसेती निकसि बैरागी हमभये। तब हमरे मनमाहिं जु ये कारज क्ये॥ दो भाजनै सँग होहिं एक जल पीजिये। दूजे भाजन-माहिं खानको लीजिये॥ इक चादर कोपीनै दोयहू चाहिये। ताते ओढ़ि नहान कि युक्ति बनाइये॥ करिकै जब अस्नान ध्यान करनेलगो। मनमें चिंत्यो कोऊ कोपीनहिं लैभगो॥ समझो यह मनमाहिं बहुत अधिकारते। अन्त महादुख होय मोह उरधारमें॥ ऊंचीपदवी पाय बहुरि नीचेपरै। जब वह संयुत जाय घनो मनमें झुरै॥ जो कोइ रहै इकन्त अकेलोई सहै। ताहि उदर को शोच कछू नाहीं रहै॥ दशबिस सों जो साथ अधिक दुख लहत है। आप अकेलो रहै परमदुख सहतहै॥ सकल बिकल बिसराय जु आ-नँद पावई। चरणहिंदासा होयकै बोझ बगावई ७१॥

दो० उड़ती देखी चील्ह को पंजे माहीं मास॥
बहु पक्षी घेरे फिरैं लेन न देवैं स्वास ७२

अष्टपदी॥ पक्षी सभी लोमाहिं मासको देखिकै। वाको मारैं चोंच जु लोभ बिशेषि कै॥ कोई नोचै पंख कोई मस्तक भनै। वह दुख पावै बहुत समझि मूड़ी धुनै॥ मैं काहूसे बैर प्रीति नहिं मानिया। या भक्षणके काज कष्टही जानिया॥ मास दियो छिटकाय जुदे पक्षीभये। वा भक्षण के पास सभी दौरेगये॥ वह बैठी मन मुदित जु पंखपसारिकै। दीन्ह्यो दुखबिसराय जु व्याधा टारिकै॥ वा दिनते लइ सीख जु संग्रह ना करों। कछू न राखों पास नग्नतन में फिरों॥ जहँ चाहूं तहँ जावँ भजन आनन्दमें। कछु मन चिन्ता नाहिं छुटे मन बन्धते॥ काहूं वस्तु न शोच कोई लैजायगो। चर-णहिंदासा होय ध्यान हरिपायगो ७३॥

---

१. बर्तन २. लंगोट॥

रसन अधिकही नेमसों॥ आज के दिनसे आश पुरुषकी त
प्रभुकी आश चरणहीं लागिकै॥ जो कछु हरि मोहिं देयँ
करूं भजन भगवन्त तासु सों मोपहै॥ मनुप रूप कह
कीजिये। बहुत कुवाँलों देत जहांलों लीजिये ६५॥

दो० दुखमें काम न आवई मुये न संगी कोय
चरणदास यों कहतहैं ये संसारी लोय।

अष्टपदी॥ जब वह मृत्यक होय नहीं कछु हेतहै। हरि
सभी सुधिलेतहै॥ मनुप आपनी नाहिं जु इच्छा करिसकै।
देय मूर्ख यौंहीं तकै॥ पिंगला कहो यह ज्ञान मुझे क्यों
काजन माहिं न चित्त लगाइया॥ तीरथ व्रत न साधू दर्शन
तिरिया बुरे कर्म कि चाल विशेषिया॥ परमेश्वर की दया सें
निये। और बात कछु नाहिं हिये में आनिये॥ जो कोईकहै
गालयो। कोई आशोनाहिं ज्ञान ताते भयो॥ आगेहू बहुदिव
आइया। कीन्हे लंघन बहुत द्रव्य नहिंपाइया॥ ज्ञान कवों न
जानत नहीं। कौनभाग बड़ मोरभयो परगट अभी॥ कहैं गुरु
उन नहिं जानिया। दत्तात्रेय के दर्शसों कुमति भुलानिया

दो० पिंगला आई घर विषे छोड़ि मनुपकी आश।
सुखी होय सोवन लगी जब वह गई निराश ६८

अष्टपदी॥ मनमें किय सन्तोप सकल दुख मिटिगये। सो
आन [illegible] आनँद हुये॥ यों कहैं दत्तात्रेय राजासों यही।
[illegible] मांहि इन्द्र [illegible]॥ गृही द्वार नहिं जावैं न मांगों कछु
[illegible] सदा बैठेरहैं॥ उद्यम करैं कछु नाहिं कामना त्या
[illegible] मन माहिं बहुत अनुराग है॥ मनुप दुखी यदि होय
[illegible] लोभ मोह उत्पत्ति किये॥ जो आशा
[illegible] उत्पत्ति यही मनमा है॥ काहेको
[illegible] नाहिं [illegible]॥ याते [illegible]

हियेमाहीं लियो ॥ इक नगरीके माहिं एक दिन हमगये। इकगृहचारी के गेहजाय ठाढ़ेभये ॥ स्यानी कन्या तासु जु घरमाहीं हुती। मातपिता केहु काज गवनकीन्हों तभी ॥ करन सगाई आयलोग बैठेतहीं। याकन्याकी करैं सगाई आजहीं ॥ कन्या कीन्हों शोच यही कैसे कहूं। मात पिता कहिं गये अकेली मैं अहूं ॥ ऐहैंमातरु पिता चिन्तमनमें करैं। भोजन को कछु नाहिं जु हम आगेधरैं ॥ कन्याकरिकै शोच ये वचन उचारिया। मात पिता गये न्हान अभी पगधारिया ॥ आवो बैठो खाट रसोई खाइये। भोजन होत सवार कहीं नहिं जाइये ॥ वाके गृह कछु नाहिं धान थोरेहुते। कूटनलागीं ताहि सोई अपने मते ॥ चूरी हाथके माहिं बहुत करकन लगीं। फिरि समझी मनमाहिं शोचमाहीं पगीं ७९ यों समझैं ये लोग कछू गृहमें नहीं। भोजन कारन धानजु कूटतिहै तहीं ॥ चूरीडारी फोरि दोय तहँ राखिया। तऊ न खरको गयो शब्दही भाषिया ॥ दूजीदइ बिगसाय एकही रहगई। तव खरका नहिं होय कुटत निर्भय भई ॥ वादिन कन्या गुरू जु हमने चितधरा। साधु अकेलो रहै सदा आनँद भरा ॥ धर्मशाल ते निकसि शिष्य को साथलै। कबहूं उपजै क्रोध शिष्य भावै यहै ॥ आपनहीं लियो बहुत हमें थोरोदियो। गुरुको चहिये टहल शिष्य रूठैगयो ॥ गुरूकहै कछु और शिष्य औरै कहै। झगड़ैं आपस माहिं प्रीति थिरनारहै ॥ दोउमें कलकल होय शान्तिनहिं आवई। बिना अकेलेरहे चैननहिं पावई ॥ पशुपक्षी नर नारि संग नहिं लीजिये। दूजेही को साथ सभीतजि दीजिये ॥ छूटैं सकल कलेश ध्यानलागै भलो। चरणहिं दासा होय रहै हरिसों मिलो ८० ॥

दो० ॥ गुरु कीन्हो इक्कीसवों ताहि तीरगर जान ॥
चरणदास यों कहतहैं वासों सीखो ध्यान ८१

अष्टपदी ॥ पुनि इकीसवों गुरू तीरगर हमकियो। ताते ध्यान को भेद सीखि हियमेंलियो ॥ इकदिन नगरीमाहिं तीरगर हाटमें। ठाढ़भयो तहँजाय चलतही बाटमें ॥ वह तौ बनावत तीर आपनी जानमें। और कछू सुधि नाहिं

१ बजार ॥

दो॰ बालक गुरु उन्नीसवों ताके लिये स्वभाव ॥
नहीं मान अपमानहै लोभ न कछू उपाव ७४

अष्टपदी ॥ बालक माहीं नहीं मान अपमानहूं। लोभ जु वामें ना अनजानहूं॥ मारै कोई वाहि रोष वह ना करै। करै जु फिरि वह प्यार हँसिहँसि परै ॥ निन्दा अस्तुति दोय कभी नहिं धारई। वैर प्रीतिको कछू न विचारई ॥ जो मणि बहुते मोल कि वासे लीजिये। खेलनि फूलको पलटै दीजिये ॥ मणिको लोभ न करत कछू नहिं भापई। हि अपने खेलके माहीं राखई ॥ जो कोउ नारी पकरि हिये सों लागई अरु वा नारिको काम न जागई ॥ नग्न जु बालक फिरत लाजनहिं वई। ज्योंभावै त्योंरहै कोई न चलावई ॥ क्रिया कर्म अरु सकुच कछु नहीं। ठाकुर अरु चरणदास कछू जानै नहीं ७५॥

दो॰ बोले दत्तात्रेय जी राजासों यह बैन ॥
इकदिन बालक की सबै देखी अपने नैन ७६

अष्टपदी ॥ भाषें दत्तात्रेय बालगति देखिकै। वाकेलिये स्वभाव जु विशेपिकै॥ जोकहुं हमसों प्रीति बहुत आदर कियो। काहूं गारी बहुत भिड़की दियो ॥ दोनों एक समान और नहिं व्यापई। वैसे स्वभाव उहूं फिर आपई ॥ जो किन्हूं भोजन दियो चाटि छांई लिये हीको कर पत्र तहं पानीपियो ॥ अष्टधाने को लोभत्याग संवही किये सोहि वस्तरदेहु छांड़ि तितही दियो ॥ ज्यों बालक निज खेलमें सोरहै। त्यों परमातम संग कछू दुलहूनमें ॥ तुरिया पद निर्वान माहीकहूं। नाभी गोदी माहिं सदा सुखसों रहूं॥ चरणहिदासा दोय नशाइया। सोज्ञान के अंग सबै तव आइया ७७ ॥

दो॰ कन्या गुरु कियो बीसवों समझि विचारिकै देखि ॥
रहो अकेलो नगीमों पायो यही विवेक ७८

अष्टपदी ॥ एकचन्द्र विसवों जान गुरु कन्या कियो। वाकोमन ...

१ सोना, कांसा, पीतल, तांबा, सीसा, चांदी, रांगा, जस्ता ॥

पगो वा ध्यानमें ॥ ताके आगे होय सुपइक आइया। हस्ती अरु दल
निशान बजाइया ॥ भयोमुहूरत एक मनुष तहँ आइकै। भूपगयो
बुझो जु सुनायकै ॥ वह तो साजततीर यही उत्तरदियो। हम तो जान
नहीं दरशन कियो ॥ भाषत दत्तात्रेय जु हम वासों कह्यो ॥ राजा है
भीर शब्द दुन्दुभि भये ॥ बहुत कटक लिये साथ जु भूप सिधारिय
काहे नहिं सुनो न दृष्टि निहारिया ॥ उन यों उत्तर दियो तीरके ध्या
सुरतिरही तेहि माहिं याते नहिं जानहीं ॥ वाको कीन्हो गुरू हियेमें ध
मन हरि चरणन पास रखूं निर्धारिकै ॥ दृष्टि मना अरु बुद्धि जहां
गाइया। ऐसो कहिये ध्यान बिरल कहुँ पाइया ८२ ॥

दो० ध्यान करै दृग मूँदि करि जो कोई, नर नार ॥
खटका सुनि पलकैं खुलैं मन चल बारंबार ८३ ॥

अष्टपदी ॥ वह नहिं कहियत ध्यान जु खुलिखुलि जातहै। निश्चल
ध्यान जु पूरी बातहै ॥ ध्याता ध्यान के बीच ध्यान ध्येय माहिं है।
एकहि होहिं विघ्न कछु नाहिं है ॥ मन हरिचरणन पास कायकी सुधि
भूख प्यास कछु नाहिं ध्यान लागत तहीं ॥ मन गयो औरै ठावैं ध्या
लाइये। सो वह डिगि डिगि जाय न थिरता पाइये ॥ जब नारायण
मगन मन ह्वैगयो। सबकारज गो भूलि कछू सुधि ना लयो ॥ जैसे
सोय समाधी पुरुष हूं। दिन बीतैं दश बीस नहीं सुधि बुधि कहुं ॥ य
यही समाधि वासना सब जरैं। कोटिन मध्ये एक ध्यान ऐसो धरैं ॥
चरणको दास सोई योगी सही। सोइसाधक सोइ सिद्ध जु बिस्वेबीसही

दो० ध्यानी ध्यान लगायके रहै राम लवलाय ॥
आपा बिसरै हरिमिलैं बहुरि न उपजै आय ८४ ॥

अष्टपदी ॥ तनकी सुधि बिसराय कछू सुधि ना रहै। या बिधिसे
करै ध्यान ताको कहै ॥ हलचल ध्यान जो करै सो हरिसों ना मिलै। अ
ध्यान सोइ होय जो मन क्षन क्षन चलै ॥ तीर बनावनहार गुरु ह
कियो। ताने यह उपदेश हिये मांहीं लियो ॥ ऐसे मन को लागि

रणन धरै। हाईरहै चितलाय जु इतउत ना फिरै ॥ बाइसवों गुरु सांप ह-
ारो जानिये। ताते लीन्हीं सीखयही पहिचानिये॥ सदा अकेलो रहै कबौं
ारना करै। रैनि जहां कहुँ होय वहीं वह बसिरहै॥ बाकी देखी रहनि जु
ानमें लाइया। सदारहूं निर्बंध न मन्दिरछाइया॥ उपजो मोह न लोभ नहीं
ान दागहै। चरणहिंदासा भयो द्वेष नहिं रागहै ८६ ॥

दो० बँधा जु पानी गांदला चलता निर्मल होय॥
दोनों रीति विचारिकै भली होय सो लोय ८७
तेइसवों मकरी गुरू उगिलि तार भखि जाय॥
ऐसे जग परकाश करि प्रभुले आप लुकाय ८८

अष्टपदी॥ तेइसवों गुरु जान हमारो माकरी। आप सों काढ़े तार रहै
वामो खरी॥ फिरि वह तार समेटि लेय उरमें धरै। यों हरि लीला जानिय
कौतुक सो करै॥ वसुधाको उपजाय करै पालन जभी। फिरि सब लेय मि-
लाय आप माहीं तभी॥ जैसे मकरी तारसों जाल बनाइया। फिरि अपना
वा बीचमें सहज समाइया॥ जब चाहै वह जाल उदरमें लै धरै। मक्षीजाल
में फँसे सो नाहीं उबरै॥ भाषैं दत्तात्रेय मुक्ति जो चाहिये। हरि उतपति क्षय
करन कि शरनमें आइये॥ जन्म मरण भयमानि भक्तिमें पागिये। जगके
जालसों छूटि वेगिही भागिये॥ लीजे त्यागि वैराग चरणहीं दासहो। ह-
रियश हरिगुण गाय तजो जग वासहो ८९ ॥

दो० भृङ्गी मिलि भृङ्गी भवै सुनो हतो यह बैन॥
अब मन आई सांचही देखा अपने नैन ९०

अष्टपदी॥ चौबिसवों गुरु कियो जु भृङ्गी जानिकै। वासों निश्चय भई
हिये में आनिकै॥ सुनी हती यह बात जु कोई हरिभजै। निशिदिन मन
ह्वांलायकै प्रभुसेवा सजै॥ सो नारायण रूप आप ह्वैजातहै। यामें संशय
नाहिं सांच यह बातहै॥ मन ठहरत ना हुतीय बात सुहावनी। सेवक जो
कोइ होय सो क्यों होवैधनी॥ भृङ्गीको हम लखो कीटइक आनिकै। राखो
उन गृह माहिं आपनो जानिकै॥ आपन बाहर बैठि ताहि सम्मुख कियो।

पगो वा ध्यानमें ॥ वाके आगे होय भूपइक आइया। हस्ती अरु दल र
निशान बजाइया ॥ भयोमुहूरत एक मनुष तहँ आइके। भूपगयो इस
तुम्हों जु सुनायके॥ वह तौ साजततीर यही उत्तरदियो। हम तौ जानतन
नहीं दरशन कियो॥ भाषत दत्तात्रेय जु हम वासों कह्यो॥ राजा सँग
भीर शब्द दुन्दुभि भयो॥ बहुत कटक लिये साथ जु भूप सिधारिया।
काहे नहिं सुनो न दृष्टि निहारिया॥ उन यो उत्तर दियो तीरके ध्यान
सुरतिरही तेहि माहिं याते नहिं जानहीं॥ वाको कीन्हो गुरू हियेमें धारि
मन हरि चरणन पास रखें निर्धारिके॥ दृष्टि मना अरु बुद्धि जहां जु
गाइया। ऐसो कहिये ध्यान बिरल कहुँ पाइया ८२॥

दो० ध्यान करे दृग मूंदि करि जो कोई नर नार॥
खटका सुनि पलकें खुलें मन चल बारंबार ८३॥

अष्टपदी॥ वह नहिं कहियत ध्यान जु खुलिखुलि जातहै। निश्चल त
ध्यान जु पूरी बातहै॥ ध्याता ध्यान के बीच ध्यान ध्येय माहिं है। ती
एकहि होहिं विघ्न कछु नाहिं है॥ मन हरिचरणन पास कायकी सुधिनहिं
भूख प्यास कछु नाहिं ध्यान लागत तहीं॥ मन गयो औरै ठावँ ध्यान क
लाइये। सो वह डिगि डिगि जाय न थिरता पाइये॥ जब नारायण स
मगन मन हैगयो। सबकारज गो भूलि कछू सुधि ना लयो॥ जैसे आप
सोय समाधी पुरुष हूं। दिन बीतें दश बीस नहीं सुधि बुधि कहूं॥ कहि
यही समाधि वासना सब जरें। कोटिन मध्ये एक ध्यान ऐसो धरें॥ सो
चरणको दास सोई योगी सही। सोइसाधक सोइ सिद्ध जु विस्वेबीसही ८४

दो० ध्यानी ध्यान लगायके रहै राम लवलाय॥
आपा विसरै हरिमिलै बहुरि न उपजै आय ८५

अष्टपदी॥ तनकी सुधि बिसराय कछू सुधि ना रहै। या बिधिसे जे
को ध्यान ताको कहै॥ हलचल ध्यान जो करै सो हरिसों ना मिलै। अफल
ध्यान सोइ होय जो मन छन छन चलै॥ तीर बनावनहार गुरू हमने
कियो। तातै यह उपदेश हिये माहीं लियो॥ ऐसे मन को साधि प्रभु

जायगो॥ जबहीं समुझो ज्ञान देहको जीयमें। भयो विरक्त विचार आ-
हीयमें॥ लई सीख चौबीस देहहित त्यागिकै। कीन्हो हरिको ध्यान
त अनुरागिकै॥ दत्तात्रेय ये बचन कहे बहु चावसों। पुनि तीर्थन को
ये भक्तके भावसों॥ राजा सुनि यह ज्ञान हिये में धारिया। हरिसों सुरति
गाय सकल दुखटारिया॥ चरणहिं दासा होय परमसुखही लियो। तन
को जगमें राखि जु मन हरिको दियो ९६॥

दो॰ दत्तात्रेयी ने कहे जो राजा से बैन॥
सो मैं भाषा में कियो समझो पावो चैन ९७

अष्टपदी॥ चौबीसों के माहिं होय उपदेशदे। सतगुरु वाहि उबारिकिये
सब दूरिभे॥ उनहीं के परताप चौबिसो समझही। आई घटके माहिं जुउ-
ज्ज्वल बुद्धिही॥ चौबीसौ तनधारि जु अंग बताइया। जासोंभयो कल्याण
अधिक सुख पाइया॥ ऐसे हैं गुरुदेव ये निश्चय जानिये। सकल विकल
सब छोड़ि गुरूही मानिये॥ गुरुहीके परसाद मिलैं नारायणा। जन्ममरण
बँध छूटि होय पारायणा॥ समरथ श्री गुरुदेव शीशपर राखिये। भवसागर
की व्याधि सकलही नाखिये॥ कहैं मुनी शुकदेव चरणही दासको। वही
जु पावै चौथे परमनिवासको ९८॥

दो॰ गुरु समान तिहुँ लोक में और न दीखै कोय॥
नाम लिये पातक नशैं ध्यान किये हरिहोय ९९
गुरुही के परताप सों मिटै जगत की व्याध॥
रागदोष दुख ना रहै उपजै प्रेम अगाध १००
गुरुके चरणन में धरो नित बुधि मन अहंकार॥
जब कछु आपा ना रहै उतरै सबही भार १०१
मन विरक्त के करन को कीन्हो गुरुका सार॥
पढ़ै सुनै चितमें धरै भवसागर हो पार १०२

इति श्रीचरणदासकृतमनविरक्तकरनगुटकासारसम्पूर्णम्॥

केतक दिवसन माहिं व भृङ्गीकरि लियो ॥ भृङ्गी रूपको देखिके गयो । ताते भृङ्गी गुरू हमारे मन छयो ॥ जैसे करै कोइ ध्यान सो होतहै । नहींरहै चरणदास रहै ब्रह्मज्योति है ६१ ॥

दो० चौबीसों पूरेकिये समझि समझिकरि देखि ॥
विरक्त ह्वै जग में रहूं लगै न मायारेखि ६२
फिरि अपनी कायालखी रही न जासों प्रीति ॥
थके जु इन्द्री स्वादही सहज गई सब रीति ६३

अष्टपदी ॥ भाँपे दत्त त्रेय गुरु इकदेहहै । पहिले मोको हो तो अधिक सनेहभै ॥ देखो क्षण क्षण देह क्षीण ह्वै जातही । नित उठि सुखके काजभला कुछ खातही ॥ बहुतचाव करि आप कछू भोजन कियो । दूजे दिन वहि भांति घनोही दुख दियो ॥ इकदिन बसनर विमल बनाये लायकै । फिरि नस्तरके काजफिरूं दुखपायकै ॥ जितनो कियो उपाय काया सुख काजही । कबहूं सुख ना भयो फिरत बेलाजही ॥ इकदिन एक उपाय जु सुखको धारिया । दूजेदिन वहि दुःख बहुत विस्तारिया ॥ और लखी यह बात यह काया आपनी । अपनीही होवै नाहिं विचारीही घनी ॥ मूरुख जानै नाहिं सुयाही भेदको । होवै ना चरणदास सहै बहु खेदको ६४ ॥

दो० बालपने अरु तरुण में और बुढ़ापे माहिं ॥
तीनो पनमें देह यह कबहूं अपनी नाहिं ६५

अष्टपदी ॥ बालकपन में हाथ बाप अरु मायकै । तरुणापनमें फँसे त्रिया कर जायकै ॥ वृद्ध अवस्था माहिं पुत्रके हाथही । पुनि जब मृत्युकहोय अगिनिजारे तहीं ॥ जो योंहीं रहिजाय पशूआदिक भखैं । देह न अपनी होय ज्ञानआदिक लखैं ॥ बादिनतें सुखकाजनहीं श्रमधारिया । परालब्ध जोआय उदरमें डारिया ॥ कायाने इककाजभलो पुनि होतहै । हरिकी भक्तिहोय जु ज्ञानै उदोतहै ॥ मृत्यु जबहिं होयजाय यकायानारहै । और कैसो गेह जीव काया लहै ॥ जबहीं आवै कालनहीं ठहरायगो । लखै जो यह रूप न साण

---

१ भक्तनें ॥

पांच पचीसों देह सँग गुण तीनों हैं साथ॥
घट उपाधि सों जानिये करत रहैं उतपात १०
तामस अरु हिंसो करै बचन चलन विपरीति॥
आलस अरु निन्दाकरै तामस गुणकी रीति ११
दम्भ कपट छल छिद्र बहु खोटे सब व्योहार॥
झूंठ बचन ऐंठो रहै तामस के गुण धार १२
मान बड़ाई नाम ना सिद्धि चहैं भजि राम॥
भोजन नाना स्वादके राजस गुण के काम १३
खेल तमाशे राजसी अरु सुगन्धकी बास॥
आपनको ऊंचो गनै औरनकी कर हास १४
दया क्षमा आधीनता शीतल हिरदय धाम॥
सत्य बचन गुण सात्त्विकी भजन धर्म निष्काम १५
दुखी न काहूकोकरै दुख सुख निकट न जाय॥
समदृष्टी धीरजसदा गुण सात्त्विक को पाय १६
राजस सों तामस बढ़े तामस सों बुधि नास॥
रजगुण तमगुण छांड़िके करो सतोगुण वास १७
सतगुण में मन थिरकरो करि आतम सों नेह॥
आतम निर्गुण जानिये गुण इन्द्री सँगदेह १८
सात्त्विक राजस तामसी त्रैगुणते संसार॥
तीनि पांचको नाशहै माया ब्रह्म विचार १९
अहंतत्त्व ॐ भयो जिनते तीनों देव॥
जिनकेपरे जु आतमा अगम अगोचर भेव २०
उपजै सो माया सभी विनशि नेकमें जाय॥
छल मायासों कहतहैं स्वपनो सकल दिखाय २१

धारना २ सच्चिदानन्दस्वरूपःसन् यस्तिष्ठति स आत्मा ३ जो दृष्टिमें न आवै॥

अथ श्रीस्वामीचरणदासजीकृत ब्रह्मज्ञानसागर प्रारम्भः ॥

दो० जैसे हैं शुकदेव जी जानत सब संसार ॥
भगवत मत परगट कियो जीव किये बहु पार १
तिन मोपै किरपा करी दियो ज्ञान विज्ञान ॥
सो सिख तुमसों कहतहौं छूटै सब अज्ञान २
शिष्य सुनो अब कहतहौं परम पुरातन[1] ज्ञान ॥
निगुड़े[2] को नहिं दीजिये ताके तपकी हान ३

कुण्डलियां ॥ मोक्ष मुक्ति तुम चहतहौ तजो कामना काम। मनकी इच्छा मेटिकरि भजो निरंजन नाम ॥ भजो निरंजन तत्त्व देह अध्यास दबावो। पंचनके तजि स्वाद आपमें आप समावो ॥ छूटिगई जब देह के तैसे रहिया। चरणदास यह मुक्ति गुरूने हमसे कहिया ४ ॥

दो० देह मरे तू है अमर पारब्रह्म है सोय ॥
अज्ञानी भटकत फिरे लखै सो ज्ञानी होय ५
देह नहीं तू ब्रह्महै अविनाशी निर्बान ॥
नित न्यारो तू देहसों देह कर्म सब जान ६
डोलन बोलन सों बनो भक्षण करन अहार ॥
दुख सुख मैथुन रोग सब गर्मी शीत निहार ७
जाति बरण कुल देहकी सूरति मूरति नाम ॥
उपजै विनशै देह सो पांच तत्त्वको ग्राम ८
पावक पानी बायुहै धरती अरु आकास ॥
पांचतत्त्व के कोट में आय कियो तैं बास ९

---

१ पुराना २ जो किसीका मंत्र न लियेहो ॥

लोभ जु नभका अंशहै काम वायुका भाग ॥
क्रोध अग्नि जल मोहहै भय पृथ्वीकालाग ३४
पांच पचीसो एकही इनके सकल स्वभाव ॥
निर्विकार तू ब्रह्महै आप आपको पाव ३५
निराकार निर्लिप्त तू देही जान अकार ॥
आपन देही मान मत यही ज्ञान ततसार ३६
शस्त्रछेदि सकता नहीं पावक सकै न जारि ॥
मरै मिटै सो तू नहीं गुरुगम भेद निहारि ३७
जलै कटै काया यही बनै मिटै फिरि होय ॥
जीव अविनाशी नित्यहै जानै विरला कोय ३८
जरा मरण धर्म देहको भूखप्यास धर्म प्रान ॥
सकल विकल मन जानिये स्वादसुइंद्रीजान ३९
आंख नाक जिह्वा कहूं त्वचाजान अरुकान ॥
पांचो इन्द्री ज्ञानहैं जानैं संत सुजान ४०
जो जो इनसों जानिये निश्चय ना ठहराय ॥
[illegible] जाय ४१
[illegible] ताय ॥
[illegible] पाय ४२
[illegible] खिलेह ॥
पांचों इन्द्री कर्म हैं यह भी कहिये देह ४३
देह मिटतहै स्वप्न ज्यों जीव रहतहै नित्त ॥
देहकर्म विसराय करि आतमसों करि हित्त ४४
मनजीतै इन्द्री गहै चित अस्थिर जब होय ॥
आतम सों परचोरहै राखै सुरति समोय ४५
पृथ्वी काल जेठोरहै मुखै जानिये द्वार ॥
पीरो रँग पहिचानिये पीवन खान अहार ४६

निराकार¹ अद्वैत अचल² निर्वासी³ तू जीव ॥
निरालम्ब⁴ निर्वंसो⁵ अजै⁶ अविनाशी सीव २२
जिह्वा इन्द्री नीरकी नभकी इन्द्री कान ॥
नासा इन्द्री धरणिकी करि विचार पहिचान २३
त्वचासो इन्द्री वायुकी पावक इन्द्री नैन ॥
इनको साधै साधु जो पद पावै सुखचैन २४
चाम हाड़ नाड़ी कहौं रोमजान अरु मास ॥
यह पृथ्वीकी प्रकृतिहै अन्त सबनको नास २५
रकत विन्दु कफ तीसरो मेद मूत्रको जान ॥
चरणदास प्रकृती इते पानीसों पहिचान २६
निद्रा संगम आलकस भूख प्यास जो होय ॥
चरणदास पांचौ कही अग्नि तत्त्वसों जोय २७
बलकरना अरु धावना उठना अरु संकोच ॥
देहवढे सो जानिये वायु तत्त्व है शोच २८
काम क्रोध मोह लोभ भय तत्त्व अकाशको भाग ॥
नभकी पांचौ जानिये नितन्यारो तू जाग २९
रोम अग्नि नाड़ी पवन मास अग्नि का अंश ॥
त्वचानीर सों जानिये अस्थि मही को वंश ३०
कफ अकाश विंदु वायुसों रक्त अग्निसों बूझ ॥
मूत्र नीर रणजीत भन मेद मही सों सूझ ३१
नीर व्योमसंपरशै⁷ पवन आलस अग्नि पिछान ॥
प्यास नीर रणजीतभन भूख महीसों जान ३२
उठना तौ आकाश सों बल करना है वायु ॥
बढ़नि अग्निधावन उदक⁸ संकोचन महिआय ३३

१ जिसका आकार नहीं है २ जो चल न सकै ३ जिसका कहीं वास नहीं ४ जिसको किसी वस्तुकी चाह नहीं ५ जो जन्म नहीं लेता ६ आकाश ७ डाह ८ छूना ९ जल ॥

लोभ जु नभका अंशहै काम वायुका भाग ॥
क्रोध अग्नि जल मोहहै भय पृथ्वीकालाग ३४
पांच पचीसों एकही इनके सकल स्वभाव ॥
निर्विकार तू ब्रह्महै आप आपको पाव ३५
निराकार निर्लिप्त तू देही जान अकार ॥
आपन देही मान मत यही ज्ञान ततसार ३६
शस्त्र छेदि सकता नहीं पावक सकै न जारि ॥
मरै मिटै सो तू नहीं गुरुगम भेद निहारि ३७
जलै कटै काया यही बनै मिटै फिरि होय ॥
जीव अविनाशी नित्यहै जानै बिरला कोय ३८
जरा मरण धर्म देहको भूखप्यास धर्म प्रान ॥
सकल विकल मन जानिये स्वादसुइंद्रीजान ३९
आंख नाक जिह्वा कहूं त्वचाजान अरुकान ॥
पांचों इन्द्री ज्ञानदै जानैं संत सुजान ४०
जो जो इनसों जानिये निश्चय ना ठहराय ॥
कहै सुनै चाखै लखै सो सोहै मिटिजाय ४१
इन्द्री जानि सकै नहीं मन बुधि लहै न ताथ ॥
ज्ञानदृष्टि पहिंचानिये वासों वाको पाय ४२

जलको बासा भालेहै लिंग, जानिये द्वार॥
मैथुन कर्म अहारहै रंग सफेद निहार ४७
पित्तेमें पावक रहै नैन जानिये द्वार॥
लालरंग है अग्निको मोह लोभ आहार ४८
पवन नाभि में रहतहै नासा जानि दुवार॥
हरो रंगहै वायु को गन्ध सुगन्ध अहार ४९
अकाश शीशमें बास है श्रवण दुवारो जान॥
शब्द कुशब्द अहारहै ताको श्याम पिछान ५०
कारण सूक्षम लिंगहै अरु कहियत अस्थूल॥
शरीर तीनसों जानिये मैं मेरी जड़मूल ५१
जाग्रत का अस्थूल है स्वपने लिंग शरीर॥
कारणजान सुषोपती तुरिया जाग्रत बीर ५२
जाग्रत स्वप्न सुषोपती तुरी अवस्थ विचार॥
परा पश्यती मध्यमा वैखरि बाणी चार ५३
जाग्रत बासा नैनमें स्वप्न कण्ठ अस्थान॥
जानसुषोपति हियेमें नाभि तुरिय मनतान ५४
नाभि मध्य वाणी परा हिये पश्यती मुक्ख॥
कण्ठ मध्यमा जानिये कहूं वैखरी मुख्य ५५
चित्त बुधि मन हंकार जो अन्तःकरणसुचार॥
ज्ञान अग्नि सों जारिये आतमतत्त्व विचार ५६
जलसों मन निश्चय कियो भयो वायुसों चित्त॥
अहंकार भो अग्निसों बुधि पृथ्वीसों मित्त ५७
शब्द स्पर्शरु गंधहै अरु कहियत रसरूप॥
देह कर्म तनमात्रा तू कहियत निहरूप ५८
शब्दा गुण आकाशका सपरश गुणहै बाय॥

१ दया २ बौरी॥

पृथ्वीका गुण गंधहै सो यह प्रकट दिखाय ५९
रूप अग्निका गुण कहूं रसगुण जलका जान॥
रणजीत बतावै खोलि करि एशिष ले पहिचान ६०
श्रवण सुख सु इन्द्री भई तत्त्वाकाश सों दोय॥
त्वचा हाथ इन्द्री युगल वायु तत्त्वसों होय ६१
पावक सों इन्द्री युगल भये नैन अरु पावँ॥
जलसों जो इन्द्री भई लिंग रसनो दो नावँ ६२
गुदा नासिका दो भई पृथ्वी सों पहिचान॥
चरणदास यह कहतहैं एक कर्म इकज्ञान ६३
राजस सों इन्द्री भई तामस सों तत्त्व पांच॥
सात्त्विक सों चारों भये चरणदास कहैं सांच ६४
तीनों गुणसे है परे सो आतम को रूप॥
सो वह दृष्टि न आवई अगम अगोचर गूप ६५
दश इन्द्री तन पांच है तन्मात्रा भी पांच॥
चारों अन्तःकरण हैं ये चौबीसों बांच ६६
पन्द्रह को अस्थूल है नौको लिंग शरीर॥
कारण झीनी वासना तुरिया निर्मल धीर ६७
जाग्रत में चौबीस हैं स्वप्ने में नौजान॥
सुषोप्ति में सब लीनहैं ये अँग जड़के मान ६८
तुरिया इकरस आतमा निर्मल अचल अनाद॥
घटै बढ़ै उपजै नहीं तहां न वाद विवाद ६९
घटै बढ़ै उपजै मिटै जड़को यही स्वभाव॥
सो सब कौतुक करतहै नाना किये उपाव ७०
चेतन ज्यों कौ त्यों सदा सदा अकर्ता जोय॥
सब कर्मन सों रहतहै आतम ऐसो होय ७१

१ जीभ॥ [illegible]

काहू ते उपजो नहीं यातें भयो न कोय॥
वह न मरे मारे नहीं राम कहावै सोय ७२
योग युगतकरि खोजिले सुरति निरतिकरि चीन॥
दशप्रकार अनहद बजे होय जहां लवलीन ७३
तीन बंध नौ नाटिका दशवाई को जान॥
प्राणापान समान है और कहत उदान ७४
व्यान वायु अरु किरकिरा कूरम बाई जीत॥
नाग धनंजय देवदत दश बाई रणजीत ७५
नवो द्वारको बंधकरि उत्तम नाड़ी तीन॥
इड़ा पिंगला सुषमना केलिकरै परबीन ७६
करतै प्राणायामके पावै आतम वेख॥
अनहद ध्वनि के बीचमें देखै शब्द अलेख ७७
पूरक करि कुंभक करै रेचक पवन उतार॥
ऐसे प्राणायाम करि सूक्षम करै अहार ७८
धरती बन्ध लगाय करि दशौ बायु को रोक॥
मस्तक प्राण चढ़ाय के करो अमरपुर भोग ७९
पांचौ मुद्रा साधिके पावै घटको भेद॥
नाड़ी शक्ति चढ़ाइये षटो चक्रको छेद ८०
नासाध्यान दृष्टि भृकुटी में सुरति शास्त्रके माहिं॥
आतम देखो जातहै योगी संशय नाहिं ८१
योगयुक्ति कि कीजिये कि आतम को ध्यान॥
आपा आप विचारिये परमतत्त्व को ज्ञान ८२
शूद्र वैश्य शरीर है ब्राह्मण औ रजपूत॥
बूढ़ा बाला तू नहीं चरणदास अवधूत ८३
काया माया जानिये जीव ब्रह्म है मित्त॥
काया छुटि सुरति मिटै तू परमातम नित्त ८४

पाप पुण्य आशातजो तजो मान अरु थाप॥
काया मोह विकारतजि जपै सु अजपा जाप ८५
आप भुलानो आपमें बँधो आपही आप॥
जाको ढूंढत फिरतही सो तुम आपहि आप ८६
इच्छा दई बिसारिकै क्यों न होय निर्वास॥
तूतो जीवन्मुक्त है तजो मुक्तिकी आस ८७
आपालोजै आपलखि आप अपनको देख॥
चरणदास तुहि ब्रह्महै तूही पुरुष अलेख ८८
जैसे कछुवा सिमिटिकै आपहि माहिं समाय॥
तैसे ज्ञानी स्वासमें रहै सुरति लवलाय ८९
सबघट रमो सो रामहै आदिपुरुष निर्गम्य॥
लख चौरासी योनिमें एक समानी रम्य ९०
दृष्टि मुष्टि आवै नहीं रूप न देखो जाय॥
बिन सूरति बिननामको घट घट रहो समाय ९१

छप्पै॥ इच्छा दुइकर दूर आप तूं ब्रह्म हैजावै। और सो द्वितिया कौन तासुको शीश नवावै॥ मालातिलक बनाय पूर्व अरु पश्चिम दौरा। नाभि कमल कस्तूरि हिरण जंगल भौ बौरा॥ चरणदास लखि दृष्टि भरि एकै शब्द भरपूरहै। निरखि परखिलै निकटही कहन सुननको दूरहै ९२ झूठी सी यह दृष्टि जगत सब झूठो दरशै। मूरख जानै सत्य तासुसों फिरि फिरि परशै॥ चंद सूर थिर नहीं नहीं थिर पौन न पानी। त्रिदेव[1] थिर नहीं नहीं थिर मायारानी॥ नवनाथ चौरासी सिद्ध जो चरणदास थिर ना रहै। ब्रह्म सत्य सर्वज्ञहै आतमविचार क्यों नागहै ९३॥

दो० जो मुख सेती बोलिये अरु सुनिपरतहै कान॥
जो आंखिन सों देखिये सबही मायाजान ९४
एकै सबतन रमि रहो चेतन जड़के माहिं॥

[1] ब्रह्मा, विष्णु, महेश॥

मायादर्शत है सभी ब्रह्म लखतहै नाहिं ९५
जैसे तिलमें तेलहै फूल मध्य ज्यों बास॥
दूध मध्य ज्यों घीवहै लकड़ी मध्य हुतास[1] ९६
थावर जंगम चर अचर सब में एकै होय॥
ज्यों मनको में डोरिहै बाहर नाहीं कोय ९७
एक डोरि मनका गुहे अवरण वरण निहारि॥
आतमतौ निहरूपहै नित्य अनित्य विचारि ९८
माया यही स्वभावहै उदय होय छिपि जाय॥
चंचल चपल सुहावनी ओलों[2] ज्यों गलिजाय ९९
परमातम तौ नित्यहै ताको आदि न अन्त॥
सदा अचल चंचल नहीं सब गुण रहत अनन्त १००
सत चेतन आनन्दहै आदि अन्त मधि हीन॥
आदि अन्त आकार को सो तू झूठो चीन १०१
सुरति नाम आकारहै ज्यों भूतनको नाच॥
मृगतृष्णाको नीरहै निकट गये नहिं सांच १०२
चितवत सांचीसी लगै खोजकिये मिटिजाय॥
दीखै है पर है नहीं कौतुक सो दरशाय १०३

शिष्यवचन॥

ब्रह्म बिना खाली नहीं धरनेको इक पाँव॥
मायाको कह ठौरहै सतगुरु मोहिं बताव १०४
निर्विकार तौ ब्रह्म है अद्वै अचल अपार॥
आई माया कहांते सतगुरु कहौ विचार १०५

गुरुवचन॥

आप ब्रह्म माया भयो ज्यों जल पाला होय॥
पालागलि पानी भयो ऐसे नाहीं दोय १०६

---

१ अग्नि २ पत्थर

झूठी माया सो कहैं ज्ञानी पण्डित लोय ॥
मर्मभूल सांची लगै समझै सांच न होय १०७
सोनेको गहनो गड़ै कहन सुननको दोय ॥
गहनो ना सोनो सबै नेक जुदो नहिंहोय १०८
झूठ सांच दोनाचहै झूठ मिटै इक सांच ॥
नाम मिटै सूरत मिटै भूषण को लग आंच १०९
जाको माया कहतहैं सो तू नेक निकास ॥
जैसे हींग कपूरकी नेक जुदी कर बास ११०
जल समान तो ब्रह्महै माया लहर समान ॥
लहर सबै वह नीरहै लहर कहै अज्ञान १११
खेल खिलौना खांड़के कीजै लाख पचास ॥
सकल खिलौना खांड़है ऐसे गहि विश्वास ११२
चरणदास खिलौना खांड़के भाजन राखे खांड़ ॥
बिन बिनशेभी खांड़है बिनशिजाय तो खांड़ ११३
माटी के भांड़े भये सूरति अरु बहुनाम ॥
विगसि फूटि माटीभई बासन कहु केहिठाम ११४
ऐसेही माया नहीं समझि देखु मन माहिं ॥
जो दीखै सो ब्रह्महै रंचक माया नाहिं ११५
इच्छा मेटै दुइ तजै एकै मन विश्राम ॥
ब्रह्मज्ञान विज्ञानहै समझै परमपद धाम ११६

सवैया ॥ श्वास उसास चलै जब आपहिहै जु अखण्ड टरै नहिं टारो। र बाहर है भरिपूर सो ढूंढ़ों कहां नहिं नाहिंन न्यारो ॥ चरणदास कहैं गुरुभेद दियो भ्रम दूरिभयो जु हुतो अतिभारो। दृष्टिअदृष्टि जु रामको देखत राममयो पुनि देखनहारो ११७॥

दो० आप आपमें आपहै खेलो बहु बिस्तार ॥
दितिया तो कछु है नहीं एकहि एक निहार ११८

कहीं नरायण नाभिहे कहीं ब्रह्म कहिं वेद॥
कहिं शंकर गिरिजा कहीं कहीं भेदाभेद ११९
कहिं ऋषिमुनि कहिं देवता कहीं सिद्ध कहिं नाथ॥
आपनको आपे लड़ो कहूं न नावे माथ १२०
कहिं आसन कहिं तपकरे कहींज्ञान कहिंयोग॥
कहीं दुखी कहिं सुखभयो कहीं रोग कहिंभोग १२१
कहीं नारि कहिं नरभयो कहीं बाल नाबाल॥
कहिं मँगता दाता कहीं कहीं सुखी कंगाल १२२
कहीं वृक्ष कहिं फलभयो कहीं फूल कहिंबीज॥
कहीं मूल शाखाभयो कहिं माली कहिं सींच १२३
कहिंमालिनि कहिं मालती कहिं फुलवा कहिंहार॥
कहीं महल खिरकी भयो कहिंदीपक उजियार १२४
कहीं बाग क्यारी भयो कहीं भवँर गुंजार॥
कहीं घटा कहिं बिज्जुली दादुर मोर बहार १२५
कहिं पर्वत जंगलभयो कहिं वारिद कहिंवारि॥
कहिं, बड़वानल अग्नि है धारो तेज अपार १२६
मानसरोवर भयो कहिं मोती कहीं मराल॥
कहिंसरिता धीवर कहीं कहीं मीन कहिंजाल १२७
कहीं कथा श्रोता कहीं कहीं कीर्तन रूप॥
कहीं त्याग वैराग लै कीन्हों संत स्वरूप १२८
कहिं पृथ्वी कहिं व्रज भयो कहिं गोपी कहिं ग्वाल॥
कहीं प्रेमके रूप है कहिं प्रेमी कहिं ख्याल १२९
कहिं कालिंदी निकटही कहिं वृन्दावनधाम॥
कहिं कुंजें अतिसोहनी कहीं युगल लयो नाम १३०
कहिं सुगन्ध शीतल पवन कहिं वंशीवट ठावँ॥

१ गेंडुआ २ मेघ ३ हंस ४ नदी ५ मल्लाह ६ यमुना॥

कहीं चरणहींदास है बारबार बलिजावँ १३१
कहीं कन्हैया है खड़ो एकपावँ अँगमोर॥
कहिं [illegible] १३३
कहीं

कहिं ललचौहैं नैनहैं नासा मुकुरसठोल १३२
कहीं धुकधुकी कंठहैं कहीं मोतियन माल॥
कहिं बाजू नवरतन के नटवर मदनगोपाल १३४
कहीं कड़ा कहिं करभयो कहिं पहुँची जहँगीर॥
रतन चौक गुंठी भयो लागी संग जँजीर १३५
कहीं बादलौ जर्द है नीमो ह्वैगयो अंग॥
कहिं वर्द्दी गलजिंद है कहीं साँवरो रंग १३६
कहिं पैंजनि कहिं पग भयो कहीं चरणको दास॥
कहीं आपही नख भयो शशि समान परकास १३७
आप आपमें आपहै आप आपमें आप॥
आप अपन में जपतहै आप आपनो जाप १३८
अविनाशी नाशी नहीं नाश न कबहूं होय॥
तत्त्व स्वरूपी एकहै कभी होय नहिं दोय १३९
आप ब्रह्ममूरति भयो ज्योंबुदे गल जल माहिं॥
मूरति विनशे नामसँग जल विनशत है नाहिं १४०
बुदगल देखो जल सबै बुदगल कहू न होय॥
कहबे को दूजो कहो जल बुदगिल नहिं होय १४१
भयो नेकमें बुलबुलो नाच कूद मिटिजाय॥
निराकार रहि जायगो मूरति ना ठहराय १४२
निराकार आकार धर खेलो कै इकबार॥
स्वमो दे दे मिटिगयो रहो सारको सार १४३

चौ० आप आपमें खेल मचावो । ज्यों पानी बुदगिल ह्वै आवो ॥ ब्रह्मधरी है काया । आपहि पुरुष आपही माया ॥ आप नरायण लक्ष्मी भ नाभि कमल अरु आपहि दई ॥ आपहि धरती आपहि पानी । आप रुद्र चतुर विज्ञानी ॥ ह्वै नारयण विष्णु कहायो । शेषनाग ह्वै तले पठाये तेंतिसकोटि देवता भयो । ऋषि मुनि कोटि अठासी छयो ॥ चारोंयुग अ पहि भयो लोका । पाप पुण्य आपहि भयो शोका ॥ आपहि फूल शू अरु बारी । आपहि पुरुष आपही नारी १४४ ॥

दो० जल थल पावक रामहै रामरमो सब माहिं ॥
हरि सब में सब राम में और दूसरो नाहिं १४५

चौ० दशअवतार[1] आप ह्वै आयो । सेवक साहब आप कहायो ॥ आ पहि गिरिवर आपहि तरुवर । आपहि हंस आपही सरवर[2] ॥ आपहि चारि वरण षट दरशन । पूजें आप आपही परशन ॥ आपहि ध्यानी आपहि प्रेमी । आपहि योग भोग अरु नेमी ॥ चरणदास शुकदेव बतायो । अपनो भेद आपही गायो ॥ तारा मण्डल आप अकाशा । आपहि चन्द सूर पर काशा ॥ जैसे जल तरंग ह्वै आई । उलटि फेरि जलमाहिं समाई ॥ आप आपमें स्वप्न उठायो । आपहि स्वप्न आप ह्वै आयो १४६ ॥ ना कछु गयो नहीं कछु आयो । अपनो भेद आपही पायो ॥ ना कछु करै मिलै नहिं छीजै । ना कछुउठै चलै नहिं भीजै ॥ स्वप्नो मिटिभयो एकअ कारा । ज्ञानी अबहीं त्योंहुं निहारा ॥ नहीं सूक्ष्म अस्थूल न भारी । रूप रंग नहिं है परकारी ॥ वार पार कछु दीखत नाहीं । कबसों है अरु कबसों नाहीं ॥ कहा कहों कछु कहत न आवै । गूंगो स्वप्नो कहा बतावै ॥ वारा पार पार नहिं पायो । ढूंढत ढूंढत आप भुलायो ॥ कहत कहत में गयो हिराई । अब मोपै कछु कह्यो न जाई १४७ ॥

दो० हदकहूं तो है नहीं बेहद कहों तो नाहिं ॥

---

1 मच्छ, कच्छ, वाराह, वामन, नृसिंह, परशुराम, रामकृष्ण, बौद्ध, कलंकी

2 समुद्र) मानसरोवर [illegible] ॥

हद बेहद दोनों नहीं चरणदास भी नाहिं १४८
जग स्वप्नों सो ह्वै गयो भयो पेखनो गावँ॥
१४६

छप्पै॥ नहिंधरती नहिं शेष नहीं अगवी पारायण॥ तब न रूप नहिंनाम नहीं त्रैगुण त्रैदेवा। तब न ब्रह्म नहिंजीव नहीं साहब नहिं सेवा॥ रणजीत मीत नहिं बैर तब निर्गुण सर्गुण नाहुता। तब न वेद वाणी नहीं नहिं ज्ञानी नहिं पंडिता १५० जो श्रवणन सों सुनै और मुख सेती भाषै। जो कछु देखै नैन और सोवै अरु जागै॥ जो आवै दुर्गंधगंध नासाकेमाहीं। यह सब झूंठो जान कछू ठहरतहै नाहीं॥ अरु चरणदास उपजै नहीं विनशै नहिं संसार कहुं। ब्रह्म सत्य सर्वज्ञहै सुभूंठो दरशै स्वप्न यह १५१॥

दो॰ ब्रह्म बिना खाली नहीं सरसों सम कहुं ठौर॥
स्वप्नो सो जग देखिये स्वप्न भयो मनमौर १५२
शुद्ध ब्रह्महै रैनि सम जगत दिवाली दीव॥
ज्यों तरंग जलमें उठै ब्रह्म बीच ये जीव १५३
वार न जाको पाइये पार परे नहिं चीन॥
ऐसे सिन्धु अथाहमें जगत जानिये मीन १५४
ब्रह्म बीच ये जीव सब फिरत रहत आधीन॥
जैसे सागर सिन्धुमें नानारूपी मीन १५५
जैसे लहरि समुद्रकी उठत रहत तिहि माहिं॥
बिन इच्छा बिन भावना ह्वैह्वै मिटि मिटि जाहिं १५६
औंडो सींव गँभीरहै बिन इच्छा बिन दोष॥
निज स्वभाव जग होतहै मिटि २ फिरि२होय१५७
धरतीमें लीकट खिचे उठि नहिं आवै हाथ॥
ब्रह्म सत्य जग झूंठहै ह्वैहै मिटि मिटि जात १५८
जगत ब्रह्ममें योंदिपै ज्यों धरती पर रेख॥

रेख मिटै धरती रहै ऐसेही जग देख १५६
झूठ सांच दोउ नामहैं झूठ मिटै थिर सांच॥
ज्यों लोहा पावक मिलो लोहरहै मिटि आंच १६०
ज्यों सोवत सुपनो उठो दृष्टि खोलि जब नाहिं॥
जगस्वपनो सो है मिटै समझि देखु मन माहिं १६१
देखन को अति निकटहै कहबे को बहु दूरि॥
एकै ब्रह्म अखण्डहै सकल रह्यो भरिपूरि १६२
अद्वै अचल अखण्डहै अगम अपार अथाह॥
नहीं दूर नहिं निकटहै सतगुरु दियो बताय १६३
भूलहुतो जब दो हुते अब नहिं एक न दोय॥
अटक उठी धोखो मिटो आपनहूं गयो खोय १६४

[illegible] नहिं साहब दासा। जहां गुफो नहिं
योग [illegible] जहां नहीं तपदान जहां नहिं देवल
पूजा। जहां ब्रह्म नाहिं जीव जहा नाहिं एक न दूजा॥ अरु चरणदास मिलि
मिटि गयो सो अचरज ऐसो न सूझिया। कौनसुने कासों कहै सो आप
आप नहिं दूजिया १६५॥

दो० अपरम्पार अपारहै आदि अनादि अडोल॥
पुरुष पुरातन ब्रह्महै बिनकाया बिनबोल १६६

चौ० अगम अगोचर अजर अनंता। अद्वैरूप अथाह भगवंता॥
निराकार निर्भय निर्वाना। परमेश्वर परमातम माना॥ अद्वै उरद्वै नहीं गो
साईं। नहिं बाहर नहिं मध्यम माहीं॥ नहीं जीव नहिं सीव सहाई। श्वेत
श्याम नहिं है अरुणाई॥ है जैसो तैसोही राजै। आपन माहिं आपही
गाजै॥ नहीं नाव नहिं भावन भारी। है अखंड नहिं खंडित कारी॥ है
सर्वज्ञ सत्य विज्ञाना। छेदाभेद अकत्थ सुज्ञाना॥ ज्योंका त्यों जैसे का
तैसा। नहिं ऐसा नहिं कहिये वैसा १६७॥

* पहाड़की कन्दरा॥

दो० नीचे नीचे अन्त ना ऊपर ऊपर अंत॥
बायें बायें दहना दहिने दहिने गूप १६८
नहिं नीचे ऊपर नहीं नहिं दहिने नहिं वाम॥
मध्य नहीं आकाशना निराकार नहिं नाम १६९
निर्गुण ना सर्गुण नहीं उपजे ना मिटिजाय॥
सबकुछहै अरु कुछ नहीं सदा मद्य थिरयाय १७०
जहां सांच जहँ झूंठहै जहां झूंठ जहँ सांच॥
झूंठ सांच दोनों नहीं तहँ कुछ शील न आंच १७१
बंध नहीं मुक्ती नहीं पाप पुण्यभी नाहिं॥
उतपति ना परलय नहीं नहीं नहीं भी नाहिं १७२
इन्द्री ना निग्रह करौं मन नहिं जीतूं ताहि॥
भूलौं ना चेतौं नहीं मैं नहिं खोजौं वाहि १७३
योग नहीं युगता नहीं नहीं ज्ञान नहिं ध्यान॥
बुधिविचार पहुँचै नहीं तहँ कछुलाभ न हान १७४
जैनधर्म शिव शक्तिना स्वर्ग नरकनहिंवास॥
षटदरशन चौवरण ना नहीं कर्म संन्यास १७५
सिद्ध नहीं साधक नहीं नहीं तिमिर नहिं भान॥
शून्य नहीं बेशून्य ना नहीं तत्त्व विज्ञान १७६
धर्म कर्म अरु मोहना अरु नाहीं वैराग॥
ज्योंका त्यों सो भी नहीं नहीं द्वेषी अनुराग १७७

चौ० ब्रह्मज्ञान बिन मिटै न दोई। ब्रह्मज्ञान बिन मुक्त न होई॥ दान यज्ञ तप नाना भोगी। ब्रह्मज्ञान बिन सबही रोगी॥ कलह कल्पना मनमें रोष। ब्रह्मज्ञान बिन ना संतोष॥ तिमिर अविद्या सबही भागे। ब्रह्मज्ञानमें जो सु जागे॥ मतमारग मिलि अर्थ बढ़ावैं। पक्षपातसे सब भरमावैं॥ गुरु बिन ब्रह्म ज्ञान नहिं पावैं। गुरुबिनतत्त्व कौनदरशावै॥ [illegible]

दो० तू नाहीं सब रामहै वेद भेदकी सीस॥
गुरु रमैया रमिरह्यो सकल अण्ड व्यापीक १७९
सिद्धस्वरूपी ब्रह्ममें ज्यों पाला सब लोक॥
पाला गलि पानी भये कछू न निकसै फोक १८०
उलझे को सुलझायके कई जन्म को सूत॥
चरणदास निर्भय भये आशातजि औधूत १८१

कवित्त॥ स्वर्गहू न चहिये जो होम यज्ञ दानकरों इन्द्रआदि भोगनने चित्तने उठायोहै। ऋद्धिहू न चहिये जो जक्तमें बड़ाई चले सिद्धिहू न चहीं सब साधन बिसरायो है॥ जातिहू न चाहीं जो कुलकी मर्यादचलूं चारि वरण एके यों वेदनमें गायो है। कासों कहें मुक्त और बंध तो न सूझेकहूं कहे चरणदास आप आपन लौं लायो है १८२॥

सवैया॥ आदिहू आनँद अन्तहू आनँद मध्यहू आनँद ऐसेहि जानो। बंधहु आनँद मुक्तहु आनँद आनँद ज्ञान अज्ञान पिछानो॥ लेटेहु आनँद बैठेहु आनँद डोलत आनँद आनँद आनो। चरणदास विचारि सबै कछु आनँद आनँद छांड़िके दुःख न ठानो १८३ आदिहु चेतन अंतहु चेतन मध्यहु चेतन माया न देखी। ब्रह्म अद्वैत अखण्ड निरालम्ब और न दूसरो आनँद एखी॥ सिन्धु अथाह अपार विराजत रूप न रंग नहीं कुछ रेखी। चरणदास नहीं शुकदेव नहीं तहँ ना कोइ मारग ना कोइ वेखी १८४ भक्षतहैं नहिं भक्षत भोजन पीवतहैं नहिं पीवत पानी। डोलतहैं नहिं डोलत पैरसों बोलतहैं नहिं बोलत बानी॥ नानारूप व्योहारमें देखत निश्चयके मध्य कछू नहिं आनी। चरणदास बताय दियो शुकदेव ने ऐसे रहै ताहि जानिये ज्ञानी १८५ सोवतहै नहिं सोवतनींद सो जागतहै नहिं जाग दिखानी। योगकरै न करै कछु साधन ध्यान करै न करै कछु ध्यानी॥ बचन विशालकरै चरचा न करै चरचा नहिं होय बितानी। चरणदास बतायदियो शुकदेवने ऐसे रहै ताहि जानिये ज्ञानी १८६॥

कवित्त॥ मंदिर क्यों त्यागै अरु भागै क्यों गिरिवरको हरिजी को दूर

ग्नानि कलपै क्यों बावरे। सब साधन बतायो अरु चारिवेद गायो आपन
को आप देखि अंतर लौ लावरे॥ ब्रह्मज्ञान हिये धरो बोलते का खोजकरो
माया अज्ञानहरो आपा बिसरावरे। जैहैं जब आप थाप कहां पुण्य कहा
पाप कैई चरणदास तू निश्चल घर आवरे १८७॥

अथ ब्रह्मज्ञानी लक्षण वर्णन॥

ज्ञान परीक्षा॥

निरालंभ १ निर्भ्रम २ निर्वासीक ३ निर्विकार ४ (अथ विचार परीक्षा) निर्मोहित १ निर्वैर २ निर्हिंसक ३ निर्वान ४ (अथ विवेक परीक्षा) सावधान १ सर्वंगी २ सारग्राही ३ संतोषी ४ (अथ परमसंतोष परीक्षा) अयाचक १ अमानी २ अपक्षीक ३ स्थिर ४ (अथ सहज परीक्षा) निष्प्रपंच १ निस्तरंग २ निर्लिप्त ३ निष्कर्म ४ (अथ निर्वैरपरीक्षा) सुहृद १ सुखदायी २ शीतलताई ३ सुमती ४ (अथ शून्य परीक्षा) शीलवंत १ सुबुद्धी २ सत्यवादी ३ ध्यान समाधी ४ जामें ये लक्षण होयँ ताको ब्रह्मज्ञानी कहिये और जामें ये लक्षण न होयँ ताको वाचक ज्ञानी विडंडा जानिये॥

दो० जनक गुरु शुकदेवजी चरणदास शिष्य होय॥
आप रामहीं रामहैं गई दुई सब खोय १८८
ब्रह्मज्ञान–पोथी कही चरणदास निर्वार॥
समझै जीवन्मुक्त हो लहै भेद ततसार १८९

इतिश्रीमहाराजसाहबश्रीशुकदेवजीकेशिष्यश्रीचरणदासकृतब्रह्मज्ञानसागरसम्पूर्णम् १०॥

अथश्रीचरणदासकृत शब्दप्रारम्भः॥

मंगलाचरण गुरुस्तुति॥

दो० ब्रह्मरूप आनंद घन निर्विकार निर्लेव॥
मंगलकरण दयाल जी तारण गुरु शुकदेव १

सतिपनें में तुम सत्यहौ शूरन में हौ बीर ॥
यतियनमें तुम यजतहौ श्रीशुकदेव गँभीर २
पतित उधारण तुमलखे धर्म चलावन भेव ॥
संकट सकल निवारिये जै जै श्रीशुकदेव ३
चिन्ता मेटन भवहरण दूरि करण जग व्याध ॥
गुरु शुकदेव कृपा करौ चरण लगे सबसाध ४
दाता चारौ वेदके श्रीशुकदेव दयाल ॥
चरणदास पर हूजिये बारंबार कृपाल ५

राग कल्याण ॥ नमो शुकदेवहो चरणपखारणं द्वंद संकटहरण करण मंगलं ॥ परम आनंद घन पतितकै तारणं नावनक त्याग बैराग्दै मुक्त तीनिहूं गुणनते निर्विकारं । महानिष्काम और धाम चौथेरहो सिद्धि भई फिरैं लारं॥ ज्ञानके रूप अरु भूप सब मुनिनमें दयाकी नावकिये पारं। उदैभागौत मति भानु परगट कियो तिमिरै क्रियो दूर अरुभ्रमध मोहदल जीति अनरीतिके खण्डनं भक्तके दृढ़ करन भवविडारं। च दासके शीशपर हाथ नितहीरहो यही मांगौंगुरु बारबारं ६ ॥

मंगलाचरण दोहा ॥

दश चिह्न दहिने चरण बायें हैं दश एक ॥
जिनके निश्चल ध्यानते कटैं जो विघ्न अनेक १
श्रीशुकदेव अज्ञादई चरणदास उचार ॥
सो अब बरणन करतहूं शब्द माहिं विस्तार २

रागकल्याण ॥ चरण चिह्न चितलाव फेरि तेराजन्म न होगा। पदम भ्रमर रुचि निरखि नैनभरि अंकुश मन अंटकाव ॥ अम्बर छत्र कलश जोराजत ध्वजा धेनु पदभाव। शंखचक्र अरु कलश सुधाछ्दै तामूं नित उरभाव ॥ स्वस्तिक जम्बू फलकी शोभा जासों सुरति लगाव। अर्द्धचन्द षट्कोन मीन बुंद उर्ध रेख लखिचाव ॥ अष्टकोण त्रिरकोण विराजे धनुप

१ [illegible] २ सूर्य ३ अंधेरा ४ वमन ५ [illegible] ६ गौ ७ [illegible] ॥

ण उरधाव। कोटिकाम नख ऊपर वारूं नूपुर सुन्दर पाव ॥ श्रीशुकदेव चहूपद वरणे सो तू हियेमें लाव। चरणदास हित राखि भोर निशि वार वार वलिजाव ३॥ आरती रागभैरव॥

मंगल आरति याविधि कीजे। हर्षपाय आनँदरस पीजे॥ प्रथमें मंगल गुरुही जान। जिनसूं पायो पद निर्वान॥ ज्ञान भानु परगट कियो भोर। मिटिगइ रैन तिमिर घनघोर॥ दुतिये मंगल श्रीगोपाल। भक्तिवछल बहुपतित उधार॥ राम कृष्ण पूरण औतार। दुष्टदलन सन्तन रखवार॥ तृतिये मंगल प्रभुजी के साथ। मानसरोवर मताअगाध॥ तिनकी संगति उडि गयो संसा[1]। कागपलट गति हैगयो हंसा॥ चौथे मंगल श्रीभागौत। घट उजियार करन कूं ज्योत॥ पाप ताप दुख मेटनहारी। जिहि नौका चढ़ि उतरो पारी॥ पँचवें मंगल श्रीशुकदेव। तनमन सूं करि उनकीसेव॥ चरणहिदास चरण चितलायो। मंगलचार भयो जसगायो ४ मंगल आरति कीजेप्रात। सकल अविद्या घटगइ रात॥ सूरय ज्ञान भयो उजियारा। मिटिगये औगुण कुबुधि विकारा॥ मनके रोग शोग सबनाशे। सुमति नीर शुभजलज[2] प्रकाशे॥ भै अरु भर्म नहीं ठहराई। दुविधागई एकता आई॥ जाति वरण कुलसूझे नींके। सब सन्देहगये अब जीके॥ घटघट दरशे दीनदयाला। रोम रोम सब होगइ माला॥ दृष्टि न आवें दुख जग जाला। कागपलटि गतिभये मराला[3]॥ अनहद बाजन बाजन लागे। चोर नगरिया तर्जितजि भागे॥ गुरुशुकदेव कि फिरीदोहाई। चरणदास अन्तरलौ जाई ५॥ भोरकीध्वनि रागभैरव॥

जैजै अचल ब्रह्म अविनाशी। आपनिहीं सब ज्योति प्रकाशी॥ जैजै अलख निरंजन देवा। ऋषिमुनि शारद लहें न भेवा॥ जैजै आदिपुरुष जगदीशा। हर्षत तोहिं नवाऊं शीशा॥ जैजै जगपति सिरजनहारा। व्यापिरह्यो जीवजन्तु मँझारा॥ जैजै भूमिभार परहारी। प्रकटहोत संतन हितकारी॥ जैजै वपुधारी चौबीश। लीलाकारण त्रिभुवन ईश॥ जैजै कु-

१ माया २ कमल ३ हंस॥

चणमनोहर गावा । त्रैविशाल.नेगाके दाता ॥ जैजै भक्तिवछल भगवान व्याधि [illegible] सरगुण रूप । नाना भांति अधिक अनूप ॥ जहा तहा अवधार रह । जाकी महिमा को कवि कहै जैजै हो शुकदेव विराजै । मम मस्तक पर निशिदिन राजै ॥ जैजै प्रेम धारसपिये । जैजै तिलक शिरमली किये ॥ जैजै साधनके सुखदाई । चरणदास तुम्हरी शरणाई ६ आरति आदिपुरुषकी कीजै । साधो अगमअगा अचल मन दीजै ॥ अद्भुत आरतीरउकारा । त्रैदेवाहै जगत पसारा ॥ पहिले मच्छ रूप हरि धारो । वेदलाय शंखासुर मारो ॥ रई सदा धलवासुनेती । चौदहरतने मथे दधि सेती ॥ रूप वराह धारि हरिधाये । हिरण्याक्ष हनि धरतीलाये ॥ खम्भ फारि हरणाकुश मारो । नरसिंह है प्रहलादउबारो । बामन ह्वैकरि बलि छलि लीन्हे । तीनि लोक तीनों डग कीन्हे ॥ परशुराम ह्वै शस्तर धारे । क्षत्री सबै निकन्द करिडारे ॥ रामरूप रावण दलमलिया । लंका राज बिभीषण मिलिया ॥ कृष्णरूप ह्वै कंस पछारो । दर्शन दे ब्रज सकलउधारो ॥ बोधरूप अचरज गति तेरी । कौतुक देखि थकी बुधि मेरी । निष्कलंक निर्लिप्त निरासा । संभलपुरत लियो जहँ बासा ॥ हरिहै एक रूप बहुधारे । निराकार आकार नियारे ॥ दश औतार आरती गाऊं । निरभै होय अभैपद पाऊं ॥ चरणदास शुकदेव बताये । निरगुणहरि सरगुण ह्वै आयो ७ आरति रमता रामकि कीजै । अन्तर्ध्यान निरखि सुखलीजै । चेतन चौकी सतको आसन । मगन रूप तकिया को डासन ॥ सोहंथापे खैंचि मन धरिया । सुरत निरत दोउबाती बरिया ॥ योग युगति सूं आरति साजी । अनहद घंट आपसूं बाजी ॥ सुमति सांझकी बेरिया आई । पांच पचीस मिलि आरति गाई ॥ चरणदास शुकदेवको चेरो । घटघट दर्शै साहब मेरो ८ आरति करत हँसै मनमेरो । वार पार कछु दिखे न तेरो ॥ अमर अडोल निरिच्छन वेला । त्रैगुण रहत रूप नहिंरेखा ॥ चेतन आनँद नित

१ लक्ष्मी, मणि, रम्भा, वारुणी, अमृत, शंख, ऐरावत, कल्पद्रुम, चन्द्रमा, धेनु, धन्वा, [illegible] ॥

धारा । निराकार निर्लिप्त नियारा ॥ निराकार आकार बिवरजाति । निरगुण अरु सरगुण तेरी गति ॥ हाथ पांव अरु शीश घनेरे । कैसे आरती करूं प्रभुमेरे ॥ सोहंबाती घीव अखण्डा । एकोहि ज्योति बले ब्रह्मण्डा ॥ तुहीं थाले तुहि आरति साजै । तुहि घंटा तुहि झांझरि बाजै ॥ चरणदास शुकदेव लखायो । सुरतिथकी पै पार न पायो ९ गगन मँडलमें आरति कीजै । उत्तम साज सकल सजि लीजै ॥ सुखमन अमृत कुम्भ धरावै । मनसा मालिनि फूल चढ़ावै ॥ घीव अखंडा सोहंबाती । त्रिकुटी ज्योति जले दिन राती ॥ पवन साधना थाल करीजे । तामें चौमुख मन धरिलीजै ॥ रवि शशि हाथ गहौ तिहिमाहीं । छिन दहिनो छिन बायेंलाहीं ॥ सहसकमल सिंहासन राजै । अनहद झांझरि नितही बाजै ॥ इहिविधि आरति सांचीसेवा । परम पुरुष देवनको देवा ॥ चरणदास शुकदेव बतावै । ऐसी आरति पारलगावै १०. ऐसी आरतिकरि हुलसावै । दै परिक्रमा शीशनवावै ॥ तनको थाल रमनको चौमुख ज्ञान ध्यानकी बातीलावै । भक्तिभावको घी भरि तामें जगमग जगमग ज्योति जगावै ॥ अर्ध ऊर्ध हिलसूं करि फेर रचना रचै फूल बर्षावै । सुरति मृदंग अरु नेत्र तँबूरा झेगड़ झेगड़ झांझबजावै ॥ ताल बीण मुरचंग शंखध्वनि प्रेम मगन है हरिगुण गावै । सोरन कलशा जलको राखे धूपरु अगर सुगन्ध धरावै ॥ या विधि सों शुकदेव श्यामकी गाय आरतीको फल पावै । युगलकिशोर निरखि नैनन सों चरणदास बलि बलि बलि जावै ११॥

रागसभामें ॥ या विधि गोविंद भोग लगावो । भक्तवछल हरि नाम कहावो ॥ बेर भीलनी के तुम पाये । देखि ऋषीश्वर सकल लजाये ॥ जैसे साग बिदुर घर पायो । दुर्योधन को मान घटायो ॥ भक्त सुदामा के तंदुल[1] लीन्हे । कंचन महल अधिक सुख दीन्हे ॥ ज्यों करमाकी खिचरी खाई । नेह लियो सब शुचि[2] बिसराई ॥ तुम्हरी बिभौ प्रभु तुम्हरेहि आगे । हमसूं दीननकूं कहलागे ॥ प्रेम प्रीतिसूं भोजन कीजै । बचै सीथ संतनकूं दीजै ॥ चरणदास भरि राखी झारी । अँचवो हरि शुकदेव मुरारी १२॥

---

१ चांवल २ पवित्रता ॥

भोगके आगेकी ध्वनि काफी ॥

जै जै पारब्रह्म परधान । जाकूं पावे गुरुके ज्ञान ॥ ब्रह्म पुरुषके रूप । सोतो कहिये अधिक अनूप ॥ जै जै ॐ और त्रैदेव । जै जै तार अभेव ॥ जै जै वृन्दावन निज धाम । जै जै गोकुल अरु जै जै गोपी जै जै ग्वाल । जै जै सदा बिहारीलाल ॥ जै जै नँदलाल । मोरमुकुट मुरली बनमाल ॥ जै जै राधे कृष्ण मुरार । जै देव उचार ॥ जै जै महाविदेह भुवाल । जै जै श्रीशुकदेव द को नाम जपे जो कोय । प्रेमभक्ति पावतहै सोय ॥ चरणदास गु हैं । हरि चरणनके पास रहैं १३ ॥

अथ गुरुदेवका अंग राग कल्याण ॥

सतगुरु पांचों भूत उतारो । जन्म जन्म के लागेहि आये दे तिन्हैं निडारो ॥ काम क्रोध मोह लोभ गर्भत मन बौराय कि भायो । जिनके हाथ परो जिय मेरो घेरा घेरी बहुत दुखपायो मोहिं छोड़त नाहीं लहरि चढायके बहुत निवायो । कपि ज्यों नचावे उत्तम हरिको नाम छुटायो ॥ अबकी शरणि गही है तुम् दास अजाने । किरपा करि यह व्याधि छुटावो गुरु शुकदेव स

राग धनाश्री ॥ अब में सतगुरु शरणों आयो । जिन रसनो वाणी ऐसीहि जाय सुनायो ॥ काम क्रोध मद पाप जराये त्रैवि शायो । नागिनि पांच मुई सँग ममता हरख काल डेगयो ॥ अचार भुलाना ना तीरथ मग धायो । समझी सहज वचन गुरि की बोझ बगायो ॥ ज्यों ज्यों जम्बू गरकंही वामें वह मां मां जग भूंठो भूंठो तन मेरो यों आपा नहिं पायो ॥ वाकूं जपे जन्म में हम गुद्ध बनायो । चरणदास शुकदेव दया यों सागर लहीं

राग सोरठ ॥ गुरुदेव हमारे आवोजी । बहुते दिनों से लगो नँद मंगल लावोजी ॥ पलकन पंथ बुहारूं तेरो नैनन पी पग झाट निहारी निशिदिन देखूं हमरी ओर निहारोजी ॥ करों उवा

ती आंगन चौक पुरावोंजी । करूं आरती तन मन वारूं वारवार बलि
वोंजी ॥ दे पैकरमा शीश नवाऊं सुनि सुनि वचन अघाऊंजी । गुरु
कदेव चरणहूंदासा दर्शन माहिं समाऊंजी १६ हो अँखियां गुरु द-
नकी प्यासी । इकटक लागी पंथ निहारूं तनसूंभई उदासी ॥ राति दिना
हिं चैन नहीं है चिन्ता अधिक सतावै । तलफतरहूं कल्पना भारी निरचल
धि नहिं आवै ॥ तन गयो सूक हूक अति लागी हिरदय पावक बाढ़ी ।
खिनमें लेटी खिनमें बैठी घर अंगना खिन ठाढ़ी ॥ भीतर बाहर संगसहेली
त नहीं समझावै । चरणदास शुकदेव पियारे नैनन ना दर्शावै १७ ॥

रागभैरव ॥ गुरु बिन मेरे और न कोय । जगके नाते सब दिये खोय ॥
गुरुही मात पिता अरु बीर । गुरुही सम्पति जीवससीर ॥ गुरुही जाति व-
ण कुल गोत । जहां तहां गुरुसंगी होत ॥ गुरुही तीरथ बरत हमार । दी-
हे और धरम सब डार ॥ गुरुही नाम जपौं दिनरैन । गुरुको ध्यान परम
सुखदैन ॥ गुरुके चरणकमलकर वास । और न राखूं कोई आस ॥ जो
दुख चाहैं गुरुही करैं । भावै छाहैं धूपमें धरैं ॥ आदिपुरुष गुरुही कूं जानूं ।
गुरुही मुक्तीरूप पिछानूं ॥ चरणदास के गुरु शुकदेव । और न दूजा
जागें भेव १८ ॥

अथ भक्तिअंग वर्णन राग करखा ॥

राखिये लाज महराज गोपालजी दीनजन शरण आयो तिहारी । ल-
गो मोह ध्यान दृढ़ चरणही कमल में कीजिये किरपा सुनिहो विहारी ॥
विषय जंजार रस स्वाद घेरो घन्यो पांचहू चोर दुख देह भारी । नीच बहु
दुष्ट बलवान पच्चीसठग तर्क निशि द्योस हिये घात डारी ॥ पकरि गजराज
कूं ग्राह खैंच्यो तबै टेर हेर कीन्हीं पुकारी । गरुड़ तजि धाय आये छुटायो
तुरत हरि हिये व्याध तन विपति डारी ॥ ध्रुव अचलकियो प्रहलादकूं दर्श
दियो कियो हनुमानसूं प्रीति भारी । भीलनी अरु कामी अजामीलसे अ-
धम अतिपतित गणिका उधारी ॥ पाण्डसुतहू बचाये जरत अग्निसे द्रौ-
पदी चीरबाढ़ो अपारी । नामदे सेन पीपा कबीरा सदन नरसिया दासमीरा

उधारी ॥ कोटि अनगन भक्त तारि दिये तिनको मैं कहाँ मेरी
बिसारी। तो बिना कहांजाऊं कहीं ठौर ना तेरेही द्वारको हूं
कल संशयहरण तुही तारणतरण श्याम शुकदेव गिरि
चरणदास को आसरो तुही है आप तो जानलीजे सँ
जनशूर जो खेतमें मड़रहै भक्तिमें दानमें रहैठाढ़ा।
निरभै गजै पैज नीशान जिनआय गाढ़ा ॥ भ
मत सबनको यशकहत ग्रन्थहोई। तिनविषे कछू इकन
हो सन्तदै चित्त सोई ॥ पितासूं रूठि ध्रुव पांचही वर्षको टेक ग
पन्थधायो। छल भयो ना डिगो टेक पूरीभई जीति मैदान हरिदर्श पायो॥
हयो प्रहलाद हरिनाम छांड़ो नहीं बापने त्रासदै बहु डिगायो। टेक जबना
टरी राम रक्षाकरी दुष्ट को मारिकै जन जितायो॥ कबीरदास दूसने पहिरि
बस्तर बने नामदेव सारिखे बहुत कूदे। सेन सदना चली भक्त पीपा बड़ो
रामकी ओरकूं चले सूधे ॥ मलूक जैदेव गज ग्राह कलकी धरे शूर रैदास
मुख नाहिं मोड़ा। ध्यान बन्दूक में प्रेम रञ्जकजमा मीरमाधो चला कुदाय
घोड़ा ॥ दासमीरा पिली प्रेमसम्मुख चली छोड़िदई लाजकुल नाहिं माना।
और शबरी मढ़ी तोड़ि ऊँचीगढ़ी दौर करमाचली प्रेम जाना॥ श्रीशुक
देव रणजीत सांवत कियो लड़े कलियुगविषे खम्भ गाड़े। बहुत सेनालिये
ललक हूहू किये चरणहीदास सँग नाहिं छांड़े २०॥

रागकाफी ॥ हे जगके करतार तेरी कहा अस्तुति कीजै। तूही एक
अनेक भयोहै अपनी इच्छाधार॥ तूही सिरजै तूही [illegible] तूहीकरै सँहार।
जितदेखूं तित तूही तूहै तेरारूप अपार॥ तूही [illegible] तूही तूही [illegible]
मुरार। साधोंके रक्षाके कारण युगयुगले औतार॥ [illegible] विस्तार॥
तुही है अन्ततेरा उजियार। दानव देव तूहीहूं [illegible] देखो
जल थलमें व्यापकहै तूही घटघट बोलनहार। [illegible]
जासों करों पुकार॥ तूही चतुर शिरोमणि है [illegible]
दास शुकदेव तूही है जीवन प्राण अधार २१ [illegible]

द्धि कहां है। चतुर्मुखी ब्रह्मगुणगावैं तिनहुँ न पायोजान ॥ गुणगावत शंकर जब हारे करनेलागे ध्यान। गुण अपार कछु पार न आयो सनकादिक कथज्ञान॥ गुणगावत नारदमुनि थाके सहसमुखनसूं शेष। लीला को कछु वार न पायो ना परिमाण न वेष॥ शक्ति घनी अनगिनत तुम्हारी बहुतरूप बहुनावैं। जबहिं विचारूं हिये में हारूं अचरज हेरि हिरावैं॥ अति अथाह कछु थाह न पाऊं शोच अचक रहिजावैं। गुरु शुकदेव थके रणजीता में कहु कौन कहावैं २२॥

राग परज ॥ रामगुण कोई न जानेहो। शेश महेश गणेश अरु ब्रह्मा रहे थकानेहो॥ सुरति निरति बुधि गम नहीं सबदेव लुभानेहो। सनकादिक नारदहू हारे कौन बखानेहो॥ योगी जंगम ऋषि मुनि तपसी सुज्ञानेहो। पशु मनुषकहू कहिसकै बिपे राशि लपटानेहो॥ चरणदास शुकदेव दया यह बात पिछानेहो २३॥

राग काफी॥ रामारामाजी साईं॥ अलख निरंजनरूपा। तूंही एक अनेक स्वरूपा॥ तेरी ज्योति सकल जगछाई। तू घटघट रहो समाई॥ तूही आदि अनादि कहावै। ब्रह्मादिक पार न पावै॥ अविगत अविनाशी जाना। निरगुण सरगुण पहिचाना॥ बहु विधिके वेप बनावै। सिरजै पालै विनशावै॥ अचरज कौतुक विस्तारा। जनकारण ले औतारा॥ तूहीहै देवनको देवा। सनकादिक लहे न भेवा॥ चाहे सो करै पलमाहीं। तूही व्यापक है सब ठाहीं॥ तूही ज्ञानी गुणी अपारा। पूरण परमातम प्यारा॥ गुण बहुत कहांलों गाऊं। बिनती करि शीश नवाऊं॥ शुकदेव गुरू बतलाया। चरणदास शरण तेरी आया २४॥ रामारामाजी सुनि लीजै बिनती मेरी। मैं शरण गही है तेरी॥ तैं बहुतै पतित उधारे। भवजलसूं पारउतारे॥ हौं सब को नाम न जानूं। अब कोइकोइ भक्त बखानूं॥ अँबरीप सुदामा नामा। सो पहुँचाये निजधामा॥ ध्रुव पांच बरपको बाला। तेहि दर्शन दियो गोपाला॥ प्रह्लाद टेक सुत राखी। जानत हैं सब साखी॥ शबरी के फल तुम खाये। त्रयलोचन के घर आये॥ पण्डवनकी करी सहाई। द्रौपदी कि लाज

इ आपा तुमहीं को दीजो मेरी मो में कुछ न रही। आदिपुरुष शुकदेव नोजी चरणदास यों टेरि कही २७॥

राग विभास॥ अबकी करो सहाय हमारी। दुष्टदलन अरु भक्त वचावन सी साखि तुम्हारी॥ जिन प्रह्लाद असुर गहि बांध्यो लीन्हो खड्ग निकारी। हिरणाकुश हनि दास उबारो नरसिंह को तन धारी॥ खैंचि ग्राह ज बोरन लागो राम कह्यो यकबारी। सुनत पुकार पयादेहि धाये तजिके रुड़ सवारी॥ द्रौपदि लाज उबारण कारण लाये सभा मँझारी। दीनानाथ लई सुधि वेगहि वाढ़ो चीर अपारी॥ जिन जिन शरण गही संकटमें कहा पुरुष कह नारी। चारो युग हरि करी सहाई रक्षक भये मुरारी॥ गुरु शुकदेव बतायो तोकों सन्तनकी रखवारी। चरणदास थकि द्वारे तेरे गुण पौरुष दियो डारी २८॥

राग धनाश्री॥ अब तुम करो सहाय हमारी। मनके रोग होयगये दीरघ तनके बड़े विकारी। तुम सो वैद और को दूसर जाहि दिखाऊं नारी॥ सजीवनमूल अमरमूल हो जासों सोहै दया तुम्हारी। क्रिया कर्म की औषध जेती रोग बढ़ावनहारी॥ दीजे चूरण ज्ञान भक्तिको मेटो सकल व्यथारी। जनके काज पयादे धावत चरणकमल पर वारी॥ मैं भयो दास अधीन तुम्हारो मेरो करो सँभारी। जो मोहिं कुटिल कुचालि जानिके मेरी सुरति विसारी॥ चरणदास है शुकदेव तेरो दुष्ट हँसैंगे भारी २६ हरिजी संकट वेगि निवारो। जनकूं भीर परीहै भारी चक्र सुदर्शन धारो॥ कंस निकंदन रावण गंजन हरणाकुश गहि मारो। दुष्टदलन अरु भक्त उबारण जन प्रह्लाद उबारो॥ पांचो पाण्डव राखलिये हैं कौरव दल संहारो। जिन जिन [illegible] तेरे ऐसो [illegible] ३०॥

राग विभास॥ राखो जी लाज गरीबनिवाज। तुम बिन हमरे कौन सँवारे सबही बिगरे काज॥ भक्तवछल हरिनाम कहावो पतित उधारणहार। करो मनोरथ पूरण जनको शीतल दृष्टि निहार॥ तुम जहाज में काग ति-

हारो तुम तजि अन्त न जाऊं। जो तुम हरिजी मारि निकासो और
नहिं पाऊं॥ चरणदास प्रभु शरण तिहारी जानत सब संसार। [illegible]
सों हँसी तिहारी तुमहूं देखि विचार २१॥

राग बिलावल॥ प्रभुजी शरण तिहारी आयो। जो कोइ शरण तिह
नाहीं भर्मि भर्मि दुखपायो॥ औरनके मन देवी देवा मेरे मन तुहिभायो
जबसों सुरतिसँभारी जगमें और न शीशनवायो॥ नरपतिसुरपति आ
तिहारी यह सुनिकरि मैं धायो। तीरथ व्रत सकल फल त्यागे चरणक
चितलायो॥ नारदमुनि अरु शिव ब्रह्मादिक तेरो ध्यान लगायो। आ
अनादि युगादि तेरो यश वेद पुराणन गायो॥ अब कर्यौन बांहगहो हरि
तुम काहे बिसरायो। चरणदास कहैं करता तूहीं गुरुशुकदेव बतायो २२

राग केदारा॥ अबकी तारिहो बलबीर। चूक मोसों परीभारी कुबुधि
संगसीर॥ भवसागर की धार तीक्षण महागँधीलो नीर। काम क्रोध म
लोभ भँवरमें चित न धरत अब धीर॥ मच्छ जहां बलवन्त पांचो थाह ग
गँभीर। मोह पवन झकोर दारुण दूर पै लबतीर॥ नावतो मँझधार म
हिये बाढ़ी पीर। चरणदास कहै कोई नाहिं संगी तुम बिना हरिहीर २३

राग सोरठ॥ अब जगफंद छुड़ावोजी होंतो चरणकमल को चेरो। प
रहूं दरबार तिहारे संतन माहिं बसेरो॥ बिना कामना करूं चाकरी आ
पहरे नेरो। मन वच भक्ति क्रिया करि दीजे मोहिं यही बहुतेरो॥ खानेजा
फर्दामी कहियो तुही आसरो मेरो। फिड़क तिहारो तहूं न छांड़ों सेवा
निरख नेरो॥ काहू और आन देवनसों रहोनहीं उरझेरो। जैसे राखो त्यों
रहूं कर लीनो सुरझेरो॥ तेरे घर बिन कहीं न मेरो और ठिकानो हो
मोसे पतित दीनको हरिजी तुमहीं करो निबेरो॥ गुरु शुकदेव दयाक
मोहूं और निहारी हेरो। चरणदासको शरणे राखो यही इनामघनेरो २४

राग बिलावल॥ तुमसाहब करतारहो हम बन्दे तेरे। रोम रोम गुनहगा
हूं बख्शो हरि मेरे॥ दसो द्वारे मैं नहे सब गन्दम गन्दा। उत्तम तेरा

सरो सो अन्धा ॥ गुण तजिके औगुण किये तुमसब पहिचानो । तुम कहा छिपाइये हरिघटकी जानो ॥ रहमकरो रहमान सों यहदास तिहारो। पदारथ दीजिये आवागमन निवारो ॥ गुरुशुकदेव उबारलो अब मेहर जे। चरणहिदास गरीबको अपना करलीजे ३५॥

राग रामकली ॥ चारिवरण सों हरिजन ऊंचे । भयेपवित्तर हरिके सुमिरे के उज्ज्वल मनकेसूचे ॥ जो न पतीजे साखि बताऊं शबरीके जूंठेफल ये चित्रकूत ऋषीश्वर ह्वांईरहते तिनकेघर रघुपति नहिंआये ॥ भीलनी पांव यो सरिता में शुद्धभयो जल सब कोई जाने । मन्दहतो सो निर्मल ह्वै अभिमानीनरभये खिसाने ॥ ब्राह्मण क्षत्री भूपहुते बहु बाजो शङ्ख श्वपच व आयो । बालमीकि यज्ञ पूरण कीन्हों जयजयकार भयो यश गायो ॥ जाति वरण कुल सोई नीको जाके होय भक्ति परकास। गुरु शुकदेव कहत हैं तोको हरिजन सेव चरणहीदास ३६ सब जातिनमें हरिजनप्यारे । रहनी तिनकी कोई न पावै तनसों जगमें मनसों न्यारे॥ साखिसुनो अँबरीष भूप की दुर्बासा जहँ आयो। लगो शरापदेन राजाको चक्रसुदर्शन जारनधायो॥ प्रभुजी आये दुर्योधन के वह मनमें गरबायो । नाना विधिके व्यंजन त्यागे साग विदुर घर रुचिसों पायो ॥ सतयुग त्रेता द्वापर कलियुग मान सन्त को राखो । भक्तों वश भगवान सदांही वेद पुराणनमें जो भाखो ॥ ब्राह्मण क्षत्री बैश्य शूद्र घर कहीं होय क्यों न वासा । धनिकुल वह शुकदेव बखाने यह तुम सुनो चरणहीदासा ३७॥

राग कान्हरा॥ धनि वे नर हरिदास कहाये। रामभक्ति दृढ़हीकरि पकरी आन धर्म सबही बिसराये ॥ आठपहर गलतान भजनमें प्रेममगन हियमें हुलसाये ।आप तरे तारे औरनको बहुतक पापी पार लगाये ॥ प्रभु दर्शन बिन और न आशा धर्मकाम अरु मोक्ष न चाहे । आठो सिद्धि फिरैं सँग लागी नेक न देखें नैन उठाये ॥ तिनको ऋषि मुनि जाप करतहैं हरिजन हरि दोउ सँगही गाये । ऊंची पदवी इन्द्रहुते देवनदेखि अधिक ललचाये॥

कहैं शुकदेव चरणहीं दासा धनि माता ऐसे जनजाये। जीवत सो पाई तनछूटे हरिमाहिं समाये ३८ ॥

राग सोरठ ॥ मोको कछु न चहिये राम। तुम बिन सबही फीके नाना सुख धन धाम ॥ आठसिद्धि नौनिद्धि आपनी और जननको मैंतो चेरो जन्म जन्मको निजकरि अपनो कीजे ३९ स्वर्ग फलनकी न आसा। ना बैकुंठ न मोक्षहि चाहौं चरणकमलके राखो पासा ॥ या माहिं उमाहूं भक्ति न छांडौं मुक्ति न मांगों सुन शुकदेव मुरारी। चरण की यही टेकहै तजौं न गैल तुम्हारी ४० ॥

राग भैरव ॥ वह पुरुषोत्तम मेरा यार। नेह लगा टूटे नहिं तार॥ जाऊं न वर्त्तकरूं। चरणकमल को ध्यानधरूं ॥ प्राणपियारे मेरेहि प वन वन माहिं न फिरूं उदास। पढूं न गीता वेद पुरान। एकहि श्रीभगवान ॥ औरनको नहिंनाऊं शीश। हरिही हरिहैं बिस्वेबीश ॥ हूकी नहिं राखूं आस। तृष्णा कादिदहीहै फाँस ॥ उद्यमकरूं न राखूं दाम। सहजहि ह्वै रहै पूरणकाम ॥ सिद्धि मुक्ति फल चाहौं नाहिं। नितहि रहूं हरि संतन माहिं ॥ गुरु शुकदेव यही मोहिं दीन। चरणदास आनँद लवलीन ४१ यों कहैं हरिजी दयानिधान। सन्त हमारे जीवनप्रान ॥ सन्तचलैं जहँ सँगहीजावँ। सन्त दियो सो भोजन खावँ ॥ सन्त सोलावें जितहूँ सोय। सन्त बिना मेरे और न कोय ॥ सन्त हमारे माई बाप। सन्तहिको मनराखूं जाप ॥ सन्तको ध्यान धरौं दिनरैन। सन्त बिना मोहिं परै न चैन ॥ सन्त हमारी देही जान। सन्तहि की रीखूं पहिंचान ॥ सन्तकी सकल बलइया लेवँ। सन्तकूं अपनो सर्वसदेवँ ॥ सन्तहिहेत धरूं औतार। रक्षाकारणकरूं न बार ॥ सुखदेऊं दुख सब निरवार। चरणदास मेरो परिवार ४२ ॥

रागसोरठ ॥ भक्तजन सो हरिके मनभावे। निष्कामी अरु प्रेमहिये में अनन्य भक्ति चितलावे ॥ आनंदव जो मोती बरषे तौनाहीं पतियावे। प्रभु के चरणकमलके ऊपर भँवरभयो लिपटावे ॥ सिद्धि न चाहै ऋद्धि न मांगे दर्शनको ललचावे। मुक्ति आदिदेचाट न कोई आशा सकलगँवावे ॥ रोमहिं

[अ]म पुलकि सबदेहीं गोविंदके गुणगावै। गद्गदवाणी कंठउसासैं नैनन नीर [ढु]रावै॥ परमेश्वर मिलनेकी लहरैं इकआवै इकजावै। कहैं शुकदेव चरणहिं [द]ासा हरिहू कंठलगावै ४३॥

राग बिलावल॥ हमारे चरणकमल को ध्यान। मूरख जगतभर्मता डोले चाहत जल अस्नान॥ सब तीरथ वाहींसों प्रकटे गंगा आदिक जान। जिन सेवत सब पातक नाशै नितहोवै कल्यान॥ साकत गिरही बानेधारी है सबही अज्ञान। हरिसों हीरा छांड़ि दियोहै पूजे कांचपषान[1]॥ हरि चरणनकी महिमा जानैं हैं वे सन्त सुजान। भोंदू नर मायाके चेरे इनको कह पहिचान॥ चरणदास शुकदेव गुरूने दीन्हो अंजन ज्ञान। सांचो प्रीतम जात परोहै विसरिगयो सब आन ४४॥

रागनट व बिलावल सारंग॥ हमारे रामभक्ति धनभारी। राज न डांड़े चोर न चोरैं लूटि सकै नहिं धारी॥ प्रभु ऐसे अरु रामर पइये मुहर मुहब्बत हरिकी। हीराज्ञान युक्तिके मोती कहा कमी है जरकी॥ सोना शील भँडार भरेहैं रूपा रूप अपारा। ऐसी दौलत सतगुरु दीन्हीं जाका सकल पसारा॥ बांटों बहुत घटै नहिं कबहूं दिन दिन ड्योढ़ी ड्योढ़ी। चोखा माल द्रव्य अति नीका बटा लगे न कौड़ी॥ साह गुरु शुकदेव विराजे चरण दास बन जोटा। मिलि मिलि रंक भूप हो वैठे कबहुँ न आवै टोटा ४५॥

रागनट व बिलावल॥ जो नर हरि धन सों चितलावै। जैसे तैसे टोटा नाहीं लाभ सवाया पावै॥ मन करि कोठी नाव खजानो भक्ति दुकानलगावै। पूरा सतगुरु साखी करिकै संगति वणिज चलावै॥ हुंडी ध्यान सुरति ले पहुँचै प्रेम नगरके माहीं। सीधा साहूकारा सांचा हेर फेर कछुनाहीं॥ जित सौदागर सबही सुखिया गुरुशुकदेव बसाये। चरणहिं दास विलमि रहे ह्वांई जूनी पंथ न आये ४६॥

राग देवगन्धार॥ मनुवाँ रामके व्योपारी। अबके खेप भक्तिकी लादी बणिज कियो तैं भारी॥ पांचों चोर सदा मगरोकन इनसों कर छुटकारी।

---

[1] पत्थर॥

सतगुरु नायक के सँग मिलि चल लूटसकै नहिं धारी ॥ दो ठग मारग मिलैंगे एक कनक इक नारी । सावधानहो पैचन खइयो रहियो आ भारी ॥ हरिके नगरमें जा पहुँचौगे पैहो लाग अपारी । चरणदास समभावै रामन बारमबारी ४७ ॥

राग सोरठ ॥ हरि पावनकी गति न्यारी है । कष्ट तपस्या पढ़न लि सूं ढूंढ़त मूढ़ अनारी है ॥ अड़सठ तीरथ भरमत डोलै देहगई सब हारी निरजल व्रतकिये बहुभाँती आश फलन की धारी है ॥ तप करने को जा बैठे कीन्हीं त्वचा उघारी है । पौन अहारी तनहूं गारो दर्श नहिं मु है ॥ विद्या पढ़ि पढ़ि पण्डित होवै अर्थ करै बहु भारी है । अभिमानी जन्म गँवायो भयो न प्रेम खिलारीहै ॥ सांचि भक्ति बिन हौरी नहिं रीभे हुत गये शिरमारी है । चरणदास शुकदेव श्यामपर तनमनसूं बलिहारी ४८ सुनु रामभक्ति गति न्यारी है । योग यज्ञ संयम अरु पूजा प्रेम सबन भारी है ॥ जाति बरण पर जो हरि जाते तौ गणिका क्यों तारी है । श सरस करी सुरमुनिते हीन कुचील जो नारी है ॥ दुश्शासन पति खो लागो सबही ओर निहारी है । होय निराश कृष्ण कहँ टेरी बाढ़ो चीर पारी है ॥ टेढ़ी लौंड़ी कंसराजाकी दीन्हो रूप करारी है । एकेसूं एक धिक ब्रजनारी कुबिजा कीन्हीं प्यारी है ॥ पांचौ पाण्डोन जाय सजो सगरी सजी सवारी है । बालमीकि बिन काज न होतो बाजो शंख मुरार है ॥ साधोंकी सेवा में राचो भूप कि सुरति बिसारी है । सैन भक्त के कारण हरिजी वाकी सूरत धारी है ॥ दासकबीरा जाति जोलाहा ब्राह्मण मिलन की ख्वारी है । बनिजारा हो बालिधरिलाये ताकी करी सँभारी है ॥ सांखि सुनो रैदास चमारा सो जगमें उजियारी है । कनक जनेऊ काढ़ि दिखायो विप्रगये सब हारी है ॥ अजामील सदना तिरलोचन नाभानाम अधारी है । धन्नाजाट कालुअरु कूबा बहुतकिये भवपारी है ॥ प्रीतिवरावर और न देखे वेदपुराण विचारी है । चरणदास शुकदेव कहतहैं तावश आप मुरारी है ४९ ॥

रागगौरी ॥ आवो साधो हिलमिल हरियशगावैं । प्रेमभक्ति की रीतिविषम

रोग हरि हितसों रागरिझावैं ॥ गोविंदके कौतुक लीला गुण ताको ध्यानल-गावैं। सेवासुमिरण वन्दन अर्चन नौधासों चितलावैं ॥ अवकी औसर भलो मिलो है बहुरि दावँ कवपावैं। भजन प्रताप तरे भवसागर उरआनन्द बढ़ावैं ॥ सतसंगति को साबुन लेकर ममता मैल बहावैं । मनको धो निरमल करि उज्ज्वल मगनरूप है जावैं ॥ ताल पखावज झांझ मँजीरा मुरली शङ्ख बजावैं। चरणदास शुकदेव दयासूं आवागमन मिटावैं ५० ॥

॥ राग बिलावल ॥ करिले प्रभुसों नेहरा मन मालीयार। कहा गर्व मनमें धरे जीवन दिनचार ॥ ज्ञानबेलि गहु टेककी दया क्यारी सँवार । वतसल दृढ़के बीजहि बोवै तासु मँझार ॥ शील क्षमा के कूपको जल प्रेमअपार। नेमड़ोल भरि खेंचिकै सींचीबाग विचार ॥ छलकीकरकूं काटकै बाँधो धीरज बार। सुमति सुबुद्धि किसानकी राखोरखवार ॥ धर्म गुलेलजु प्रीतिकी हित धनुष सुधार। झूठ कपट पक्षीनकूं तासों मार बिड़ार ॥ भक्तिभाव पौधालगे फले रङ्ग फुलवार। हरिरसगानाहोयके देखे लालबहार॥ सतसंगति फलपाइये मिटै कुबुद्धि विकार। जब सतगुरु पूरा मिले चाखे अमृतसार ॥ समभावै शुकदेवजी चरणदास सँभार। तेरीकाया में खिलै साँचो गुलजार ५१ ॥

॥ राग मंगल ॥ सोई सुहागिन नारि पियामन भावई। अपने घरको छोड़ि न परघर जावई। अपने पियको भेद न काहू दीजिये । तन मन सुरति लगाय कि सेवा कीजिये। पतिकी अज्ञा चाल पाल पियको कहो। लाज लिये कुलवन्ते पतनरहिरे रहो ॥ धनि धनि है जगमाहिं पुरुष बहु दिनधरे। सबसे नायकहोय जो सबकोको करे । पियको चाहो रूप शिंगार बनाइये। पतिव्रता कुलहोयगे शोभा पाइये ॥ नौधावस्तर पहिरि दया रँगलाल है। सुवर्ण वस्तरधार विविचार लाल है ॥ रङ्गमहल निर्दोष दौँ झिलमिल नूर है। निर्गुण सेजबिछाय सभी करि दूरहै ॥ मन्दिर दीपक वालै बिना बातीघीव की। सुघर चतुर गुणराशि लाड़िली पीवकी ॥ कहै गुरू शुकदेव यों बालम मोहिये। चरणदास ले सीख जो प्रेम समोइये ५२ परमसुखी सोइ साधु जो

१ पहर २ श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वन्दन, दास्य, सख्य, आत्मनिवेदन॥

आपा नाथपै । मनके दोषमिटाय नाम निर्गुणजपै ॥ परनिन्दा पर
द्रव्य नाहीं हरै । जिन चालन हरिदूरि बीच अन्तरपरै ॥ क्षण नहिं बिसरै
ताहि निकटै तकै । हरिचर्चा बिन और वाद नाहींबकै ॥ क्रूर कपटछल
गल ये सकल निवारिये । यत सत शील सँतोप क्षमा हियधारिये ॥ क
कोध मदलोभ बिड़ारन कीजिये । मोह ममता अभिमान अकस तज
जिये ॥ सब जीवन निर्बैर त्यागि बैरागलै । तब निरभै ह्वै सन्त भांतिक
न भै ॥ काग करम सब छोड़ि होय हंसागती । तृष्णा आश जलाय से
साधू मती ॥ जगसूं रहै उदास भोग चित ना धरै । जब रीझै करतार दा
अपनो करै ॥ कहैं गुरू शुकदेव जो ऐसा हूजिये । चरणहिंदास विचार प्रेम
भीजिये ५३ राधेकृष्ण राधेकृष्ण राधेकृष्ण गावरे । या देहीको कहा भरोस
पल पल छिन छिन छीजत आवरे ॥ कहा अभिमान करै मायाको यहयो
सो जानि खावरे । मानुषजन्म भागि सों पायो बहुरि न ऐसो कबहुँ दावरे॥
भवसागर जो उतरोचाहै सतसंगति की चढ़ले नावरे । ज्ञानवली गहिप्यार
मुक्तिहो निश्चय तत्त्व पदारथ पावरे ॥ सतयुगमें सतही सत कहते त्रेता तप
करते तनतावरे । द्वापरपूजा राजमानसी कलियुग कीर्त्तनहरिहि रिझावरे॥
ताते सबतजि हरिही हरिभजि निशिदिन चरणकमल चितलावरे । चरण
दास शुकदेव कहतहैं श्याम मिलनको यहीउपावरे ५४ जगमें दो तारणको
नीका । एकतो ध्यान गुरूका कीजै दूजे मान धनीका ॥ कोटि भांतिकरि
निश्चय कीयो संशयरहा न कोई । शास्त्र वेद पुराण टटोले जिनमें निकसा
सोई ॥ इनहींके पीछे सबजानौ योग यज्ञ तपदाना । नौविधि नौधा नेम प्रेम
सब भक्ति भाव अरु ज्ञाना ॥ और सबै मत ऐसे मानो अन्न बिना भुस जैसे ।
कूटत कूटत बहुतै कूटा भूखगई नहिं तैसे ॥ थोथा धर्म वही पहिंचानौ तामें
ये दो नाहीं । चरणदास शुकदेव कहतहैं समझि देखि मनमाहीं ५५ ॥

राग आसावरी ॥ साधो भक्ति रक्षा करिलीजै । दिनदिन काया छीजै ॥
मकरतजै तो मक्का मनमें कपटतजै तो कासी । और तीर्थ सबही जग न्हाया
नाहिं छुटी यम फांसी ॥ भाल तले तिरवेणी राजै बिरले जन कोइ न्हावै ।

सुगुरा होय सो नित उठि परशै निगुरा जान न पावैं ॥ कायामन्दिरमें हरि कहिये वेद पुराण बतावैं। इतउत भूले लोग फिरतहैं धोखेको शिरनावैं ॥ यंतरटोना मूड़ हलावत ताकूं सांच न मानो। तजिकै गार असार गह्यो है तापर भयो सयानो ॥ चरणदास शुकदेव कहतहैं निजकरि मूल गहीजै। पारब्रह्म जिन सृष्टिउपाई ताओरी चितदीजै ५६ ॥

राग बिलावल ॥ नमो नमो श्रीरामजी देवनके देवा। शिव नारद सनकादि लौं कोइ लहै न भेवा ॥ एजी निरगुणसों सरगुण भये कौतुक विस्तारे। साधुन की रक्षाकरी दानव दल मारे ॥ दशरथ सुत भूले कहै कोई जानतनाहीं। इकशत अंड दिखाइया अपने मुखमाहीं ॥ गौरांने परचोलियो सियवेष बनायो। देखे रूप अनन्तही जब मन बौरायो ॥ आदि निरंजन एक तू दूजा नहिं कोई। शुकदेव कही चरणदासको नित सुमिरो सोई ५७ नमो नमो गोविन्दजी हूं दास तिहारो। चौरासी दुख सब हरो आवागमन निवारो ॥ कर्मनको प्रेरो फिरूं नहिंपायो नेरो। अबके ऐसी कीजिये दीजे चरणबसेरो ॥ पतितउधारण तुम सुने बेदन में गाये। अजामील गणिका तरे ले पार लगाये ॥ एजी गुरु शुकदेव बताइया गही तुम्हारी आसा। आनधर्म को छोड़िकै भयो चरणहिंदासा ५८ ॥

राग जैजैवन्ती ॥ आदि तौ सनातन ओई अज अविनाशी है साईं। जाको नहिं वारपार निर्गुणको तत्त्वसार तासों भयो जग सब आप निवासी है ॥ अद्वै निराकार जानो सतचिदानन्द मानो पुरुषको रूपधरि माया परकासी है। नेति नेति वेद कहै अस्तुति माहीं रहै भेद कछु नाहीं लहै थकथक जासी है ॥ योग ध्यान आवै नाहीं ज्ञानसों न गहोजाई भक्तों के हिये माहिं सदा जो विलासी है। सन्तों हेतु देह धरै आपके सहायकरै पृथ्वीको दुःख हरै घटघटवासी है ॥ एहो चरणदास जन तासों क्यों न लावोमन शुकदेव कृपा घन खोलिदइ गांसी है ५९ सारी सलोना प्यारो मेरो मनभायो है माई। कहाकहूं शोभा वाकी तीनलोक माया जाकी शेषहू की रसनां थाकी पारहू

१ शरीर २ पार्वती ३ जीभ ॥

न पायो है॥ निरगुण निरंकार कोऊ कहा जानै सार सन्तोंकी सहाय देह धरि आयो है। ब्रजहू में कौतुक कीन्हे सन्तन को सुख दीन्हे मु बजाय गाय रीझि कै रिझायो है॥ योगी जाको ध्यान लावैं ब्रह्मा श गावैं याको तो यशोदा माता गोदमें खिलायो है। चरणदास सखी शु देव कृपा कीन्हीं बांकोसो बिहारी एक पलमें दिखायो है ६०॥

बधाई रागमलार॥ बधाई सबही ब्रज सोहाई। मुदित भये बसुदेव दे मनमें अतिअधिकाई॥ पहुंचे जाय महरि घरमाहीं काहू भेद न जान यशुमति रानी बालक जन्म्यो सबने योंकरि मानो॥ घर घर मंगलचार भ बन्दनवार बँधाई। नूतन बस्तर पहिरि पहिरिकै नारि सबै घिरिआई॥ कौतूहल मिलिगिलि गावत करैं उछाह घनेरा। याचकके भीर बहुत भई द्वारे दमामे भेरा॥ जिनलायक देखा सो दीन्हा करी शुश्रूपा भारी। इक आवत इक जात बिदाहो देत अशीश महारी॥ धनिगोकुल धनिपौरि भवन धनि आये जगदीशा। शिव ब्रह्मादिक ध्यान धरतहैं लखईशनको ईशा॥ दुष्टदलन सन्तन सुखकाजै लीन्हा है औतारा। चरणदास शुकदेव कहतहैं जगपति सिरजनहारा ६१ नन्दघर कौतुक करन नवीने। जो जो वचन कियेथे आगे सो आ पूरण कीने॥ भक्तवछल करतार गुसाईं धरिआये औतारा। रक्षाकारण साधु ऋषिनकी भूमि उतारनभारा॥ जब जब भार बढ़त पृथ्वीपर तब तब होतसहाई। मर्यादा पुरुषोत्तम येही बिगरी सबै बनाई॥ निरगुणसों सरगुण वपुधारै कष्ट निवारण कीजै। योगेश्वर जेहि ध्यान लगावैं नामलिये अघभाजै॥ भोग बड़े यशुमति रानी के दर्शन दीन्हे आई। चरणदास शुकदेव कहतहैं सुर मुनि करी बधाई ६२ जगतपति देखि महरघर आये। बाल चरित्र रही दिखलावन आनँद अधिक बधाये। तपकीन्हों तो नन्द यशोदा पिछले जन्म अघाई॥ बरमांगो तो हम सुतह्वैके खेलो भवन मँझाई। बचन न मोड़ा आय बिराजे भक्तोंवश सुखदाई॥ जोजो चाह्यो सो सुखदीजो ह्वै कुँवर कन्हाई। संग लियो सामीप मुक्तिको ब्रज में अवन कियो है॥ सुख

१ यशोदा २ नगारा ३ पैदाकरनेवाला॥

प्रजायो नर नारिनको दर्शन आय दियोहै। जब जब प्रकटे चारोंयुग में त कलि द्वापर त्रेता। चरणदास शुकदेव कहतहैं सन्तनहीके हेता ६३ सखीरी आज गोकुल भाग बड़ाई। दर्शन दे वसुदेव देवकी नँदघर प्रकटे आई। भादोंमास वदीबुध आठैं ग्रह नक्षत्र बहुनीके। यशुमति रानी गोद सिरानी भये मनोरथ जीके॥ भयो उछाह स्वरगके माहीं देवसभी हर्षाये। अपने अपने बैठि विमानन पुष्प बहुत वर्षाये॥ यह धरती परफुल्ल भई है फूलउठा बनसारा। कालिन्दीको बड़ा उमाहो करि हैं लाल विहारा॥ किरपा सागर होय उजागर मर्यादा बँधबांधन। चरणदास शुकदेव कहतहैं कारण अपने साधन ६४ सखीरी सुन देख अभी मैं आई। यशुमति रानी बालक जायो यह तोहि आनि सुनाई॥ नाउनि डोलैं हँसि हँसिबोलैं घरघर कहत बधाई। भयो उछाह सकल गोकुल में बातभई मनभाई॥ सुन सुन आपस में मुसकाने देन बधाई लागे। भूषण वस्तरलगे सँवारन नरनारी रसपागे॥ बनसों रहे गये नँदद्वारे ग्वाल सभी हरपाये। बड़ी पौरि के आगे याचक गावनहीं को आये॥ मैं घरजाऊं बनकरआऊं तुमहूं देह शिंगारो। साथ चलेंगी जायमिलेंगी होइहै कौतुक भारो॥ शुकदेवाका मुँह देखेंगी करिहैं अधिकहुलासा। ऐसेकहि वह भवन सिधारी भनै चरणहिंदासा ६५॥

राग हिंडोलनो॥ झूलत हरिजन सन्त भक्ति हिंडोलने। राममा दृढ़ खम्भ रोपे प्रेमडोरी लाय॥ टेक पटरी बैठि सजनी अतिअनन्द बढ़ाय। ध्यानके जहँ मेघ बरसें होय उमँग हुलास॥ गुर्मुखी जहँ समझ भीजें पूरण हरिके दास। बुद्धि विवेक विचारि गावैं सखी सहेली साथ॥ अगमलीलारटें सजनी जहां ब्रह्मविलास। परमगुरु श्रीजनक झूलैं झूलैंगुरु शुकदेव। चरणदास सखी सदा झूलैं कोइ न पावै भेव ६६॥

राग हेली॥ और न मेरे कोग हेली। प्राणपियारे लालजी रोमरोम वेई रमेरी अरीहेली॥ तन मन व्यापक सोय जित देखौं तित लालकोई अरी हेली। दूजा नाहीं और आदि अन्तहै लालजी सर्वमयी सबठौर देशकाल सबलालहैरी अरीहेली॥ अधऊरधहै लाल दहिने बायें लालजी दशोंदिशा

में लाल सोवतही में लालहैरी अरी हेली। जाग्रतही में लालमाहिं सुपे
लालजी तुरियाही में लालगही शुकदेव चरणदासहै लालकी बिरला
कोय ६७ जो होवैहो हरिदास हेली। एते कुलतारै वहीं फल न मुक्ति
नहींरी अरीहेली॥ भक्ति करै निर्वास बीस चारकुल दादकेरी अरीहे
बीस नानाके जान। सोलहकुल ससुरारके द्वादशसुता बखान॥ बहनी
ग्यारह तरेरी अरीहेली दशभूवाके पार। मौसी के कुलआठही वेद कह
चार॥ अष्टादश यों कहीरी अरीहेली कहैं साधुअरु सन्त। चरणद
शुकदेव भी कहैं कमलको कन्त ६८ छूटे आलजंजाल हेली। चरणकम
के आसरे भर्मभून सबही छुटेरी अरी हेली॥ सौन नक्षत्रनालजन्तर मन
सबछूटेरी अरीहेली। छूटेबीर मशान मूठडीठ अबनालगै नहीं घातको बान
शनैश्चरबल अबनाचलैरी अरीहेली नहीं राहु अरु केतु। मंगल बृहस्प
तिदेहैं नहीं भोग उनदेतु॥ ज्योति वाल परसोनहींरी अरीहेली मानूं
देवी देव। सतगुरु देवबताइया सांचो झूठो भेव॥ अठसठ तीरथ ना फि
पूजन पाथरनीर। श्रीशुकदेव छुड़ाइया जन्म मरणकीपीर॥ निश्चलहो ह
की भईरी अरीहेली सुमिरूं निर्मलनावँ। अनन्य भक्ति दृढ़सूं गही मा
आनन जावँ॥ गोविंद तजि और न भजैरी हेली जाके मुहड़े
चरणदास यों कहतहैं राम उतारै पार ६९॥

अथ सुमिरणका अंग॥

राग काफी॥ कहा कहि तोहिं पुकारूं करतार हमारे। नाम अन
न्तनहिं जाको बहुगुण रूप निहारे॥ अजर १ अमर २ अविगत ३
बिनाशी ४ अलख ५ निरंजन ६ स्वामी ७। पुरुषपुरातन ८ पुरुषोत्तम
प्रभु १० पूरण अन्तरयामी ११॥ कृष्ण १२ कन्हैया १३ विष्णु १४ नराय
१५ ज्योतीरूप १६ विधाता १७। अपरमपार १८ मुकुंद १९ मुरारी २०
बंधु २१ ब्रजनाथा २२॥ यादवपति २३ जगदीश २४ चतुर्भुज २५
देव २६ सर्वप्रकाशी २७। परब्रह्म २८ प्राणनको दाता २९ सबमें घट
[illegible] ३१॥ निर्विकार ३१ [illegible] ३२ [illegible] ३३ माधव ३४ गोविंद

प्यारा ३५। कमलनैन ३६ केशव ३७ मधुसूदन ३८ सबमें ३९ सबसे न्यारा ४० ॥ हृषीकेश ४१ मुरलीधर ४२ मोहन ४३ ॐ ४४ अखिल ४५ अयोनी ४६ । भगवत ४७ वासुदेव ४८ भगवाना ४९ ज्ञानी ५० ध्यानी ५१ मोनी ५२ ॥ दीनानाथ ५३ गोपाल ५४ हरी ५५ हर ५६ गरुड़ध्वज ५७ घनश्यामा ५८ । भक्तिवत्सल ५९ अरुदेवकिनन्दन ६० करता सब विधिकामा ६१ ॥ आदि प्रधान ६२ माधुरी मूरति ६३ धरणीधर ६४ बलवीरा ६५ । नन्दनँदन ६६ अरु यशुदानन्दन ६७ सुन्दर श्याम शरीरा ६८ ॥ परशुराम ६९ नरसिंह ७० बिश्वंभर ७१ अचल ७२ अखण्ड ७३ अरूपी ७४ ॥ ईश ७५ अगोचर ७६ और जगतगुरु ७७ परमानँद ७८ बहुरूपी ७९ ॥ करुणामय ८० कल्याण ८१ अनन्ता ८२ दयासिंधु ८३ बनवारी ८४ । धारण शंखचक्र ८५ रुक्मिणिपति ८६ आनँदकन्द ८७ बिहारी ८८ ॥ परमदयाल ८९ मनोहर ९० नरहरि ९१ कृपानिद्धि ९२ फलदाता ९३ । कंसनिकन्दन ९४ रावणगंजन ९५ जगपति ९६ लक्ष्मीनाथा ९७ ॥ जगन्नाथ ९८ अरु बद्रीनाथा ९९ निर्गुण १०० सरगुणधारी १०१ । दामोदर १०२ रघुबर १०३ सीतापति रामा १०४ कुंजविहारी १०५ ॥ दुष्टदलन १०६ सन्तनकोरक्षक १०७ सकल सृष्टिको साई १०८ ॥ दुःखहरण के कौतुक अनगिन शेष पार नहिं पाई ॥ सो अरु आठ नामकी माला जो निर मुख उचारै । अपने कुलकी सारी पीढ़ी एकसौको तारै ॥ गुरु शुकदेव मन्त्र निज दीन्हो रामनाम ततसारा । चरणदास निश्चय सो जपकरि उतरो भवजल पारा ७० ॥

॥ राग केदारा ॥ हरिको सुमिरि संकट हरन । कोटिकष्ट निवारि डारैं जगपति पोषण भरन ॥ भक्ति पूरण देखि निश्चल अननत्र बांधौ परन । अगिन में प्रह्लाद राखो दियो नाहीं जरन ॥ गिरि शिखरसों डारि दीन्हो लगो करुणा करन । दीनजानि संभार लीन्हो कियो ठाढ़ो धरन ॥ खम्भ बांधो खड्ग काढ़ो दुष्ट लागो अरन । अब बतातेरो रामकितहै गहो याकी शरन ॥ ढीठ हो प्रह्लाद आयो डारि शंका डरन । मोमें तोमें खड्ग खम्भमें मध्यनारी नरन ॥ खम्भ फटकर भये परगट धरो नरसिंह बरन । असुर मारो जन उबारो

पुष्प बरषे सुरन॥ मोहिं गुरु शुकदेव कहिया सेव सोई वरन। चरणदास उपासना दृढ़ होय तारण तरन ७१॥

राग अलहिया॥ सुमिरु मन राम नाम ततसार। जिन जिन सुमिरे सो सो उतरे भवसागर सों पार॥ वेद पुराण और षटशाही तारणको यहि योग। जोपै पांचों प्रेत निवारे अरु इन्द्रिन के भोग॥ साधन संयम पूजा अर्चन और करे तपदान। नाम समान न फल काहूमें करि देखी पहिचान॥ जो जपकरै धरै हिरदे में आशा सकल बिड़ार। तीनलोक में धनि धनि होवै शोभा अगम अपार॥ सब धर्मन परधान नाम है सबइष्टन शिरमौर। निश्चय पकड़रहो याहीको सकल विकल तजिदौर॥ तामें ज्ञान भरोही देखै पावै ब्रह्म विचार। गुरु शुकदेव दियो दृढ़ मोंकूं चरणहिंदास सँभार ७२॥

राग बिलावल॥ अब तू सुमिरण कर मनमेरे। अगले पिछले अब के कीये पाप कटैं सब तेरे॥ यमके दण्ड दहन पावक की चौरासी दुख भेरे। भर्म कर्म सबही कटिजैहैं जगत व्याध उरझेरे॥ पैहै शक्ति मुक्ति गति आनँद अमरहि लोक बसेरो। जन्मै मरै न योनी आवै या जग करै न फेरो॥ सुमिरण साधन माहिं शिरोमणि जो सुमिरण करिजानै। कामक्रोध मध्य पाप जरावै हरिबिन और न मानै॥ गुरु शुकदेव बताय दियो है बिन जिह्वा करिलीजै। चरणदास कहैं घेरि घेरि अर्धउर्ध मनदीजै ७३॥

राग केदारा॥ अरेमन करो ऐसो जाप। कटैं संकट कोटि तेरे मिटैं सगरे पाप॥ चेत चेतन योज कालें देख आपा आप। कागसों जब हंसहोवै नामके परताप॥ ध्यान आतम सुरति राखो छूटे त्रैगुण ताप। सुरतिमाला सुमिरि हिरदे ओढ़ु सकल सँताप॥ परामक्ति अगाध अद्भुत विमल अरु निष्काम। चरणदास शुकदेव कहिया बसैं निजपुर धाम ७४॥

राग भैरों॥ राम राम राम राम राम राम गावो। मनके रोग सकल बिसरावो॥ नाम प्रताप शिला जलतारी। सोई नाम जपो नरनारी॥ नाम लेत प्रह्लाद उबारो परगट है हरणाकुश मारो॥ पतित अजामिल को सब

१ देवलोक २ सबसे उत्तम ३ नीचे ऊपर॥

जानैं। नामलेत चेदिगयो बिमानें॥ सुवा पढ़ावत गणिका तारी। नाम लेत निजधाम सिधारी॥ सोई नाम नारदमुनि गायो। वेदव्यास मुनि प्र गटजनायो॥ हरिके नाम को करो विचारा। सतसंगति मिलि उतरौपारा। शिव ब्रह्मादिक नाम उपासी। आठसिद्धि नौ नाम कि दासी॥ शुकदे गुरुने नाम बतायो। चरणदास हरिसों चितलायो ७५॥

राग बिलावल॥ रामनाम चारों वेदको कहियत है टीको। पाप ता दुख द्वंदकूं मेटनकूं नीको॥ एजी जेहि सुमिरे रक्षाकरी प्रहलाद उबारो निर्गुण सों सर्गुण भयो जानत जग सारो॥ एजी जप तप संयम योग सबहुन परभारी। नामलिये सबहीतरैं बालक नर नारी॥ जो हिरदे दृढ़ग हरिदर्शन पावै। चौरासी बन्धन कटैं आवा गमन नशावै॥ गुरु शुकदे दयाकरी हरिनाम बतायो। चरणदास आधीनके निश्चय मनआयो ७

सांचा सुमिरण कीजिये जामें मीन न मेख। ज्यों आगे साधुन किये धाणी में देख॥ टेकगहो दृढ़भक्तिकी नौधाहिय धारि। सन्तनकी सेवाकर कुलकानि निवारि॥ जासों प्रेमाऊपजै जब हरि दरशाय। आगे पीछे फिरै प्रभुछोड़ि न जाय॥ चारि मुक्तिबांदी सबै सिद्धिचरणन माहिं। ती रथ सब आशाकरैं अघ देखन शाहिं॥ कहैं गुरू शुकदेवजी चरणदा गुलाम। ऐसी साधन धारिये रहिये निष्काम ७७ ऐसा सुमिरण कीजि सुनिहो मनमेरे। रसना राम उचारिये करमालाफेरे॥ निन्दा अकस न रो पिये काहू दुखनहिं दीजै। सन्तन सूं सनमुख रहो गुरुसेवा लीजै॥ भूखे भोजन दीजिये प्यासे नीर पियावो। सबसे नीचा है चलो अभिमान न शावो॥ सतसङ्गति में मिलिरहो गुरुमतसूं रहिये। आन धर्म नहिं चालिये यमदण्ड न सहिये॥ तामसकूं विपर्ज्योंतजो शुकदेव बतावै। चरणदास हरिहरिजपै मुकता है जावै ७८ थोथे सुमिरण कहासरें। मनकेरोग शोव नहिं खोये हिंसा द्वंद अकसंजरें॥ नारी सुतसूं मोह कियोहै नेक न हरि के प्रेमअरे। कुलनाते परिवार सँभारे साधुनकी नहिं टहलकरे॥ माला तिलक

फिर दर्बद्धे र गुस्ता॥ [illegible]

सुधारि सँवारे राखत छलबल मकर घने। अन्तर और निरन्तर औरै वि गऊमुख रहतबने॥ ऐसी भक्ति मुक्ति नहिंपावे करमलगैं अरु नरकपरे। य मके दण्ड दहनपावककी जनम मरणयों नाहिंटरे॥ लक्षण प्रेम सहित जो कीजै भीतर बाहर उघरनचे। चरणदास शुकदेव कहतहैं हरि रीझैं जब त्या धि बचे ७९ मालाफेरी कहाभयो। अन्तरके मनको नहिं फेरा पाप कर्म सब जन्मगयो॥ परनिन्दा परनारि न भूलो खोटकपटकी ओरनयो॥ काम क्रोध मद लोभ न खोये ह्वै रह्यो मूरख मोहमयो॥ दुनियां सांचसमझ भ्र कीन्हो धन जोरनको परन लयो। दयाधर्म दोउ मारग छोड़े माँगतन को नहिं दानदयो॥ गुरुसों झूंठ भगल साधन सों हरिको ताहीं नेह जयो। चरणदास शुकदेव कहतहै कैसे कहियो मुक्तहयों ८०॥ [illegible] रागहेली॥ और उपासन कोय हेली टेक हमारे नामकी। आन शरण जाऊं न हेरी अरी हेली होनो होय सो होय॥ योग यज्ञ तप नामहींरी अरी हेली नाम नक्षत्तर वार। सकल शिरोमणि नामहै तन मन डारूंवार॥ अड़ सठ तीरथ नामहींरी अरी हेली नाम हमारे नेम। नामहीं सूं राची रहूं नाम हमारे प्रेम॥ मरत हमारे नामहींरी अरी हेली इष्ट हमारे नाम। अर्थ धर्म फल नामहीं नाम मुक्तिको धाम॥ पढ़न लिखन सब नामहींरी अरी हेली नाम गिरह सब देव। जो कुछ है सो नामहीं नाम हमारो भेव॥ राम नाम शुकदेव दियोरी अरीहेली सो राखो मनमांहिं। चरणदासके नामहीं इहसम तुल कछु नाहिं ८१॥ [illegible]

अथ सगुण उपासना अरु राग शब्दोंके दोहा॥ [illegible]

धन सतगुरु शुकदेवजी मेरी करी सहाय॥ निज वृन्दावनधामकी लीला दई दिखाय ८२ अब कुछ कौतुक रासको वरणतहै चरणदास॥ लाल ला डिली कृपा सों पावैं निज पुरवास ८३॥ [illegible] राग रासविहागरो॥ नृत्य करत छविसों बनवारी। टेरिलई सबही ब्रज वनिता मुरली मधुर बजाय बिहारी॥ सुनत श्रवण धुनिहोय प्रेमवश व्याकु कुलभईं सुन्दरि सुकुमारी। गृहके काज लाज तजि पियकी उठि धाईं तन

ति बिसारी ॥ आये गावत छहूं राग मिलि पांच पांच इके इककी नारी ॥
 आठ इक इकके बेटा सूरतवन्त स्वरूप महारी ॥ ताल वीण मुरचंग मँ-
रा तनन तनन तँबुरा गति न्यारी ॥ तिधिन तधिन धिन बजत पखावज
ुरू झनन झनन झनकारी ॥ इक इक गोपियनके सँग इक इक सुन्दर
 धरो गिरिधारी । ऐसो रच्यो रासको मण्डल मध्य राधिका कृष्णमुरारी ॥
वत गीत बढ़ाय परस्पर मान करत पियसों पियप्यारी । लेत मनाय ला-
लो प्यारो हँसि हँसि त्रिहस्त दै दै तारी ॥ ततथेई ततथेई थेइ थेइ ततथेई
फ तुरफ सांगीत उचारी । नटवररूप करो मनमोहन सो सतको वरणत
ोभारी ॥ भये चकित सुर मुनि ऋषि किन्नर चाढ़ी रैनि शरद उजियारी ।
रणदास शुकदेव श्यामकी अद्भुत लीलापै बलिहारी ॥८४॥ ...
 रासराग भैरों ॥ देख सखीरी रास रच्यो सांवरे विहारी । ब्रह्मा शिव इन्द्र
ाश नारदसे थकित भये ऐसो कवि कौन करै बरणन उपमारी ॥ सोहै शिर
ुकुट और कुण्डल छवि तिलक भाल किंकिणि कटि पीताम्बर नूपर झन-
ारी । बहुत नारि सुघर सखी राधाजू चन्द्रमुखी ललितादिक सहचरी शृङ्गार
ों सवाँरी ॥ कोऊ तँबूरा कोउ मुरचंग कोऊ बजावै गति मृदङ्ग कोऊ ताल
ते कोऊ सुर उठान भारी । बंशी में करत गान बाँकीसी मधुरतान श्यामा
ने करत मान श्यामसलोनी नारी ॥ कबहूं कर जोर दोऊ नाचत हैं नवकिशोर
[illegible]

[illegible]

न ॥ ... मुरली धुन सुनत माह मुनिजन व्रतधारी । शुकदेवजी गुरुको
चरणदास सब ऊपर नाम करै रासको विलास दियो परगट दरशारी ॥८५॥
 रासराग विहागरा ॥ राग में निरत करत वनवारी । मुदित मनोहर रंग
 गावत सँग वृषभानु दुलारी ॥ मोरमुकुट छवि शीश विराजत नाक बुलाक
सुढारी । कर मुरली कटि काछनि काछे अलकें घूंघुरवारी ॥ राधाजूके शीश
चन्द्रिका नील सारी जरतारी ॥ गावैं सखी श्याम श्यामा सँग नखशिख

१ सङ्गकी सहेली ॥ ...

रूप उजारी । ताधिन ताधिन बजत पखावज ताल बीण गति न्यारी नन ठनन ठन नूपुरकी धुनि भनन भनन भनकारी ॥ थेइ थेइ थेइ थेइ न दोऊ मिलि विहँसि विहँसि मुसकारी । चरणदास शुकदेव दयासूं पायो रस मुरारी ८६ ॥

रास रामकली भैरों ॥ नृत्यत गोपाललाल ततथेइ तथेई । नवरि शृङ्गार किये राधा गल बाहँ दिये सखियां सँग नाचत स्वर ताल तान दे तनंनन तंबूर गिड गिड धुधकधू मृदंग ताल भम भम भै भांभ बजावै बाँसुरी । भननन भनकार होत पायल उतकार राग गावत कल्याण अ नट धनासिरी ॥ कबहूं लै कान्हरा अलाप फेसूं सोरठ को परज अरु वि गरु केदारा आसावरी । कबहूं के विभास मालसिरी ललित रामकली भै बिलावल धुनि ध्रुपद को चावरी ॥ सुन्दर बहु भेष धरे रासको विलास मुनिजन मनहेरि रहो आनँद तेहि ठाईं । अद्भुत छवि कहा कहूं किर शुकदेव चहूं चरणदास होय रहूं चरण कमल माहीं ८७ ॥

रास राग पंचम ॥ सखी दोऊ रसिक प्रीतम पिय प्यारी । मिलि खेल हैं रास छवि कहि न जाई ॥ एकं की एक सों सरस शोभा बनी निर सब सुरमुनी रहेलुभाई ॥ कोऊ कर बीन ले सुघरसुर ताल दे गावत संग रीभन रिभाई । थुंकना थुंगनं धुधक धुधुकंत बजंत मिरदंग गति अ सुहाई ॥ तार सुरचंग मुरसप्तसों मुरलिका मधुर धुनि चतुरसारंग बजाई नचत दोउ भावसों अधिक बहुचाव सों ततथेई थेई गतिलगाई ॥ क पियप्यारी जू मानकरें लालसों कबहूं भुजंगाहि पियाले मनाई । धरत न्दर डगत्त पजत नूपुर पगन हँसतदोउ लसत दिये गरबाहीं ॥ बदी नि शारद की कौन वर्णन करै शेशहू सहसमुख रहे थकाई । कहै चरणदास य देव किरपा करी ध्यानके माहिं लीला दिखाई ८८ ॥

दो॰ — परी बैन बांसुरी तूती बजके माहिं ।
सरोदव वियसुत जुर पजधिन खांडवनाहिं ।
जबर बाजन तानमें एवंशी यह भाग

कसक उठै जियरा जरै तनमन लागी आग ॥

हमरे पियतें वशकिये करत अधर रसपान ।
कहा टोना कीन्हों जुतें बरपाये भगवान ॥
ब्रह्मा भूले वेदधुनि शंकर छोड़ो ध्यान ।
रणजित कहै मुनि बांसुरी इन्द्र तजो अभिमान ॥
छैल छबीलो लाड़िलो रंग रँगीलो लाल ।
चरणदासके मन बसो वंशीधर गोपाल ॥

राग काफी ॥ मोहन प्यारेकी बंशी बाजैरी । हमकूं जरावत बिरहअन रसों जब अधरनपै राजैरी ॥ लालनमुख लागी रहै निशिदिन नेकन ना-न लाजैरी । तैं वशकियो शुकदेव हमारो सुनत कलेजे दाझैरी ॥ चरणदास कहैं अब कहा कीजे तुहीं भई सिरताजैरी ८६ वंशीवारेसों नेहरा न्होरी । काहूको कछु कहो न मानूं यहै तनमन वाहि दीन्होरी ॥ भमैत मैंत बहुते हारी भटक भटक जग बीनोरी । आनंदवसों काज न मेरोसांचो [illegible] नवीनोरी । [illegible] छांड़ भजूं [illegible]रनको तो कांहयो बुधिहीनोरी । चरणदासको है सुखदायो स्याम सुंदर [illegible]भीनोरी ६० वा मुरलियाने हेली मेरे प्राणहरे । जब बाजत पियकेमुख [illegible]गी सुनिधुनि तनकी सुधि बिसरे ॥ ऐसो जपतप कहा कियो है मोहन [illegible]हनलालबरे । जाके रसवस भये स्यामजी ताबिन पलछिन कल न परे ॥ [illegible]नलोक बिच धूम मचाई सुर मुनि ऋषिके ध्यान टरे । चरणदास शुकदेव [illegible]या सों मनवांछित सब काज सरे ६१ या मुरलियाको मोल और हिये क-[illegible]कै । बाजत मान गुमान गरबले करि राखो हरिकों बसकै ॥ बांकी तान [illegible]न ज्यों लागत चुभत कलेजे में धसकै । नेक न होत पिया सों न्यारी अधरनके रसके चसकै ॥ कहा करूं कुछ यतन न दीखै कोई उपाय न होय [illegible]कै । चरणदास शुकदेव पियारे कबहूं बोलेंगे हँसकै ६२ वंशीवारे तू साठी [illegible]ली आय जावो । तेरे कारण भई बावरी टुक मुख छवि दिखला जावो ॥

व्याकुल प्राण धरत नहिं धीरज तनकी तपनि सिरा जावो। ...तलफत दर्शन बिन शुकदेव दुःख मिटा जावो ६३॥

राग परज॥ तुम्हारे रूप लोभानी हो॥ खान पान सुधि सब गई अं अबक बानी हो। तुम्हरे चरण कमल मन मेरो रहो लिपटानी हो॥ तुम बिन चैन नहीं दिन राती सुनि पिय जानी हो। दरश दिखावो सांवरे जब हिये सिरानी हो॥ नातर वह गति है है हमरी मीन ज्यों पानी हो। शुकदेव दुख सब हरो काहे बिसरानी हो॥ चरणदास यह सखी तिहारी मिलजा छानी हो ६४॥

राग बिहागरा॥ सुधि बुधि सब गई खो परी मैं इश्क दिवानी। तलफत हूं दिन रैनि सखीरी जैसे जल बिन मीनरी॥ बिन देखे मोहिं कल न परत है देखत आंख सिरानी। सुधि आये हिय में दर्द लागे नैनन बर्षत पानी॥ जैसे चकोर रटत चन्दा को तैसे पपीहा स्वाती। ऐसे हम तलफत पिय दर्शन बिरह व्यथा इहि भांती॥ जबते मीत बिछोहा हुवा तबते कछु न सुहानी॥ [illegible] ॥ बिन मनमोहन भवन [illegible] देव मिलावो नैन भये मोहिं घाती ९५॥ भईहूं प्रेममें चूरहो मोहिं दरश नदीजै। हूं तो दासि तिहारी मोहन बेगि खबरिया लीजै॥ ज्ञान ध्यान और सुमिरन तेरो तुव चरणन चित राखूं। तेरोहि नाम जपूं दिन राती तुव बिन और न भाखूं॥ तन व्याकुल जिय रूंधोहि आवत परी प्रीति गल फांसी। तुमतो निठुर कठोर महापिय तुम को आवै हांसी॥ बिरह अगिन नख शिख सूं लागी मन में कलपन भारी। गिरोहि मति तन सँभ्रम नाहीं रहत भवन में डारी॥ की विष खाय तजों यह काया की तुम्हरे सँग रहसूं। चरणदास शुकदेव बिछोहा तेरो सूं नहिं सहसूं ९६॥

राग कान्हड़ा॥ तुमबिन अतिव्याकुल भइया। मोहूंको दर्श दिखावरे मोहन प्यारे चितवन नैन हँसन दशनन की अटक रही हिय मँइया॥ वह लटकन मटकन चटकन पर मोरमुकुट की छबि छइया। अधर मधुर मुरली

गावत टेरि बुलावत सइयां। हाहा खाऊं शीश नवाऊं और परुं तोरि यां॥ वारीहूं वारी मुखऊपर दोउकर लेहुं बलइयां॥ अबतो धीरहो नहिं कहो शुकदेव गुसइयां। चरणदास भइ प्रेम बावरी आनि गहो क्यों बहियां ६७॥

रागपरज॥ तुम बिन कैसे जीऊं प्यारे नँदुलाल। भूख प्यास कछु लागत नाहीं तन की सुधि न सँभाल॥ कल न परत कल कल अकुलावों छिन छिन छिन बेहाल। बिरह व्यथाको रोग बढ़ो है पीर महा बिकराल॥ कहरी करूं कित जाऊंरी सजनी। कौन मेटे जंजाल। लटक चलन बांकी चितवन की चुभत कलेजे भाल॥ भइ ऐसे यह देह दूबरी सूझ परो नस जाल। तरफत हूं हिय में दवे लागी नैना बरत मशाल॥ चरणदास यह सखी तिहारी हो शुकदेव दयाल। आप कृपाकरि दर्शन दीजे कीजे बेगि निहाल ६८॥

रागबिलावल॥ लागीरी मोहनसों डोरी। आनि कानि कुलकी तजि दीन्ही कोऊ कैसी बात कहोरी॥ श्याम सलोने के रँगराती मगन भई कोइ परी ठगोरी। निरखत छवि तनकी सुधि बिसरी प्रेम प्रीति रसमें भइ बोरी॥ ऐसो रूप उजारो प्यारो शोभा वर्णत शेश थकोरी। तीनिलोक ब्रह्मायड सकल सब जाकी मायासों दरशोरी॥ कान कुण्डल गलमाल विराजै शीशमुकुट माथे तिलक फबोरी। नखशिख भूषण करलिये लकुटी कांधे सोहै पीत पिछोरी। कल न परत निशि दिन बिन देखे रोम २ मेरे बसोरी। कान्ह सुजान सदासुखदायी चरणदासके हिये बसोरी ६९॥

रागभँझोटी॥ आया मेरा मोहन मदनगोपाल। मानोरङ्क अष्टसिधि पाई निरखत भई निहाल॥ बलि बलि जा, दिया अँगन समादिया गोदि दरश दियो लाल। कोटि भानु छवि मुखपर वारूं बेंदा सोहै भाल॥ रूप-अनूप अनूपमसांवरो सुन्दर नैनविशाल। घूंघरवारी अलकें झलकें त्रिकने लंबेबाल॥ चितवत तीपीसोहै मधोरत करलिये वेणुरसाल। गावततान आनि

१ अग्नि॥

वांकी सों चलत अनोखी चाल ॥ श्रीशुकदेव दयाके सागर नंदनाग दलाल। चरणदास को किरपा करिकै रीझदई उरमाल १००॥

राग काफी ॥ लटकरी चालपै में वारी वारी जादिया। रैन दिनाक ध्यान तुम्हारो मन वच कहूं दीया दिया ॥ कुण्डल कान मुकुट शिर शोभा अधिक सुहा दिया। अलबेली छवि बांके नैना निरखत नैन लु दिया ॥ जब बाजी प्यारे तेरी वंशी खानं पान विसरा दिया ॥ भूलगई काज माज सब लाज छार उड़ा दिया। चरणदास हम भई बावरी फु अंगन समादिया ॥ राखि शरण शुकदेव पियारे चरणकमल लिपटा दि १०१ कोई समझावोरी मोहनलालकूं। ग्वालबाल सबही सँग लेकर घुसैघ धँसि आवै। याकी घाली मोरीआली माखन रहन न पावै॥ लेकर मटुके चटदे भटके गटके माखन सारो। चटपट चाटपोंछ धरि पटके नट ज्यों सट के प्यारो ॥ जबहीं जावँ गगरिया भरने ठाढ़ोरहै विहारी। आगे होकर कां कर मारे भींजे गोरी सारी॥ जो अपने घर बैठिरहूं तो अँगना धूम मचावै जो कबहूंके सोऊं सजनी स्वपने में दर्श दिखावै॥ मेरे पीछे लागो आले जितजाऊं तित डोलै। कहँ लगि कहूं ढीठता वाकी बात अटपटी बोलै बाकोछैल महाअलबेलो प्रगट्योहै जगमांहीं। चरणदास शुकदेव पिया सदारहो याठाहीं १०२ कोइआनि मिलावोरी श्यामसुजानको। नन्ददुला मोहन सोहन अजब अनोखो छैला। मदनगुपाल मुकुन्द मुरारी मेरो जं वनमालरी॥ नैनन नींद न आवै सजनी कल न परै दिन रैना। व्याकु भई फिरतहूं बौरी भूली खान अरु पानरी ॥ जो कोउ हितु ह्वैहै मेरो आल लालनकी सुधिलावै। दर्श दिखायहरै सबबाधा मोको दे जीदानरी॥ छि छिन छिन गति और होतहै लगे बिरहको बानरी। चरणदासकी पीर टावो सुन्दर सुखके निधानरी १०३॥

राग सोरठ॥ हमारे घर आयेहो सुन्दर श्याम। तनकी तपन मिटी खतहीं नैननभयो आराम॥ आँगन लिपाऊं चौक पुराऊं फूल बिछाऊंधाम आनन्द मङ्गलचार गवाऊं ह्वै पूरणकाम ॥ अब जागे सखि भाग हम

मन पायो विश्राम। चरणदास शुकदेव पियाकूं हितसों करूं प्रणाम १०४ सो अब परघायहो मोहनप्यारा। लखो अचानक अज अविनाशी उघरि गये दर्शतारा॥ फूलरहो मेरे आंगन में टरत नहीं कहुँटारा। रोम-रोम हिय माहीं देखो होत नहीं छिनन्यारा॥ भयो अचरज चरणदास न पइये खोज कियो बहुवारा १०५ वहघरी कौनसी लागे मेरे नैना। छोटी उमर भोलापन भारी जानूं एक न बैना॥ जबलागे तब कछू न जानी अबलागे दुख देना। चरणदास शुकदेवकुं देखे जब पावे सुखचैना १०६॥

राग मलार॥ सो बिथा मेरी जानतहो कि नाहीं। नख शिख पावक विरह लगाई बिछुरन दुख मनमाहीं॥ दिन नहिं चैन नींद नहिं निशिकूं निश्चल बुधि नहिं मेरी। कासूं कहूं कोउ हितु न हमारो लगनलहरि हरितेरी॥ तनमयो छीन दीनभये नैना अजहूं सुधि नहिं पाई। छतिया दरकत कर्क हिये में प्रीति महा दुखदाई॥ जल बिन मीन पिया बिन बिरहिनि इन धीरज कहु कैसी। पक्षी जरे दवलगी बन में मेरी गति भइ ऐसी॥ तरफतहूं जिय निकसत नाहीं तनमें अति अकुलाई। चरणदास शुकदेव बिनायो दर्शनद्यो सुखदाई १०७॥

राग सोरठ॥ हमारे नैना दर्श पियासाहो। तनगयो सूखि हाय हियबाढ़ी [illegible] न गासा [illegible] कठोर दर्श नहिं जाने तुम कूं लेक न सांसाहो। हमरी गति दिन दिन औरेही विरह वियोग उदासाहो॥ शुकदेव पियारे मतरहु न्यारे आनि करो उखासाहो। रणजीता अपनो करि जानो निजकरि चरणन दासाहो १०८ ऊधोजी कहांरहे भगवान। हम नानी काहूने मोहे गोहन चतुर सुजान॥ तबसूं नैनन नींद न आवे धीरज धरत न प्रान। उमगि उमगि हियरो हुलसतहै वह सुन्दर मुसुकान॥ योग कथा तुम काह सुनावो हमकूं नाहीं ज्ञान। प्रेम प्रीति की रीति अनोखी कापै होत बखान॥ ऐसो हितू न कोऊ देखो जाय सुनावे कान। बाढ़ी व्यथा बिरहकी तनमें सुमिलो कृपानिधान॥ आवो दर्श दि-

सांचो प्यारे देहु हमें जी दान। चरणदास शुकदेव श्याम बिन तजों खा अरु पान १०९ ॥

राग सारंग॥ ऊधो क्या जानै हमरे जीवकी। चातक बूंद चकोर चं कूं ऐसे हमकूं पीवकी॥ नेह कमान बिछुरके खैंची मारि गये हरि तीरकी भाल वियोग हिये बिच खटकै सुधि न लई या पीर की॥ चरणदास सखि निशिदिन तलफै ज्यों मछली बिन नीरकी। कहैं कुछ और करें कुछ औ आखिर जात अहीर की ११० ॥

रेखता॥ फरजन्द नन्दजी का दिल बीच भावँदा। बरपाय खूब नूपु सुन्दर सुहावँदा॥ वह सांवला सलोना महबूब यार मन। आहिस्त लटक चाल मटक मेरे आवँदा॥ टीका सिंदूर खैंचिके माथे पै अदासों। बसा बिराजे अफसर हीरे जरावँदा॥ कुण्डल झलकते कानमें दरहर दो गोश में। आवाज बांसुरीकी शीरीं बजावँदा। नीमा जरीक गलमें कटि काछनी बनी है। पीरे दुपट्टेवाला बीरे चबावँदा॥ करता है नृत्य नादर घुंघरू कि झनकसों। तत्तत्ततातथेई थेई गति लगावँदा॥ नैनों की ध्यान तानिके अबरू कमानसूं। पलकों के प्रेम तीर कलेजे चुभावँदा॥ घायल किया है मेरे तईं उसके इश्कने। शुकदेव चरणदासके जियमें समावँदा १११॥

राग हिंडोला॥ हिंडोला झूलत नन्दकुमार। जोड़ी युगलकिशोर बि राजै नान्हीं परत फुहार॥ कंचन खंभ जटित हीरनसों नग लागे तामाहिं। पटुली अधिक अनूपम सोहै डोरी सुरंग सुहाहिं॥ चहूंओर बदरा घिरिआये उमड़ घुमड़ घहरात॥ गरजत मेघ पवन झकझोरत दामिनि दमक डरात॥ गावत गीत मलार सहेली मिल मिल देदै तार। झोंका देत विशाखा ल लिता आनँद बढ़ो अपार॥ बोलत मोर पपीहा कोयल दादुर हंस चकोर। हरी भूमि ऋतु भई सुहाई शोर करत अतिशोर॥ भीजत रंगरँगीलो प्यारो शोभा कही न जाय। चरणदास शुकदेव श्यामकी दोउकर लेत बलाय ११२

झूलत कोइ कोइ संत लगन हिंडोलने। पौन उमाह उछाह धरती शोत सावन मास। लाजके जहँ उड़त बगले मोरहैं जगहास॥ हरष शोक दोउ

नेक कटारी बांधे वचन विलास कि बरछी। संतपुरुषों के हियरे बांधेकहि हि बतियां बिरछी॥ त्रितमें चाव चौगुनो उसके सुनमुत अनहद तूरा। अ म पंथसों पग न डिगावै होयजाय चकचूरा॥ मन हुलास आसधर पीकी नत खेतमें धावै। चरणदास शुकदेव कहतहैं अमर लोक पदपावै १२०॥ राग सोरठ चाल आसावरी॥ साधू पै जगहै सोइ शूरा। काके मुखपर नूर जब बाजै मारू तूरा॥ कलँगी अरु गजगाह बनावै इसका परन दुहेला। बल भेप बनाय जलतहै यह नहिं सहजो सुहेला॥ या बानेको नेम यही है गपरि फिरिन उठावै। जो कछु होय सो आगेहि आगे आगेही को धावै॥ णमें पैठि झड़ाझड़ खेलै सम्मुख शस्तर खावै। खेत न छोड़ै हाई जूझै तबही शोभा पावै॥ गुरु शुकदेव दियो है हेला ऐसा होय सो आवै। चरण दास बाना सतिनको तोले शीशचढ़ावै१२१ साधो टेक हमारी ऐसी। कोटि यतनकरि छूटै नाहीं कोउकरो अब कैसी॥ यह पगधरो सँभालि अचलहो बोल चुके सोइबोलें। गुरु मारगमें लेन न दीन्हो अब इत उत नहिं डोले॥ जैसे शूर सती अरु दाता पकरी टेक न हारैं। तनकरि धनकरि मुखनहिंमोड़ैं धर्म न अपनो हारैं॥ पावक जारो जल में बोरो टूक टूक करिडारो। साध संगति हरिभगति न छांड़ूं जीवन प्राणहमारो॥ पैज न हारूं दाग न लागे नेक न उतरै लाजा। चरणदास शुकदेव दयासूं सबविधि सुधरै काजा१२२॥ राग सारँग॥ हमारे राम नामकी टेक टारी ना टरै। लाखको कोइ कोटि करोजी कातें कुछ न सरै। ज्यों कामीकूं तिरिया प्यारी ज्यों लोभीको दाम। अमलदार कूं अमल पियारो ऐसे हम कूं राम। करसों दृग गहि गहिकै पकरीं हारिलकी लकड़ी भई। अब कैसे करि छूटै मोसों रोम रोम तन मन मई॥ ज्यों प्रहलाद पैज दृढ़ कीन्ही हरणाकुश से बहुमारे। उबरो संत अ-सुर गहिमारो परगटहो हरि आखरे॥ गुरु शुकदेव सहाय करी है अब पग पाछे क्योंपरे। चरणहिदास वचन नहिं मोड़ै शूरसतीं मूपै टरे १२३ साधो टेकगई जाको सबगयो। लाजगई अरु काजगये सब वचन धर्म कछु ना रह्यो॥ जगमें हांस फांस हियमाहीं कायरपन यों दहि गयो। अब पतिव्रताये

पीरी अरीहेली दे गयो मुरली गहाय॥ जबहींसूं चेटक लगोरी अरी
ढूंढूं कुंजनमाहिं। बौरीहो दौरी फिरूं वह छवि दीखे नाहिं॥ मोहिं मिल
सांवरोरी अरीहेली ताके बलि बलि जावँ। जन्म जन्म दासीरहूं कबहुं
छोड़ों पावँ॥ है कोइ पूरी रामकीरी अरीहेली मोहिं बतावे ठोर। जहाँ
राजैं श्यामजी वह बड़भागी पौर॥ चरणदास घायल भईरी अरीहेली
हन मारो बान। श्रीशुकदेव दिखाइये मेरो जीवन प्रान॥१९७॥ वह छवि
बखानं हेली जा छविसों नैनालगे। हितू देखि तोसूं कहूंरी अरीहेली अ
न पावैं जान॥ मोर मुकुट माथे दियेरी अरीहेली कुण्डल श्रवण माहिं
अलकैं बल खाई रहैं योगी देखि लुभाहिं॥ मोहन मधि बेंदा दियेरी अ
रीहेली सुन्दर नैन बिशाल। मोतीनासा सोहना अरु बैजन्ती माल
नीमो अंग पीरो खुभेरी अरीहेली घूम घुमारो फेर॥ लाल खराऊं पावँ
मोमन राखत घेर॥ पहुंचनमें पहुँची कड़ेरी अरीहेली अँगुरिन मुँदरीछाप
अधरनपै मुरलीधरे गावत रीझत आप॥ चरणदास तिनकी भईरी अरी
हेली तनमन डारोवार॥१८॥ बंशीवटकी छांहि हेली लाल लाड़िली में लल
दोउ खड़े गावैं हँसैंरी अरीहेली अरु डारे गलबाहिं॥ मोर मुकुट माथे दि
येरी अरी हेली सुन्दर नैनबिशाल। पीताम्बर बर सोहनो करमुरली उरमाल
वाके बिराजैं चन्द्रिकारी अरीहेली लील बसन जरतार। नखशिख भूप
सोहने अरु फूलनके हार॥ गुरुशुकदेव बताइयारी अरीहेली जब हमलि
पिछान। चरणदास तिनकी भई लगोरहै वहि ध्यान॥११६॥

अथ सन्त शूर का अंग॥

दो॰ सन्त समान न शूरमा कहैं रणजीत विचार।
टेक गहैं सम्मुख चलैं बांधि प्रेम हथियार॥

राग सोरठ॥ ना कोई सन्त समान शूरा। मोह सहित सब सेना मा
ऐसो सांवत पूरा॥ क्षमा कि ढाल गही कर अपने बांधेशस्तर बारा। क
धर्म्म के दलको पेलैं पल पल बारंबारा॥ सुरतको तीर हृदय को तरक
ध्यान कमान बनावे। प्रेमहाथ सूं खैंचनलागे चोट निशाने लावै॥ बुधि

तृष्णा आमिल मदको मातो पकरि गांवसूं काढ़ै।मन राजाको निश्चल भण्डा प्रेमप्रीति हित गाड़ै ॥ सुबुधि दिवान शीलको बकसी यतको हाकिम भारी। धर्म्म कर्म सन्तोष सिपाही जाकों अज्ञाकारी ॥ सांच करिन्दा औ पटवारी धीरज नेमविचारै। दया क्षमा अरु बड़ी दीनता पूरीजमा सँभारै ॥ मगन होय चौकस कण करिके सुमति मेवड़ी मापै। दर्शन द्रव्य ध्यानको पूरण बांटोपावै आपै॥ श्रीशुकदेव अमल करिगाड़ो सूबेस देश नशावै। चरणदासहूं तिन को नायब तत परवाना पावै॥१२८॥ जो नर इकछत भूप कहावे। सतसिंहासन ऊपर बैठे यतहीं चँवर ढुरावे॥ दयी धर्म दोउ फौज महाले भक्ति निशान चलावे। पुण्य नगारा नौबति बाजै दुर्जन सकल हटावे॥ पाप जलाय करै चौगानां हिंसा कुबुधि नशावे। मोह मुकद्दम काढ़ि मुल्कसों लावे रागबसावे॥ साधन नायब जितातित भेजे दे दे संयम साथा। राम दुहाई सिगरे फेरे कोइ न उठावे माथा॥ निर्भय राजकरै निश्चल ह्वै गुरु शुकदेव सुनावे। चरणदास निरश्चय करिजानो विरला जन कोइपावे१२६॥

राग कल्याण॥ वह राजा सो यह विधि जाने। काया नगर जीतिबो ठाने॥ काम क्रोध दोउ बलके पूरे। मोह लोभ अति सांवत शूरे॥ बल अपनो अभिमान दिखावे। इनको मारि राहगढ़ धावै॥ पांचौथाने देह उठाई। जब गढ़में कूदै मनलाई॥ ज्ञान खड्गले द्वन्द्व मचावे। कपट कुटिलता रहन न पावे॥ चुनि चुनि दुर्जन हनि सबडारे। रहते सहते सकल बिडारे॥ मन सों ब्रह्म होय गति सोई। लक्षण जीवरहे नहिं कोई ॥ अचल सिंहासन [illegible]

[illegible]

कदेव भेद दियो नीको। चरणदास मस्तक कियो टीको॥ रणजीता यह रहनी पावे। थोथी करनी कथनि बहावे१३०॥ [illegible] योगका अंग॥ [illegible]

राग करखा॥ साधो [illegible] दया योग इह विधि कमायो। मुल्कको शोधि

होत कहा है यह पान पनेरो बढ़िगयो ॥ पैज तजी मुखकारो हूवो धिक जीवन तासको। योफगयो ओछेकी संगति यह प्रताप कुवासको ॥ च दास शुकदेव कहै यों टेक न देवो शिर देवो। बार बार नर देह न प अपयश जगमें क्यों लेवो १२४ ॥

राग सोरठ ॥ साधो भेष वही जामें टेक है। टेक नहीं तो कहा भये टेक बिना नर तेकहै ॥ टेक बिना कैसी सतवंती टेक बिना दातामी ना टेक बिना योगी बूवना ॥ टेक बिना नहिं भक्त हरिको टेक बिनानहिं सि है। टेकबिना सबभर्मत डोलें टेकबिना नहिं ऋद्धिहै ॥ साधु संत अरु वे कहत हैं टेक पकरि चढु धाम कूं। चरणदास शुकदेव बतावें टेक मिलां राम कूं १२५ साधो जो पकरी सो पकरी। अब तो टेक गही सुमिरण की ज्यों हारिल की लकरी ॥ ज्यों शूराने शस्तर लीन्हो ज्यों बनिये ने तखरी। ज्यों सतवंती लियो सिंधोरा तार गह्यो ज्योंमकरी ॥ ज्योंकामी कूं तिरिया प्यारी ज्योंकिरपिणकूं दमरी। ऐसे हमकूं रामपियारे ज्यों बालककूं ममरी। ज्यों दीपककूं तेल पियारो ज्यों पावककूं समरी। ज्यों मछलीकूं नीर पि प्यारो बिछुरे देखे यमरी ॥ साधों के संग हरिगुण गाऊं ताते जीवनहमरी चरणदास शुकदेव दृढ़ायो और छुटी सब गमरी १२६ अरेले गुरुके वच चितधरे। छिन छिन तेरी आयु घटतहै बेगि सँभारो घरे ॥ शील क्षम संत दृढ़करि राखो गरब गुमान निवारो। पांचोइन्द्री बशकरि अपने म गनीमको मारो ॥ काया कोटि बिहारि युक्तिसूं सतसिंहासन धरिये। ता बैठिअमर पदवी लै राजअभैपुर करिये ॥ सबपर अमल चलै जब तेरो सम औरान कोई। सेवक साहिब लोहा कञ्चन बूंद समुन्दर होई ॥ बि कलेश आपदा नाशै निर्मलआनँद पावै। चरणदास शुकदेवदयासूं रहा गहनि समुझावै १२७ जब गुरुशब्द नगारे बाजें। पांच पचीसों बड़ेमव सी सुनिके डङ्का भाजें ॥ दृढ़ दस्तकले ज्ञान सजावल जाय नगरके माहीं हरिके धाम भजनकरि मांगै चित्त चोधरी पाहीं ॥ कानोगोय लोभके खो छलबल पाहीं फुडैन। काम किसानरु मोह मुकद्दम सबै बांधिकरि लूटे

से जन्म अरु मरण फिरि नाहिं होई। चरणदास करि बास शुकदेव वकसीसों पूजा बेगमपुरी अमरसोई १३३॥

राग सोरठ॥ ऐसादेश दिवाना रे लोगो जाय सो माताहोय। बिन मदिरा मतवारे भूमैं जन्म मरण दुख खोय॥ कोटि चन्द सूरज उजियारो रविशशि पहुँचत नाहीं। बिना सीप मोती अनमोलक बहुदामिनि दमकाहीं॥ बिन ऋतु फूले फूल रहतहैं अमृतरस फल पागो। पवन गवन बिन पवन बहतहै बिन बादर झरिलागो॥ अनहद शब्द भवँर गुंजारैं शंख पखावज बाजैं। ताल घंट मुरली घन घोरा भेरि दमामे गाजैं॥ सिद्धगर्जना अतिहीभारी घुंघुरू गति झनकारैं। रंभा नृत्यकरैं बिन पगसों बिन पायल ठनकारैं॥ गुरु शुकदेव करैं जब किरपा ऐसो नगर दिखावैं। चरणदास वा पग के परसे आवागमन नशावैं १३४॥

राग सारंग व बिलावल व सोरठ॥ साधो अजब नगर अधिकाई। औघट घाट बाट जहँ बांकी उस मारग हम जाई॥ श्रवणबिना बहु वाणी सुनिये बिन जिह्वा स्वरगावैं। बिना नैन जहँ अचरज दीखै बिना अंग लपटावैं॥ बिना नासिका बास पुष्पकी बिना पावँ गिरि चढ़िया। बिना हाथ जहँ मिलोपायके बिनपोथी जहँ पढ़िया॥ ऐसा घर बड़भागीपाया पहिरिगुरूका बाना। निश्चल ह्वैकै आशामारी मिटिगा आवनजाना॥ गुरु शुकदेव करी जब किरपा अनभय बुद्धि प्रकासी। चौथे पदै में आनँद भारी चरणदास जहँ बासी १३५॥

राग सोरठा॥ सो गुरुबिन वह घर कौन दिखावै। जिहि घर अग्निजलैं जलमाहीं यहै अचरज दरशावै॥ कामधेनु जहँ ठाढ़ी सोहैं नैन हाथ बिन दुहना। पाये दूधा थोड़ा [illegible] ॥ [illegible] जन जगदीश पियारे गुरुगम बहुत [illegible] वै नेक न पावै॥ अमृत [illegible] है बैठे [illegible] घंट

संकोच करि शङ्खिनी खैंचि आपान उलटो चलायो॥ बन्ध पर बन्ध जा बन्ध तीनों लगे पवन भइ थकित नभ गर्जि आयो। द्वादशा पलटि कै सुरति दो दल धरी दशौं परकार अनहद बजायो॥ रोंक जब नवन को द्वार दशवें चढ़ो शून्य के तख्त आनन्द बढ़ायो। सहस दल कमल को रूप अद्भुतमहा अमीरस उमँग आझरि लगायो॥ तेज अतिपुञ्ज पर लोक जहँ जगमगे कोटि छबि भानु परकाश लायो। उनमुनी और चित हेत करि बसिरहो देखि निज रूप मनुवां मिलायो॥ काल अरु ज्वाल ज गन्धोधि सब मिटिगई जीवसों ब्रह्मगति वेगिपायो। चरणदास रणजीत शुकदेव की दयासों अभयपद परशि अविगत समायो ३१ साधो पिण्ड ब्रह्माण्ड की सैल गुरु गमकरी परशि या युक्तिसों अलखराई। सहजही सहज पग धरा जब अगमको दशौंपरकार झागड़ बजाई॥ खोलि कपाट अरु बज्रद्वारे चढ़ो कलाकेभेद कुंजी लगाई। पहलके महलपरै जाय आसनकिया दूसरे महलकी खबरि पाई॥ तीसरे महलपर सुरति जा बशिरही महल चौथे दुही अमीगाई। पांचवें महलको साधुकोइ पाइहै महल छठवां दिया गुरु बताई॥ सातवें महलपर कोटि सूरजदिपै आठवें महल अविगति गोसाई। रूप अद्भुत तहां देखि अचरज जहां देखिया दरश तब विपति जाई॥ शुकदेवकी सहासों धारण गहासों आपने पीवके भवन आई। चरणदास आपा दिया प्रेम प्याला पिया शीश सदके किया पूजि पाई। ३२ साधो परसि या देश जहँ भेशनाहीं। घाट तिसलाखि जहां बाटै सूझै नहीं सुषतिके चांदने सन्तजाई॥ चन्द षोड़श दियें गंग उलटीबहैं सुषमना सेजपर लम्प दमकै। तासुके ऊपरै अमीका ताल है झिलमिली ज्योति परकाश झमकै॥ चारि योजन परे शून्य अस्थानहै तेज अति शून्य परलोक राजै। द्वार पश्चिम धँसे मेरही दण्डहो उलटिकर आप छाजै बिराजै॥ नूर जगमगकरै खेल आगाधहै वेदहूकहै नहिं पारपावैं। गुरुमुखी जायहैं अगरपद पाय हैं शीशका लोगनजि पन्थधावैं॥ तीनशुन छेदि रणजीत चौथे

१ दुग्ध २ केवाड़ ३ कामधेनु ४ रास्ता॥

राग धना त्री ॥ सो गुरुगम इहिविधि योग कमायो । आसन अचल कियो सीधो कसि बँध मूलं लगायो ॥ संयम साधि कला बश कीन्ही पवना घर आयो । नव दरवाज़े पट दे राखे अर्द्धे ऊर्ध्व मिलायो ॥ नाले पैंड़ो केरि पैठे शक्ति पताल गई है । कांप्यो शेश कमठ अकुलायो धर थाह दई है ॥ उलटि चले मठ फोरि इकीसो गये अभय पद माहीं । तेजियारो अद्भुत लीला कहन सुनन गमनाहीं ॥ जित भये लीन सुधि बिसरी छूटी जगत कि बाधा । चरणदास शुकदेव दयासों लागी न्य समाधा १४०॥ सो साधो ऐसी योगयुक्ति गति भारी । मूलहि बंध लय युक्तिसों मूंदि दई नवनारी ॥ आसन पद्म महादृढ़ कीन्हो हिरदय चुक लगाई । चंदसूर दोउ समकरि राखे निरति सुरति घर आई ॥ ऊपर चि अपानं सहजमें सहजे प्राण मिलाई । पवन फिरि पश्चिमको दौरी मेहि मेरु चलाई ॥ ऐसेहि लोक अमरपद पहुँचे सूरज कोटि उज्यारी । श्वेत हासन सतगुरु परशे करि दरशन बलिहारी ॥ आपा बिसरि प्रेम सुख पायो नमुनि लागी तारी । चरणदास शुकदेव दयासों चरणदास छुटिवारी १४१॥ राग मलार ॥ त्रिपद रामसों करि नेह । विपकी बुंद न पड़ये जितहां वरत अमृत मेह ॥ चमकत बिजुली गरजत गगना बाजत अनहद घोर । यह न थकत गलत जित पांचो मिटि हैं निशि अरु भोर ॥ जाग्रत मिटि है स्वप्नो मिटि है मिटिहु सुषोपत जाय । पट ऋतु पड़ये नाहिन अवधू एकहि रस दर्शा ॥ बिनहीं जोते बिनहीं बोये उपजत खेत है धीर । लागत अचरज फल महँ मुक्ता बिनहीं सींचे नीर ॥ राजा गुरु शुकदेव न बांटे सबहि करें बकसीस । चरणदास रस सब पावें मिलि है जेहँ बिस्वेबीस १४२॥

॥ राग सोरठ ॥ अवधू ऐसी मदिरा पीजे । बैठि गुफा में यह जग बिसरे चंद सूरसम कीजे ॥ जहाँ कुलालें चंदाई भाठी महा ज्वाल परजारी । भरि भरि प्याला देत कुलाली बाढ़े भक्ति खुमारी ॥ माता है करि ज्ञानखड्ग लै काम क्रोध को मारे । घूमत रहे गहे मन चंचल दुविधा सकल बिडारे ॥ जो चाखे

१ कबुक २ वांई ३ मेरु दंडनाड़ी वहरे जो पृष्ठिभागमें सीधी शिरतक चलीगई है ४ कुम्हार ॥

अनुतहै ठौर अनूठी बड़भागन सों लहिये ॥ या साधन के चहू रखवारे पिशुनि देवत योगी । करन न देवैं बुधि हरि लेवैं होय न गोरस भोगी लोभी हलके को नहिं दीजै कहैं शुकदेव गोसाईं । चरणदास त्यागी है रागी। ताहि देहु गहि बाहीं १२६ सो गुरु गम मगन भया मन मेरा। गगन मँडल में निज घर कीन्हों पंच विषय नहिं घेरा ॥ प्यास क्षुधा निद्रा नहिं व्यापी, अमृत अँचवन कीन्हा । छूटी आस वास नहिं कोई जग में चित नहिं दीन्हा ॥ दरशी ज्योति परम सुखपायो सबही कर्म जलावै। पाप पुण्य दोऊ मैं नाहीं जन्म मरण बिसरावै ॥ अनहद आनँद अति उपजावै कहि न सकूं गतिसारी । अति ललचावै फिरि नहिं आवै लगी अलखसौं यारी॥ हंस कमलदल सतगुरु राजै रुचि रुचि दरशन पाऊं। कहि शुकदेव चरणहींदासा सब विधि तोहिं बताऊं १२७॥

राग मलार ॥ चहूंदिशि झिलमिल झलक निहारी । आगे पीछे दहिने बायें तल ऊपर उजियारी ॥ दृष्टि पलक त्रिकुटी है देखे आसन पद्मलगावे। संयम साधे दृढ़ आराधे जब ऐसी सिधिपावे । बिनि दामिनि चमकार बहु तहीं सीपों बिना लरमोतीं। दीपमालिका बहु दरशावैं जगमग जगमग ज्योती ॥ ध्यान फलै तब नभ के माहीं पूरणहो गतिसारी । चन्द्रघने सूरज अणकी ज्यों सूभर भरिया भारी ॥ यहतो ध्यानै प्रत्यक्ष बतायो श्रद्धाहोय तौ कीजै । कहि शुकदेव चरणहींदासा सो हमसों सुनि लीजै १२८ ॥

राग केदारा ॥ अवधू सहस दल अब देख । श्वेतरँग जहँ पँखरी छवि अघडोरि विशेख ॥ अमृत बिरषा होत अतिझरि तेज पुंज प्रकास । नाद [illegible] किंकिणि झनकि बाजे शं- [illegible] ॥ कालकी [illegible] गगन मध्ये [illegible] कदेव कृपा जीवा ब्रह्म होय १२९ ॥ [illegible]

१ आकाश ॥

यों शब्द समायो अन्तर भीज कनी । धर्म कर्म के बन्धन छूटे दुविधा बेपति हनी ॥ आपा बिसरि जक्तको बिसरो कितरहि पांच जनी । लोक भोग सुधि रही न कोई भूलो ज्ञान गुनी ॥ हो तहँ लीन चरणहिंदासा कहै शुकदेव मुनी । ऐसो ध्यान भाग्य सों पइये चढ़िरहै शिखर अनी १४७ ॥

राग बिलावल ॥ घटमें खेलिले मन,खेला । सकल पदारथ घटही माहीं हरिसों होय जुमेला ॥ घटमें देवल घटमें जाती घटमेंतीरथ सारे । वेगहि आव उलटि घटमाहीं बीतैं पखीन्हारे ॥ घटमें मानसरोवर मों भेर मोती और मरा ला । घट में ऊंचा ध्यान शब्दका सोहंसोहं माला ॥ घटमें बिन सूरज उजि- यारा राति दिना नहिं सूझै । अमृत भोजन भोगलगतहै बिरलाजन कोइ बूझै ॥ घटमें पापी घटमें धर्मी घटमें तपसी योगी । गुण अवगुण सब घट- हीमाहीं घटमें वैदरोगी ॥ रामभक्ति घटही में उपजै घटमें प्रेमप्रकासा । शुकदेव कहैं चौथपद घटमें पहुँचै चरणहिंदासा १४८ ॥

राग बिलास ॥ घटमें तीरथ क्यों न नहावो । इत उत डोलो पथिक ब- नेहीं भरमि भरमि क्यों जन्म गवांवो ॥ गोमती कर्म सुकारथ कीजै अधरम मैल छुटावो । शील सरोवर हितकरि न्हइये काम अगिनकी तपनि बुझावो॥ रेवा सोई क्षमा को जानो तामें गोता लीजै । तन में क्रोध रहन नहिं पावै ऐसी पूजा चितदै कीजै ॥ सत यमुना संतोष सरस्वति गंगा धीरज धारो । झूठ पटकि निर्लोभ होय करि सबही बोझा शिरसों डारो ॥ दया तीर्थ कर्म- नाशा कहिये परशे बदला जावै । चरणदास शुकदेव कहत हैं चौरासी में फिरि नहिं आवै १४९ ॥

राग बिभास ॥ घटमें तीरथ यों तुम न्हावो । तिनके न्हान अमरपद प- हुँचो आदिपुरुष निश्चय करि पावो ॥ काशी सो तत करणी कीजै कलि- मल सकल नशावो । रहनि गहनि पुष्कर को जानो यामें मज्जन क्यों न करावो ॥ ध्यान द्वारका दृढ़ करि परशो हितकी छाप लगावो । इन्द्रीजित सोइ बदरीनाथा यह सतकरि चितमें लावो ॥ भवँर गुफामें है त्रिवेणी सु- रति निरति ले धावो । योग युक्ति सों डुबकी लेकरि काग पलटि हंसा है

यह प्रेम सुधारस निजपुर पहुँचे सोई। अमर होय अमरापद पावै आवा मन न होई॥ गुरु शुकदेव किया मतवारा तीनिलोक तृण बूझा। च दास रणजीत भये जब आनँद आनँद सूझा॥१४३॥

राग सारंग॥ पीवै कोइ यह प्याला मतवारा। सुर नर मुनि जो मद तरसैं गुरु बिन लहै न वारा॥ शूद्र के घर भाठी औटै ब्रह्मा अग्नि जल ई। शिव शोधैं अरु विष्णु चुवावैं पीवैं साधु अघाई॥ सीता प्याला भरि देवैं हनूमान हंकारैं। व्यास शेश नारद सनकादिक किरिया नाहिं विचा नवधा नेम औ संमय पूजा विसरी सब कह कहिये। घूमतरहैं महारसवा स्वर्गमुक्ति ना चहिये॥ श्रीशुकदेव सुधारस अमृत नितप्रति अँचवनकीन्हा चरणदास पर किरपा करिकै निजप्रसाद करिदीन्हा १४४ साधो यह प्याल मतवारहै। अँचवैगा कोइ योग युगन्ता चित अस्थिर मन मारिहै॥ चन्द सूर दोउ ममकरि राखै ब्रह्मज्वाल अन्तर बरै। मुद्रा लगै खेचरी जबहीं बङ्क नाल अमृत झरै॥ भवँर गुफा में भाठी औटै भभक भभक सुषमन चुवे। सगुरा पीपी रहित भये हैं बिन पीथे उपजें मुये॥ शिव सनकादिक नारद शारद और पिया नो नाथहै। सिधि चौरासी हरिपदवासी मगन भया सब साथहै॥ रामानन्द कबीर नामदे अमरहुये जिन जिन पिया। गुरु शुकदेव करी जब किरपा चरणदास को सो दिया॥१४५॥

राग धनाश्री॥ जो जन अनहद ध्यानधरै। पांचो निर्बल चंचल थाकै जीवतहीं जु मरै॥ शोधे मूलबन्ध दै राखे आसन सिद्धकरै। त्रिकुटी सुरति लाय ठहरावै कुम्भक पवनभरै॥ घन गरजै अरु बिजुली चमकै कौतुक गगनधरै। बहुतभांति जहँ बाजन बाजैं सुनि सुनि सन्धअरै॥ सहज सहजमें होयपरकाशा बाधा सकलहरै। जगकी आस धास सब टूटै ममता मोहजरै॥ शून्य शिखरपर आपाबिसरै काल सों नाहिं डरै। चरणदास शुकदेव कहत हैं सब गुण ध्यानधरै १४६ जबते अनहद घोर सुनी। इन्द्री थकित गलित मन हूवो आशा सकल भुनी॥ घूमत नैन शिथिल भइ काया अमल जु आनि सनी। रोम रोम आनन्द उपजि करि आलस सहज धनी॥ मतवारे

वणीया नैनन अरु रसनो ॥ एक एक ने वारी वांधी गहि गहि लेले ।हिं । निशि दिन उनहीं के रस पागो घरमें ठहरत नाहिं ॥ अलि पतंग ज मीन मृगा ज्यों होय रह्यो पराधीन । अपनो आप सँभारत नाहीं वि-प वासनालीन ॥ हों कुलवन्ती टोना सीखो अनहद सुरतिधरूं । गगन एडलमें उलटा कूवां तासों नीरभरूं ॥ भँवर गुफामें दीपक बारों मन्तर एक दूं । काम क्रोध मद लोभ मोहकर बालन चित्त हूं ॥ यतन यतन करि ान छुटाऊं फिर नहिं जाननदूं । चरणदास शुकदेव बतावें निज मनहीं रलूं १५४ ॥

राग सोरठ ॥ तू सदा सोहागिनि नारी है । पियके संग मिली मद पीवे ताते लागत प्यारी है ॥ भँवर गुफामें भँवर बनावो विन घृत ज्योती जारीहै । सुषमन सेज महा सुखदायी भोगत भोग दुलारी है ॥ वश कियो कंथा चले नं पंथा टोनाडारो भारी है । आठ पहर तुम्हरे रँग राचो हमको मिले न वारी है ॥ पति मनमानी सो पटरानी सोई रूप उज्यारी है । हम चारों जो सौति तुम्हारी तुम गुण आगे हारी है ॥ चरणहिंदास भई त्वहिं सेवैं लगीरहै नि-तलारी है । शुकदेवा शिर छत्र हमारो सो वशभयो तुम्हारी है १५५ ॥

राग बिलावल ॥ करणीकी गति औरहै कथनीकी औरै । विन करणी कथनी कथैं बकवादी बौरै ॥ करणी विन कथनाइसी ज्यों शशिविन रजनी । विनशस्तर ज्यों शूरिमा भूषण विन सजनी ॥ ज्यों पण्डित कथि कथि भले वैराग सुनावें । आप कुटुम्बके फँद पड़े नाहीं सुरझावें ॥ बांझ झुलावें पा-लना बालकनहीं माहीं । वस्तु विहीना जानिये जहँ करणी नाहीं ॥ बहु डिंभी करणी विना कथिकथि करिमूये । सन्तो कथि करणी करी हरिकी स-मंहूये ॥ कहें गुरु शुकदेवजी चरणदास विचारो । करणी रहनी दृढ़गहो थोथी कथनी डारो १५६ ॥

हेली ॥ पांचसखी ले लार हेली काया महल पगधारिये । योग युक्ति

१ जीभ २ भँवरा ३ पानी ४ मंदरी ५ भूखकता ६ सोपाँचोज्ञानेन्द्री अर्थात् आंख, कान, नाक, जिह्वा, त्वचा ॥

जावो ॥ तनमथुरा अरुमन वृन्दावन तामें रासरचावो । हिरदय कमल परकाशा दरशन देखि अधिक हुलसावो ॥ गुरु चरणन में सबही तीरथ सिमिटि सिमिटि तहँ आवो । चरणदास शुकदेव कहत हैं अपनी मस्तक भेंट चढ़ावो १५० ॥

राग पर्ज ॥ सुधारस कैसे पइयेहो । कूपं कहां केहिठौरहै कैसे करि लइये हो ॥ नेजू कित किंत गागरी कित भरने वारीहो । कैसे खुले कपाटही को ताला तालीहो ॥ कौन समै किस गृह विषे अँचवें किन माहींहो । तुमही जानै भेदको अरु बहुतक नाहींहो ॥ पीकरि किस कारज लगै अरु स्वाद बतावो हो । फल याका कहि दीजिये सब खोलि जतावो हो ॥ शुकदेव सों पूंछन करैं यह चरणहिंदासा हो । किरपा करिके कीजिये मेरीपूरी आशाहो १५१ गुरुहमारे प्रेम पिआयो हो । तादिन ते पलटे भयो कुलगोत नशायो हो ॥ अमल चढ़ो गगनै लगो अनहद मन छायो हो । तेज पुंजकी सेज पै प्रीतम गल लायो हो ॥ गये दिवाने देसड़े आनँद दरशायो हो । सब किरिया सहजे छुटीं तप नेम भुलायो हो ॥ त्रैगुणते ऊपर रहूं शुकदेव बसायो हो । चरणदास दिन रैन नहिं तुरिया पद पायो हो १५२ ॥

राग जैजैवंती ॥ ऐसो जो युक्ति जानै सोई योगी न्यारा । आसन जो सिद्धि करै त्रिकुटी में ध्यान धरै बिना तेल दिया बरै ज्योति हूं उज्यारा ॥ [illegible]

[illegible]

खेल धारा । कुंभक अथकराखै अनहद कि ओर ताके सुषमन पैठि नाके आगे जो [illegible] तुजावे तीरा अमी [illegible] जन्म मरण भागे [illegible] चरणदास होयरहे [illegible]

राग सोरठ सारंग ॥ पांचन मोहिलियो बलिमा । नासा त्वचा और

१ कुवां ॥

१५६ रहै रामका नाम जपै सोभी रहै। वेदपुराणन माहिं सभी योंहीकहै॥ जन्म मरण नहिं होय न योनी आवई। सतसिंहासन बैठि अमरपुर पावई॥ जम जालिमके दण्ड भर्म छुटिजाहिंगे। लख चौरासी बन्धसभी कटिजाहिं-गे॥ नवग्रह लगे न देहमेह आनँद रहै। डाकिनि सर्पिनि सिंह भूत नाहीं दहै॥ साधुसंग गुरुसेव आय घटमें बसै। कलह कल्पना जाय दन्द संकट नसै॥ तिलको दिये लिलाटजु कण्ठीसोहनी। नौबिस लक्षण धारि सहज जीते मनी॥ ऊंची पदवी होय जगत सब पगलगैं। दुष्टजलैं मनमाहिं दूरिही सों तकैं॥ पाप भगैं मुखदेखि दरश कोई करै। भक्ति परापत ताहिसु चरणन आपरै॥ कहैं गुरू शुकदेव चरणहीं दाससों। सब मन्तर शिरमोर सुमिर हरिनाम को १६०॥

राग काफी॥ क्या दिखलावै शान यह कुछ थिर न रहेगा। दारा सुत अरुमाल मुल्कका कहाकरै अभिमान॥ रावण कुम्भकरण हरणाकुश राजा कर्ण सँभार। अर्जुन नकुल भीमसेयोधा माटीहुये निदान॥ क्षणक्षण तेरो तन छीजत है सुनु मूरख अज्ञान। फिरि पछितायै कहा होयगा जब यम घेरैं आन॥ बिनशैं जल थल रवि शशितारे सकल सृष्टिकीहानि। अजहूं चेतहेत करु हरिसों ताहीकी पहिचानि॥ नवधाभक्ति साधुकी संगति प्रेम सहित करुध्यान। चरणदास शुकदेवहि सुमिरो जो चाहो कल्यान १६१ रामनाम चितलाव अरु सब शोकनिवारो। सकल विकल सब मनके टारो निश्चय करि ह्यांआवै॥ तीरथ वर्त सभी फलदेवैं रामनाम तुलनाहिं। पार लगावन मुक्ति करावन समझि देखु मनमाहिं॥ पढ़ो पढ़ावो भेद न पावो कछू न लागैहाथ। अर्थ विचारो तौतुम जानो कै सन्तनको साथ॥ उमिरि गवाँवै तुच्छ स्वाद में करि पांचन सों भोग। अन्तकाल दुख होहिं घनेरे तन मन लिपटैं रोग॥ लोक परलोक महासुख पावै जो सुमिरै हरिनाम। चरण दास शुकदेव कहतहैं होवैं पूरणकाम १६२॥

राग मालश्री॥ थिर न रही रहनाहै आखिर मौतनिदान॥ देखत देखत

१ श्री॥

डोला करौरी अरीहेली प्रान अपान कहार ॥ कुंज कुंज सब देखि रीहेली नाना बाग पहार। मानसरोवर न्हाइये सदा वसन्त निहार ..... सीप मोती बनेरी अरीहेली बिनागूंद फूलनहार। बिन दामिनि चमकाहै बिन सूरज उजियार ॥ अनहद उतबाजे बजैरी अचरज बहुतक ख्याल। तेजपुंज की सेजपै कागा होहिं मराल ॥ श्रीशुकदेव कृपाकरें जब पावै यह भेद। चरणदास पियासों मिलै छुटें जगतके खेद १५७ योगयुक्ति करिलेहि हेली। जोचाहै हरिसों मिलो आसन संयम साधिकैरी॥ गगनमंडल करि गेह उलटी दृष्टि चढ़ाइयेरी। होय सूरज परकाश करम भरम सबही जरैं॥ सहजछुटै जग आश प्राण अपान मिलायकैरी। मूलबन्धको बांधि रसना उलटि लगाइये ॥ सुरति ऊर्ध्व को साधि बङ्क सुधारस पीजिये। अनहदहो गलतान भवँर गुफा दृढ़ बैठिकै॥ शून्य शिखरको ध्यान सुषमन मारग है त्रलैरी। जब पहुँचौ निजधाम अचल सिंहासन श्वेतहै॥ जहां बिराजैं राम यह साधन शुकदेव कीरी। जो कोइ जानै साध चरणदास अविगतलहै॥ देखै खेल अगाध १५८॥

अथ वैराग्यका अंग॥

राग मंगल॥ चला चलीजगठाट अचल हरिनामहै। माल मुल्कचलि जाय जाय रज धामहै॥ तेल फुलेल लगाय बहुत सुन्दर गहे। नानाकरते भोग सोभी नर नारहे॥ तेज तमक और रूपजाय यौवनघना। सकल बरातीं जायँ जायँ दुलहिनि बना॥ रोगी रोग अरु बैद्य जाय औषधि भले। ज्योतिषपुस्तक तटबिन सरजल लैमिले॥ ज्ञानीपण्डित पीरअधिक बेबश गले। गौस कुतुब अब्दाल पैगम्बर सब चले॥ एकके पीछे एक बहीर लगीचली। नरपति सुरपति जाहिं अन्तवाहीगली॥ ऋषिमुनि देवन सिद्ध योगेश्वर जाहिंगे। जिन वश कीन्ही मौत सोभी न रहाहिंगे॥ पांच तत्त्व गुणतीनि नहीं ठहराहिंगे। स्वर्ग मृत्यु पाताल सभी रलिजाहिंगे॥ धरती अम्बर जाय जाय शशि भान है। चरणदास शुकदेव दया लियो जान

१ दुलहा २ आकाश ॥

रे॥ चरणदास शुकदेव चितावै, स्वप्ना सो सब झूठ। अचरज समझ गाथ पुरानी मौन गह्यो यहि मूठ १६६॥

राग ललित॥ यह सब जानो झूठा ठाट। समझ सबेरे चलना बाट॥ ग सरायमें कहा भुलानो। भठियारी के मोह लुभानो॥ तुझको तौ बहु सन जानो। करि हिसाब बनियें की हाटे॥ कुटुँब मित्र कोइ हितू न रा। अपने स्वारथही को घेरा॥ ह्यां नहिं तेरा निश्चल डेरा॥ उठिये हूजै गि उचाट॥ चलने की तदबीर न कीन्हीं। खोटी राह थाह नहिं चीन्हीं॥ जिलों की खरची नहि लीन्हीं। गाफिल सोवै अजहूं खाटे॥ मगे माहीं ग बाग लगाये। बहुत मुसाफिर जित परचाये॥ अरु उनको बिष लड्डू खवाये। मारि लिये स्वादन के घाट॥ सावधान कोइ हाथ न आये। बच कर चले सो निरभय धाये॥ उनके छल के पचे न खाये। नेक न लागी तिनको आंट॥ मन चंचलका घोड़ा कीजै। ध्यान लगाम ताहि मुखदीजे॥ है असवार ताहि गहि लीजै। भवसागर का चौड़ा फांट॥ चरणदास शुकदेव चितावै। अपना जानि तोहिं समझावै॥ तेरे भले कि बात बतावै। बारबार कहूं तोका डाटे १६७॥

राग आसावरी॥ गुरु मुख यह जग झूठ लखाया। साधसंत अरु वेद कहतहैं और पुराणन गाया॥ मृगतृष्णाके नीर लोभाना सीपी रूपाजाना। फटिक शिलापर पीक परी है मूरख लाल लोभाना॥ स्वप्नेमें सब ठाट ठटो। है कुलनाते परिवारा। दृष्टि खुली जब सबही नाशे रहो नहीं आकारा॥ ताते चेत भजनकर हरिको ह्यांमत मनको पागो। वा घरगये बहुरि नहिं आवै आवागमन न लागो॥ या स्वप्नेमें लाभ यही है चरणदासमुखभाखो। योगेश्वर जापद मिलि रहिया तुरियाहित चित राखो १६८॥

राग बंगला॥ या तनको कहगर्व करतहै ओलों ज्यों गल जावैरे। जैसे वर्तन वनो कांचको ठबकलगे बिनसावैरे॥ झूठ कपट अरु छल बल करिकै खोटे कर्म कमावैरे। बाजीगरके बांदरकाज्यों नाचत नाहिं लजावैरे॥ ज-

१ बाजार २ चारपाई ३ रास्ता ४ वर्फ॥

राग सोरठ ॥ यह तन बालू कासा डेरा। जैसे दामिनि दमक चमक को ठहरनहिं रहत उजेरा ॥ मेड़ी मण्डप मुल्क खजानो अरु परिवार घनेरा। सब कौतुक सों दीखतहै राम सँभार सवेरा ॥ गज घोड़ा अरु चाकर चेरा आखिर कोई न तेरा। जिनके कारण भर्मत डोलै करता मेरामेरा ॥ थोड़े से जिनके काजे बहुतक करतबखेरा। कालबली की खबरि नहीं है करहि अचानक घेरा ॥ कहैं शुकदेव समझ नरभोंदू छांड़ि विषय उरझेरा। चरणदास हरिनाम भजन बिन कैसे होय निबेरा १७१ दमका नहीं भरोसा रे करले चलनेका सामान। तन पिंजरेसों निकसि जायगो पलमें पक्षीप्रान ॥ चलते फिरते सोवत जागत करत खान अरुपान। क्षण क्षण क्षण क्षण आयु घटतिहै होत देहकी हान ॥ माल मुलुक औ सुख सम्पतिमें क्यों हूवा गलतान। देखत देखत विनशि जायगो मतिकरु मान गुमान ॥ कोई रहन न पावै जगमें यह तू निश्चय जान। अजहूं समुझि छांड़ कुटिलाई मूरुख नर अज्ञान ॥ टेरि चितावैं ज्ञान बतावैं गीता वेद पुरान। चरणदास शुकदेव कहतहैं रामनाम उरआन १७२॥

राग काफी ॥ वह बोलतो कितगया काया नगरी तजिकै। दशदरवाजे योंकि त्योंही कौनराह गयो भजिकै ॥ सूनादेश गावँ भया सूना सूने घरके वासी। रूपरंग कछु औरै हूवा देहीभई उदासी ॥ साजनथे सो दुर्जनहूये उनको बांधि निकारा। चितासँवारि लिटाकरि तामें ऊपर धरा अँगारा ॥ रहगया महल चहलथी जामें मिलिगया माटी माहीं। पुत्र कलत्र भाय अरु बंधव सबही ठौंक जलाईं ॥ देखतही का नाता जगमें मुये संग नहिं कोई। चरणदास शुकदेव कहतहैं हरि बिन मुक्ति न होई १७३ समझोरे भाईलोगो समझोरे। जेरे ह्यां नहिं रहना करना अन्त पयाना ॥ मोह कुँटुम के औसर खोयो हरिकी सुधि बिसराई। दिन धंधे में रैनि नींदमें ऐसे आयु गवाँई ॥ आठ पहरकी साठौ घरियां सो सौ बिरथा खोई। क्षणइक हरिको नाम न लीन्हो कुशल कहां ते होई ॥ बालकथा जब खेलत डोला तरुण भया मद-

१ श्वास २ जीव ३ दशौं इन्द्री ४ स्त्री ॥

वलों तेरी देह पराक्रम तबलों सबन सोहावैरे । माय कहै मेरा पूत सप
नारी हुक्म चलावैरे ॥ पल पल २ पलटै काया क्षण क्षण माहिं घटावै
बालक तरुण होय फिरिबूढ़ा वृद्ध अवस्था आवैरे ॥ तेल फुलेल सुग
उबटनो अम्बर अतर लगावैरे । नाना विधिसों पिण्ड सँवारै जरिबरि धू
समावैरे ॥ कोटि यत्न सों वचैन क्योंहीं देवीदेव मनावैरे । जिनको तू
पनेकरि जानै दुख में पास न आवैरे ॥ कोई भिड़कै कोई अनखावै के
नाक चढ़ावैरे । यह गति देखि कुटुँब अपने की इन में मत उरझावैरे
जवहीं यमसों पाला परिहै कोई नाहिं छुटावैरे । औसरखोवै परकेकाजे अ
पनोमूल गँवावैरे ॥ बिन हरिनाम नहीं छुटकारो वेद पुराण बतावैरे । चे
तन रूप बसै घट अन्तर भर्मभूल विसरावैरे ॥ जो टुक ढूंढ़खोज करिदेखै सं
आपहिमें पावैरे । जो चाहै चौरासीछूटै आवागमन नशावैरे ॥ चरणदास
शुकदेव कहतहैं सतसंगति मनलावैरे १६९ ॥

राग बरवा ॥ तनका तनक भरोसा नाहीं काहे करत गुमानारे । ठेक
लगे नेकहू चलतै करि हैं प्राण पयानारे ॥ ऐंठ अकड़ सब छांड़ बावरे तेज
तमक इतरानारे । रंचक जीवन जगत अचम्भव क्षणमाहीं गरजानारे ।
मैं मैं मैं मैं क्यों करताहै माया माहिं लोभानारे । बहु परिवार देखिकै फूल
मूरुख मूढ़ थयानारे ॥ टेढ़ोचलै सिरोरत मुच्छैं विषयवास लपटानारे । आ
पनको ऊंचो करिजानै मातोमद अभिमानारे ॥ पीर फकीर औलिया योगी
रहै न राजा रानारे । धरणि अकाश सूरशशि नाशैं तेराक्या उनमानारे ।
ठाढ़े घातकरें शिरपै यम तानेतीर कमानारे । पलक पैंड़पै तकि तकिमों
काल अचानक बानारे ॥ श्वास निकसि फूटि आंखिजाहिं जब कायाजं
निदानारे । तोको बांधिनरक लैजैहैं फेरि हैं अगिनि तपानारे ॥ अजहूं चेत
सीखले गुरुकी करिले ठौर ठिकानारे । अमर नगर पहिंचान सिदौसी त
नहिं आवन जानारे ॥ हरिकी भक्ति साधुकी संगति यह मत वेद पुरानारे।
चरणदास शुकदेव कहतहैं परम पुरातन ज्ञानारे १७०॥

१ बस ॥

राग सोरठ॥ अरे नर अफल जन्म मत खोरे। ज्यों तेलीको बैल फिरत है निशिदिन कोल्हू घेरें॥ भक्ति विहीने खरें है आये ढोवत बोभा रोरे। सांझभये वाको वाको पति घूरे ऊपर छोरे॥ भर्मत भर्मत मनुष भये हो ऊंचे आय चढ़ोरे। लख चौरासी योनि भुगुति करि फिरि तामें न परोरे॥ अब के चूके बहु पछितैहो मान बचन तू मोरे। चरणदास शुकदेव कहतहैं हरि पद सुरति धरोरे॥१७८॥

राग विलावल॥ अरे नर जन्म पदारथ खोयारे। वीती अवधि काल जब आया शीश पकरि के रोयारे॥ अब क्या होय कहा वनिआवे माहिं अविद्यां सोयारे। साधु संग गुरुसेव न चीन्हो तत्त्व ज्ञान नहिं जोयारे॥ आगे से हरिभक्ति न कीन्ही रसना राम न गोयारे। चौरासी यमदंड न छूटे आवागमन का ढोयारे॥ जो कछु किया सोई अब पावो वही लुनो जो बोयारे। साहब सांचा न्याव चुकावो ज्यों का त्योंही होयारे॥ कहूं पुकारे सब सुनि लीजो चेतिजाव नर लोयारे। कहे शुकदेव चरणहींदासा यह मैदान यह गोयारे॥१७९॥

राग सारंग व रागनट व राग धनाश्री॥

नट ज्यों नाचि गये कितने। दाता शूर सती सिधि साधक रावरंके जितने॥ रावण कुम्भकरणसे योधा बहुतक कौन गिनै। बहुतक इकछत राज करत थे पूजत लोग जिनै॥ बहुतक भोगी नानाविधि सों करते भोग विलास। बहुतक तपसी वन के वासी तन पर उपजी घास॥ बहुतक ऋषि मुनि दुर्वासा से देते अडिग शराप। बहुतक ज्ञानी हरि है बैठे कहते आपहि आप॥ हमहूं याचक नाचन आये यह नहिं अपना देश। चरणदास शुकदेव दया सों फिर नहिं काछू भेश॥१८०॥ नट ज्यों नाचहि नाचिगये। तिन तिन भेष धरो जगमाहीं सोसो नाहिं रहे॥ बहुतक स्वांग धरो राजा को बहुतक रंक भये। बहुतक भूप करणसे हूये कंचन दानदये॥ बहुतक स्वांग सती के आये है गये अग्नि मये। बहुतक रुण्डित मुण्डित योगी गुफा

१ गदहा २ माया ३ दरिद्री॥

गाता। वृद्धभये चिन्ता अति उपजी दुखमें कछु न सुहाता॥ भूलो कहा चेतु नर मूरुख कालखड़ो शरसांधे। विषको तीर खैंचिके मारै आय अचानक बांधे॥ झूठे जगसे नेह छोड़करि सांचो नाम उचारो। चरणदास शुकदेव कहतहैं अपना भलो विचारो १७४॥

राग झंझौटी॥ समझै नहिं मायाका मतवार। भूलिरहो धन धाम कुटुंबमें हरि गुरु दियो बिसार॥ पाप दुकान लीपि औगुणसों पूंजीरची विकार। कामके दाम क्रोध थैली धरि बैठा हाट पसार॥ छल कांटे विच कपट रुपइया निरख तौल निर्धार। कर्म देर कौड़िनको करिकै गिनि गिनि धरत सुधार॥ कह लाया कह लै निकसैगा अपने जीव विचार। कोइ दम अचरज देखि तमाशा क्षणइक राम सँभार॥ नरदेही है लाल अमोलक ताकी लखी न सार॥ अन्तसमय ज्यों हारो ज्वाँरी दोऊ कर चले झार॥ यह जग स्वप्ना जान बावरे आखिर यमसों रार। भुगते कष्ट महादुख पावै भो जीवन धिरकार॥ आवत काल अचानक तोपै कहैं शुकदेव पुकार। चरणदास अब राम सुमिरि ले जो चाहै कल्यान १७५॥

राग नट व बिलावल॥ अरे नर अपनो लाभ विचार। स्वास खजानो घटत सदाही ताको वेगि सँभार॥ जोरि जाय सो बहुरि न आवै खरचै लाख हजार। ऐसो रतन अमोलक हीरा तू करसों मतिडार॥ सतसंगति में हित चित राखो दुष्टन संग निवार। मायाजाल अरु प्रीति कुटुंबकी ताको मन सों विसार॥ काम क्रोध अरु मोह लोभसे परबल बड़े विकार। ज्ञान अगिन अन्तरघट जारो तासें इनको जार॥ विषय वासना इन्द्रिनके सुख बूड़िरह्यो संसार चरणदासको नाव चढ़ाकै शुकदेव लियो उबार १७६॥

राग केदारा॥ रे नर क्यों गवाँवै जनम। आयु तेरी बीतीजाय नाहिं जानि मरम॥ जन्मपाय हरि भजन करिले देहको यही धरम। लोक अरु परलोक सुधरै रहै तेरी शरम॥ भक्तिसम कछु नाहिं दीखे योग यज्ञ तप करम। ज्ञान धर्म विचार त्यागो मेट थोथे भरम॥ चरणदास सतसंग मिलिकै आव हरिकी शरण। राम सुखदाई सुमिरि ले वही तारण तरण १७७॥

।। धर्म हिरदय सों भूला परनिन्दा हिंसाको धाया ।। चौरासी लख योनि गुति करि मनुष स्वरूप भाग्य सों पाया । लाहा कछू न किया हासले तटा मूल गवांया ।। चरणदास कलियुगके माहीं हरिगुण गावन सार बताया १८५ नाहींरे कोई हरि बिन तेरो ।। यह जग जाल महा दुखदाई तामें इक रैनि बसेरो ।। आनि फँसो मायाके फन्दन मोहममत कीन्हो उरझेरो । कछू छुटकारो नाहीं विषय स्वाद पांचो ने घेरो ।। साधु सन्त सों नेह न लै दारा सुत सम्पति को चेरो । अन्तकाल बहुतै पछितैहो जब मारै यम यपेरो ।। धनके कारण घर घर डोलै पर काजे पचि मरत घनेरो ।। जो दाम ग्राम बगहके काम क्रोध सों हित बहुतेरो ।। जो चाहै तू भलो आनो तो हा से करु बेगि निबेरो । चरणदास शुकदेव कहत है छांड़ि देहि विषय बखेरो १८६ ।।

राग धनाश्री ।। अपना हरि बिन और न कोई । मात पिता सुत बन्धु सब स्वारथही के होई ।। या कायाको भोग बहुत दै मर्दन करि करि ोई । सोभी छूटत नेक तनकसी संग न चाली वोई ।। घरकी नारि बहुतही प्यारी तिनमें नाहीं दोई । जीवत कहती साथ चलूंगी डरपन लागी सोई ।। तो कहिये यह द्रव्य आपनो जिन उज्ज्वल मति खोई । आवत कष्ट खरचत खारी चलत प्राण ले जोई ।। इस जगमें कोइ हितू न दीखै मैं समझाऊं तोई । चरणदास शुकदेव कहै यों सुनिलीजौ नर लोई १८७ ।।

राग कान्हरा ।। हरि बिन कौन तुम्हारो मीता । कुटुंब सँघाती स्वारथ लागे तेरो काहूको नहिं जीता ।। तैं प्रभु ओरी सों मुख मोड़ा झूठे लोगन सों हित कीता । अरु तैं अपनी आंखों देखा कई बार दुख सुख हो बीता ।। सम्पतिमें सबही घिरि आवैं विपतिपरे आधिको दुखदीता । मुठी बांधि जन्मे नर लायो हाथ पसारि चले गो रीता ।। धरि धरि स्वांग फिरै तिन कारण कपि ज्यों नाचन लागो धीता । मुये न संगी होहिं तिहारे बांधि जलावैं दिढ

नाय बये ॥ भीषम अरु द्रोणाचारज से शूरा बहुत ठये । रण सों पीठिदई
नहिं कबहूं सन्मुख आणलये ॥ बहुत सती सिध हैं है बैठे लोगन त्रणगहे ।
बहुतक कामी चतुर सयाने काम हुताश बहे ॥ उत्तम मध्यम काम कहे हैं
नाना स्वांग गने । चरणदास शुकदेव दया सों प्रेमी होय नचे ॥ ८१ ॥

॥ राग सारंग ॥ दुनिया मगन भये धन धाम । लालच मोह कुटुंबके पागे
बिसरि गये हरिनाम ॥ एक घरी छुटकारो नाहीं बँधिरहे आठों याम । पांच
पहर धंधे में जाते तीन पहर सँग बाम ॥ फूले फिरत महा गर्वाये पवन भरे
ये चाम । दीप कलश ज्यों विनशि जायगो या तनको यहि काम ॥ साधु
संग गुरु सेव न कीन्ही सुमिरे ना श्रीराम । चरणदास शुकदेव कहतहैं कैसे
पावों ठाम १८२ ॥

॥ राग काफी ॥ कोई दिन जीवै तो कर गुजरान । कहर गरूरी छांड
दिवाने तजो अकस की बान ॥ चुगुली चोरी अरु निंदा लै झूठ कपट
अरु कान । इनको डारि गहौ जत सतको सोई अधिक सयान ॥ हरि
हरि सुमिरो क्षण नहिं बिसरो गुरु सेवा मन ठानि । साधुनकी संगतिकर
निशि दिन आवै ना कुछ हानि ॥ मुड़ो कुमारग चलो सुमारग पावै
निज पुर वास । गुरु शुकदेव चेतावैं तोको समझ चरणहींदास १८३ एते
परक्यों हुआ मगरूर । क्षणभंगी यह तन बहुरंगी जरिबरि होइहै धूर ॥ मूछ
मरोरि चले वांकी गति अकड़ि अकड़िरहै घूर । छैल चिकनियां माया मद
में माते चकनाचूर ॥ काम क्रोधके शस्तर बांधे लोभी रह्यो भरि पूर ॥ गुरु
को ज्ञान न मनमें आवै ऐसा है बेसहूर ॥ करि अभिमान जगत सब मानै
हरिको जानैदूर । चरणदास शुकदेव बतावैं साईं सदा हुजूर १८४ ॥

॥ राग बिलावल ॥ राम नाम तैं क्यों बिसरायो । सीखे कपट झपट बल
बल बहु कामरु क्रोध मोह लवलायो ॥ चारि दिना का जगत अंडम्भा
झूठे सुखमें कहा लोभायो । क्षण इक सतसंगति नहिं कीन्ही जन्म अकारथ
खोय बहायो ॥ बाद बिवाद स्वादको चोकस विषय बास रस में लिपटायो ।

तवै। तूतो पीठि दियेही नितही सुमिरण सुरति न देवै॥ कृतघनी, मकहरामी न्याव ईंसाफ़ न तेरे। चरणदास शुकदेव कहत हैं अजहूं सवेरे १६१॥

राग विहागरा॥ अरे नर हरिका हेत न जाना। उपजाया सुमिरण के तैं कछु औरै ठाना॥ गर्भमाहिं जिन रक्षा कीन्ही हां खानेको दीन्हा। अगिनसों राखिलियो है अँग सम्पूरण कीन्हा॥ बाहर आय बहुत सु- ीन्ही दशनबिना पयप्यायो। दांतभये भोजन बहुभांती हितसों तोहिं ायो॥ और दिये सुख नानाविधि के समुझि देखु मनमाहीं। भूलो फि- मदागर्बायो तू कछु जानत नाहीं॥ तब कारण सबकछु प्रभु कीन्हो तू न्हा निजकाजा। जग व्योहार पगोही बोलै तोहिं न आवै लाजा॥ अ- हूं चेत उलटहरिसोंहीं जन्मसुफल करु भाई। चरणदास शुकदेव कहैं यों मिरणहै सुखदाई १६२॥

राग काफ़ी॥ गुमराही छांड दिवाने मूरख बावरे। अति दुर्लभहै नरदेह या गुरुदेव शरण तू आवरे॥ जगजीवनहै निशिको स्वपनो अपनो ह्यां ौन बतावरे। तोहिं पांच पचीसने घेरिलियो लखचौरासी भरमावरे॥ बीति ाई सो बीति गई अजहूं मनको समुझावरे। मोह लोभ सों आगिकै त्याग विषय काम क्रोधको धोय बहावरे॥ शुकदेव कहैं सबही तजिकै मनमोहन सों लवलावरे। चरणदास पुकारि चितायदियो मत चूकै ऐसे दावँरे १६३

चलाजावै चलवे का योस फ़्क्र करिले भाई। ह्यांसे चलनाहोय अचान- कही फिरि पाछे रहै अफ्सोस॥ पीके विषय की मदिरा मतवारा होय रहा बेहोस। बाटमाहिं तो शूल बबूल घने अरु जानाहै कइ कोस॥ दमहीं द- महीं दम छीजतहै पलपल घटै तनजोस। माया मोह कुटुंबका सुख ऐसे जैसे दीखै मोती ओस॥ शुकदेवदियो कृपाकरिकै रामरसका प्याला नोस। चरणदास कहैं यहबात भली सुनिलीजै दोनों गोस १६४॥

राग सुधिराखो वा दिनकी। जादिन तेरी देह

पलीता ॥ गुरुसेवा सतसंग न कीन्ही कनक कामिनी सों करि प्रीता चरणदास शुकदेव कहतहैं मरत गरत हरिनाम न लीता १८८ ॥

राग रामकली ॥ धनिधनि वे नर हरि शरणाये। और पशुन सों सबई नीचे परमारथ के काम न आये ॥ अचरज मानुष देही दुर्लभ बड़भागन सों पाई। तीनोंपन में नाहिं सँभारी झूंठे धंधे योंहिं गँवाई ॥ बालापन खेलन में खोया तरुण भया सँगनारी। बूढ़ाभये कुटुंब के संशय पावत है अतिही दुखभारी॥ जिनकारण तें पाप कमाये सोतहिं चलिहैं लारी। तेरेही शिर आनिपरैगी जैहौ अकेले नरक मँझारी ॥ गर्भ माहिं तें बचन कियेथे करिहौं भक्ति तुम्हारी। ह्यां आके कछु और कीन्हा प्रभु से झूंठा हुआ अनारी ॥ होसांचा अजहूं सुमिरणकर होहिं दयालमुरारी। चरणदास शुकदेव कहतहैं आगेहु पतित किये भवपारी १८९ फिर फिर मूरख जन्म गँवायो। हरिकी भक्ति साधुकी संगति गुरुके चरणन में नहिं आयो ॥ धनके जोरन को दृढ़ कीन्हो महल करन व्रतधारो। टेक पकड़कर नारी सेई शिर पर बोझ लियो अतिभारो ॥ ह्वैहै दुख नानाविधि केरो तनमन रोगबढ़ायो। जीवत मरत नहीं सुखपैहो आवागमन को बीज जगायो॥ भर्मिभर्मि चौरासी आयो मानुप देही पाई। यातनकी कछु सार न जानी फिरि आगे चौरासी आई॥ आँखि उघारि समुझु मनमाहीं हिरदय करो विचारा। ऐसा जन्म बहुरि कब पैहो विरथा खोवै जग व्यवहारा ॥ जानोगे जग छांड़ि चलोगे कोइ न संग तुम्हारे। चरणदास शुकदेव कहतहैं याद करोगे बचन हमारे १९० ॥

राग विहाग ॥ रे नर हरि प्रताप ना जाना। तुवकारण सबकछु तिन कीन्हा सो करता न पिछाना ॥ जिहि प्रताप तेरि सुन्दरि काया हाथ पावँ मुखनासा। नैनदिये जासों सबसूझै होयरहा परकासा॥ जिहि प्रताप नानाविधि भोजन वस्त्र अभूपण धारे। वाका नाहिं निहोरा मानै ताको नाहिं सँभारे॥ जिहि प्रताप तू भूप भयो है भोगकरै मनमाने। सुखलै वाको भूलि गयो है [illegible]र करि बहु अभिमाने॥ अधिकी प्यारकरै मातासों पल पलमें

राग सोरठ ॥ भाईरे स्वपन यह संसार। देह स्वपना जन्म स्वप्ना स्वपन कुल व्योहार ॥ मात स्वप्ना बाप स्वप्ना स्वपन सुत अरु नारि। लाज स्वप्ना जाति स्वप्ना स्वपन अस्तुति गारि ॥ रोग स्वपना भोग स्वपना किये वेदन खेद। स्वप्न सो जो होय मिटिहै स्वप्न सुख अरु खेद ॥ बन्ध स्वपना मुक्ति स्वपना स्वप्न ज्ञान विचार। स्वपन है सो विनशिजैहै रहैगो ततसार॥ चरणदास स्वप्ना ब्रह्म सांचो एक रस नित जान। सत्य स्वप्ना झूंठ स्वप्ना कह कहूं निर्बान १९९ भाईरे तजौ जग जंजाल। संग तेरे नाहिं चाले महल वाहन माल॥ मात पितु सुत और नारी बोल मीठे बैन। डारि फांसी मोहकी तोहिं ठगत हैं दिनरैन ॥ छलधतूरो दियो सब मिलि लाज लड्डू माहिं। ज्ञान अपने कहं भुलानो चेतता क्यों नांहिं ॥ बाज जैसे चिड़ी ऊपर भँवत तोपर काल। मारते गहि ले चलैंगे यम सरीखे साल ॥ सदा सँघाती हरि बिसारों ...

२०० भाईरे ...

अपने सुखको सबहि चाहें मित्र सुत अरु नारि। इन्हों तो अर्थवश कियो है मोह बेड़ी डारि ॥ सजन तोको भय दिखायो लाज लकुटीमार। बाजीगरके बांदरा ज्यों फिरत घरघर द्वार ॥ जबै तोको विपति आवै जरा कोर विकार। तब तोसूं लाजमानैं करैं ना तेरि सार ॥ इनकि संगति सदा दुखहै समझ मूढ़ गवाँर। हरि प्रियतमको सुमिरि ले कहैं चरणदास पुकार २०१ ॥ ॥ राग विहाग ॥ ये सब निज स्वारथके गरजी। जगमें हेत न कीजै काहूसों अपने मनको बरजी ॥ रोपैं फन्द घात बहुडारैं इनते तू डरपेजी। हृदय कपट बाहर मिठबोलें यह छल हैगो कहाजी ॥ सौगँद खाय झूंठ बहु बोलें भवसागर कैसे तरजी। दुख सुख दर्द दया नहिं मूर्ख इनसे छुटावो हरि जी ॥ बैरी मित्र सबै चुनिदेखे दिलके महरम कहजी। इनको दोष कहा कहं दीजे यह कलियुगकी भाजी ॥ दुनिया भगल कुटिल बहु खोटी देखि छाती मेरी लरजी। चरणदास इनको तजि दीजै चलवस अपने घरजी २०२॥ राग आसावरी ॥ साधो रामभजे ते सुखिया। राजा परजा नेभी दाता

छूटैगी ठौर वसौगे वनकी ॥ जिनके संग बहुत सुख कीन्हे सुख दुःकि होयंदे न्यारे । यमको त्रास होय बहुभांती कौन छुड़ावन हारे ॥ देहरीलों तेरी नारि चलैगी बड़ी पौरिलौं माई । मरघटलौं सबवीर भतीजे हंस अकेलो जाई ॥ द्रव्य गड़े अरु महल खड़ेहीं पूतरहे घरमाहीं । जिनके काज पचे दिनराती सो सँग चालत नाहीं ॥ देव पितर तेरे काम न आवें जिनकी सेवा लावें । चरणदास शुकदेव कहतहैं हरि विन मुक्ति न पावें १६५ मोको भय अति वाही दिनको । जब वह पंखी माया लोभी त्यागै पिंजरा तनको ॥ सुत दारा के मोह फँसो है लोभ लगो है धनको । काम क्रोधको कारो खायो भयो अधीन सबनको ॥ पांच पहर धन्धेमें खोया नाम न लेत भजनको । तीनि पहर नारी सँग मातो मानत सुख इन्द्रिनको ॥ आपनको ऊंचो करि जानै करि अभिमान वरनको । सतसंगतिके निकट न आवै जो है ठाट तरनको ॥ यमकिंकरै जब आनि गहैंगे तब ना धीर धरनको । गुरु शुकदेव सहायकरैंगे आसरो दास चरनको १६६ ॥

राग केदारा ॥ सो मेरो कहो मानरे भाई । ज्ञान गुरूको राखिहिये में बंध कटिजाई ॥ बालपनतें खेलि खोयो गई तरुणाई । चेत अजहूं भलीभरहै जराहूं आई ॥ जिनके कारण विमुख हरिते फिरत भटकाई । कुटुम्ब सबही सुख के लोभी तेरे दुखदाई ॥ साधु पदवी धारणाधर छोड़ कुटिलाई । वासना तजिभोग जगके होय मुक्ताई ॥ बहुरि योनी नाहिं आवै परमपद पाई । [illegible] भक्तिकाई १६७ भाई रे अवधि वीतीजात [illegible] ॥ स्वास पूंजी गांठि तेरे सो घटत दिन रात । साधु संगत पैठ लागी लेलगै सोइ हाथ ॥ बड़ो सौदा हरि सँभारो सुमिरि जीजैमात । काम क्रोध दलाल ठगिया वणिज मत इनसाथ ॥ लोभ मोह बजाज छलिया लगे हैं तेरि घात । शब्द गुरुको राखि हिरदय तौ दगा नहिं खात ॥ आपनी चतुराई बुधि परै मति फिरै इतरात ॥ चरण दास शुकदेव चरणन परश तजि कुल जात १६८ ॥

१ त्रासा २ यमदूत ३ बुढ़ापा ॥

सबही देखे दुखिया॥जो कोई धनवन्त जगतमें राखत लाख हजारा।उनक तो संशयहै निशिदिन घटत बढ़त व्यौहारा॥ जिनके बहुसुत नाती कहि और कुटुंब परिवारा। वेतो जीवन मरणके काजे भरतरहैं दुखभारा॥ नेम नेम करत दुखपावै कर अस्नान सवेरा। दाताको देवेका दुखहै जब मँगते ने घेरा॥ चारि वरण में कोउ न देखो जाको चिन्ता नाहीं। हरिकी भक्ति बिना सब दुख है समझ देख मनमाहीं॥ सतसंगति अरु हरि सुमिरण करि शुकदेवा गुरु कहिया। चरणदास विपता सब तजिकै आनँद मे नित रहिया २०३॥

राग सारँग॥ नर रामभजे सुखपाय है। दुखभाजैं अरु पातक नाशैं जोर निकट न आयहै॥ चेत सवेरे कहूं पुकारे नातरु तू पछितायहै। जगत ठाट सब थांकी शोभा संग न कोई जायहै॥ बिन गोपाल तुम्हारो कोहै हमको देहु बताय है। पकरि बांधि यम मारनलागैं जबको होय सहाय हैं॥ देखु विचारि समुझ मनमाहीं तो बुधि जो अधिकाय है। तौतू आब उलटि हरि सोंही चालो जनम सिराय है॥ चरणदास शुकदेव कहतहैं अब यह अधिक सयानहै। गुरुकी शरण साधुकी संगति प्रभुको कीजै ध्यानहै २०४॥

राग भैरव॥ चेतोरे नरकरो विचार। छलरूपी है यहसंसार॥ स्वप्नामात पिता सुत बंधू। स्वप्ना है सबही सम्बन्धू॥ देखै कहै सुनै सो स्वपना। या जगमें नाहीं कोइ अपना॥ स्वपना धरती और अकाशा। स्वप्ना चन्द सूर्य परकाशा॥ स्वप्ना जल थल पावक पौन। स्वप्ना योग भोग अरु मौन॥ स्वप्ना मायाको व्यवहार। स्वप्ना कुल नाता परिवार॥ स्वप्ना देश नाम अरु भेश। स्वप्ना उतपति परलय शेश॥ स्वप्ना राजा राना राव। स्वप्ने बानिक बन्यो बनाव॥ स्वप्नें लरें मरे अरु भागे। स्वप्ने सोवै स्वप्ने जागे॥ स्वप्ना हैं यह सबही ठाट। उठी पैठ जब मुंदिगइ हाट॥ जो कछुहै सो सबही स्वप्ना। सांचा हरि हरि हरि हरि जपना। क्यों भूला मूरख मस्तान। अजहूं समुझि लेहि गुरुज्ञान॥ गफलतै छांड़ि भजो हरिनाम। जो चाहै तू निश्चल धाम॥ ज्यों

१ फ़ौज २ वैराग्य ॥

चरणहिंदासा चित धरो सुन यारमन। यारमन जपौ आठौयाम २१२॥

रेखता॥ दोदिनक जगमें जीवना करताहै क्यों गुमान। ऐवेशहूरगीदी टुक रामको पिछान॥ दावा खुदीका दूरकर अपने तू दिलसेती। चलताहै अकड़ अकड़ जवानीका जोशजान॥ मुरसदक ज्ञान समझकै हुशियार हो सिताब। गफलतको छांड़ि सोहबत साधोंकी खूबजान॥ दौलतकजोक ऐसे ज्यों आवै काहुवाने। जातारहैगा क्षणमें पछितायगा निदान॥ दिन रात खोवताहै दुनियाके कारवार। इकपलभि याद साईं कि करता नहीं अजान॥ शुकदेव गुरुज्ञान चरणदासको कहै। भजु रामनाम सांचापद मुक्तका निधान २१३॥

हेला॥ जगको आवन जानि हेला याको शोक न कीजिये। यह संसार असारहैरे ओरे हेला हरिसों कर पहिंचान॥ कुटुंब संग आये नहींरे ओरे हेला ना कोइ संगको जाय। ह्यांई मिलें ह्यांई बीछुरैं ताको झूरे बलाय॥ महल द्रव्य किस कामरे ओरे हेला चलें न काहूसाथ। रागतजे इनसों पगे हारो अपने हाथ॥ जीवत काया धोवतेरे ओर तेल फुलेल लगाय। मजलिस करिके बैठले मूये काग न खाय॥ लाभभये हरषै नहीं रे ओरे हेला हानि भये दुखनाहिं। ज्ञानीजन वहि जानिये सब पुरुषन के माहिं॥ गुरु शुकदेव जितावई रे ओरे हेला चरणदास हिय राखि। मनुष जन्म दुर्लभ मिलै वेद कहतहैं साखि २१४ झूंठी जगकी प्रीतिहै नहीं ह्यांहूं हरिसों मीतहेला। रङ्ग कुसुम संसारकेरे ओरे हेला। प्रभुको रङ्ग मँजीठ॥ धन यौवन थिरना रहैरे ओरे हेला मतकर गर्व गुमान। क्षणक्षण औसर जातहै हरिसोंकर पहिंचान॥ अन्तसमय पछितायगोरे हेला जब यमघेरै आय। जिनके सँग तू मिल रहो कोइ न छुटावै जाय॥ बीतिगई सो जानदे रे ओरे हेला अजहूं समझ गवाँर। शरणगहो सत्संग की गुरुके बचन सँभार॥ श्रीशुकदेव बताइयारे ओरे हेला रामनाम ततसार। चरणदास यों कहतहैं लैले उतरो पार २१५

बोलत टेढ़ी बात हेला ...रहै। सबहीसों ऐंठे फिरै रे ओरे हेला

१ आन २

नके रहे सदा हरिचरचा सुमिरैं राम सुहेला ॥ कथा कहैं अरु करैं कीर
ज्ञानध्यान समुझावैं । सोवत जागत बैठे चलते गोविंद के गुणगावैं॥वो
अमृतवाणी सवर
उपदेश बतावैं ॥
आरती मंगल नवधासों चितलावैं ॥ निशि दिन आनँदरूप दिवाली स
वसन्त सोहायो । प्रेम महोत्सव नितही उत्सव सबै ठाट मनभायो ॥ या बि
सों मन मगनहोय करि भजन करैं अतिभारी । चरणदास शुकदेव कहत
घरमें होय उज्यारी २०९ ॥

राग पर्ज ॥ राम धन जो कोइ पावैहो । राज बड़ाई इन्द्र पदवी मुरति
लावै हो ॥ आठ सिद्धि नौनिद्धिके लालच नहिं लागैहो । तीनिलोक त
च्छ जानिकै तामें नहिं पागैहो ॥ अर्थ धर्म काम मोक्षको करणी नहिंठा
हो । चारि मुक्ति वैकुंठ लों कछु वस्तु न जानैहो ॥ सबसे नीचा है चलै मुख
झूठ न भाखैहो । हिंसाअकस वासना कोइ नेक न राखैहो ॥ साधुनकी की
चाकरी जब वह धन आवै हो । चरणदाससे रङ्कको शुकदेव बसावैहो २१
जिन्है हरिभक्ति पियारी हो । मातपिता सहजै छुटैं छुटै सुत अरु नारीहो ।
लोक भोग फीके लगैं सम अस्तुति गारीहो । हानि लाभ नहिं चाहिये सब
आशा हारीहो ॥ जगसों मुख मोरे रहैं करैं ध्यान मुरारीहो । जित मनुवाँ
लागोरहै भइ घट उजियारीहो ॥ गुरुशुकदेव बताइया प्रेमी गति भारीहो ।
चरणदास चारो वेदसों और कछु न्यारीहो २११ ॥

रेखता राग मल्हार॥ तजिकै जगतकी रीतिको करु आपनी ततबीर। इस
जग भरोसे स्वारहो सुन यारमन ॥ पारंगनगये शाह अमीर। इकदम करारी
है नहीं छनछनमें फेरदङ्ग ॥ कबहूं तो हेरा मुलवना सुन समझ यारमन ।
यारमन नलविचल बैठेंग दस्त मत वसोकन थिर नहीं मत देखिहो मगरूर॥
ठहरावनाको है नहीं सुन यारमन भगल बड़ाई धूर। जांहि स्वासा सबचले
ज्यों आवदर गिराल । याद साहबकी करो सुन यारमन ॥ यारमन
सुमिर हरि हरि हाल । शुकदेव सतगुरुने मुझे कायम बनायो राम ॥

पनेोघरको चालियेरी कोरि योगिनि को भेप ॥ कानन मुद्रा प्रेम की री अरी हेली ज्ञान जटा शिरधारि ॥ चोला भक्ति सोहानो धीरज आसन मारि ॥ सेली सतवैराग की अरी हेली शील विभूति रमाय ॥ सतकी सींगी को जिये बारंबार बजाय ॥ कर्म जलाय धुनी करो फूंको दशवेंद्वार ॥ अमल सुधारस पीजिये चोढ़े रंग अपार ॥ इस बाने पियको मिलौरी अरी हेली सदा सुहागिनि होय । गुरु शुकदेव बतावई चरणदास चल सोय ॥ २१६ ॥

॥ अथ ज्ञान अंग ॥

राग काफी ॥ साधो गुरु दया आपको यों विचारा ॥ झूंठ अरु सांचको समुझिकरि मूलसों माया अरु ब्रह्मको किया न्यारा ॥ पांच अरु तीन गुण देहको ठाटहै तासुको लगत हैं सब विकारा ॥ ब्रह्म अडोल अबोल अतोल है और निर्लिप्त हरि निर्विकारा ॥ जाके रूप नहिं रेख अरु नाम सूरत नहीं सोई निज तत्त्व है निराकारा ॥ सुरति अरु निरति दोऊ जहां थकिरहें तहां बिन भान अति है उजियारा ॥ बिना गुरुमुखी कोउ पहुंचि हां ना सकै कनक अरु कामिनी घेरि मारा ॥ चलै सोइ सन्त निर्वाण है शूरमा ज्ञान अरु ध्यानको कर अहारा ॥ आवा अरु गमनकी छूटि फांसी गई पाय गुरु भेद गयो तिमिर सारा ॥ चरणदास शुकदेव मिले भर्म सब दलिमले होय रणजीत अविगति निहारा ॥ २२० ॥ साधो ब्रह्म दरियाव नहिं वारपारा ॥ आदि अरु मध्य कहुं अन्त सूझै नहीं नेतिही नेति वेदन पुकारा ॥ मूल परकिर्ति सी बहुत लहरैं उठैं संकैको पाय गुणहैं अपारा ॥ विरचि महादेवसे मीन तहँ हुते जहां होय परगट कभी गोत मारा ॥ तासु में बुदबुदे आयइ उपजैं मिटैं गुरु दई दृष्टि जासों निहारा ॥ चकित छवि देखिकै अतिथिका बेपकरि जोग जेब भंग निरखी बहोरा ॥ मरजियौ पैठिया थाह पाई नहीं थका हांइ रहा फिर न आया ॥ गया था लाभको मूल खोया सबै भया आश्चर्य आपन गंवाया ॥ पाल बिन सिद्धि अरु निरा आनन्द है आपही आपहो निराधारा ॥ चरणदास शुकदेव दोऊ वहां रलमिले तुरतहीं मिटिगया खोजसारा ॥ २२१ ॥

---

१ गुदरी २ अंधेरा ३ महिमान ४ बुड्डी लगानेवाला ॥

क्षण में वेग रिसात ॥ ज्यां जबड़ा दुगुने करैरे और हेला करै चौगुने दाम
नानारस के स्वादलें खायफुलावै चाम ॥ करसों कबहुं न दानदेरे औरहेल
शीश नवावै साध। जिह्वासों हरि ना जपै बहुत करै बकवाद॥ पगसों तीर
नारमेरे और हेला सुनै न श्रीभागवत। छकड़ अकड़ मनमाहिं यों जा
घड़ो कुलगोत ॥ परछाहीं देखेचलेरे और हेला बांकी बांधैपाग। सोदेही कि
सकामकी खैहैं श्वानै न काग॥ पुत्रकलत्रहैं घनेरे और हेला सुखमें कर
कलोल। हरिभक्तन सों नेहना कहै क्रोधके बोल ॥ धर्मकर्म कछु ना
और हेला नहिं सतगुरुसों प्रीति। हरिचरचा सों जरिमरै यहदुष्टनकी रीति।
जगको सांचो जानिकैरे और हेला हरिको दियो बिसार। अन्तसमय य
त्रांसदै डारै नरक मँझार॥ श्रीशुकदेव ऐसे कहैरे और हेला छांड़ वि
जंजाल। चरणदास मजुराम को सोई उतारै पार २१६॥ [illegible]
॥ हेली॥ यह अवसर फिरि नाहिं हेली राम भजन करिली जियो प
तन क्षन क्षन जात हैं ज्यों तरुवर की छांह॥ पिछिले दिन सब खोदिये
और हे[illegible]
मीर॥[illegible]
गाइये[illegible]
एकरु सौंपीदी तेरे रसना हरिगुण पोय ॥ यही स्मृति यहि वेद है य
साधन को भेव। चरणदास हिय में धरौ कहिया गुरु शुकदेव २१७ औ
न मीता कोय हेली समुझि सँभारो रामजी। जीवतकी रक्षा करैं मुये पु
फेरैं तोहिं॥ अरु सब स्वारथके सँगेरी अन्त न कोई साथ। सुख में सबदे
रिल मिलैं दुख में सुनै न बात॥ छलकरि मनकी बूझके पोलेडारै घात
तिनको तू अपनो कहे सो दोषी है जात॥ भेद न अपनो दीजियेरे
और हेली कोऊ कैसो होय। हिरदय की हिरदय रहै हरिही जानै सोय।
के गुरु अपनो जानिये के सतसंगति वास। गुरु शुकदेव बतावई देश चर
गदास २१८ पद नहिं अपना देश हेली धानहिं मनको दीजिये। अ

१ कुत्ता २ दुख ३ मास॥

देखो रे सूझै ॥ वामों उतपति परलय होई वह दोऊतें न्यारा । चरणदासे शुकदेव दया सों सोई तत्त्व निहारा ॥ २२४ ॥

॥ राग मलार ॥ साधो समुझो अलख अरूपा । गुप्त सों गुप्त प्रकटसों परगट ऐसो है निजरूपा ॥ भीजे नहीं नीरसों वह तत ताहि शस्त्र नहिं काटै । छोटा मोटा होय न कबहूं नहीं घटै नहिं बाढ़ै ॥ पवन कभी नहिं सोखै ताको पावक तेज न जारै । शीत उष्ण दुख सुख नहिं पहुंचै ना वह मरे न मारै ॥ [illegible] दृष्टि [illegible] सों [illegible]

॥ राग पंज ॥ गुरू हमारे अलख लखाया हो । देखतही ऐसे गये जल नोन घुलाया हो ॥ नखशिख ढूंढूं आप को कहिं आप न पाया हो । रामहिं राम ह्वै रहा हम मूल गवाँया हो ॥ वरत करें हम होय तौ सब नेम भुलाया हो [illegible] मिटै अरु [illegible] २६ ॥

॥ राग धनाश्री व बिलावल व सोरठ ॥

॥ साधो भाई यह जग यों सत नाहीं । मीन पहार समुद बिच मिरगा खेत अकाशमाहीं ॥ जलको पोट कोट धुवांको अखिल ब्रह्मको तीर । बांझको पूत शीश शशको मृगतृष्णा को नीर ॥ स्वप्नको भूप द्रव्य स्वप्नेको अरु जंगलको द्वार । गणिका शील नीच मूलनको नारिसों व्याहत नार ॥ मावस को शशि रैनि को सूरज दूध नरन की छाती । यह सब कहनि कहावनि देखी चींटी लेभागी हाथी ॥ ऐसहि झूठ जगत सत नाहीं भेद विचारो पायो । [illegible]

राग धनाश्री॥ सहजगति ज्ञान समाधि लगाई। रूप नाम जहँ किरिया छूटी हू में रहन न पाई॥ विन आसन विन संयम साधन परमातम सुधि पाई। शिव शक्तीमिलि एक भये हैं भ्रम माया न हिराई॥ मानोंहीं दुख सुख दोउ मेटे चाह अचाह मिटाई। जीवन मरण एक सों लागे तबने आप गवाँई॥ मैं नाहीं नख शिख हरि राजैं आदि अन्त मधि पाई। शंका कर्म कौनको लागे काकी होय मुकताई॥ सकल आपदा व्याधि टरी सब दुई कहां मो माहीं। सब हमहीं रामा नहिं पइये सब रामा हम नाहीं॥ नित आनन्द कालभय नाहीं गुरु शुकदेव समाधी। चरणदास निज रूप समाने यह तो समझ अगाधी॥ २२२ निरन्तर अटल समाधि लगाई। ऐसी लगी टरै नहिं कबहूं करणी आशा छुटाई॥ काको जप तप ध्यान कौन को कौन करै अब पूजा। कियो विचार नेक नहिं निकसै हरि बिन और न दूजा॥ मुद्रा पांच सहजगति साधी आलस आसन सोई। सब रस भूल ब्रह्म जब शोधा आप विसर्जन होई॥ भूलो बन्ध मुक्तिगति साधन ज्ञान विवेक भुलाना। आतम अरु परमातम भूला मन भयो तब गलताना॥ अचल समाधि अन्त नहिं ताको गुरु शुकदेव बताई। चरणदासको खोज न पइये सागर लहरि समाई २२३॥ [illegible]

राग सोरठ॥ हो अब गति जो जानै सोइ जानै। सबकी दृष्टि परे अविनाशी कोइ कोइ जन पहिचानै॥ रेख जहां नहिं खिचि सकै रे ठहरे ना हां राई। चीत चितेरो नासकैरे पुस्तक लिखा न जाई॥ श्वेत श्याम नहिं राता पीरा हरी भांति नहिं होई। अति आसूक्ष्म अदृष्ट अकथ है कहि सुनि सकै न कोई॥ सर्वस में अरु सब देशन में सबै अंग सबमाहीं। कटै जलै भीजै नहिं छीजै हलै चलै वहनाहीं॥ नहिं गाढ़ा नहिं भीना कहिये नहिं [illegible] यह पुरुष न नारी॥ नहीं दूर [illegible] आंख की पलक उघारो जब [illegible]

१ छिपाहुआ॥

चामका ॥ आदि न अन्त न अरूपैरूपै नहिं डिगना नहिं लाँवका ॥ देखा सुना कहा नहिं जाई नहिं बोले नहिं श्याम का । चरणदास शुकदेव सुझावे नहिं बिनशै नहिं नासका ३३२ ॥

॥ राग सारँग ॥ घटघट में रमता रमिरह्यो । चेतन तजै भजै जल पाहन मूरख भ्रमनें भ्रमिरह्यो ॥ एक अखण्ड रह्यो सबव्यापक लख चौरासी सम रह्यो । प्रगट भानु ऐसे हरि दरशें संपद में नहिं समरह्यो ॥ आपाजानि भूल फिर आपन लख शिवसों लहिं हगरह्यो । चरणदास शुकदेवहि लगयो बचन विलासन गमरह्यो ३३३ ॥

॥ राग मालश्री ॥ तेरीगति अपरम्पार पार कैसे पइयेहो ॥ योग युक्ति सुगताहारे उनहूं सुधि नाहिं पाई । चित बुधि मनकी गमि जहँ नाहीं सुरति ... ॥ नेति नेति कहि निगम पुकारैं कहुकोउ कैसे पावै ।

सन केहि विधि लावद का ... ॥ बाणी शब्द रहित तुरियापद गुरु शुकदेव सुनायो । चरणहिं दास समझ सब बिसरी खोजत खोज हिरायो ३३४ ॥ बाविन और न कोय वही गुलजारीरे ॥ जग फुलवारी फूलि रही है नाना रंग अनंत । आदि पुरुष ताकी सब लीला नितही रहत बसंत ॥ पांच डार पचरंग रहे रे शाखा बहुत विचार । अद्भुत गति कछु कहत न आवै फूले पुष्प अपार ॥ पात फूलफल सोहने रे है है छिपि छिपि जाहिं । निश्चल द्रुम इक रस रहेरे उतपति परलय जाहिं ॥ बिन सींचे बिन मूल कोरे अचरज अधिक सुवास । जित तित खिलो शुकदेव हेरे नहीं चरणही दास ३३५ ॥

राग बिहागरा ... गयो है जिन जानी जिन ... तर वि-
नानी । ऋषिमुनि देवत सिद्ध लहेते नहीं मद्वज्ञाना ॥ तु॥ ... कौन पइये गावत वेद पुरानी । कोउकहै मायाहै दूजी लोगह किनमें आनी ॥ तु

१ मकैद ॥

सब करणी सबही साधन आगे । सिद्धें गई गोरक्ष तारे मुक्ति न दीसे आगे
जाके पढ़े पढ़न सब छूटे भाषा पोथी फारी । मैंतों गया अगम का दी
कहै सरस्वति दादी ॥ गुरु शुकदेव पढ़ायो अक्षर अगम देश चटशाला
चरणदास जब [illegible]
बिरला पावै । [illegible]

नाद वेद अरु पण्डित क्षरज्ञानी अज्ञानी । बंचित अक्षर क्षरही जानो क्षर
चारोंवानी ॥ ब्रह्मा शेष महेश्वर क्षरही क्षरही त्रैगुणमाया । क्षरहीसहित लि
अवतारा क्षर ध्यानक जहँ गाया ॥ पांचों मुद्रा योग युक्ति क्षर क्षरही लगै स
माधा । आठोंसिद्धि मुक्तिफल क्षरही क्षरही तनमन साधा ॥ रविशशि तारा
मंडल क्षरही क्षरही धरणि अकासा । क्षरही नीर पवन अरु पावक नरक
स्वर्ग क्षर वासा ॥ क्षरही उतपति परलय क्षरही क्षरही जाननहारा । चरणदास
शुकदेव बतावें निर्अक्षरहै सबसों न्यारा २२९॥ [illegible]
[illegible] राग भैरव ॥ हरिको सकल निरंतर पाया । माटी भाँडे खाँड खिलौ
ज्यों तरवरमें छाया ॥ ज्यों कंचन में भूषण राजै सूरत दर्पण माहीं । पुतली
खम्भ खम्भमें पुतली दुतिया तौ कछु नाहीं ॥ ज्यों लोहे में जौहर परगट
सूतहि तानैबानै । ऐसे राम सकल घटमाहीं बिन सतगुरु नहिंजानै ॥ मे
हँदी में रँग गन्ध फूलन में ऐसे ब्रह्म माया । जलमें पाला पाले में जल
चरणदास दरशाया २३० ॥ [illegible]

जहां मिलन को लटके ॥ भूलो जगत वकत कछु औरे वेद पुराणन ठटके । प्रीति रीतिकीसार न जानैं डोलत भटके भटके ॥ किरिया कर्म धर्म उरझेरे ये मायाके झटके । ज्ञान ध्यान दोउ पहुंचत नाहीं राम रहीमा फटके ॥ जग कुलरीति लोक मर्य्यादा मानत नाहीं हटके । चरणदास शुकदेव दयासों त्रैगुण तजिके सटके २४० ॥

राग सोरठ ॥ है कोइ जानै भेद हमारा । हम सबमें हम सब माहीं में मैं व्यापक मैं न्यारा ॥ हम अडोल हम डोलत निशिदिन हम सूक्षम हमभारा । हमहीं निर्गुण हमहीं सर्गुण हमहीं दश अवतारा ॥ हमहीं एक बहुतहो खेले हमहीं सकल पसारा । हमहीं ज्ञान ध्यान पुनि हमहीं हमहीं धारण द्वारा ॥ हमहीं आदि अन्त पुनि हमहीं हमहीं रूप अपारा । महाराज हम [illegible] हमहिं तरें हम

[illegible] ॥

राग काफी ॥ मैं कोइ अजवहूं मेरा अजव तमाशा जोर । मेरेहि पिण्ड खण्ड ब्रह्मण्डा में पूरण सब ठौर ॥ मैं ब्रह्मा मैं विष्णु महादेव मैं कमला[1] मैं गौरे[2] । मैं रवि चन्द इन्द इन्द्राणी मैं गरजत घनघोर ॥ मैं गुण तीनि पांच तत्त्व मैंहीं मैं दश दिशि[3] चहुंओर । मैं निहरूप धरे नानाविधि निशिदिन करत किलोर ॥ मैं गुप्त मैं मुक्ता परगट मैंहीं भर्म झकोर । चरणदास मो बिन नहिं रंचक दूजा कोई और २४२ ॥

राग विहागरा ॥ गुप्तमतेकी बातरी जानै सोइ जानै । पशू ज्ञानइजमत को देखो अनसुख एकै ठानै ॥ चलनीकी गति सबकी मतिहै मनमें अधिक सयाने । गहि असार सारको डारै निश्चल बुधि नहिं आनै ॥ हूं गूंगो जग को नहिं सूझै सैन नहीं कोइ मानै । कासों कहौं अरुको सुनै सजनी कहूं तो को पहिचानै ॥ सत्य ब्रह्मको जानत नाहीं मूरुख मुग्ध अयानै । चरण दास समुझत नहिं भोंदू फिरि फिरि झगरो ठानै २४३ सुनिहो मुक्त मुक्त

---

[1] लक्ष्मी [2] पार्वती [3] पूर्व, आग्नेय, दक्षिण, नैर्ऋत्य, पश्चिम, वायव्य, उत्तर, ईशान, पृथ्वी, आकाश ॥

आकाश पवन अरु पावक तू धरती तू पानी। तीनोगुण तूही सों निकसे तोही माहिं समानी॥ देश और तूही घर आयो तू इष्टी तू ध्यानी। तूहि रास तुहि रास खिलइया तू ठाकुर ठकुरानी॥ तूही गुरु शुकदेव बिराजै चरणदास सिख मानी। गुप्त प्रकट सब तूही तू है अद्भुत लीला ठानी॥२२६॥ यह सब एक एकही होई। जाके ऐसी निश्चय आवै जीवनमुक्ता सोई॥ जैसे मनका डोर गुहे है काहू माला पोई। एकहि स्वांस सकल घट व्यापक भूलो कहै जुदोई॥ हमहू वही वही जग सारा शिव ब्रह्मादिकवोई। एकहि ब्रह्म अचल अविनाशी और न द्वितिया कोई॥ जिन समझा तिन आनँद पाया बिन समझे दिया रोई। चरणदास नहिं हरिही हरि हैं सब में मैं में खोई॥२२७॥ जबते एक एक करि माना। कौन कथे को सुननेहारा कोहै किन पहिंचाना॥ तब को ज्ञानी ज्ञान कहां है ज्ञेय कहां ठहराना। ध्यानी ध्येय जहां नहिं पइये तहांन पइयेध्याना॥ जबकहां बंध मुक्त भुगतइया काको आवन जाना। को सेवक अरु कौन सहायक कहां लाभ कित हाना॥ जब को उपजै कौन मरत है कौनकरै पछिताना। को है जगत जगत को कर्त्ता त्रैगुण को अस्थाना॥ तू तू तू अरु मैं मैं नाहीं सबही दे बिसराना। चरणदास शुकदेव कहा है जो है सो भगवाना॥२२८॥

राग केदारा व सोरठ॥ सो लखि हम निर्गुण भरि लाई। जहां न वेद कतेब पहुंचै नहीं ठकुराई॥ चारवरण[1] आश्रम[2] नहीं कर्मना काई। नरक अरु बैकुंठ नाहीं नहीं तन ताई॥ प्रेम अरुजहँ नेम नाहीं लगन ना लाई। आठ अँग[3] जहँयोग नाहीं नहीं सिद्धाई॥ आदि अरु जहँ अंत नाहीं नहीं मध्याई। एक ब्रह्म अखण्ड अविचल माया नाराई॥ ज्ञान अरु अज्ञान नाहीं नहीं मुक्ताई। चरणदास शुकदेव सम तहँ दुई जरिजाई॥२२९॥

राग सोरठ व नट व बिलावल॥

सोनैना मोरे तुरिया ततपद अटके। सुरति निरतिकी गमनहिं सजनी

[1] ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, शूद्र [2] कुटीचर, बहूदक, हंस, परमहंस [3] यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा, समाधि॥

फरूं तेरी। वेद पुराण जँजीर जरी है सबहीगत मारग मिलि घेरी॥ तैंतो मुक्ति बहुतकी कीन्ही जिन पायन उरफेरी। बन्धन सकल छुटाय काटूं जो आधीन होय तू मेरी॥ स्वर्ग पताल ठौर नहिं तोको डोलत फेरी फेरी। अचल पुरुष सों जाय मिलाऊं तोहिं जानि साधनकी चेरी॥ शुकदेव गुरु जब किरपा कीन्ही तू नाहीं कहुं हेरी। चरणहिंदास बासना तजिकै आपहि आप करी है निवेरी २४४॥

राग विहागरो व बिलावल॥ अब हम ज्ञान गुरूसे पाया। दुविधा खोय एकता दरशी निश्चल है घर आया॥ हिरदा शुद्ध हुआ बुधि निर्मल चाह रही नहिं कोई। ना कछु सुनों न परशूं बूझूं उलटि पलटि सब खोई॥ संशै भई जब आनँद पाये आतम आतम सूझा। सूधा भयो सकल मन मेरो नेक न कहूं अरूझा॥ मैं सबहुन मैं सब मोहूं में सांच यही करि जाना। यही वही है वही यही है दूजा भाव मिटाना॥ शुकदेवा ने सब सुख दीन्हे तिरपत होय अघायो। चरणदास निकसा नहिं रंचक परमातम दरशायो २४५॥

[illegible] ब्रह्म समुदर्मे जो [illegible] चलहै जाको वार न पारा। वाकी लहरि मिटत वाही में कौन तरैको तारा॥ त्रैगुण रहत सदाही चेतन ना काहूं उनहारा। निराकार आकार न कोई निर्मल अति निर्धारा॥ अकरी अलख अरूप अनादी तिमिर नहीं उजियारा। तामें अण्ड दिपत ऐसे करि ज्यों जल मध्ये तारा॥ काल जालमें भूती नाहीं तहां नहीं भ्रमभारा। चरणदास शुकदेव दयासों बूड़िगयेही पारा २४६॥

रागसोरठ व आसावरी॥ सतगुरु निजपुर धामबसाये। जितके गये अमर ह्वै बैठे भवजलमें बहुरि न आये॥ योगी योग युक्तिकरि हारे ध्यानी ध्यान लगावें। हरिजन गुरुकी दया बिना यों दृष्टि नहीं दरशावें॥ पंडित मुंडित खंडित ढूँढ़ैं पढ़ि सुनि वेद पुराने। जासों वे सब पायो चाहें सो वे नेति ब-

---

१ संदेह २ संसार सागर॥

पांचोमईं सहज बशमेरे जंब इनका रस छोड़ा ॥ संघ संध छूटे अबको दूजी आश न कोई ।सिमिटि सिमिटि रहा अपने माहीं सकल त्रिकल न होई ॥ निजमनहूवा मिटिगा दूवाको बैरीको मीता। बंधमुक्तका संशय ना जन्म मरणकी चीता ॥ गुरुशुकदेव भेमसोहिं दीपो जबसों यहगतिसार्थे चरणदाससों ठाकुरहूये मुटिगये वादविवादी २५१ हमनो आतम पूजाधा समझि समझि करि निश्चय कीन्ही और सबन परमारी ॥ और देवल धुंधली पूजा देवत दृष्टि न आवै। हमरा देवत परगट दीखे बोले चाले खा जितदेखों तितठाकुरद्वारे करों जहां तितसेवा। पूजा की विधिनीके जा जासों परसनदेवा॥ करि सतमान स्नान कराऊं चन्दन नेह लगाऊं। प्री सम्रत पुष्प सोइ जानों हेकरि दीत चढ़ाऊं ॥ परसन करिकरि दर्शनपा बार बार बलिजाऊं। चरणदास शुकदेव बतावें आठपहर सुखपाऊं २५२ मन आतम पूजाकीजे। जितनी पूजा जगके माहीं सबहूतको फललीजे। जोजो देही ठाकुरद्वारे तिनमें आप बिराजें। देवलमें देवतहैं परगट आ विधिसों राजें ॥ त्रैगुण भवन सँभारि पूजिये अनरस होनतपावे। जैसे तैसाही परसों प्रेम अधिक उपजावे ॥ और देवता दृष्टि न आवें धोखे शिरनावे। आदि सनातन रूपसदाही गुरुस ताहिन ध्यावे॥ घटघट कोई यक बूझे गुरु शुकदेव बतावें। चरणदास यह सेवन कीन्हें जिवन्मु फलपावें २५३ ॥ [illegible] ॥ राग बिहागरा ॥ सब जग पांचतत्त्वका उपासी। तुरिया तीत सबनसे न्यारा अविनाशी निर्वासी ॥ कोई पूजै देवल मूरति सो पृथ्वी तत्त्व जानों कोई न्हावै पूजे तीरथ सो जलको तत्त्व मानों ॥ अग्निहोत्र अरु सूर पूजा सो पावक तत्त्व देखा। पवन खैंचि कुंभकको राखें वायु तत्त्वको ले खा ॥ कोई तत्त्वाकाशको पूजे ताको ब्रह्म बतावें। जो सबके देखनमें आवे सो क्यों अलख कहावे ॥ परम तत्त्व पांचोसे आगे गुरु शुकदेव बताने। चरणदास निश्चय मन आनी बिरला जन कोई जाने। २५४ ॥ [illegible] राग जयकरी ॥ ब्रह्म अरूप धरे बहुरूप कहो कोउ कैसे स्वरूपकहै।

ोल डोलै नहीं रे अरे हेला है अबोल नहिं बोल। देश कालसों रहितहै
र कहा कहुँ खोल॥ जैसा था सोइ आजहै रे अरेहेला नया पुराना नाहिं।
सों यह जगहै भरो जग वाहीके माहिं॥ शक्ति घनी लीला घनी रे अरे
ा घने नाम बहुरूप। ब्रैदेवासे बहुतहैं इन्द्रसे बहुभूप॥ चन्द्र घने सूरज
रे अरे हेला घने पिण्ड ब्रह्मण्ड। सब कुछ आपहि ह्वै रह्यो निर्मल अ-
त अखण्ड॥ जनक दियो शुकदेव को रे अरेहेला उन मोको कहिदीन।

लीन २६१ अचरज अलख अपार

द जोपै करै रे अरेहेला तौ जावैगा

अनभय थकि थकि जाय। ब्रह्मा-
क सनकादिक नारद थाके गुण गाय॥ वेद थके अरु व्यासहू रे अरे
ता ज्ञानी थके अरु ज्ञान। शंकर से योगी थके करि करि निर्मल ध्यान॥
तर्क कथि कथिही गये रे अरेहेला नेकौन लिपटी बुद्धि। बाचक ज्ञानी
हतहैं हमने पायो शुद्धि॥ पांचों इन्द्रियन सों लखैरे अरेहेला ताको सांच
मानि। जो जो इन सों देखिये तिनकी निश्चय हानि॥ गुरु शुकदेव
नाई रे अरेहेला सम्मुख चरणहीं दास। अपनेही परकाश में आप रहा
कास २६२॥

राग हिंडोलना॥ फूलत गुरुमुखसंत अलख हिंडोलने॥ नाभि भृकुटीखंभ

क्षण जाय॥ मन

त सजनी भलो

बूंद आनँद सब
भगाई सबने बरसे मेह॥ चार वाणी लड़ी गावैं महा रँगीली नार। मुक्तिचारों
जहँ गहिं गुहि लावैं हार॥ त्रिगुण पकुला उड़न लागे वेद नाद
ग रामफूलें तातें लागै न भौ चरणदास को नित प्रभु तारे देख
। सनकादिक नारद फूलें करि करि गुरुकी सेव २६३॥

रहै न रोग अपारा॥ त्रैगुणके त्रैदोष पगोहै काम क्रोध ज्वर जारा। तृष्णा
ायु उठी उर अन्तर डोलत द्वारहि द्वारा॥ बिषय बासना पित कफ लागो
न्दिन के सुख सारा। सत्संगति रस करवा लागे करत न अङ्गीकारा॥ सत
रुपन को कहा न मानें शील क्षमा नहिं धारा। रसना स्वाद तजो नहिं
रुख आपनपौ न सँभारा॥ चरणदास शुकदेव मिले जब औषध ज्ञान बि-
ारा। तनमनको सब रोग मिटायो आवागमन निवारा २६५॥

राग केदारा॥ भाईरे विषमज्वर जग व्याधि। गुरु हमारे दई औषध खाय
हनी साधि॥ शुद्ध चूरणहै सुदरशन निवल लखि मोहिं दीन। खात तन
के कष्ट नाशैं रोग गनहै क्षीन॥ ज्ञान योगरु भक्ति त्रिफला धारणा नैपाल।
दे सतसंगति भवन में आश लगै न व्याल॥ कनक कामिनि पथ बतायो
भूलि कर न अहार। अति अजीरण होत इनते बढ़त बिकट बिकार॥ च-
णदास शुकदेव कहिया औषधी निज सोय। विषम वेदन होय भारी जाहि
ाण में खोय २६६॥

गीत सावन के गावने का॥ सखी सजनी हे तेरो पिया तेरे पास।
अरी बौरी इत उत भटकी क्यों फिरैजी सखी सजनी हे सुरति निरति कर
देख। अरी बौरी अपने महल रंग मानिये जी सखी सजनी हे मान अहं
सब खोय। अरी बौरी यह यौवन थिर ना रहै जी सखी सजनी हे बालम
सन्मुख होय अरी बौरी पिछली अरु सब खोइये जी॥ सखी सजनी हे पिया
... ...ै। अरी बौरी न्हाय शिंगार बनाइये जी सखी सजनी
... ...नायन सुमति बोलाइये जी। सखी स-
... ...े अरी बौरी नीर गुरुमकरि न्हाइयेजी सखी
... ...गीन। अरी बौरी कर्मको मैल उतारियेजी सखी
... ...ी बेणी मुक्ति गुंथाइयेजी। सखी
... ...े सतसंगति पग लागियेजी।

पथ्यसंध्यांग ॥

राग मंगल ॥ मन रोगी भयो पिंग कि कुबुधि विकार सों। वाढ़ी व्य
अपार लोभके भारसों ॥ कर्म भरो मतिहीन छीन छलसों छयो। पात्र
चीसों घेरि; मोह मदने दह्यो ॥ कैसे यह दुखजाय कि पूंछन को चल्यो।
पूरण गुणवन्त वेद सतगुरु मिल्यो ॥ करगहि कियो विचार कह्यो समम
यकै। जो कछु तेरे रोग सो देहुँ वतायकै ॥ महापाप की ताप चढ़ी तो
धाय कै। संशयको सनिपात मिल्यो है जायकै ॥ विषय विषम ज्वर रह्यो
हिये समायकै। तृष्णाकी बहु प्यास रही मन भायकै ॥ सतसंगति
पक्ष कवौं नाहीं कियो। इन्द्रिनके रस रोग विगरि सबही गयो ॥ कुसतसं
संग्रहणी जियमाहीं भई। ममताको मल बढ़ो भूख तातें गई ॥ काम क्रोधकं
कुष्ठ सकल तन छायकै। शोक शूलको मूल करेजे आयकै ॥ माया पव
झकोरसों सूजन बहुत है। त्रैगुणके त्रयदोष[1] वात वह को कहै ॥ चिन्ताह
की चीस उठै दिन रातही। अति निन्दासे नींद गई ता साथही ॥ शीर
गुमान पिराय दरद हिंसा घनो। कलह कल्पना भर्मसों रहतो उनमनो।
औरो बड़ी उपाधि बढ़ै तेरी देहमें। भीजि रह्यो है शरीर पसेवै[2] सुनेह में ॥
इन रोगनकी औषध देहुं सुनायकै। भिन्न भिन्न मैं कहौं तोहिं समुझायकै ॥
[illegible]

[illegible]

डली ॥ हितके वर्तन माहीं तिन्हैं भिजोयकै। परमप्रेम जल ताम-[illegible] स-
मोयदे ॥ शील शिलापर पीसो छानि उमंगसों। पीवतही सब रोग नशैंगे
अंगसों ॥ शुद्ध सुदर्शन चूरण हैगो स्वादही। ताके पाये जाय जगत की
व्याधही ॥ दया क्षमा सन्तोष यही माजून है। होय अधिक आनन्द तत्त्व
पदको लहै ॥ गुरु शुकदेव बतावै औषध सारहै। चरणदास जो खाय कष्ट
कोइ ना रहै २६४ ॥

राग धनाश्री ॥ मनमें दीरघ भये विकारा। सतगुरु साहब वैद मिले बिनु

---

१ वात, पित्त, कफ २ पसीना ॥

राग बरवा॥ साधोंरी संगत भँवरा दुर्लभ पइये लीजैजी तनमन बेचि भौं-राजी। जी माने साधोंरी संगत भँवँरा प्यारीही लागे आदि अनादी भवँरा कौने लखावे अपने सतगुरुजी संतोषं भँवँराजी॥ जी माने नरक निवारण सतगुरु प्यारीही लागे आपसकी चर्चा भँवँरा कौने सुनावे अपने गुरुभाई जी संतोष भँवँराजी॥ जी माने गुरुका तो धोना भई या प्यारीही लागे आछे आछे लक्षण भँवरा कौने जुलावे अपने रहनीजी संतोष भवँराजी॥ जी माने कर्म छुटावन रहनी प्यारीही लागे आछे आछे परचा भँवरा कौने दिखावे अपनी मुक्ति संतोष भँवँराजी। जी माने काया जीतावन करणी प्यारीही लागे। आछी आछी जाणी भँवँरा कौने उठावे अपने अनभैजी संतोष भँवँराजी॥ जी माने बुधिकी तो मांजन अनभै प्यारीही लागे। च-रणदास को तुरिया भँवँरा कौने बसावे॥ अपने शुकदेवजी संतोष भँवँरा जी। जी माने सिरका तो छतर शुकदेव प्यारोही २६९॥

राग बिलावल॥ अजब फकीरी साहबी भागनसों पइये। प्रेमलगा ज-गदीश का कछु और न चहिये॥ राव रंकको समगिने कछु आशा नाहीं। आठपहर सिमटे रहें अपनेही माहीं॥ वैर प्रीति उनके नहीं नहिंवाद विवादा। कुछैसे जगमें रहें सुनें अनहद नादा॥ जो बोलें तो हरिकथा नहिं मौनेगहैं। मिथ्याफर [illegible] नखशिख सों धारें। [illegible] नौंके परे आनँद दरसावे॥ जहां जाय अस्थल करें माया पवन न लावे॥ हरिजन हरिके लाडिले कोइ लहै न भेवा। शुकदेव कहीं चरणदाससों करि तिनकी सेवा॥२७०॥ ऐसाहो दरवेशही जगको विसरावे। ईमान सबूरी सांच सों सोई मकसा जावे॥ जन जरे और जमीन को दिल में नहिं लावे। फ़िक्र फ़-कीरी को बुरा वह जिक्र कुयावे॥ फ़े फ़ाक़ेका गुण यही राज़क को पावा। क़ाफ़ कनाअत सुख घना आनन्द अगाधा॥ रे राज़न दरवानदे दी को अपनावे। आखिर को दीदारही निश्चय करि पावे॥ इज्जतको धारे रहे

१ कबीर २ धन॥

सखी सजनी हे नवधा भूषण धार॥ अरी बौरी जासों पिया रिझाइयेजी सखी सजनी हे प्रीति को काजल आंज॥ अरी बौरी प्रेम की मांग सँवरियेजी सखी सजनी हे बुधि वेसरि सजिलेहि। अरी बौरी पान विचार चबाइयेजी सखी सजनी दयाकी मेहँदी लगाव॥ अरी बौरी सांचो रंग उतरैजी सखी सजनी हे धीरज चूनरि लाल। अरी बौरी नख शिख शृंगार रिमे जी सखी सजनी हे काम क्रोध तजि लोभ॥ अरी बौरी मोपीहर सों जिन करोजी सखी सजनी हे पांच सहेली साथ। अरी बौरी इनको संग न लीजियेजी सखी सजनी हे चालौ पियाके रे पास॥ अरी बौरी सुषमन बाट सोहावनी जी। सखी सजनी हे गगनमण्डल पगधार॥ अरी बौरी पीय मिलैं दुख सब हरैं सखी सजनी हे निर्गुण सेज बिछाव। अरी हिलि मिलि कै रँगमानिये जी॥ सखी सजनी हे पावैगी अटल सुहाग अरी बौरी अजर अमर घर निर्मलेजी। सखी सजनी हेगुरु शुकदेव अशीश अरी बौरी चरणदास मनसा फलै जी २६७ भागीसायन हे इहझूले मतझूल॥ अरीहेली भर्म भूमि यादेशकीजी भागीसाथनहे। यदला माया कोरीरूप अरीहेली कुमति वृंदाजित तित परेजी भागीसाथनहे॥ कर्म वृक्षके वेलि अरीहेली वारीफल लगि विष भरेजी भागीसाथनहे। दुर्मति हरी हरी दूब अरीहेली छलरूपी फूले फूल हैं जी भागीसाथनहे॥ त्रैगुण बोलत मोर अरीहेली दम्भ कपट बकुला फिरैंजी भागीसाथनहे। पाप पुण्य दोउ खम्भ अरीहेली नाके स्वर्ग झोटा लगैजी भागीसाथनहे॥ मैं मेरी बँधी डोर अरीहेली तृष्णापटरी जित धरीजी भागीसाथनहे। झूलत चावहि चाव अरीहेली नरनारी सब झूलईजी भागीसाथनहे॥ तपसी योगीगये झूल अरीहेली फल चाहत अरु कामनाजी भागीसाथनहे। आशा झूलावंत नारि अरीहेली पांच पचीस मिलि गावईजी भागीसाथनहे॥ या जगमें ऐसी झूल अरीहेली चरणदास झूलत बचैजी भागी साथनहे। इततजि उतकोरी चाल अरीहेली अमर नगर शुकदेव कें जी २६८॥

१ वानाय॥

नर जावैहो ॥ बहुत मनुष ढूंढ़त फिरैं अँधरे गुरु सेवैहो। उनहूं को सूझैनहीं औरन कहँ देवैहो ॥ अँधरेको अँधरा मिला नारीको नारीहो। हांफल कैसे ... एकसे एकै व्यवहाराहो। ... कहै चरणदास सो इनका ... पूराहो २७५ ॥

रागजैजैवन्ती ॥ गुरुबिन ज्ञान नाहीं तिमिर नशावै। भाई भरमत फिरै लोई जल और पाहन सोई बातनहीं बूझै कोई तिनको बहधावै। देवी और देवपूजे जहां कुछनाहीं सूझै फेरि फेरि जावै दूजे तहांनहीं पावै ॥ वेदकको भेद ठानै काहूकी नाहिं मानै करै मनभावै। भूत टोना जादूसेवै प्रभुका न नामलेवै भक्ति कानमें चितदेवै गुण नहिंगावै ॥ श्रीशुकदेवकहै चरणदास होयरहै सोई मुक्तिधाम लहै आपाजो उठावै २७६ ॥

राग गौरी ॥ सब जगभर्म भुलाना ऐसे। ऊंटकि पूंछसों ऊंट बँध्यो ज्यों भेड़ चालहै जैसे ॥ खरका शोक भूंक कूकुरकी देखादेखी चाली। तैसे कलुआ ज़ाहिर भैरो सेढ़ मसानी काली ॥ गावँभूमिया हितकरि धावैं जाय बराहीदौरे। सदो ससर इष्ट धरतहैं लोग लोगाई बौरे ॥ राखै भाव श्वान गर्दभ को उनको त्याय जिमावैं। ढेढ़ चमारन को शिरनावैं ऊंची जाति कहावैं ॥ दूध पूत पाथरसों मांगें जाके मुख नहिंनासा। लपसी सपड़ी ढेर करत हैं वह नहिं खावैमांसा ॥ वाके आगे बकरा मारैं ताहि न हत्या जानैं। लै लोहू माथेसों लावैं ऐसे मूढ़ अयाने ॥ कहैं कि हमरे बालक जावैं बड़ी आयुबल दीजै। उनके आगे बिनती करतें अँशुवन हिरदय भीजै ॥ भोये भरड़े के पग लागैं साधुसन्तकी निन्दा। चेतन को तजि पाहन पूजैं ऐसा यह जग अन्धा ॥ सतसंगतिकी ओर न झांकैं भक्ति करत सकुचावैं। चरणदास शुकदेव कहतहैं क्यों न नरक को जावैं २७७ अरे नर क्या भूतन की सेवा। दृष्टि न आवै मुख नहिं बोलै ना लेवा ना देवा ॥ ज्यहिं कारण घीज्योति जलावै बहु पकवान बनावैं। सो खर्चै तू अधिक चावसों वह स्वप्ने

१ गदहा, २ कुत्ता ॥

रहै सब सों नीचा। शुकदेव कही चरणदास सों पावै पद ऊंचा २७१
बैरागी जानिये जाके राग न द्वेष। निर्भन्य ह्वै जग में फिरै चाहै सिद्ध
मोक्ष॥ पांचन को एकै करै आनँद में रोक। त्रैगुण ते ऊपर बसै जहां
न शोक॥ मन मूंडै तन साध कै बाधा सब डार। तत्त्व तिलक माथे
शोभा अपरम्पार॥ माला स्वास उसासकी हिरदय अस्थान। अलख पु
सों नेहरा त्रिकुटी मध्ये ध्यान॥ काम क्रोध मोह लोभना यही नेम अचा
शुकदेव कही चरणदास सों करै ब्रह्म विचार २७२॥

राग सोरठ व बिलावल॥ जोनर इतके भये न उतके। उतको प्रेम भ
नहिं उपजी इत नहिं नारी सुतके॥ घरसों निकसि कहा उनकीन्हो घर
भिक्षा मांगी। बाना सिंह चाल भेंड़नकी साधु भये अरु स्वांगी॥ त
मूड़ा पै मन नहिं मूड़ा अनहद चित नहिं दीन्हा। इन्द्री स्वाद मिले वि
यन सों धक वक वक वक कीन्हा॥ माला कर में सुरति न हरि में यह स
मिरण कहु कैसा। बाहर वेष धारके बैठे अन्तर पैसा पैसा॥ हिंसा अक
कुबुधि नहिं छोड़ी हिरदय सांच न आया। चरणदास शुकदेव कहत
बाना पहिरि लजाया २७३॥

राग मंगल॥ महा मूढ़ अज्ञान भक्तिमें क्या करा। गुरु सों बेमुख होय
बड़ापन चितधरा॥ मुक्त पंथकी ओरहि सूबीको चला। तैसे भत परिजा
जु नट भूला कला। गिरा धरणि पर आय भया तन चूरहै। जो कोई ऐसा
होय बड़ाही कूरहै॥ जैसे वृक्ष ते टूटि बिगड़ि फल जातहै। ऐसे गुरुते छूटि
कछू न रहातहै॥ तुमहीं सों लगि रहा जुफल नीको भया। पका भलीही
भांति धनी के करगया॥ यही समझ गुरु संग कबौं नहिं त्यागिये। मनमें
निश्चय लाय शरणहीं लागिये॥ सब तन अंगन माहिं दीनता छाइये।
गुरुके चरण निहारिकै शीश नवाइये॥ दोनों करको जोरिकै अस्तुति की-
जिये। दर्शनके सुखपायकै शिक्षा लीजिये॥ श्रीशुकदेव दयालने मोसों
यों कही। चरणदास शिष जानिकै ऐसोहो सही २७४॥

राग सोरठ॥ समझ रस कोइक पावैहो। गुरुबिन तपन बुझै नहीं प्यासा

एक टाँग जल ध्यान । मनमें आशा मीन गहनकी कहा मिलै ॥ गुरु शुकदेव बतायो मोको भीतर बाहर शुद्धि । चरणदास या जानो ताकी है ब्रह्म बुद्धि २८१ ॥ केदार ॥ छले सब कनक कामिनि रूप । सुर असुर अरु यक्ष गंध्रब दिक भूप ॥ सावित्री वश कियो ब्रह्मा पार्व्वती त्रिपुरारि । लीला लक्षिमी सँग हरि लियो अवतार ॥ रावण से अति बली मारे मौत श कीने । पशु नरनकीको चलावे एतो अति आधीन ॥ रूप रस नग मोह फांसी डार । तप कि पूंजी छीनिकै कियो शृंगीऋषि को : . ठगिनी ठगे सबही बचे गुरु शुकदेव । रण जिता कोइ ऊबरो . . . रणन सेव २८२ ॥ गसा० ॥ साधो होनहार की बात । होत सोई जो होनहार है कापै जात ॥ कोटि सयानप बहु बिधि कीन्हे बहुत तर्क कुशलात । होनहार तरी कीन्ही जल में आगि लगात ॥ जो कछु होय होतब्यता भोंड़ी उपजे बुद्धि । होनहार हिरदय मुख बोले बिसरि जाय सब शुद्धि ॥ शुकदेव दयासों होनी धारि लई मन माहिं । चरणदास शोचे दुख उ- सिमझेसों दुख जाहिं २८३ ॥ शंग सोरठा ॥ टुक रँग महल में आवकि निर्गुण सेज बिछी । जहँ न गवन नहिं होय जहां जाय सुरति बसी ॥ जहँ त्रय गुण बिन नि- ण जहां नहिं सूर शशी ॥ जहँ हिलि मिलिके सुखमान मुक्ति की होय ी ॥ जहँ पिय प्यारी मिलि एक कि आशा दुई नसी । जहँ चरणदास लतान कि शोभा अधिक लसी २८४ सुनु सुरत रँगीली है कि हरिसों र करो । जब छूटे बिघ्न बिकार कि भवजल तुरत तरो ॥ तुम त्रै गुण ल बिसारि गगन में ध्यान धरो । रस अमृत पीवो है कि बिषयों सकल रो ॥ करि शील संतोष शिंगार क्षमाकी मांग भरो । अब पांचो तजि लगवार अमर घर पुरुष वरो ॥ कहैं चरणदास गुरु देखि पियाकि पावैं

१ सांरंगी ॥

नहिं खावैं ॥ राति जगावैं भोपा गावैं झूठे मूड़ हलावैं। कुटुंब सहित तोहिं पैर परावैं मिथ्या वचन सुनावैं [illegible] साथा। बड़भागन नर देही पाई [illegible] बुधिका ऊंचनीच किनहोई। जोकोइ झूठी आशाराखै अगतजायगा सोई॥ ताते सत विश्वास टेकगहु भक्तिकरौ हरिकेरी। चरणदास शुकदेव कहतहैं होय मुक्तिगति तेरी २७८॥ [illegible]

राग बिलावल ॥ सब सुखदायक हैं हरी मूरख नहिं जानै। मनमें धरिधरि कामना औरनको मानै॥ जो चाहै सन्तान को जप लालबिहारी। सुन्दर बालक होहिंगे घरकोउजियारी॥ जो चाहै तू धनघना सेवा कृष्ण मुरारी। साखि सुदामा की सुनो दइ बिभव अपारी॥ जगत बड़ाई जो चहे सुमिरो यदुनाथा। नीच बहुत ऊंचेभये जगनायो माथा॥ जो सिधि हूं चाहै कै हरिहरि हियध्यांना। सिद्धि परापत होहिगी चढ़ि है परमाना॥ चरणदास [illegible]

जैसे सोना तापि अग्निमें निर्मलकरै सोनारा॥ घन अहरन कस हीरा निबटै कीमत लक्षहजारा॥ ऐसे यांचत दुष्टसन्तको करत जगत उजियारा॥ योग यज्ञ जप पाप कटनहित करै सकल संसारा। बिन करणी मम कर्म कठिन सब मेटै निन्दक प्यारा॥ सुखीरहो निन्दक जगमाहीं रोग न हो तनसारा। हमरी निन्दा करनेवाला उतरै भवनिधि पारा॥ निन्दकके चरणोंकी अस्तुति भाषों वारंवारा। चरणदास कहैं सुनियो साधो निन्दक साधकप्यारा २८०॥ [illegible]

राग सारंग॥ अरे नर कहाकियो तुपज्ञान। गई न हिंसा कुबुधि बड़ाई रागद्वेषकी आन॥ प्रभुताई को क्षण क्षण दौरै प्रभुको ना क्षणएक। अन्तर भोग जगतके प्यारे बाहर साधूभेष॥ जैसे सिंह गऊतन धारो कपटरूप प्रगटायो। घोसासाय पशूपा निकसो पंजातादि चलायो॥ सुन्दररूप महा

ी तान मधुर सुर है बरपावत प्रेम भरी। सुनि के सुर ऋषि मुनि देव महेश समाधि टरी॥ चरणदास भई सखि है तुही शुकदेवबरी २६१ तुम देखौ हरि की लीला साधो कहन सुनन गम नाहीं॥ वह आप सकल बिस्तारै अरु आप करे प्रतिपारै जब चाहै तबही मारै या जगमें धूम मचाई॥ वह अद्भुत कौतुक लावै रंकहि को राज्य दिलावै राजा को रंक करावै यह गति किनहुँ न पाई। वह अचरज खेल मचावै पाप पुण्य के न्याव चुकावै आप देखै और दिखावै इक इक सों दैइ भिराई॥ जब पाप बढ़न को आवै हरि आप हि धाय बहावै दुष्टन को मारि भगावै संतन की करै सहाई॥ चरणदास कहै तो चाहो शुकदेव शरण अब आवो तुम साईं सों लव लावो वै दे हैं दुःख मिटाई २६२ तेरी छणै छण छीजित आयु संमझ अजहूं भाई। दिन दो का जीवन जानि छोड़ि दे भमराई॥ मन मैहल नर अज्ञान चेत क्यों न रहीः

॥ तान मधुर सुर हे बरपावत प्रेम भरी। सुनि के सुर ऋषि मुनि देव महेश समाधि टरी॥ चरणदास भई सखि हे तुही शुकदेवबरी २६१ तुम देखौ हरि की लीला साधो कहन सुनन गम नाहीं। वह आप सकल विस्तारै अरु आप करै प्रतिपारै जब चाहै तबही मारै या जगमें धूम मचाई॥ वह अद्भुत कौतुक लावै एकहि को राज्य दिलावै राजा को रंक करावै यह गति किनहुं न पाई। वह अमरज खेल मचावै पाप पुण्य के न्याव चुकावै आप देखै और दिखावै इक इक सों देइ भिराई॥ जब पाप बढ़न को आवै हरि आप हि घोप बहावै दुर्जनको मारि भगावै संतनकी करै सहाई। चरणदास कहै जो चाहो शुकदेव शरण अब आवो तुम साई सों लव लावो वे देहैं दुःख मिटाई २६२ तेरी क्षण क्षण छीजत आयु समझ अजहूं भाई। दिनदो का जी-

[illegible]

॥ राग बसंत॥ ऐसे कृष्ण कुंवर खेलत बसंत। जाको सुर नर मुनि पावत न अंत॥ संग लिये बहु ग्वाल बाल। अरु फेंटनमें भरि भरि गुलाल॥ सब वस्त्र पहिरे लाल लाल। गल सोहत सुन्दर गुंजमाल॥ कोउ ताल बजावहि मृदंग। कोउ ढोल तंबूरा बीण चंग॥ कोउ डफ स्वांग मोहरि मुचंग। कोउ गावत स्वर दै दै उमंग॥ जब [illegible] गोपिनाथ॥ कोउ केशरि [illegible]

[illegible]

नारि। ऐसो अद्भुत अचरज रस बिहारि॥ यह सुर्ख अब कापै कह्यो जाय।

ी वेद पुराण सबै जो ढूंढे सुरति स्मृति सब भाय। जानि धर्म और किया
ां में दीन्हो मोहिं भर्माय॥ संस्कृत प्राकृत जनौं हारि चरण सखी गहे
य शुकदेव साहब किरपा करिकै दीन्हों अलख लखाय॥ देखतहीं सब
न गंथ भागे शिरसूं गई बलाय। चरणदास जब प्रीतम पायो दर्शन किये
चाय ३११ हरि पीव पाइया सखी पूरण मेरे भाग। सुखसागर आनंदमें
नित उठि खेलूं फाग॥ चोवा चन्दन प्रीतिके सखी केशरि ज्ञान घसाय।
प्र वाससूं जो वह भीनो ताके अंग लगाय॥ वैरागी के रंगसूं सखी गागर
ई भराय। शून्य महलमें जायके सखी पियपर दई ढराय॥ गरम गुलाल
व कर लियो सखी बालम गयो डराय। सतगुरुने अंजन दियो तब सन्मुख
रशे आय॥ तालीलाई प्रेमकी सखी अनहद नाद बजाय। सर्वमयी पिय
ायके हम आनँद मंगल गाय॥ रलमिल प्रियतम है गये सखी दुई गई
व भाग। चरणदास शुकदेव दयासूं पायो अचल सुहाग ३१२ मैं तौहां
लगी जाय जित मेरो पियावसै। व्याधि उपाधि न संशय कोई आनंदहि
आनंद लसै॥ नितही फागुन इकरस [illegible]
थ फगुवा पइये आपा सरवसखोय
[illegible] खेलत निशि दिन करि करि बहुतक भाग॥

सुधि नाहीं कान [illegible] देहा [illegible]
दराय। बहुतनको बौरापन लागो ह्वांकी कही न जाय॥ प्रेमीकी गति प्रेमी
जाने जाके लागीहोय। चरणदास उस नेहनगरकी शुकदेवा कहिसोय ३१४

दो० दुखमेटन सुखके करन चरणदास वेसाध ॥
दाता ज्ञान विज्ञान के देवें मता अगाध ४
साध मुक्ति नहिं चहत हैं सिद्ध न चाहतसाध ॥
स्वर्गलोक नहिं चहत हैं जिनका मता अगाध ५

चौ० इड़ा[1] पिंगला[2] सुखमनै धारो । आसन वज्र नागिनी टारो ॥ द्वादशअंगुल होय बांधि पटचक्रलीजै । जब बाजै अनहद तूर जहां मन निज करदीजै ॥ खेचरी मुद्रा त्रिकुटी आवै । अमृत पिये परम सुखपावै ॥ मेरुदंडको प्राण चलावै । शून्य शिखर जब नगरी पावै ॥ जानगरीमें चन्द न भान । पहुँचे साधु चतुरसुजान ॥ जाति पांति जहँ नाम न नाता । श्वेत श्याम पीला नहिंराता ॥ योग यज्ञ तप जहां न दाना । तीरथ वर्त्त जहां नहिं न्हाना ॥ किरिया कर्म जहां नहिं पूजा । मैं तूहै नहिं एक न दूजा ॥ जहां न सांझ द्यौस नहिंराता । एकैब्रह्म अखंड विधाता ॥ चरणदास रागकी घाटी पहुँचे गुरुमत शूरा । ओछी बुद्धि बाद बहुठानै करणीकरै सो पूरा ६॥

छप्पै ॥ बैठ गुफाकेमध्य योगकी युक्ति विचारै । आप अकेलो रहै और नो मनुष निहारै ॥ चार बार नितकरै जाप ॐकार अराधै । सूक्ष्मकरै आहार ओगरो पतलो साधै ॥ आसन पद्म लगायके सीधो राखै मेरु । ठोढ़ी हिये लगाइये पलक झांपकरि हेर ७॥

दो० कुंभक आठ प्रकारके तिनमें उत्तम एक ॥
केवल कुंभक जानिये साधै ताहि विशेष ८
त्रिकुटी में तीरथ अगम तिरवेणी जेहि नाम ॥
न्हाय योगकी युक्ति सूं पूरण हो सब काम ९
रणजीत कहैं जहँ न्हाइये त्रिकुटी तीरथ धाम ॥
नित परवी जहँ होतहै भजनकरो निष्काम १०

चौ० जा तीरथ को पवन न लागै । जा तीरथमें जन अनुरागै ॥ जा

---

१ बायें अंगकी नाड़ी को इड़ा कहते हैं २ दहिने अंग की नाड़ीको पिंगला कहते ३ मध्य नाड़िका को सुषुम्णा कहते हैं ॥

कोई जानै संत सुजान उलटे भेदकूं । वृक्षचढ़ो मालीके ऊपर धरती चढ़ी अकास। नारिपुरुष विपरीत गये हैं देखत आवै हास ॥ बैल चढ़ो शंकरके ऊपर हंस ब्रह्मकेशीश । सिंहचढ़ो देवी के ऊपर गुरुहीकी वखशीश॥ नाव चढ़ी केवट के ऊपर सुतकी गोदीमाय । जो तू भेदी अमर नगरको तौ तू अर्थ बताय॥ चरणदास शुकदेव सहाई अवकह करि है फाल। बांबी उलटि सर्प में पैठी जबसूंभये निहाल ३१५ ॥

इति श्रीचरणदासकृतशब्दसंपूर्णम्॥

अथ भक्तिसागरप्रारम्भः॥

अथ छप्पै छंद कवित्त चौपाई दोहा प्रारम्भ ॥

छप्पै ॥ श्री व्यासको पुत्र तासुको दास कहाऊं । सदारहूं हरि शरण औरना शीश नवाऊं॥ साधनसूं यह चहूं मोहिं यह बातदृढ़ावो । माया जाल संसार तासुसों वेगि छुटावो ॥ अहो श्रीब्रजनाथ विनय सुनि लीजिये । चरणदासको भक्ति कृपाकरि दीजिये १ गुरु ईश्वर गुरु ईश्वरीक्ष श्री गुरु राम बतावैं । गुरु काटैं यमफांस विपति सब अघे नशावैं ॥ गुरुदेवनके देव भेव ब्रह्मादि लखावैं । गुरु भवसागर तार पार वह लोक बसावैं ॥ चरण दास यह जानिकै सतसंगति हरिको भजो । शुकदेव चरण चितलायकै सो झूठकानि दुविधा तजो २ पग तबहोवैं शुद्ध साधुके पगको धावैं । हस्त शुद्ध तब होयँ दोऊकर शीश नवावैं ॥ नैनशुद्ध जब होयँ साधुके दर्शन पावैं । रसनें शुद्धतब होय रामगुण मुखसोंगावैं ॥ भनै चरणदास सबशुद्ध हो जब चरण परस गुरुदेवके । वे आतम तत्त्व विचार देख कर दर्शन अलख अभेव के ३ ॥

---

१ जिह्वा २ जिसकी जड़ न हो ॥

तीरथ में पवन अनेका । पूरे गुरुसों मिलमिल देखा ॥ ३ ॥ तीरथमें जो कोइ न्हावै । भवसागर में बहुरि न आवै ॥ जहां न चन्द सूर नहिं तारे । गुरुगम पहुँचे अति मतवारे ॥ जा तीरथका बँधा जो नीर । उज्ज्वल निर्मल गहिर गँभीर ॥ ब्रह्मा विष्णु जहां त्रयदेवा । योग युक्तिमें लावैं सेवा ॥ बारह वास दामिनी दमकै । सोन पटीला झगुन झमकै ॥ रणजित गीत वास जहँ कीजै । नित आसनान महासुख लीजै ११ ॥

छप्पै ॥ भ्रमरी वजरी साध वायु सरने नहिं पावै । द्वादश अंगुल प्राण सुरलदे ताहि घटावै ॥ मौन गहे तिलरहे अल्प सूक्षम सो बोले । एकबार आहार जँभाई कबहुँ न खोले ॥ बांधे सो जाम दृढ छींकको अनहद धुनि अति गाजई । भन चरणदास शुकदेव कल सुयोग युक्ति इमि साजई १२ ॥

दो० मन पवनां वश कीजिये ज्ञान युक्तिसों रोक ॥
सुरति साधि भीतर धँसे दृखै कायां लोक १३ ॥
मन हिरदे में रहत है पवन नाभिके माहिं ॥
इन्द्रीरोके ये रुकें और कछु विधि नाहिं १४ ॥

छप्पै ॥ सूक्षमकरै अहार जीतिधरणी जयलेई । नीरजीति जय लेय बिंद जाने नहिं देई ॥ मोह लोभ जयतजै अग्निको जीति मिलावै । पवनजीत जय लेय गगनको बाध चलावै ॥ अरु हर्ष शोक समकरि गते पांच जीति एकैकरै । भन चरणदास साधुतगहै होय प्रकाश कारजसरै १५ ॥

दो० गगन मध्य जो कमलहै बाजत अनहद तूर ॥
दलहजारको कमलहै पहुँचे गुरु मत शूर १६
गगन मँडल के कमलमें सतगुरु ध्यान निहार ॥
चरणदास शुकदेव परसे मिटै सकल विकार १७
सहसदलके कमल में रूप अगम अपार ॥
सोहं सोहं जापसहजै होता एक हजार १८

छप्पै ॥ नौ नाड़ीकी खैंच पवनलै उरमें दीजै । वज्जर ताला लाय द्वार नौबन्ध करीजै ॥ तीनो बन्ध लगाय अस्थिर अनहद आराधे । सुरति नि-

भयो मोभारो॥ माया पिशाचको संग कियो जब नीचभयो कातांक-
रो। शुकदेवकहें इह दूरकरो चरणदास सभी इकसूत निहारो ३२॥
कवित्त॥ दीसत रह्यो न वारपार पूरि रह्यो जगतसार ऐसोही अटल नेक
न टरतहै। ताको तो नाहिं नाश ठौर ठौर रह्योभाश जैसे रहत पुष्पवास
उही रहत है॥ लोचन रह्यो समाय वेदहू सके न गाय पुस्तक लिखो न
प जारो ना जरत है। शुकदेवजी की दया चरणदास को प्रकाश भयो
मैं खोजि पायो पायो ना परतहै ३३ कई कोटि दुर्गाजहां हाथ जोरे रहें
कोटि शंभु जहां ध्यान लावें। कई कोटि ब्रह्मा जहां अस्तुतिकरें शेश
द नहीं पारपावें॥ वेद पशही कहें भेद कछु ना लहें, पंथकी बात वेभी-
वें। चरणहीदासकी आश जितहीरहो कोटि तेंतीसहू शीश नावें ३४
हीदेव अरु राम देवल भयो रामही रामकी करे पूजा। रामही धर्म अरु
भे रामही रामही ज्ञान अज्ञानसूझा। रामही एक अनेक हैं रामहीराम
ह भयो रामगूझा। चरणदास शुकदेव सबरामही रामहें शोधि निश्चय
पा नाहिं दूजा ३५ रामही बीज अरु रामही पेडहें रामही फूल अरु राम
ी। रामही भोगिया रामही योगिया रामजप तप करें दिवसराती॥ रा-
नारि अरु रामही पुरुषहे राम मा वाप अरु पूत नाती। शुकदेव चरण
सब रामही रामहे रामही दीवला रामबाती ३६ रामही चोर अरुरामही
भयो राम बटमार अरुरामघाती। रामही साधुयत सतभयो रामही राम
करें रामसाती॥ रामही देह इन्द्री भयो रामही मन भयो रामही सुरत-
ी। गुरु शुकदेव चरणदास चेलाभयो रामही सीप अरुराम स्वाती ३७
पही वेद अरु आप पण्डित भयो आपकर्तव अरु आपकाजी। आप
शी भयो आपजाती भयो आपमक्का भयो आपहाजी॥ आपही बाग
आप मुल्ला भयो आप पंडा भयो पंटवाजी। चरणदास शुकदेव हरि
द मुसिदभयो मुकति और बंद सब आपसाजी ३८ ब्रह्मही आदि अरु
ही मध्यहे ब्रह्मही अंतकूं वेदगावे। ब्रह्मही एकअनेकहे ब्रह्मही आपनो
मे आपआवे॥ होय दूजा कोई नाहिं ऐसी भई आपही आप आनँद

ुर जारी है । वहीराम मेरो जिन कंसको पछास्यो जाय वही राम मेरो
नाथ्यो नागकारी है ॥ वही राममेरो सो डार पात रमिरह्यो वही राम
जाकी जगमें उज्यारी है । चरणदास कूर सब संतनको चेरो कहै वही
रो प्रहलाद पैज पारी है ४६ ॥

ुण्डलिया ॥ वेदपुराणन में सुनो संकट मेटननावँ । चरणदासके काज
अब क्यों थाके पावँ ॥ अब क्यों थाकेपावँ धाममें हो अकनाहीं । और
ों कौन गहे या दुखमें वाहीं ॥ सकल सृष्टि विसराय खैंचि मन तुमसों
। । इन पांचन को काट करो मेरो मनभायो ४७ भीरपरी जब दासपर
तित धारो वेप । अगिले पिछले करमकी अब क्यों न मेटोरेप ॥ अब
न मेटो रेप करमकोई दुर कीन्हों । हम कुछ जानत नाहिं तुम्हीं काहे
चीन्हों ॥ अब तुमकरो सहाय इन्हों से मोहिं छुटावो । काम क्रोध मोह
चक्रसों वेगिनलावो ४८ ॥

कबित्त ॥ सबही दुख पावैं वेर वेर पछितावैं अब तोहींको ध्यावैं दुख वहीं
दीजिये । अन्नके दुखारी सब भये हैं भिखारी सृष्टि काहे को विसारी
वेगि जो पसीजिये ॥ जक्त गुनागार करि देखो है विचार अब ना करो
र बंदि छोड़ि जो फहीजिये । दिल्लीकी अर्ज चरणदास कहैं लर्ज स्याह
को बर्ज अर्ज मेरी सुनि लीजिये ४९ यशोदाको लाल देखि मोहन
ाल देखि गोपी अरु ग्वाल देखि प्राण वारि दीजिये । माथेपर मुकुट
कुण्डलनकी झलक देखि घूंघरवारी अलक देखि ललकाही कीजिये ॥
ासी मरोर देखि मुरलीकी घोर देखि पैंजनी टकोर देखि देखाही की-
। चरणदास कूरदेखि नैननको मूंद देखि नैननके बीच देखि यही ध्यान
जिये ५० पीरा सुधार फेंट तुर्रा छवि अधिक वनी करहू में मुरली गहि
रनपै धारीजू । घेरदार नीमो पारो प्यारो अंग चुभिरह्यो एक पावँ ठाढ़े
प्रेमके अहारीजू ॥ सवही शिंगार किये राधेजू वायें अंग ठाढ़ी मुल-
त प्राण पिया संग प्यारीजू । नवल किशोर गोर सांवरो सुजान प्यारो
रणदास कीन्हो अटल विहारीजू ५१ ॥

वहावै। ब्रह्म शुकदेव चरणदास भी ब्रह्महै ब्रह्महीब्रह्मका ध्यानलावै ३९

राग अरिल्ल ॥ आतम ज्ञान विनानहिं मुक्ति वेदभेद करि देखाजीय ब्रह्माशेश महेश पूजकरि वस वहलोक रहतनहिं सोय ॥ जैसे पाहन भूत भवानी पूजापूज भर्म सवकोय। चरणदास तत्तविरला जानै आवागमन दुख बहुरि न होय ४० ॥

सवैया ॥ न ऊर्ध्वबाहु न अंगविभूति न धूनीलगाय जटाशिरढारूं। मूंड मुंडाय फिरूं वनही वन तीरथ वर्त्तनहीं तनगारूं॥ उलटलखौं घटमें भृतिविवसौं दीपकज्ञान चहूंदिशिजारूं। चरणदासकहै मनहीं मनमें अवतूंहि तुही करि तोहिं पुकारूं ४१ ॥

कवित्त ॥ तारी जो लगाय देखो वेद अर्थ पायदेखो भक्तिविना अखिल ईशकोहूं नाहिं पायो है। दशोदिश धाय देखो तीरथ अन्हाय देखो भटके सव प्रेमविना अमृत जो गायोहै ॥ हिवार तनगार देखो करवटसि मारदेख [illegible]

हरिमारगमें करता जो करै सोइ होय रहैगो ॥ अपने हितसों जिन तोहिं सृज्यो है अलेख विलोकिके सोचकरैगो। चरणदास विचारि कहा भटकै हरिनाम विना दुख कौन हरैगो ४४ वहीराम वहि श्यामविधाता वही विश्वंभर पतिततरै। वही विष्णु वहि कृष्णमुरारी वही निरंजन ज्योतिधरै ॥ दीनानाथ हरि वह कहियतुहै जो चाहै सो वहीकरै। चरणदास क्यों भटकै मूरख रामविना दुख कौनहरै ४५॥

कवित्त ॥ वहीराम मेरो जिन रावण विनारयो जाय वहीराम मेरो जिन